PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor : 7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

गिना प्रकाशन द्वारा
जयपुर, भिवानी एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2321-0540
Impact Factor : 5.621

KANCHANLATA

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

Managing Editor :
Dr. Mukesh Verma
M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी (रजि.) के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से वितरित की।

ISSN 2348:5639

SHODH SAMALOCHAN July-Sep. 2026

Dr. Versha Rani,
Dr. Naresh Sihag, Adv.

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. : 13, Issue : 3 July-Sep. : 2026





संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY PRINT RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-13, अंक-3 जुलाई-सितम्बर / 2026 (भाग-5) आईएसएसएन : 2348-5639

संरक्षक
• डॉ. इस्पाक अली, बैंगलुरु

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

अंतरराष्ट्रीय सम्पादक मंडल

• आशीष कुमार, गाजियाबाद
• डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी, नेपाल
• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. राजेश शर्मा, श्रीगंगानगर
• श्री शियोन छन श्यू, चीन
• डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे, नीदरलैंड
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. सुनीता शर्मा, ऑस्ट्रेलिया
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति वार्षिक 2500/- रु.

विषय विशेषज्ञ सलाहकार समिति/ संपादकीय मंडल :

- **Dr. Mudita Popli**
  Principal, Maa Karni B Ed College Nal, Bikaner
- **Dr. Tapasya Chauhan**
  Assistant Professor, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra (Utter Pradesh)
- **Dr. Om Prakash Mehrara**
  Director, Shri Ramnarayan Dixit PG College, Srivijaynagar, Distt. Anupgarh (Rajasthan)
- **PRINCE KUMAR**
  UGC NET-JRF, History, Senior Researcher, University History Department, B.R.A.Bihar University Muzaffarpur, Bihar
- **Dr Kanta Verma**
  Assistant professor, Political science, Govt College Lanji Balaghat, District Balaghat, M.P.
- **Dr. Sainath Kabade**
  Assistant Professor, Department of Educational Social Sciences, NIE, NCERT, New Delhi.
- **Mr. Sagar Gopal Rathod**
  Assistant professor, School of Social Science, Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Maharashtra.
- **Dr (Smt.) Manjulata Kashyap**
  Professor (Economics),Govt.T.C.L.P.G. College Janjgir, Chhattisgarh
- **Dr. AMBILI V. S.**
  Assistant Professor, Department of Hindi,
  N.S.S. College, Pandalam, Pathanamthitta Distt. University of Kerala.
- **Dr. Anju Bala**
  Assistant Professor Hindi, Guru Nanak Girls College, Yamunanagar-135001
- **Dr. Tikaram Sarthi**
  Hasmukh, Lecturer, Govt H.S.S.Churteli, Dist. Sakti (Chhattisgarh)-495688
- **Dr. Atul Chand**
  Hod Defence & Strategic Studies/ ex Principal in-charge "Government Degree college Baluwakote Pithoragarh "Uttarakhand
- **Dr. Vimal Parmar**
  Assistant Prof. Rajasthan P.G. Law College, Chirawa , Rajasthan
- **Dr. Archana Tiwari** , Assistant Professor , History and Indian Culture, Uni. Rajasthan, Jaipur
- **Sneha Deepak Wankhede**
  Assistant professor Hindi Department, Rajkumar Kewalramani College Jaripatka Nagpur, Maharashtra
- **डॉ. श्रीमती अभिलाषा सैनी**
  प्राचार्य, स्व. रामनाथ वर्मा शासकीय महाविद्यालय, मोपका, जिला-बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़
- **डॉ. मोहित शर्मा**
  श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्क तीर्थ किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)
- **रजनी प्रिया**
  राँगाटाँड़ रेलवे कॉलोनी, क्वा.सं. 502/136, तरुण संघ क्लब दुर्गा मंदिर, धनबाद, पोस्ट जिला-धनबाद, झारखंड

- **डॉ. मीरा चौरसिया,** चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड-247664
- **डॉ. आँचल कुमारी,** असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
  राम चमेली चड्ढा विश्वास गर्ल्स कॉलेज गाजियाबाद चौधरी चरणसिंह युनिवर्सिटी, मेरठ (उ. प्र.)
- **डॉ. प्रमोद नाग**
  सहायक प्राध्यापक, आचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज, बेंगलुरु-560107
- **डॉ. चन्द्रशेखर सिंह**
  समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **लेफ्टि. डॉ. सन्दीप भांभू**
  शारीरिक शिक्षा विभाग, टॉटिया वि.वि. श्रीगंगानगर
- **डॉ. सरिता भवानी मालवीय**
  असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ., आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- **डॉ. संदीप कुमार,** असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **पल्लवी आर्य**
  असि. प्रोफेसर, भाषाविज्ञान विभाग, के.एम.आई. डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. अमित कुमार सिंह**
  डी. लिट्., असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.एम. आई., डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- **कोकिला कुमारी**
  शोद्यार्थी, हिंदी विभाग, राँची वि.वि. राँची, झारखंड
- **डॉ. तनु श्रीवास्तव**
  असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिला विश्वविद्यालय, इन्दौर
- **डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी**
  उप-प्राध्यापक, केंद्रीय हिन्दी विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल
- **डॉ. जगदीप दुबे**
  सहायक प्राध्यापक वाणिज्य (म.प्र.), शासकीय आदर्श महाविद्यालय, डीनडोरी (म.प्र.)
- **डॉ. श्रीकांत राठोड**
  सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, श्री शांतेश्वर शिक्षा संस्थान, श्री जी.आर. गांधी कला, श्री वाय ए पाटील वाणिज्य एवं श्री एम पी दोशी विज्ञान महाविद्यालय, इंडी, जिला विजयपुर, कर्नाटक
- **डॉ. मंजू देवी**
  सहायक आचार्य श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर
- **डॉ. सुनीता सारस्वत**
  सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग), सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी झुंझनू, राजस्थान
- **प्रा. डॉ. बोईनवाड कृष्णा बाबुराव**
  सहा. प्रा. दिगंबरराव बिंदू कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, भोकर. जिला नांदेड, महाराष्ट्र
- **डॉ. माया गोला,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
- **डॉ. श्रीराम**
  एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, बीकानेर

Request to Writers

Send quality original and unpublished works written on language, literature, society, science and culture. For publication, along with the translated works, also send the letters of consent received from the original authors. Compositions should be typed in Hindi Unicode Mangal font, English Time Roman. At the beginning of the article, a summary of the article is required which should be between 150 to 200 words maximum. The abstract must reflect the purpose of writing the article. Also write 5 to 7 'key words' (seed words) according to the article.

Write the article by dividing it appropriately into subheadings. Be sure to give a conclusion at the end of the article. The word limit should be 2000 to 2500 words. List of bibliographies at the end of the article APA Be in the format of. While sending the article, please write your name, address, phone number and title of the article in the e-mail. Submit a declaration to the effect that the article is original, unpublished, the author and not the editorial board will be responsible for any dispute related to it in future.

At the end of the composition, mention your complete postal address, mobile number and e-mail address.

- Editor

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज, विज्ञान एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ हिंदी यूनिकोड मंगल फान्ट अंग्रेजी टाइम रोमन में टंकित होनी चाहिए। लेख के प्रारंभ में लेख का सार अपेक्षित है जो अधिकतम 150 से 200 शब्दों के मध्य हो। सार में लेख लिखने का उद्देश्य अवश्य परिलक्षित होना चाहिए। लेख के अनुरूप 5 से 7 (की वर्ड) (बीज शब्द) भी लिखें। लेख को यथोचित उपशीर्षकों में विभाजित करके लिखें। लेख के अंत में निष्कर्ष अवश्य दें। शब्द सीमा 2000 से 2500 शब्दों की हो। आलेख के अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची ए.पी.ए. के प्रारूप में हो। लेख भेजते समय अपने नाम, पता, फोन नंबर एवं लेख का शीर्षक ई-मेल में अवश्य लिखें। इस आशय का एक घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर दें कि लेख मौलिक है, अप्रकाशित है, भविष्य में इससे संबंधित किसी भी विवाद के लिए लेखक उत्तरदायी होंगे संपादक मंडल नहीं।

रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता अंकित करें।

-संपादक

प्रकाशित पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करे :
सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094
मोबाइल : 9818128487, 8383042929

ISSN : 2348-5639

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

संपादकीय

प्रिय पाठको,

वर्तमान समय ज्ञान-विस्तार, विचार-विमर्श और बौद्धिक संवाद का युग है, जहाँ शोध केवल शैक्षणिक अनिवार्यता नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। शोध समालोचन के इस अप्रैल-मई-जून 2026 अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें यह अनुभव हो रहा है कि ज्ञान की यह यात्रा निरंतर गहराई और व्यापकता की ओर अग्रसर है। यह अंक न केवल विविध विषयों की शोधपरक सामग्री को समाहित करता है, बल्कि समकालीन संदर्भों में उनके प्रासंगिक विश्लेषण का भी सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

आज का युग बहुआयामी चुनौतियों और संभावनाओं का युग है। एक ओर तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, तो दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्नों को भी जटिल बना दिया है। ऐसे समय में शोध का कार्य केवल तथ्यों का संकलन नहीं, बल्कि उन तथ्यों के पीछे छिपे यथार्थ को उजागर करना भी है। इस अंक में सम्मिलित लेख इसी दृष्टि को केंद्र में रखते हुए लिखे गए हैं, जिनमें भारतीय ज्ञान परंपरा, साहित्यिक विमर्श, सामाजिक सरोकार और शैक्षिक नवाचारों पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा सदैव से ही विश्व को दिशा देने वाली रही है। आज जब वैश्वीकरण के प्रभाव में सांस्कृतिक अस्मिता पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी जड़ों की ओर लौटें और अपने परंपरागत ज्ञान को समकालीन संदर्भों में पुनः परिभाषित करें। इस अंक में प्रकाशित शोध आलेख इस दिशा में सार्थक प्रयास हैं, जो भारतीय दर्शन, संस्कृति और शिक्षा के मूल तत्वों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं।

साहित्य, समाज का दर्पण होने के साथ-साथ उसकी संवेदनाओं का भी सशक्त माध्यम है। वर्तमान अंक में साहित्यिक आलोचना और समीक्षा के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार साहित्य समाज के बदलते स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। समकालीन कविताओं, कहानियों और गद्य साहित्य में उभरते विषय जैसे स्त्री-विमर्श, दलित चेतना, पर्यावरणीय संकट और नैतिक मूल्यों का ह्रास—इन सभी पर गहन विचार प्रस्तुत किया गया है। यह अंक साहित्य को केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के औजार के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। नई शिक्षा नीति और डिजिटल तकनीकों के प्रभाव ने शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को पूरी तरह से बदल दिया है। इस अंक में शिक्षा से संबंधित शोधपत्र इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि किस प्रकार नवाचार और परंपरा का संतुलन बनाकर एक समावेशी और प्रभावी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक चेतना के विकास का आधार भी है—इस विचार को यहाँ विशेष महत्व दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, इस अंक में विभिन्न शोधार्थियों और विद्वानों द्वारा प्रस्तुत लेखों में सामाजिक यथार्थ की गहन पड़ताल की गई है। ग्रामीण जीवन, शहरीकरण, आर्थिक असमानता, और सांस्कृतिक बदलाव जैसे विषयों पर किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि शोध का उद्देश्य केवल निष्कर्ष निकालना नहीं, बल्कि समाज के समक्ष प्रश्न खड़े करना और उनके समाधान की दिशा में विचार उत्पन्न करना भी है।

शोध समालोचन का उद्देश्य सदैव से ही शोध की गुणवत्ता और प्रामाणिकता को बनाए रखना रहा है। इस अंक में प्रकाशित सभी लेख कठोर समीक्षा प्रक्रिया से गुजरकर चयनित किए गए हैं, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि पाठकों

को विश्वसनीय और उच्चस्तरीय सामग्री प्राप्त हो। हम यह मानते हैं कि एक सशक्त शोध परंपरा का निर्माण तभी संभव है जब उसमें नवीनता, निष्पक्षता और आलोचनात्मक दृष्टि का समावेश हो।

अंततः, हम सभी लेखकों, शोधार्थियों और समीक्षकों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो पाया है। साथ ही, हम अपने पाठकों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे इस अंक में प्रस्तुत विचारों पर गंभीरता से विचार करें और ज्ञान-विमर्श की इस परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें।

ज्ञान की यह यात्रा अनवरत है, और शोध समालोचन इस यात्रा में एक सशक्त मंच के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहेगा—इसी विश्वास के साथ हम इस अंक को आपके समक्ष समर्पित करते हैं।

संपादक

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय 6

'पूस की रात' का प्रतिपाद्य 11
प्रो. (डॉ.) कैलाश पति गोस्वामी

दुष्यंत कुमार और उनकी ग़ज़ल विधा 13
रतन लाल तेली

Big Data Analytics for Real-Time Decision-Making in Large-Scale Information Systems 20
Reena Rani
Prof Rajesh Gargi

अनामिका के काव्य में स्त्री-अस्मिता, प्रतिरोध और लोक-संवेदना 28
डॉ. अफीफा फातिमा शेक

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन यात्रा का ऐतिहासिक अनुशीलन 32
डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'

कुमाऊँ के प्रसिद्ध न्याय के देवता-गोल्ज्यू या गोलू 42
सत्यवीर खनका
डॉ. नवीन चंद रजवार

BRICS 2026 : नवाचार, सहयोग और वैश्विक परिवर्तन एक मूल्यांकन 47
डॉ. सुनील कुमार तिवारी

शंबूक : वर्णव्यवस्था, प्रतिरोध और मानवीय गरिमा का अध्ययन 52
डॉ. मुक्तारानी कंचकार

क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपम् - आकृतिगणत्वस्य पाणिनीयव्याकरणे अध्ययनम् 55
Dr Bindhya K S

'अंधायुग' गीति-नाट्य की मूल कथ्य और लक्ष्य 61
डॉ. सिराजुल हक

भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' में मानवीय मूल्य 68
डॉ. वी. गीता मालिनी

The Arctic Sea Route And Climate Change: A New Maritime Alternative In An Era of Geopolitical Uncertainty 72
Dr. Kundan Kr. Singh
Aqib Murtaza

The Olympic Movement: Origins, Evolution, Governance, Controversies, and Global Impact 84
Dr. Arun Kumar
विश्व हिंदी साहित्य में विकलांग विमर्श 96
शरद कुमार मिश्रा
धूमिल की कहानियों में मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सरोकार 101
विनय कुमार विश्वकर्मा
व्यंग्य : जीवन मूल्यों के संवर्धन की प्रेरक विधा 109
डॉ. रमणीक मोहनी
रीतिकालीन कविता और सांस्कृतिक चेतना 113
पूजा तिवारी
A Study Of: Consumer Behaviour Of Teenagers In Response To Sales Promotions 117
Dr. Ajay Kumar Barnwal
Satyarthy Gyan Prakash
हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित दलित स्त्री का दमन 131
विनय चंद्र पांडेय
प्राचीन चिकित्सा विज्ञान और पर्यावरणीय कारक का सहसंबंध 135
विशाल सोलंकी
समकालीन परिप्रेक्ष्य में लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अंतर्संबंध : परंपरा, परिवर्तन और डिजिटल संरक्षण की चुनौतियाँ 141
किशन लाल गुर्जर
डॉ. शहनाज़ पठान
असम की लोक संस्कृति के विविध आयाम 149
डॉ. अनिरुद्ध बायन
हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार 153
डॉ. नीलम सेठी
डॉ. अजयपाल सिंह
पवन पहाड़िया का रचना संसार : एक परिचयात्मक अध्ययन 165
रामनिवास
डॉ. भूपेश
राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी कवि प्रदीप का व्यक्तित्व और कृतित्व 171
डॉ. ज्योति सिंह
हाशिएकृत समाज की समस्याएं 'मैं पायल' उपन्यास के संदर्भ में 177
आर्या कृष्णन
Dr. Sreeja G R
प्रेमचंद युगीन उपन्यास : सामाजिक विषमता का आईना (प्रेमचंद के विशेष संदर्भ में) 179
Dr. Gourav Singh

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रम का अध्ययन 183
विजय शर्मा
डॉ. रितेश कुमार चौरसिया
Carbon Nanotubes in Nanoscience: Structural Characteristics, Electronic Properties and Applications in Nanoscale Devices 189
Dr. Jyoti Mishra

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

'पूस की रात' का प्रतिपाद्य

प्रो. (डॉ.) कैलाश पति गोस्वामी
डी.ए.वी.स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सीवान (बिहार)-841226

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के महान कथाकार और उपन्यासकार हैं। इनकी गिनती विश्व साहित्य की विभूतियों में होती है। प्रेमचंद विशेष रूप से भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आन्दोलन की उपज और अभिव्यक्ति थे। इन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक और यथार्थ रूपों से जोड़ने और देखने का कार्य किया और हिन्दी कहानी को एक नया मोड़ दिया है। 'पूस की रात' इनकी एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त उत्पीड़न, किसानों की बदहाली, गरीबी, शोषित जनता के दुख-दर्द, महाजन-साहूकार की मनमानी आदि कुरीतियों को दर्शाने का प्रयास किया है।

इस कहानी का कथ्य किसान-जीवन से संबंधित है। यह इनकी श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाने वाली कहानी है। इस कहानी में प्रेमचंद ने बतलाया है किस तरह भारतीय किसान जी-तोड़ मेहनत करने के बाद भी कर्ज़ के तले दबे रहता है और हमेशा अभावों में ही उनका जीवन व्यतीत होता है। इसके विपरीत सेठ-साहूकार बिना मेहनत-मज़दूरी के ही आराम से ज़िन्दगी जीता है। जी-तोड़ मेहनत और लगातार शोषण से भारतीय किसान का किसानी से मोहभंग होने लगता है। प्रेमचंद का उद्देश्य है कि इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों में ज़मींदारी प्रथा जैसी कुरीति तथा किसानों की दयनीय दशा का समाधान हो सके।

ध्यातव्य हो कि यह कहानी सन् 1930 के आसपास लिखी गई। उस समय देश पराधीन था और यहाँ की जनता स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत थी। इस संघर्ष में भारतीय मजदूर और किसान भी शामिल थे और अपने अधिकारों के लिए भी लड़ रहे थे। रचनाकार या लेखक किसी उद्देश्य से ही प्रेरित होकर ही रचना करता है। रचनाकार जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर रचना करता है, वही रचना का प्रतिपाद्य कहलाता है।

डॉ० रामविलास शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए 'प्रेमचंद और उनका युग' में कहा है कि 'उनकी काफी कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें ग्रामीण कथाओं का रस और उनकी शैली अपनाई गई है। आमतौर से उनकी कहानियों में जो एक ठेठपन है, पाठक के हृदय में अपनी बात को सीधे उतार देने की जो ताकत है, उन्होंने हिन्दुस्तान के अक्षय ग्रामीण कथा भंडार से सीखी है। प्रेमचंद की कहानियाँ केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं लिखी गई। उन सभी में कोई-न-कोई सुझाव, जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण, किसी समस्या का हल जरूर मिलता है। यह उनकी खूबी है कि सारी बात वह ऐसा चित्र खींचकर कहते हैं कि कहानी में उपदेशकों का रूखापन नहीं आने पाता। उनके चित्र बड़े ही सजीव होते हैं, मानो घटना आँखों के सामने हो रही हो.....'

जिस समय यह कहानी लिखी गई, उस समय देश में ज़मींदारी प्रथा थी। किसान अपनी उपज का एक बड़ा हिस्सा महाजनों एवं ज़मींदारों को लगान और मालगुज़ारी के रूप में चुका देता था। और एक बार जब किसान कर्ज़ के भंवर में फँस जाता था तो फिर वह आसानी से उससे उबर नहीं पाता था। इस कहानी का नायक हल्कू भी एक ऐसा ही अभागा किसान

है, जो आजीवन मेहनत-मज़दूरी करने के बाद सदा अभाव में रहकर साहूकारों को ब्याज देता रहता है, फिर भी वह उससे मुक्त नहीं हो पाता।

यहाँ तक कि पूस माह की कड़ाके की ठंड से बचने के लिए उसके पास कम्बल भी नहीं होता है। कहानी की दूसरी पात्रा उसकी पत्नी मुन्नी है जो पूस की हाड़ कँपाने वाली ठंड से बचने के लिए साल भर से थोड़ा-थोड़ा पैसा बचाकर किसी तरह तीन रुपये कम्बल खरीदने के लिए रखती है, लेकिन वह भी 'सहना' को ब्याज के रूप में देना पड़ जाता है। हल्कू अपनी फसल की रखवाली के लिए रात में खेत पर जाता है। हड्डी को गला देने वाली ठंड से बचने के लिए उसके पास कम्बल के नाम पर एक फटी हुई चादर मात्र है। ऐसे में नीलगायों का झुण्ड फसल को बर्बाद कर देता है। उसका साथी (एकमात्र साथी) जबरा कुत्ता भी एक समय के बाद नीलगायों का सामना नहीं कर पाता। हल्कू ठंड से परास्त होकर भाग्य के चक्र में बँधा हुआ बैठा रहता है।

व्यक्ति अपने उज्ज्वल भविष्य की आस में ही कष्ट को सहता है। हल्कू भी इसी आशा में कष्ट सहता है, लेकिन अंततः वह निराश हो जाता है। वह इसे भाग्य का खेल मानता है। किसानी पर से हल्कू का विश्वास उठ जाता है। अपनी फसल के नष्ट होने से हल्कू को चिंता नहीं होती, बल्कि अब कड़ाके की ठंड की रात में खेत की रखवाली करने से छुटकारा पाने के कारण अंदर से प्रसन्नता होती है। यह प्रसन्नता उसके अभाव, कष्ट, शोषण और दमन से क्षणिक मुक्ति के लिए है। यह वह मानसिकता है, जहाँ अच्छे भविष्य की आशा बिल्कुल समाप्त हो जाती है। यहाँ एक विवशता है जो विकल्प को जन्म देती है। वह है किसानी से मजदूर बनने की, क्योंकि हल्कू का मानना है कि मजदूरी से अपना भरण-पोषण किसी तरह चल जाएगा। सहना से कर्ज़ तो नहीं लेना पड़ेगा।

यहाँ एक बात गौर करने लायक है कि प्रारंभ में प्रेमचंद अपनी आरंभिक रचनाओं में किसी समस्या का कोई-न-कोई आदर्शवादी हल पेश करते थे, लेकिन बाद में आदर्शवाद से उनका विश्वास उठ गया, और उसकी जगह यथार्थवाद ले लिया। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह मानने का प्रयास किया है कि किसी समस्या का कोई अस्थायी समाधान करने के बदले उसे पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत करना ही रचनाकार के लिए पर्याप्त है।

'पूस की रात' की यह ठंडी रात प्रतीकात्मक होती है। पूस की गहरी अँधेरी रात की तरह किसान का जीवन भी है। आशा रूपी अलाव भी राख में बदल चुका है, जहाँ सक्रियता रूपी कोई चिंगारी भी नहीं बची है। इस कहानी में खेत जीवन का प्रतीक है, जिसकी मेहनत रूपी फसल को महाजन और शोषक रूपी नीलगायें नष्ट कर देती हैं। इस प्रकार, इस कहानी में निराशा और अंधकार ही व्यक्त हुआ है, और इससे मुक्ति का प्रयास ही कहानीकार का अभीष्ट है।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

दुष्यंत कुमार और उनकी ग़ज़ल विधा

रतन लाल तेली
सहायक आचार्य (रवींद्रनाथ टेगोर महाविद्यालय कपासन)

शोध सारांश : दुष्यंत कुमार आधुनिक हिंदी साहित्य के सबसे प्रभावशाली, प्रगतिशील कवि और प्रसिद्ध ग़ज़लकार हैं, जिन्होंने अपनी बेबाक रचनाओं से सामाजिक विसंगतियों और राजनीतिक जड़ता और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाई। 'साये में धूप' उनका कालजयी ग़ज़ल संग्रह है, जो आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष और व्यवस्था के खिलाफ़ आक्रोश को आवाज़ देता है। जुनून व क्रांति की ज्वाला को जगाने वाली यह पंक्तियां देखिए -

"मेरे सीने में नहीं, तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।" पृष्ठ संख्या - (30)

प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी के लोकप्रिय ग़ज़लकार ' दुष्यंत कुमार' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक गुणात्मक शोध पत्र है, तथा जो दुष्यंत कुमार जी के ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' का संक्षिप्त विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द : 'दुष्यंत कुमार', 'साये में धूप', ग़ज़ल, आम आदमी, शेर, सामाजिक, साहित्य, दर्पण, आवाज़, राजनीतिक, संघर्ष, पीड़ा, व्यवस्था, प्रगतिशील, नयी कविता, व्यंग्य।

प्रस्तावना : 'दुष्यंत कुमार' हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के 'नयी कविता' और 'जनवादी कविता' आन्दोलन के प्रमुख कवि है और उन्हें 20 वीं सदी का सबसे सशक्त आधुनिक हिंदी कवियों में से एक माना जाता है। जिन्होंने हिंदी ग़ज़ल को नई ऊंचाइयां प्रदान की है। 'दुष्यंत कुमार' ने अपने लेखन की शुरुआत 'नई कविता' से की थी। इसके बाद उन्होंने हिंदी ग़ज़ल की विधा में ऐसे मानक स्थापित किये कि जिसमें आम आदमी की पीड़ा, सामाजिक विसंगतियों और व्यवस्था के ख़िलाफ़ आक्रोश व्यक्त किया है, जिससे उनकी ग़ज़लें बेहद लोकप्रिय हो गई है।

ग़ज़ल का अर्थ ग़ज़ल उर्दू और हिंदी की एक काव्य विधा है, जिसमें प्रेम, विरह, सामाजिक और दार्शनिक विषयों को आलंकारिक और भावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया जाता है, ग़ज़ल में प्रत्येक शेर स्वतंत्र होता है, लेकिन पूरे ग़ज़ल में एक समान विषय या भाव होता है। दुष्यंत कुमार अपने युग के सर्वाधिक जनप्रिय कवि रहे हैं, कवि दुष्यंत कुमार की कविताओं में सामाजिक यथार्थ का जो बहुआयामी रूप निहित है, वह उन्हें कबीर की परंपरा का संवाहक बनाता है, उनकी ग़ज़लों में कबीर जैसा अक्खड़पन, बेधड़कपन, दिनकर जैसी राष्ट्रीयता, आजादी के संघर्ष के समय राम प्रसाद बिस्मिल जैसे शायर रहे, उन्होंने कहा था। "सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है ज़ोर कितना बाजू - ए - क़ातिल में है।" आदि जैसे भाव व शैली उनकी ग़ज़लों में गूंजती है। दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल को रूमानी मिज़ाज से बाहर निकालकर आम आदमी की आवाज़ बनाया। ग़ज़ल की विधा को हिंदी में प्रतिष्ठित करने का श्रेय अकेले दुष्यंत कुमार को ही जाता है। उनके कई शेर साहित्यिक और राजनीतिक जमावड़ों में लोकोक्तियों की तरह दुहराए जाते है।

व्यक्तित्व व कृतित्व : दुष्यंत कुमार हिंदी के प्रसिद्ध आधुनिक ग़ज़लकार थे। हिंदी साहित्य में ग़ज़ल को आम आदमी की आवाज़ बनाने वाले दुष्यंत कुमार का व्यक्तित्व बेहद सहज, विद्रोही और यथार्थवादी था। मनमौजी, संवेदनशील और

प्रगतिशील विचारधारा वाले रचनाकार थे। वे सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार और आम आदमी के शोषण के ख़िलाफ़ मुखर थे। उनके लेखन में व्यवस्था के खिलाफ़ आक्रोश, सामाजिक चेतना और क्रांति से भरा था, वह उनके साहसी और निडर व्यक्तित्व का परिचायक है, उन्होंने हिंदी साहित्य में ग़ज़ल को एक नई ऊंचाई और तेवर प्रदान किए हैं।

दुष्यंत कुमार का पूरा नाम 'दुष्यंत कुमार त्यागी' था, दुष्यंत कुमार का जन्म सन् 1933 में, राजपुर नवादा गांव बिजनौर, (उत्तर प्रदेश) और निधन सन् 1975 में हुआ था।

प्रमुख रचनाएं : 'सूर्य का स्वागत', 'आवाज़ों के घेरे', 'साये में धूप' (सन् 1975 में, सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल संग्रह और यह रचना हिंदी ग़ज़ल के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जाती है।)

'जलते हुए वन का वसंत' (काव्य), 'एक कंठ विषपायी' (गीति - नाट्य), 'छोटे - छोटे सवाल', 'आंगन में एक वृक्ष', 'दोहरी ज़िंदगी' (उपन्यास)

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार एक सच्चे साहित्यकार का कर्तव्य समाज के प्रति होता है, और वह अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने का और जन कल्याण का संदेश देना चाहता है। ठीक उसी प्रकार दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में तत्कालीन समाज की परिस्थितियों, भ्रष्टाचार, ग़रीबी, राजनीतिक अव्यवस्था, अन्याय, अत्याचार, शोषण, निराशा व हताशा तथा आम आदमी के दुख दर्द, पीड़ा, घुटन, संत्रास आदि का यथार्थ चित्रण है, उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना है बल्कि जनता की पीड़ा की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। मैथिलीशरण गुप्त ने साहित्य के उद्देश्य के बारे में कहा है। जैसे -

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।" (95)

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य निम्न है– दुष्यंत कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना।, दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल विधा की मुख्य विषय वस्तु पर प्रकाश डालना, दुष्यंत कुमार की सुप्रसिद्ध कृति 'साये में धूप' नामक रचना पर विचार प्रस्तुत करना।

साहित्यावलोकन : हिंदी के प्रसिद्ध ग़ज़लकार ने अपनी ग़ज़लों को रूमानी मिज़ाज से बाहर निकाल कर आम आदमी की आवाज़ बनाया। 'दुष्यंत कुमार' को आधुनिक हिंदी साहित्य का ग़ज़ल प्रवर्तक भी माना जाता है, जिन्होंने अपनी ग़ज़लों में जनजीवन, सामाजिक यथार्थ और संघर्ष को आईना बना दिया और आम आदमी की पीड़ा, निराशा व हताशा, भ्रष्टाचार ग़रीबी, शोषण, राजनीतिक अव्यवस्था, अवसरवाद, सामाजिक विसंगतियों एवं विडंबनाओं का वास्तविक चित्रण अपनी रचनाओं में किया, उनकी ग़ज़लें अन्याय अत्याचार तथा शोषण के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने और क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है, वस्तुतः दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें साहित्य नहीं बल्कि अपने समय का सच्चा यथार्थ और आम आदमी की बुलंद आवाज़ है।

शोध का विषय चुनने का कारण इस प्रकार है– साहित्य समाज का दर्पण होता है। सच्चा साहित्यकार समाज की वास्तविक स्थितियों का चित्रण करता है। दुष्यंत कुमार की कविताओं के विषय तत्कालीन परिस्थितियों से संबंधित है, उनकी रचनाओं में व्यवस्था से मोहभंग, झुंझलाहटे, नाराज़गी, क्रोध, विरोध,असंतोष आशाओं और उम्मीदों का टूटना, लोक सौंदर्य का चित्रण, प्रेम की कोमलकांत अभिव्यक्ति और शासक वर्ग के ख़िलाफ़ विद्रोह आदि देखने को मिलता है, उनके संपूर्ण साहित्य में आम आदमी से जुड़े मुद्दे केंद्र में थे, यही प्रमुख कारण रहा है, जिसने मुझे दुष्यंत कुमार पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों को पढ़ने से मेरे मन में शोध विषयक रुचि उत्पन्न हुई, अतः इसलिए मैंने इस विषय का चयन किया है। दुष्यंत कुमार के बारें में निदा फ़ाज़ली ने एकदम सही लिखा था। "दुष्यंत की नज़र उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराज़गी से सजी बनी है, यह गुस्सा और नाराज़गी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मो के खिलाफ़ नए तेवरों की आवाज़ थी, जो समाज में मध्यमवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमाइंदगी करती है।"

मूल आलेख : दुष्यंत कुमार हिंदी ग़ज़ल के युग पुरुष माने जाते हैं। जिनकी रचनाओं ने ग़ज़ल को महज़ प्रेम प्रसंगों

से निकालकर आम आदमी के दर्द, व्यवस्था परिवर्तन और क्रांति की आवाज़ बनाया, उनकी सबसे प्रसिद्ध ग़ज़लें जो आज भी हर आंदोलन और जनसभा में गूंजती है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जिस प्रकार समाज में समयानुसार सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की प्रक्रिया सतत् चलती रहती है, उसी प्रकार साहित्य भी उन परिवर्तनों से प्रभावित होकर नए रूपों में अभिव्यक्त होता है। हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न साहित्यकारों ने समाज के विविध पक्षों को विभिन्न विधाओं जैसे - गीत, ग़ज़ल, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया है। दुष्यंत कुमार ऐसे ही रचनाकार हैं, जिन्होंने साहित्य को केवल भावों की अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक चेतना का माध्यम बनाया वे प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि थे, जिन्होंने समाज की घटनाओं पर गहन दृष्टि रखते हुए उन्हें अपनी रचनाओं में जीवंत रूप दिया, उन्होंने मेहनतकश वर्ग की पीड़ा को केवल देखा ही नहीं बल्कि उसे अनुभव कर अपने काव्य का केंद्रीय विषय बनाया दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों के बारें में धर्मवीर भारती ने दुष्यंत स्मृति विशेषाकं में लिखा है

"उनकी ग़ज़लें एक ऐसे आदमी की पीड़ा भरी आवाज़ थी, जो अपने इस मुल्क को अपनी इस दुनिया को बेहद प्यार करता रहा है, जो इसके बेहतर सपनों और उजले भविष्य के प्रति अखंड आस्थावान रहा है। भविष्य के सपने में जी जान से जिया है, जिसने देखी है, बेबसी और लाचारी से एक - एक कर सपनों को बिखरते हुए और उसका दर्द पूरी शिद्दत से महसूस करते हुए उसने चिर परिचित बिंबो को एक नए संदर्भ में पुनजीवित कर दिया, लेकिन न तो छद्म आशावाद में पलायन किया और न कोई बेईमान किस्म की झूठी शब्दाडांबरमयी में आक्रामकता में सुविधाओं और पद प्रतिष्ठा से लैस चंद आलोचक एक झूठा मुखौटा लगाकर एक बने बनाये पूर्वाग्रह के साथ जो एक नकली विद्रोही साहित्य चिंतन और उस अद्‌भुत तीसरे दर्जे का घटिया काव्य जाल पाठकों पर थोप रहे हैं। उसे कृत्रिम काव्य संसार में एक प्रामाणिक दर्द भरी आवाज़ थी इन गजलों की।"

'साये में धूप' रचना का संक्षिप्त विश्लेषण : हिंदी कविता की परंपरा में 'साये में धूप' जैसा ग़ज़ल संग्रह विशेष महत्व रखता है। जहां एक ओर ग़ज़ल की पहचान श्रृंगार और प्रेमाभिव्यक्ति तक सीमित थी, वहीं दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों को जनता की आवाज़ बना दिया, उन्होंने ग़ज़ल को भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, राजनीति की विफलता और सामाजिक विषमता अन्याय के विरुद्ध संघर्ष एवं जन आवाज़, तत्कालीन शासन व्यवस्था का तानाशाही रवैया, आम आदमी की पीड़ा व संघर्ष, स्वातंत्र्य, दमन,भय, निराशा, हताशा, देशप्रेम, युद्ध, बुद्धिजीवियों की दायित्वहीनता और सामाजिक बुराइयों के प्रति आक्रोश एवं उनकी ग़ज़लों में आम आदमी के सुख - दुख, आशा - निराशा, स्वार्थ, मोहभंग, फटेहाली, राजनेताओं के झूठे वादे, भाई भतीजावाद, अवसरवादिता की मुखर अभिव्यक्ति है। 'साये में धूप'आज भी हिंदी साहित्य की सबसे अधिक प्रसिद्ध कृतियों में गिनी जाती है, उनकी रचनाएं सामाजिक चेतना और राजनीतिक जागरूकता से भरी हुई है। सन् 1975 में प्रकाशित 'साये में धूप' ग़ज़ल संग्रह ने हिंदी जगत में तहलका मचा दिया, इससे पहले हिंदी में ग़ज़लें लिखी जाती थी, लेकिन वह आम जनता के सरोकारों से इतनी गहराई से जुड़ी नहीं थी, दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल की भाषा को सरल बनाया और उसे लोकतांत्रिक संघर्ष का शस्त्र बना दिया। 'साये में धूप' देश की आजादी के दो दशकों के बाद के भारत के सामाजिक और राजनीतिक दौर को दर्शाती है। इन ग़ज़लों में सरकार के प्रति निराशा और रोष दिखेगा, जो ग़रीब और पिछड़े वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं आजादी के इतने वर्षों बाद भी जब ग़रीब और शोषित वर्ग के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया और उसकी दशा वैसी ही रही, तब बहुत से लेखकों ने अपने - अपने तरीके से इस बात को उजागर किया और उस वर्ग की आवाज़ को मुखर किया। पृष्ठ संख्या - (62 तथा 63)

इस ग़ज़ल संग्रह में सामाजिक यथार्थ का चित्रण, मानवीय शोषण, उत्पीड़न, अभाव, बेबसी को अभिव्यक्त करके दुष्यंत कुमार ने आजादी के पश्चात के 'चिथड़े हुए हिंदुस्तान' की सच्ची तस्वीर उकेरी है। आपातकालीन परिस्थिति एवं तत्कालीन सरकार की नीतियों की आलोचना करने का साहस उस समय दुष्यंत कुमार कर पाए, वह बड़े - बड़े दिग्गज कवि नहीं कर पाये। वे अपनी ग़ज़लों द्वारा बड़ी खूबसूरती से तत्कालीन सरकार की नाकामी को ज़ाहिर कर देते हैं। दुष्यंत कुमार ने जिस

बेख़ौफ और बेबाक तरीके से आलोचना की है, वह अतुलनीय है, उनकी ग़ज़लों में क्रांति का स्वर मुखरित है। दिशाहारा को दिशा दिखाती है और भटकों को राह दिखाती हैं, उनकी ग़ज़लों में इतना आकर्षण है कि नेता, विद्यार्थी एवं फ़िल्म लेखक आदि सभी उनके शेरों को अपनी बात में शामिल करते हैं।

राजनीति व्यवस्था और भ्रष्टाचार पर कटाक्ष : आजादी के बाद राजनेताओं ने आम जनता से जो बड़े - बड़े वादे किए थे, वह सत्ता में आने के बाद पूरे नहीं हुए, दुष्यंत जी ने इन्हीं झूठे वादों और व्यवस्था की विफलता को अपनी ग़ज़लों में उतारा है। समसामयिक परिवेश का वास्तविक चित्रण देखिए –

"कहां तो तय था चिरागां हर एक घर के लिए,
कहां चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहां दरख़्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहां से चले और उम्र भर के लिए।" पृष्ठ संख्या - (13)

यह ग़ज़लें उस समय की राजनीति और व्यवस्था की असफलताओं को बखूबी उजागर करती है। जैसे उनका एक शेर देखिए -

"कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं,
गाते - गाते लोग चिल्लाने लगे हैं। पृष्ठ संख्या - (14)

देश की दुरवस्था का यथार्थ वर्णन : दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों में देश की दुर्दशा का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। देश में ग़रीबी, भूखमरी, बेरोजगारी भ्रष्टाचार, अनीति, जातिवाद, सांप्रदायिकता, देश विभाजन आदि स्थितियों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। वे देश की तत्कालीन परिस्थितियों से नाराज़ थे।

आम आदमी की पीड़ा संघर्ष और लाचारी

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा और संघर्ष, मज़बूरी, फटेहाली की स्थिति और उनके जीवन की जटिलताओं का वर्णन है, उनकी ग़ज़लों में शोषित, वंचित और आम आदमी की आवाज़ मुखर होती है, उनके शेरों में व्यवस्था से मोहभंग और संघर्ष की ललक साफ़ झलकती है। जैसे आम आदमी की पीड़ा एवं व्यवस्था के ख़िलाफ़ विद्रोह का उदाहरण देखिए -

"आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।" पृष्ठ संख्या - (30)

ग़रीबी और दमन के कारण आम आदमी इतना लाचार हो चुका है, कि वह अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाने से भी डरता है। वह परिस्थितियों से समझौता कर लेता है। जैसे यह शेर उदाहरण के रूप में दृष्टत्व है –

"न हो कमीज़ तो पांवों से पेट ढंक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब है इस सफ़र के लिए।" पृष्ठ संख्या (13)

यह शेर दिखाता है कि आम आदमी बुनियादी सुविधाओं जैसे (कपड़े) के अभाव में भी चुपचाप जीना सीख जाता है। सत्ता के लिए ऐसे सीधे और दबे - कुचले लोग बहुत मुनासिब अनुकूल होते हैं क्योंकि वे विद्रोह नहीं करते। आम आदमी की पीड़ा, ग़रीबी, बेकारी, भूखमरी, भ्रष्टाचार, जैसी पीड़ा झेल रहा है। उनकी ग़ज़लों में निराशा, संघर्ष, बेचौनी, घुटन आदि का चित्रण है, उनकी ग़ज़लों में किसान, मजदूर, शोषित वर्ग और आम आदमी के जीवन की कड़वी सच्चाई स्पष्ट दिखाई देती है जैसे एक उदाहरण देखिए -

" मैं जिसे ओढ़ता - बिछाता हूं, वो ग़ज़ल आपको सुनाता हूं।" पृष्ठ संख्या-(62)

इस प्रकार दुष्यंत जी की ग़ज़लें आम आदमी की पीड़ा संघर्ष से युक्त थी। इसी संदर्भ में डॉ. नगेंद्र ने उनकी ग़ज़लों के बारे में लिखा है– "इधर हिंदी ग़ज़लों का दौर चला वैसे हिंदी में छिटपुट ग़ज़लें पहले भी लिखी जाती रही, किंतु दुष्यंत

कुमार के ग़ज़ल संग्रह ' साये में धूप' की लोकप्रियता ने बहुत से कवियों विशेषतया छंदधर्मी कवियों को इधर उन्मुख कर दिया। कुछ ग़ज़लें निश्चय ही बहुत अच्छी आयी। जिनमें चमत्कारिकता की जगह सत्य की सहजता दिखाई पड़ती है और जिसमें हिंदीपन भी लक्षित होता है, किंतु काफी ग़ज़लें ऐसी है जो अभ्यास से लिखी जा रही है या तो उनमें जनवादी तेवर की सपाट चोट है या विरोधाभासी ढंग का चमत्कार है।'' पृष्ठ संख्या- (661)

यथार्थ बोध और सामाजिक चेतना : दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें समय की परिस्थितियों की सच्चाई बयां करती हैं, दुष्यंत कुमार वंचित व शोषित वर्ग के पक्ष में लिखते हुए समाज में बदलाव के लिए वैचारिक क्रांति का आह्वान करते हैं उन्होंने राजनीति भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ़ मुखर होकर लिखा आपातकाल के दौर की हताशा और सत्ता के प्रति तीखे व्यंग्य को हिंदी साहित्य में पहली बार ग़ज़ल विधा के माध्यम से मुखरता से प्रस्तुत किया है, उन्होंने ग़रीबी, भ्रष्टाचार, भूखमरी, असमानता, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है, वे अपने दौर की सामाजिक विसंगतियों को महसूस करते थे, और अपनी रचनाओं में उसे शिद्दत से चित्रित करते थे, कवि सामाजिक क्रांति का पक्षधर भी है। उदाहरण देखिए –

"एक खंडहर के हृदय - सी एक जंगली फूल - सी,
आदमी की पीर गूंगी ही सही, गाती तो है।
इस नदी की धारा से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।" पृष्ठ संख्या - 16

उनकी ग़ज़लों में वास्तविक एवं यथार्थ का चित्रण चित्रित है, बुद्धिजीवियों की ख़ामोशी पर दुष्यंत कुमार ने लिखा है जैसे उदाहरण देखिए -

"यहां तो सिर्फ़ गूंगे और बहरे लोग बसते है,
ख़ुदा जाने यहां पर किस तरह जलसा हुआ होगा?"

जन जागरण और विद्रोह का स्वर : कवि शोषित और पीड़ित जनता के साथ खड़े हुए है, और उनमें सोई हुई संवेदना को जगा कर अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने का हौंसला देता है। यह रचना लोगों का हौंसला बढ़ाती है। जनता में सोये हुए विद्रोह और बदलाव की ज्वाला को भड़काती है उनकी पंक्तियों में जनता के दर्द और संघर्ष का प्रतीक है जैसे–

"हो गई है पीर पर्वत - सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।"

व्यंग्यात्मक शैली, क्रांतिकारी एवं प्रेरणादायी गजलें :

वास्तव में उनकी ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष एवं परिस्थितियों से जूझते रहने का चित्रण है। देश और समाज की हर समस्या पर उनकी निगाह थी, वह समाज में छायी चुप्पी के प्रति हमेशा सत्य दिखे वह हमेशा इसे तोड़ने की प्रेरणा देते दिखाई पड़े अन्याय और अत्याचार शोषण एवं संकट के प्रति चुप रहने वाला समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता ऐसा समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता वह इसे बखूबी जानते और कहते थे कैसे उनकी ग़ज़लों ने समाज को क्रांति और व्यवस्था परिवर्तन की राह दिखाई देती है उनकी यह पीड़ा ग़ज़लों में तीव्र आक्रोश एवं व्यंग्यात्मक शैली एवं क्रांतिकारी एवं प्रेरणादायी ग़ज़लों के रूप में चित्रित है, जैसे एक उदाहरण देखिए -

"सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश यह है कि यह सूरत बदलनी चाहिए।
कैसे आकाश में सुराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।
एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लो दोस्तों,

इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।
वह आदमी नहीं मुकम्मल बयान है,
माथे पर उसके चोट का गहरा निशान है।" पृष्ठ संख्या - (30 व 16)

सरल, सहज, प्रभावशाली भाषा शैली से युक्त ग़ज़लें

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों की भाषा शैली मूलतः आम आदमी की ज़ुबान है, जिसमें उर्दू के सहज शब्दों और हिंदी खड़ी बोली का एक अत्यंत संजीव और स्वाभाविक मिश्रण दिखाई देता है, उनकी भाषा हृदय पर चोट करती है भाषा को धारदार और प्राणवान बनाने के लिए दुष्यंत कुमार ने कहीं - कहीं लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है, उनकी भाषा सरल, सहज, प्रभावपूर्ण और प्रभावशाली से युक्त है, उनकी विद्रोही और आक्रामक शैली है। उनकी ग़ज़लों में तत्कालीन भ्रष्ट व्यवस्था, राजनीति और सामाजिक असमानता के ख़िलाफ़ एक खुला विद्रोह एवं तीव्र आक्रोश छलकता है, उनकी भाषा शैली की मारक क्षमता को इन शेरों के माध्यम से बखूबी समझी जा सकता है। जैसे एक शेर देखिए -

"तुम्हारे पांवों के नीचे कोई ज़मीन नहीं,
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यक़ीन नहीं।" पृष्ठ संख्या - (9)

संक्षेप में कहे तो दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल का मिज़ाज ही बदल दिया, उनकी अनूठी भाषा शैली के कारण ही आज उनके शेर राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में नारों और लोकोक्तियों की तरह इस्तेमाल किए जाते हैं।

इन्होंने अपनी कविताओं में जीवन चेतना को छोटे-छोटे खंडों में उभारने का प्रयास किया है और कई में जीवन की जटिलताओं की गहरी पकड़ है इनमें कल्पना और अनुभूति पर्याप्त मात्रा में है उनकी वाणी में शक्ति और शैली में नवीनता है इनकी काव्यगत विशेषताएं इन्हीं के शब्दों में–

"घायलों की पीड़ितों की गूंज है वातावरण में।
एक मंदिर - सा बना रणक्षेत्र में इसका पुजारी।।
क्रंदनों कोलाहलों के बीच यह आवाज़ भी है।
अलग सबसे प्रबल सबसे मर्मभेदी और भारी।।'' पृष्ठ संख्य (392)

उनकी कविताओं में सर्वहारा वर्ग को क्रांति के लिए प्रेरित करती हैं वे चाहते हैं, कि सभी लोग संगठित होकर मिलकर क्रांति करें, जिससे सत्ता वर्ग अपनी अन्यायकारी, दमनकारी और स्वार्थ लोलुप प्रवृत्तियों को त्याग कर भारतीय जनता के हितों को सोचने पर मजबूर हो जाये। भारतीय राजनीतिक जनता से किए गए वादों पर अमल करे, यह क्रांति ऐसी होनी चाहिए कि इस क्रांति में हर सड़क, हर गली में, हर नगर में, यहां तक की हर वर्ग भी शामिल हो और अपनी आवाज़ उठाएं। इस प्रकार उनकी ग़ज़लों में निराशा के बीच भी कवि बदलाव और क्रांति की लौ जलाए रखना चाहता है। यह ग़ज़ल संग्रह लोगों को अपनी स्थिति पर चुप रहने के बजाय व्यवस्था के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने और क्रांति व बदलाव लाने की प्रेरणा देता है।

समकालीन प्रासंगिकता : 'साये में धूप' आज भी उतनी ही प्रासंगिकता रखती हैं, जितनी आपातकाल (1975) के समय रखती थी। आज भी जब युवा बेरोजगारी, भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक तानाशाही के खिलाफ़ आवाज़ उठाते हैं, तो दुष्यंत कुमार के शेर और ग़ज़लें उनके नारों और पोस्टरों की ज़ुबान बनते हैं, इस प्रकार दुष्यंत कुमार का यह ग़ज़ल संग्रह हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है, और दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है क्योंकि वह केवल कविता नहीं है, बल्कि अन्याय के ख़िलाफ़ एक बुलंद आवाज़ है, उनकी ग़ज़लें आज भी युवाओं में बहुत लोकप्रिय है। सड़क से संसद तक उनकी ग़ज़लें गूंजती हैं। दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल विधा को एक नया आयाम दिया और उसे युवाओं तक पहुंचाया, उनकी कविताएं हमें सोचने पर मजबूर करती हैं, और समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती हैं उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन न मानकर जन पीड़ा का माध्यम मानने वाले उनके दृष्टिकोण और वर्तमान समय में उनकी ग़ज़लें काफी प्रामाणिक, सटीक और प्रासंगिक है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो उनकी ग़ज़लों में परिलक्षित होता है। दुष्यंत कुमार जी की

ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना को देखकर डॉ. रणजीत लिखते हैं "प्रगतिशील जनवादी भाव और विचार सूत्रों से संगृहीत इन ग़ज़लों के अनेक शेर सूक्तियों और मुहावरों की तरह प्रबुद्ध लोगों की जुबान पर चढ़ जाते हैं। दुष्यंत कुमार की ग़ज़ले जनता को अन्याय के विरुद्ध जन जागरूकता एवं परिवर्तन के लिए प्रेरित करती हैं " जैसे एक ग़ज़ल का उदाहरण देखिए–

"अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कंवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।" पृष्ठ संख्या - (19)

निष्कर्ष : दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों को पारंपरिक रूमानियत से निकालकर आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि का विरोध किया, और उनकी गज़लों में राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक असमानता के खिलाफ़ विद्रोह और बदलाव की पुकार है, व्यवस्था में एक सकारात्मक क्रांति लाने की ज़बरदस्त ज़िद्द (युग - बोध) को दर्शाती हैं। दुष्यंत कुमार की भाषा में व्यंग्य और आक्रोश एवं क्रांति के स्वर हैं, उनकी भाषा सरल, सहज, प्रभावपूर्ण, व्यंग्यपूर्ण, संप्रेषणीयता, स्पष्टता एवं चुभती हुई भाषा है, उन्होंने उर्दू के भारी भरकम शब्दों के स्थान पर आसान शब्दों का इस्तेमाल कर ग़ज़ल को जन - जन तक पहुंचाया अतः इस प्रकार उनकी ग़ज़लों में आम आदमी के दुख, संघर्ष, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार का विरोध, सामाजिक यथार्थ और राजनीतिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य एवं जन आक्रोश और बेहतर समाज की उम्मीद आदि का दस्तावेज़ है। वैसे देखें तो दुष्यंत की ग़ज़लें अपने युग की वेदना को वाणी देती है। उनकी अभिव्यक्ति में एक सहजता है, यह सहजता सदैव एक ताप और आवेग का परिणाम होता है, दुष्यंत सिर्फ़ समाज की विद्रूपता का चित्रण करके ही संतुष्ट नहीं होते बल्कि वह उसे बदलने के लिए भी प्रयत्नशील दिखाई पड़ते हैं, इस प्रकार दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें केवल कविता नहीं, बल्कि समाज का प्रतिबिंब है, उन्होंने अपनी गजलों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को उठाया है, और जन मानस को सोचने के लिए मजबूर किया और भविष्य में भी सामाजिक चेतना का मार्गदर्शन करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

दुष्यंत कुमार ' साये में धूप', राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 18 संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या - 13, 15, 25, 30, 45, 18, 50, 62, 63, 53, 57, 14

कमलेश्वर दुष्यंत स्मृति विशेषांक सारिका - 1976

धर्मवीर भारती दुष्यंत स्मृति विशेषांक धर्मयुग
27 अगस्त 1976

हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक - डॉ नगेंद्र, संस्करण - 2006, प्रकाशक - नेशनल पब्लिशिंग हाउस 2 / 35 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 661

हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक - डॉ. चातक और प्रोफेसर राजकुमार शर्मा, प्रकाशक : कॉलेज बुक डिपो 83, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर, पृष्ठ संख्या - 392

'साये में धूप' दुष्यंत कुमार, संस्करण - 2009, राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

भारत भारती : मैथिलीशरण गुप्त, प्रकाशन - 1912 व 1913, मूल प्रकाशक : साहित्य सदन चिरगांव (झांसी)

संपादक : विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग - 2 किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 237

धरती की सतह पर, अदम गोंदवी, अनुज प्रकाशन, 2023 पृष्ठ संख्या - 44

दुष्यंत कुमार 'साये में धूप' राधा कृष्ण प्रकाशन 2023, संस्करण - 14

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

Big Data Analytics for Real-Time Decision-Making in Large-Scale Information Systems

Reena Rani
Student Department of CSE
PKG Group of Institution Matlauda, Panipat
Prof Rajesh Gargi
Department of CSE
PKG Group of Institution, Matlauda Panipat

Abstract

Organizations today generate data at a scale and speed that traditional systems were never really built to handle. Sensors, transactional systems, mobile applications and online platforms produce continuous streams of information, and the ability to act on this quickly has become almost as important as the information itself. This paper examines how big data analytics supports real-time decision-making within large-scale information systems. The central problem addressed is that many organizations, despite collecting vast quantities of data, still struggle to convert it into timely, usable insight, largely because of high data volume, fast processing requirements, format diversity, and infrastructure limits. The paper reviews existing literature on big data, stream processing and distributed computing, explains the core characteristics of big data, and discusses technologies commonly used for real-time analytics. A conceptual architecture is proposed showing how raw data moves from collection through processing to an actionable decision. The paper also identifies major challenges, including scalability, data quality, security and a shortage of skilled professionals. The discussion suggests technology alone is not enough; real value depends just as much on data quality and thoughtful system design. The paper concludes that real-time big data analytics is becoming an essential capability for modern information systems, even though adoption still faces real practical obstacles.

Keywords : Big Data · Real-Time Analytics · Stream Processing · Decision Support Systems · Distributed Computing · Information Systems · Data Processing

INTRODUCTION

Big data refers to datasets that are too large, too fast-moving, or too varied in structure for conventional database systems and analytical tools to handle efficiently (Chen, Mao, & Liu, 2014). The term became popular in the early 2000s, when analysts began describing the growing pressure that e-commerce was placing on enterprise data systems (Laney, 2001). Since then, the amount of data produced by organizations has grown at a pace few people could have predicted every online

purchase, sensor reading, social media post and banking transaction adds to a constantly expanding pool of digital information. For a long time, organizations were comfortable processing this data in batches, often overnight, and using the results to make decisions the following day or week. This was acceptable when business environments moved slowly. Today, competitive pressure and the nature of digital services demand much faster responses; a bank cannot wait until the end of the day to flag a suspicious transaction, and an e-commerce platform cannot wait a week to recommend a product a customer is likely to buy right now. The difference between traditional and real-time processing is not just a matter of speed. Traditional systems collect data first and analyse it later, often through a data warehouse updated periodically, while real-time systems analyse data as it arrives, using continuous queries and streaming pipelines rather than static, scheduled reports. Despite the clear benefits, many organizations still find real-time analytics difficult to put into practice. The challenges are not only technical; they are also organizational, financial, and closely tied to data quality, and this is exactly where big data analytics becomes relevant as a field of study. This paper studies the role of big data analytics in enabling real-time decision-making within large-scale information systems. It reviews existing literature, explains the main characteristics of big data, discusses commonly used technologies, proposes a conceptual architecture, and identifies the major challenges organizations face.

RESEARCH PROBLEM

Large organizations, whether in banking, healthcare, retail or telecommunications, now generate more data than they can realistically process using traditional methods. The core problem is not really a shortage of data; if anything, it is the opposite. There is too much data arriving too quickly, in too many formats, for existing systems to process it in time for it to still be useful. Several specific issues make this worse. The volume of data produced by modern applications is often far larger than what relational databases were designed to manage, and the speed at which it needs to be processed, sometimes within milliseconds, adds further pressure. Data also arrives in many formats structured records, semi-structured logs, and unstructured content such as text, images and video and combining all of this into one analytical pipeline is technically demanding. When processing is delayed, the decisions based on that data are delayed too, which can mean missed opportunities or risks left unaddressed. Scalability is a growing concern as data volumes increase, since systems that work well at a small scale often struggle once the load becomes heavier, and poor data quality can quietly undermine even the fastest processing system, because a fast wrong answer is still a wrong answer.

OBJECTIVES OF THE STUDY

This study has been guided by the following objectives: to understand the concept of big data analytics and how it differs from traditional data analysis; to study the methods behind real-time data processing, including how streaming systems differ from batch-oriented ones; to examine the major technologies used to support real-time big data analytics, such as distributed storage, in-memory processing engines and message-based streaming platforms; to understand the role real-time analytics plays in organizational decision-making; and to identify the main challenges organizations face when implementing real-time big data systems.

RESEARCH QUESTIONS

Based on the objectives above, this paper attempts to answer the following questions:

1. What distinguishes real-time big data analytics from traditional, batch-based data processing methods?

2. Which technologies are most commonly used to support real-time analytics in large-scale information systems, and how do they work together in practice?

3. In what ways does real-time analytics improve organizational decision-making compared with delayed, batch-based approaches?

4. What are the main technical and organizational challenges that currently limit the effective adoption of real-time big data systems?

LITERATURE REVIEW

Research on big data has grown quickly since the early 2000s and can broadly be grouped into overlapping strands: work that defines and characterizes big data, work on the distributed frameworks that make large-scale analysis possible, work on stream and real-time processing specifically, and a smaller body of work on how organizations use these systems in practice. The foundational idea of big data as a problem of volume, velocity and variety was set out by Laney (2001) in an industry research note describing how e-commerce was straining traditional data management. This framework was later extended by researchers who added veracity and value (Gandomi & Haider, 2015). Chen, Mao and Liu (2014) offered a comprehensive survey describing big data as moving through four stages generation, acquisition, storage and analysis while Kambatla, Kollias, Kumar and Grama (2014) traced how analytics platforms evolved from early parallel databases towards today's distributed frameworks, noting that scalability and fault tolerance remain persistent concerns. A second group of studies focuses on the distributed computing frameworks that make big data processing possible. Dean and Ghemawat (2008) introduced MapReduce, a model that processed very large datasets across clusters of ordinary machines using map and reduce tasks, which became the basis for the Hadoop ecosystem, though its reliance on disk-based storage made it poorly suited to fast, repeated data access. Zaharia, Chowdhury, Franklin, Shenker and Stoica (2010) addressed this with Spark, which keeps working data in memory, reporting speed improvements of up to ten times over Hadoop. Cattell (2011) reviewed the rise of NoSQL data stores, showing how relaxing strict consistency guarantees allowed systems to scale across many servers. A third strand deals directly with stream processing. Stonebraker, Çetintemel and Zdonik (2005) set out eight requirements a system must meet to be genuinely suited to real-time stream processing, arguing that repurposed database systems were inadequate for applications such as fraud detection. Kreps, Narkhede and Rao (2011) described Kafka, a distributed messaging system built at LinkedIn to move high volumes of log data reliably, now a standard component of real-time pipelines, while Carbone, Katsifodimos, Ewen, Markl, Haridi and Tzoumas (2015) presented Apache Flink as a unified engine treating batch processing as a special case of stream processing. Finally, Batko and Œlêzak (2022) studied big data analytics across a large sample of medical facilities and found that real-time analysis specifically remained comparatively underdeveloped, a reminder that adoption of real-time capability tends to lag behind big data analytics adoption overall. Taken together, this literature shows steady technical

progress but comparatively less attention to how organizations put these systems into practice, which is the gap this paper addresses.

BIG DATA AND ITS MAIN CHARACTERISTICS

Big data is often explained through a set of characteristics that describe why it behaves so differently from conventional data. The first is volume, the sheer amount of data being generated; organizations today may produce terabytes of data every day, whether from transaction logs, sensors or user activity, and this scale alone makes conventional storage and querying approaches impractical (Laney, 2001). The second is velocity, the speed at which data is created and needs to be processed. Velocity is especially relevant to real-time decision-making, because the usefulness of many kinds of data drops sharply the longer it takes to act on it; a fraud alert that arrives an hour after a fraudulent transaction has already gone through is far less useful than one that arrives within the same second. Variety refers to the many different forms data can take structured tables, semi-structured logs, and unstructured content such as images, audio and free text and real-time systems often have to combine several of these at once, adding real complexity to storage and analysis. Veracity concerns the trustworthiness and accuracy of the data itself; not everything collected in real time is clean or reliable, and decisions based on noisy data can end up being worse than no decision at all. Finally, value refers to the actual usefulness of the insight drawn out of the data, since collecting and processing data is not an end in itself; the whole point is to generate information that genuinely improves a decision (Gandomi & Haider, 2015). Together, these characteristics explain why real-time big data analytics needs specialised technology, rather than simply faster versions of traditional database tools.

TECHNOLOGIES USED FOR REAL-TIME BIG DATA ANALYTICS

A number of technologies have developed over the past fifteen years or so to make real-time big data analytics practically possible, and it helps to understand what each one contributes rather than treating them as an unrelated list of product names. Apache Hadoop was among the earliest widely adopted big data platforms, combining a distributed file system with the MapReduce model described by Dean and Ghemawat (2008), which splits computation into map and reduce steps that run in parallel. Hadoop suits large batch jobs, but because it reads and writes to disk at each stage, it is not fast enough on its own for real-time work. Apache Spark addresses this by keeping data in memory through resilient distributed datasets, repeating operations far more quickly than Hadoop (Zaharia et al., 2010). Apache Kafka plays a different but complementary role rather than processing data itself, it acts as a high-throughput messaging backbone that reliably moves data from wherever it is generated to wherever it needs to be analysed, buffering it in a distributed, partitioned log so several systems can read the same stream independently (Kreps, Narkhede, & Rao, 2011). Apache Flink takes real-time processing further by treating streaming as the primary mode of computation, with batch handled as a special case (Carbone et al., 2015), processing events with very low latency while still supporting batch analytics when needed. Alongside these frameworks, NoSQL databases store the variety of formats real-time systems handle, since they scale across many servers more easily than relational databases (Cattell, 2011). Cloud computing and distributed storage supply the infrastructure most of these technologies run on, offering elastic capacity for unpredictable spikes in data volume. In practice, a typical pipeline might use Kafka to ingest data, Flink or Spark Streaming

to process it, a NoSQL database to store results, and cloud infrastructure to host the system.

REAL-TIME DATA PROCESSING AND DECISION-MAKING

Real-time data processing generally follows a similar pattern regardless of which technologies are involved. Data is first collected from its source whether a banking transaction, a sensor reading, a website click or a hospital monitor then passed, usually through a messaging system, into a processing engine that applies rules, calculations or machine learning models to it as it arrives, rather than waiting for it to be stored and queried later. The output is then made available to whichever system or person needs to act on it, often through a dashboard, an alert, or an automated action. A few practical examples help illustrate why this matters. In banking, fraud detection systems analyse transaction patterns as they happen, comparing each new transaction against a customer's typical behaviour and flagging anything unusual within seconds, instead of discovering the problem during a monthly statement review. In e-commerce, recommendation engines track what a customer is browsing right now and adjust suggestions accordingly, far more effective than recommendations based on last week's activity. In healthcare, continuous monitoring of vital signs allows medical staff to be alerted the moment a patient's condition begins to deteriorate, rather than waiting for the next scheduled check (Batko & Œlêzak, 2022). Traffic management and cybersecurity systems follow the same logic, adjusting signal timing or flagging intrusions the moment conditions change, since problems noticed even briefly late can cause serious damage. What connects these examples is that the value of the underlying data decays quickly with time. A faster analysis does not just save time; it changes what is actually possible. Decisions that used to be made on yesterday's information can instead be made on what is happening right now, allowing organizations to prevent problems rather than simply respond to them afterwards

PROPOSED CONCEPTUAL FRAMEWORK / SYSTEM ARCHITECTURE

To bring together the ideas discussed so far, this paper proposes a simple conceptual architecture for a real-time big data decision-making system, organised as a pipeline of eight connected stages. Data Sources represent where information originates, including transactional databases, IoT sensors, mobile applications and log files, flowing into Data Collection, the layer that captures this information as it is generated. This feeds Stream Processing, where data is analysed as it arrives, using engines such as Kafka combined with Flink or Spark Streaming to filter, transform and enrich incoming events. The data then moves into Data Storage, usually split between a fast, short-term store for immediate access and a longer-term distributed store, often a NoSQL database, for historical analysis. From here, the Analytics Engine applies statistical methods or aggregation logic to generate meaningful metrics, working alongside a Machine Learning or Rule Engine layer that applies predictive models or defined thresholds, such as fraud rules, to decide whether a pattern needs attention. The results reach a Dashboard or Decision Support System, presenting them to human decision-makers in a form they can act on quickly, leading finally to the Final Decision made automatically by the system, such as blocking a suspicious transaction, or by a human user, such as a doctor responding to a patient alert. If drawn as a figure, this architecture would appear as a single horizontal flow of eight labelled boxes connected by arrows, moving from raw data on the left to a final decision on the right, with an optional feedback arrow returning from the decision stage back to data collection.

MAJOR CHALLENGES

Despite its benefits, real-time big data analytics comes with practical challenges. Scalability is usually the first, since a system built for a small data volume may perform well in testing but fail under production traffic; distributed systems need to be designed with growth in mind from the outset (Kambatla et al., 2014). Processing cost is another concern, since continuous streaming infrastructure requires more computing resources than scheduled batches. Data privacy and security are especially sensitive here, because data is often processed before it can be fully reviewed or anonymised, raising the risk of exposing sensitive information in sectors such as healthcare and finance (Batko & Œlêzak, 2022). Data quality remains persistent, since real-time systems lack the extensive cleaning batch systems sometimes allow, so errors propagate into decisions almost immediately. Network delay can undermine even a well-designed pipeline, and system failure is a genuine risk; a single failed component can disrupt a continuous stream in a way that a batch job, which can be rerun later, does not. Storage requirements grow quickly, integrating data from many sources remains technically demanding, and a shortage of professionals with the right skills continues to slow adoption.

DISCUSSION

The literature and analysis presented here point towards a few clear patterns. Real-time analytics is becoming increasingly important not because organizations decided speed matters, but because the underlying business environment has changed. Customers expect instant responses, competitors are investing in faster systems, and the cost of delayed decisions whether fraud losses, missed sales or unnoticed patient deterioration has become harder to ignore. Stream-based tools such as Kafka and Flink appear particularly important, precisely because they were designed from the ground up for continuous processing rather than adapted from batch-oriented origins (Stonebraker, Çetintemel, & Zdonik, 2005). Spark occupies a useful middle position, offering meaningful speed gains while remaining easier to adopt for organizations already familiar with the Hadoop ecosystem (Zaharia et al., 2010). At the same time, organizations face difficulties that are not purely technical. Batko and Œlêzak's (2022) findings on healthcare facilities illustrate this well: most institutions had adopted some form of data analytics, yet real-time capability remained less developed than descriptive or historical analysis. Having access to the right technology is simply not the same as having the organizational readiness to use it well. This gap between capability and adoption is especially visible in sectors such as manufacturing and public services, where legacy infrastructure, limited workforce training and constrained budgets slow the transition to real-time analytics even when the technical solutions are well understood. Addressing the organizational dimension of analytics adoption requires not just IT investment but changes in how teams are structured, how data governance is managed and how leaders are equipped to act confidently on data-driven insights rather than deferring to intuition alone. Technical infrastructure alone is not enough. A fast processing engine connected to poor-quality or poorly governed data produces fast, unreliable decisions. Proper system design careful choices about what data to collect, how to validate it, and how to present results matters just as much as raw processing speed.

FUTURE SCOPE

Several developments are likely to shape the future of real-time big data analytics. Artificial intelligence

and machine learning are increasingly being embedded directly into streaming pipelines, moving systems beyond simple rule-based alerts towards predictive decisions that anticipate problems before they fully develop. Edge computing, and the closely related idea of fog computing, is likely to play a growing role, since processing data closer to where it is generated can reduce the latency that network delay currently introduces (Bonomi, Milito, Zhu, & Addepalli, 2012), especially relevant for the Internet of Things as the number of connected devices keeps growing. Cloud-native platforms, built specifically for elastic, distributed workloads, are also likely to become the default environment for real-time analytics. More automated forms of decision-making, where systems act directly on their own analysis instead of simply presenting it to a human, may become more common, though this raises its own questions around accountability. None of these developments will fully solve the underlying challenges of scalability, data quality and security discussed earlier, but they should make real-time systems faster, cheaper and easier to deploy over time. As edge devices grow more capable, hybrid architectures that blend on-device inference with periodic synchronization to central platforms will become increasingly practical, letting organizations achieve low latency without sacrificing the accuracy benefits that come from training on large, centrally aggregated datasets.

CONCLUSION

This paper set out to examine how big data analytics supports real-time decision-making within large-scale information systems. The review of existing literature showed a fairly clear technical progression, from early batch-oriented frameworks such as MapReduce, through in-memory systems such as Spark, to dedicated streaming engines such as Kafka and Flink, each addressing limitations in what came before. The discussion of big data's core characteristics volume, velocity, variety, veracity and value helped explain why real-time processing needs specialised approaches rather than simply faster versions of traditional tools. The proposed conceptual architecture illustrated how these technologies fit together in practice, moving from raw data collection through stream processing to a final, actionable decision. At the same time, this paper has tried to stay honest about the difficulties involved. Real-time big data systems are expensive to build and maintain, raise genuine privacy and security concerns, and depend heavily on data quality and skilled personnel. The discussion around healthcare adoption showed that access to technology does not automatically translate into effective use of it. Overall, real-time big data analytics is becoming a necessary capability for modern information systems rather than an optional advantage. Organizations that can process and act on information quickly are better positioned to prevent problems and stay competitive, but realising this potential depends as much on thoughtful system design and organizational readiness as it does on adopting the latest processing technology.

REFERENCES

1. Batko, K., & Œlêzak, A. (2022). The use of Big Data Analytics in healthcare. Journal of Big Data, 9(1), Article 3. https://doi.org/10.1186/s40537-021-00553-4
2. Bonomi, F., Milito, R., Zhu, J., & Addepalli, S. (2012). Fog computing and its role in the Internet of Things. In Proceedings of the First Edition of the MCC Workshop on Mobile Cloud Computing (pp. 13–16). ACM. https://doi.org/10.1145/2342509.2342513
3. Carbone, P., Katsifodimos, A., Ewen, S., Markl, V., Haridi, S., & Tzoumas, K. (2015). Apache Flink: Stream

and batch processing in a single engine. Bulletin of the IEEE Computer Society Technical Committee on Data Engineering, 36(4), 28– 38.

4. Cattell, R. (2011). Scalable SQL and NoSQL data stores. ACM SIGMOD Record, 39(4), 12–27. https://doi.org/10.1145/1978915.1978919
5. Chen, M., Mao, S., & Liu, Y. (2014). Big data: A survey. Mobile Networks and Applications, 19(2), 171–209. https://doi.org/10.1007/s11036-013-0489-0
6. Dean, J., & Ghemawat, S. (2008). MapReduce: Simplified data processing on large clusters. Communications of the ACM, 51(1), 107–113. https://doi.org/10.1145/1327452.1327492
7. Gandomi, A., & Haider, M. (2015). Beyond the hype: Big data concepts, methods, and analytics. International Journal of Information Management, 35(2), 137–144. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2014.10.007
8. Kambatla, K., Kollias, G., Kumar, V., & Grama, A. (2014). Trends in big data analytics. Journal of Parallel and Distributed Computing, 74(7), 2561–2573. https://doi.org/10.1016/j.jpdc.2014.01.003
9. Kreps, J., Narkhede, N., & Rao, J. (2011). Kafka: A distributed messaging system for log processing. In Proceedings of the 6th International Workshop on Networking Meets Databases (NetDB) (pp. 1–7).
10. Laney, D. (2001). 3D data management: Controlling data volume, velocity, and variety. META Group.
11. Stonebraker, M., Çetintemel, U., & Zdonik, S. (2005). The 8 requirements of real-time stream processing. ACM SIGMOD Record, 34(4), 42–47. https://doi.org/10.1145/1107499.1107504
12. Zaharia, M., Chowdhury, M., Franklin, M. J., Shenker, S., & Stoica, I. (2010). Spark: Cluster computing with working sets. In Proceedings of the 2nd USENIX Workshop on Hot Topics in Cloud Computing (HotCloud '10)

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

अनामिका के काव्य में स्त्री-अस्मिता, प्रतिरोध और लोक-संवेदना

डॉ. अफीफा फातिमा शेक
सहायक प्राध्यापक, भाषा विभाग-हिंदी
एम.ओ.पी. वैष्णव कॉलेज फॉर विमेन(स्वायत्त), चेन्नई, तमिलनाडु, भारत

शोध-सार : समकालीन हिंदी कविता के फलक पर अनामिका का रचना-संसार स्त्री-विमर्श को नए सौंदर्यशास्त्रीय और सामाजिक प्रतिमान प्रदान करता है। उनका काव्य न तो पुरुषों के प्रति व्यक्तिगत आक्रामकता या अंध-विरोध पर आधारित है और न ही केवल करुणा व विलाप तक सीमित है। वे सदियों से स्थापित पितृसत्तात्मक संरचनाओं, सामाजिक-भाषाई पूर्वाग्रहों और दोहरे मानकों को अत्यंत सूक्ष्मता से उद्घाटित करती हैं। अनामिका के काव्य की सबसे विशिष्ट शक्ति उनकी 'लोक-संवेदना' है—वे लोक-मुहावरों, घरेलू बिंबों, रसोइया संस्कृति और वाचिक परंपराओं को स्त्री के मौन प्रतिरोध और मुक्ति-आकांक्षा का हथियार बना देती हैं। प्रस्तुत शोध-आलेख में अनामिका के काव्य में व्यक्त स्त्री-स्वर, दार्शनिक आधार, भाषा-संरचना तथा लोक-संवेदना के अंतर्संबंधों का गहन आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द : अनामिका, समकालीन हिंदी कविता, स्त्री-अस्मिता, पितृसत्ता, लोक-संवेदना, प्रतिरोध, भाषा-राजनीति।

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी कविता के इतिहास में बीसवीं सदी के अंतिम दशकों और इक्कीसवीं सदी के आरंभ में स्त्री-कविता ने एक नया प्रस्थान लिया। पूर्ववती दौर में जहां स्त्री की अभिव्यक्ति अक्सर पुरुष-दृष्टि द्वारा निर्धारित सांचे में करुणा, त्याग, ममता या अत्यधिक विरह-पीड़ा के आवरण में बंधी थी, वहीं समकालीन कवयित्रियों ने स्त्री के स्वतंत्र 'स्व' (Selfhood) की तलाश आरंभ की।

अस्मिता का मूल तात्पर्य केवल जैविक अस्तित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पहचान, सामाजिक अधिकार, विचार-स्वातंत्र्य और अपनी देह व मन पर स्वयं का अधिकार स्थापित करने का नाम है। अनामिका इस धारा की सर्वाधिक मुखर और बहुआयामी रचनाकार हैं। वे पश्चिम के सैद्धांतिक नारीवाद को सीधे आयात करने के स्थान पर उसे भारतीय समाज के घरेलू, सांस्कृतिक और सामाजिक धरातल पर परखती हैं। उनका स्त्री-स्वर शिकायत का नहीं, बल्कि व्यवस्थागत संरचना की तहों को उघाड़ने वाला है।

पितृसत्तात्मक मानस और भाषा-राजनीति का उद्घाटन

अनामिका की कविताओं की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे पितृसत्ता को किसी एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि पूरे समाज में रची-बसी एक अदृश्य ग्रंथि और 'कंडीशनिंग' के रूप में देखती हैं। यह व्यवस्था बचपन से ही बालक और बालिका के अवचेतन में अलग-अलग भूमिकाएं तय कर देती है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही भाषा और पाठ्यपुस्तकों के

माध्यम से लिंग-भेद को किस प्रकार स्वाभाविक बना दिया जाता है, इसे अनामिका ने अत्यंत मारक व्यंग्य के साथ अपनी कविता में रेखांकित किया है :

''जगह-जगह क्या होती है
यह, वैसे, जान लिया था हमने,
अपनी पहली कक्षा में ही!
याद है हमें एक-एक अक्षर
आरंभिक पाठों का
राम, पाठशाला जा!
राधा, खाना पका!
राम, आ बताशा खा!
राधा, झाड़ू लगा
राम, देख यह तेरा कमरा है!
'और मेरा?'
'ओ पगली',
लड़कियाँ हवा, धूप मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता!''[1]

यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि समाज किस तरह स्त्री को घर के केंद्र में रखकर भी उसे 'बेघर' बनाए रखता है। राम के लिए पाठशाला और अधिकार का कमरा तय है, जबकि राधा के लिए चूल्हा-चौका और झाड़ू। लड़कियाँ 'हवा, धूप और मिट्टी' कहकर प्रकृति के हवाले इसलिए कर दी जाती हैं ताकि उन्हें पैतृक संपत्ति, निर्णय-अधिकार और सामाजिक स्पेस से बेदखल रखा जा सके। कवयित्री समाज के बौद्धिक वर्ग के दोगलेपन पर प्रहार करती हैं।

प्रतिरोध का रचनात्मक स्वरूप

अनामिका के काव्य में व्यक्त प्रतिरोध ध्वंसकारी नहीं, बल्कि सर्जनात्मक और धैर्यपूर्ण है। वे पुरुष को 'शत्रु' मानकर मुकाबला नहीं करतीं, बल्कि उस व्यवस्था पर वार करती हैं जिसने पुरुष को भी संवेदनहीन बनाया है और स्त्री को भी दासी। अनामिका स्वयं लिखती हैं कि स्त्री-आंदोलन पितृसत्तात्मक समाज में पल रहे पूर्वाग्रहों से पुरुषों की भी क्रमिक मुक्ति का संघर्ष है। दोषी पुरुष नहीं, वह सामाजिक मानसिकता है जो स्त्री को केवल देह या उपभोग्य वस्तु मानती है। जब स्त्री इस संकुचित मानसिकता के विरुद्ध सिर उठाती है, तो समाज उसे कलंकित करने का प्रयास करता है :

''इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन अफवाहें
चीखती हुई चीं-चीं
दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र महिलाएँ
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली फैली
अगरभत्त जंगली लताएँ।''[2]

किंतु इस सामाजिक निंदा और लांछन से भयभीत होने के बजाय उनकी कविता में स्त्री संघर्ष-चेतना को अपनी आत्मशक्ति में बदल लेती है। दमन जितना अधिक होता है, मुक्ति की प्यास उतनी ही तीव्र हो उठती है।

लोक-संवेदना : अनामिका की काव्य-दृष्टि की अद्वितीय विशेषता है उनका लोक-जीवन और वाचिक परंपरा से गहरा

जुड़ाव। वे लोक को केवल पुरानी स्मृतियों के संग्रहालय के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि लोक-उक्तियों और प्रतीकों का पुनर्पाठ करती हैं।

आभूषणों का ऐतिहासिक रूपांतरण

पारंपरिक समाज में स्त्री के आभूषण अक्सर उसके शृंगार के नाम पर उसकी पराधीनता और गतिशीलता को बांधने वाले बंधन रहे हैं। कविता संग्रह 'पानी को सब याद था' की 'कमरधनिया' कविता में अनामिका इस प्रतीक को उलट देती हैं :

"इतना भी धीमी क्या बोलना आप बोलें, कमर
धनी सुने संतावन की जंग में बेगमों की करधनियाँ भी
बेमोल ही बिक गई अब कमरधनिया नहीं है
कमर अब कसी है इरादों से।"[3]

जो कमरधनिया कभी लज्जा, संकोच और सामंती सौन्दर्यबोध की परिधि थी, 1857 की क्रांति के संदर्भ से गुजरते हुए वह अब संकल्प और आत्म-स्वावलंबन की 'कमर कसने' के रूप में परिणत हो जाती है।

लोक-रीतियों की आड़ में छिपा क्रूर अर्थशास्त्र

अनामिका भारतीय लोक-जीवन में धर्म और परंपरा के नाम पर होने वाले आर्थिक शोषण को गहराई से समझती हैं। छोटी उम्र में लड़कियों का विवाह पीपल के पेड़ से करवा दिए जाने की रूढ़ि का पर्दाफाश करते हुए वे लिखती हैं :

"दादी की पक्की सहेली फूलमती की
आठ साल की उम्र में जिसकी
शादी रचाई गई
साठ साल के पीपल से
अर्थशास्त्र ही तो रहा है हमेशा नियामक
नीति शास्त्र का भी दूल्हा ही नहीं जुड़ा,
मतलब कि शादी का पैसा नहीं था
तो पीपल से उसकी भांवरे पड़ीं।"[4]

यहाँ कवयित्री स्पष्ट करती हैं कि परंपरा कोई रहस्यमयी आध्यात्मिक विधान नहीं है, बल्कि उसके पीछे शुद्ध रूप से दहेज न दे पाने की लाचारी और विपन्नता का 'अर्थशास्त्र' कार्य कर रहा होता है।

घरेलू श्रम और दैनिक संघर्ष में स्त्री-सौंदर्य

स्त्री का रसोई में किया जाने वाला श्रम इतिहास और साहित्य में प्रायः उपेक्षित रहा। अनामिका उस श्रम को सम्मान देते हुए उसके भीतर दबी रचनात्मकता को सामने लाती हैं :

"बुझ चुकी है आखिरी चूल्हे की राख भी,
और वह
अपने ही वजूद की आंच के आगे
औचक हड़बड़ी में
खुद को ही गूंथती हुई बार-बार
खुश है कि रोटी बोलती है जैसे पृथ्वी।"[5]

यहाँ रोटी का गोल फूलना केवल भोजन का निर्माण नहीं है, बल्कि वह स्त्री द्वारा अपनी ऊर्जा और देह-मन के ताप से एक पूरी सृष्टि (पृथ्वी) के निर्माण का बिंब बन जाता है।

जीवन-चक्र के विविध सोपान और मुक्ति-बोध

अनामिका की कविताओं में स्त्री केवल यौवन के शृंगारिक दायरे में कैद नहीं है। वे बाल्यावस्था के भेदभाव, गृहस्थी के तनाव, पति के परदेस चले जाने के विरह-शोक से लेकर बुढ़ापे (वार्धक्य) के अकेलेपन तक का प्रामाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं। हमारे समाज में बुढ़ापे में जब स्त्री की शारीरिक उपयोगिता चुक जाती है, तो उसे उपेक्षित कर दिया जाता है। किंतु अनामिका के यहाँ वृद्धावस्था केवल अवसाद नहीं, बल्कि सामाजिक बंधनों से मुक्ति का उत्सव भी है :

"यह स्थिति जब किसी
औरत के जीवन में आती है
धूप हवा सी वह तो
बिल्कुल महीन और हल्की हो जाती है
भली-भई मेरी मटकी फूटी
मैं तो पनिया भरन से छूटी।"[6]

लोक-गीत की प्रसिद्ध पंक्ति 'भली-भई मेरी मटकी फूटी...' को यहाँ कवयित्री ने वृद्धावस्था में घरेलू ज़िम्मेदारियों के बोझ से मुक्त होकर अपने निजी स्पेस को जीने वाली स्त्री की स्वतंत्रता से जोड़ दिया है। पानी का मटका फूटना यहाँ हानि नहीं, बल्कि सदियों की बेगार और सेवा से मुक्ति का उल्लास है।

निष्कर्ष

अनामिका का रचना-कर्म समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को एक नई गरिमा और वैचारिक प्रौढ़ता प्रदान करता है। उनकी कविताएं यह सिद्ध करती हैं कि :

1. स्त्री-मुक्ति का मार्ग पुरुष से वैर में नहीं, बल्कि पितृसत्ता के वैचारिक और संस्थागत तंत्र को ध्वस्त करने में है।

2. भाषा और मुहावरे निष्पक्ष नहीं होते; उनमें सत्ता का वर्चस्व छिपा होता है, जिसे केवल एक सजग रचनाकार ही तोड़ सकता है।

3. लोक-संस्कृति केवल रूढ़ियों का वाहक नहीं है, बल्कि उसके भीतर प्रतिरोध, सामूहिकता और संवेदना के वे तत्व मौजूद हैं जो आधुनिक स्त्री को अपनी जड़ें तलाशने में संबल प्रदान करते हैं।

अनामिका की कविताएं स्त्री को एक स्वतंत्र, विचारशील और जैविक इकाई के रूप में प्रतिष्ठापित करती हैं। वे केवल प्रश्न उठाकर चुप नहीं होतीं, बल्कि एक ऐसे संवेदनशील और समतामूलक समाज का खाका खींचती हैं जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए पूर्ण मनुष्य बन सकें।

संदर्भ-सूची

1. अनामिका (2012), कहती हैं औरतें, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ.सं.152
2. वही, पृ.सं.166
3. वही, पृ.सं.157
4. अनामिका(2020), टोकरी मे दिगंत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.156
5. अनामिका, बीजाक्षर, पृ.सं.14
6. अनामिका(2020), टोकरी मे दिगंत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.41

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन यात्रा का ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
पता : सदनिका क्रमांक 5, अवन्तिका रेजीडेंसी,
58/59, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड,
पुणे-411011 (महाराष्ट्र)
मो. 9096222223, 9371010244
ईमेल : arshpune18@gmail.com

धन्य श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का जीवन काल 01 अप्रैल 1621 से 11 नवंबर 1675 ई. तक लगभग साढ़े पाँच दशकों में विस्तृत है। कालावधि की दृष्टि से यह जीवन यात्रा सीमित दिखाई दे सकती है, किंतु इसके आध्यात्मिक, सामाजिक और ऐतिहासिक प्रभाव की व्यापकता असाधारण है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज उनकी बाणी और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए दी गई उनकी अनुपम शहादत ने उन्हें भारतीय इतिहास और लोकमानस की स्मृति में सदैव के लिए प्रतिष्ठित कर दिया।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का जन्म और पालन - पोषण उस गुरु परिवार में हुआ, जिसकी आध्यात्मिक परंपरा के साथ त्याग, सेवा और संघर्ष की एक समृद्ध विरासत जुड़ी हुई थी। उनके दादा धन्य श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी सिख धर्म के पाँचवें गुरु तथा पिता धन्य श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी छठे गुरु थे। 11 अगस्त 1664 ई. को श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी सिखों के नौवें गुरु के रूप में गुरु गद्दी पर विराजमान हुए।

गुरु गद्दी तक उनकी जीवन यात्रा सिख गुरु परंपरा के एक विशिष्ट पक्ष को भी सामने लाती है। उनसे पूर्व उनके भतीजे बाबा गुरदित्ता जी के छोटे सुपुत्र श्री गुरु हरि राय साहिब जी 1644 से 1661 ई. तक सातवें गुरु रहे। तत्पश्चात् गुरु हरि राय साहिब जी के सुपुत्र श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी 1661 से 1664 ई. तक आठवें गुरु के रूप में गुरु गद्दी पर विराजमान हुए। रिश्ते की दृष्टि से श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के पौत्रवत् थे। इस प्रकार गुरु परंपरा में एक अत्यंत विशिष्ट स्थिति दिखाई देती है, वंशगत आयु अथवा पारिवारिक वरिष्ठता गुरु पद की कसौटी नहीं थी। गुरु मर्यादा में सांसारिक रिश्तों से ऊपर गुरु सत्ता की सर्वोच्चता स्वीकार की गई। बड़ी पीढ़ी ने छोटी पीढ़ी को गुरु के रूप में पूर्ण श्रद्धा से स्वीकार किया और बाद में उसी परंपरा में बड़ी पीढ़ी को गुरु गद्दी की सेवा प्राप्त हुई।

बाल्यावस्था, शिक्षा और शस्त्र विद्या

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी बचपन से ही गंभीर, अंतर्मुखी और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। सांसारिक आकर्षणों से उनकी सहज निर्लिप्तता उनके व्यक्तित्व की प्रारंभिक विशेषताओं में दिखाई देती है। इसके साथ ही उनकी शिक्षा केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही। उन्होंने विद्या अध्ययन के साथ घुड़सवारी और शस्त्र विद्या, विशेषतः

तलवारबाजी में भी दक्षता प्राप्त की।

सिख परंपरा में उनके नामकरण से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रसंग मिलता है। उनका प्रारंभिक नाम 'त्याग मल' बताया जाता है। करतारपुर के युद्ध में उनके द्वारा प्रदर्शित वीरता से प्रसन्न होकर पिता श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने उन्हें 'तेग बहादुर' कहकर सम्मानित किया। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व में आध्यात्मिक गंभीरता और युद्ध कौशल का अद्भुत समन्वय आरंभिक जीवन से ही दिखाई देता है। कुछ सिख चिंतक उनके युद्ध कौशल और तलवार के प्रयोग में दक्षता के कारण उन्हें 'तेग़ के धनी' के रूप में भी स्मरण करते हैं।

गुरु परिवार की समृद्ध धार्मिक और बौद्धिक परंपरा ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें गुरबाणी और धर्म ग्रंथों की शिक्षा बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी जैसी महान विभूतियों से प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार भाई बिधी चंद जी जैसे प्रसिद्ध सिख योद्धा की देखरेख में उन्होंने युद्ध कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुरु परिवार का सूफी परंपरा के साथ संवाद भी उनके व्यक्तित्व के निर्माण की पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण पक्ष था। श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी के समय से सूफी फकीर साईं मियाँ मीर जी के गुरु परिवार के साथ निकट संबंध स्थापित हो चुके थे। परंपरागत विवरणों में यह उल्लेख मिलता है कि श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने मियाँ मीर जी से सूफी साधकों की भाँति एकांत में बैठकर प्रभु सिमरन में लीन होने की साधना पद्धति से भी परिचय प्राप्त किया।

त्याग, वैराग्य और आध्यात्मिक चेतना

गुरु परिवार और तत्कालीन महान आध्यात्मिक एवं योद्धा विभूतियों के सान्निध्य ने श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के व्यक्तित्व को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया। उनके जीवन में त्याग, वैराग्य, सेवा, धैर्य, संतोष, परोपकार और आध्यात्मिक साधना के साथ साहस और शौर्य का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। आगे चलकर यही गुण उन्हें सिख विरासत में त्याग और शहादत के महान प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में उन्होंने अपने तीन बड़े भाइयों, बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अटल जी और अणी राय जी का अकाल चलाना भी देखा। इन पारिवारिक विछोड़ों का उनके अंतर्मन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। यह माना गया है कि ऐसे अनुभवों ने उनके भीतर सांसारिक अस्थिरता के बोध और वैराग्य की भावना को और गहरा किया होगा। तथापि गुरु साहिब का वैराग्य संसार से पलायन का मार्ग नहीं था; वह सांसारिक लोभ और मोह से निर्लिप्त रहते हुए उच्चतर आध्यात्मिक चेतना की ओर अग्रसर होने की अवस्था थी।

गुरबाणी में वैराग्य को इसी उच्च मनोदशा से संबद्ध किया गया है। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी फरमाते हैं–

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, अंग क्रमांक 1427)

इस वैराग्यपूर्ण दृष्टि का प्रभाव उनके व्यावहारिक जीवन में भी स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने पारिवारिक विवादों और व्यक्तिगत विरोधों को यथासंभव अनदेखा किया तथा संघर्ष को बढ़ाने के स्थान पर धैर्य, क्षमा और संयम का मार्ग अपनाया। उनके जीवन की यही उच्च आध्यात्मिक अवस्था आगे चलकर उनकी शहादत की वैचारिक और नैतिक भूमि तैयार करती दिखाई देती है।

'बाबा बकाला' और गुरु गद्दी

श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी के अंतिम समय से जुड़ा 'बाबा बकाला' प्रसंग सिख इतिहास में विशेष महत्व रखता है। परंपरा के अनुसार श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी ने अपने अंतिम समय में पाँच पैसे और एक नारियल देकर अगले गुरु के 'बाबे बकाले' होने की ओर संकेत किया। इस संकेत में 'बाबा' शब्द विशेष अर्थ ग्रहण करता है। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब

जी उस समय बकाला में निवास कर रहे थे और रिश्ते की दृष्टि से भी वे श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी की बड़ी पीढ़ी से संबंधित थे।

श्री गुरु हरकृष्ण साहिब जी, बाबा गुरदित्ता जी के पौत्र थे और बाबा गुरदित्ता जी श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के बड़े भ्राता थे। इस प्रकार पारिवारिक संबंध और गुरु परंपरा यहाँ एक विशिष्ट ऐतिहासिक बिंदु पर आकर मिलते हैं। अंततः बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र बाबा गुरदित्ता रंधावा जी ने संगत की उपस्थिति में 11 अगस्त 1664 ई. को श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को गुरु गद्दी की रस्म अदा की।

पारिवारिक विरोध और गुरु साहिब की क्षमाशीलता

सिख गुरु इतिहास में बाहरी राजनीतिक चुनौतियों के साथ - साथ गुरु परिवार के भीतर उत्पन्न विरोध भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पक्ष रहा है। श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी के समय उनके बड़े भ्राता पृथ्वी चंद तथा उनके पुत्र मेहरबान ने गुरु गद्दी को लेकर अपने दावे प्रस्तुत किए। उनका तत्कालीन मुगल सत्ता से संपर्क और गुरु घर के समानांतर अपनी स्थिति स्थापित करने का प्रयास भी ऐतिहासिक विवरणों में मिलता है। श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी की 1606 ई. की शहादत से संबंधित व्यापक राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के साथ गुरु परिवार का यह आंतरिक विरोध भी उस समय की जटिल पृष्ठभूमि का एक पक्ष था।

आगे चलकर बाबा गुरदित्ता जी के बड़े पुत्र धीरमल और श्री गुरु हरि राय साहिब जी के बड़े पुत्र राम राय के प्रसंगों में भी गुरु घर के भीतर मतभेद सामने आए। राम राय को मुगल सत्ता से संरक्षण प्राप्त हुआ और दून (देहरादून) क्षेत्र में उन्हें जागीर भी मिली।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को भी ऐसे विरोधों का सामना करना पड़ा। परंपरागत विवरणों के अनुसार धीरमल से जुड़े शीहा नामक मसंद ने गुरु साहिब पर गोली चलाई। भाई मक्खन शाह तथा उपस्थित संगत के कारण गुरु साहिब सुरक्षित रहे। इस घटना से आक्रोशित संगत के कुछ लोगों ने धीरमल के डेरे से शीहा मसंद को पकड़ लिया और वहाँ से कुछ सामान भी उठा लाए। किंतु गुरु साहिब की प्रतिक्रिया उनके व्यक्तित्व की मूल प्रवृत्ति को प्रकट करती है उन्होंने शीहा मसंद को क्षमा कर दिया और डेरे से लाया गया सामान भी वापस भिजवा दिया।

यह प्रसंग गुरु साहिब की क्षमाशीलता और विवादों से ऊपर उठकर चलने की प्रवृत्ति को रेखांकित करता है। पारिवारिक संघर्षों में उलझने के बजाय उन्होंने आध्यात्मिक साधना और लोक कल्याण को प्राथमिकता दी। इसी जीवन दृष्टि के साथ उन्होंने लगभग दो दशकों, 1644 से 1664 ई. तक, अपने ननिहाल के गाँव बकाला, वर्तमान बाबा बकाला में निवास किया।

अमृतसर प्रसंग : विरोध के प्रति संयम

गुरु गद्दी प्राप्त करने के पश्चात् जब श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी अमृतसर पहुँचे, तब भी उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। ऐतिहासिक विवरणों में उल्लेख मिलता है कि गुरु साहिब ने अमृतसर में स्नान किया, किंतु हरमंदिर साहिब से संबंधित तत्कालीन प्रबंधकों द्वारा दर्शनी ड्योढ़ी के द्वार बंद कर दिए जाने के कारण वे हरमंदिर साहिब के भीतर जाकर नतमस्तक नहीं हो सके।

यह घटना भी गुरु साहिब के व्यक्तित्व के उसी महत्वपूर्ण पक्ष को सामने लाती है जो उनके पूर्व जीवन में दिखाई देता है। उन्होंने इस व्यवहार को व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर किसी संघर्ष अथवा विवाद को जन्म नहीं दिया। विरोध के प्रत्युत्तर में विरोध करने के स्थान पर उन्होंने संयम और धैर्य का मार्ग अपनाया। गुरु परंपरा में ऐसी स्थितियों के उदाहरण श्री गुरु नानक देव साहिब जी के समय से विभिन्न प्रसंगों में दिखाई देते हैं, जहाँ आध्यात्मिक सत्य की प्रतिष्ठा व्यक्तिगत अधिकार अथवा संस्थागत टकराव से अधिक महत्वपूर्ण मानी गई।

इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के जीवन का यह आरंभिक चरण उनके व्यक्तित्व के उन मूल तत्त्वों को

उद्घाटित करता है, जो आगे उनकी व्यापक धर्म प्रचार यात्राओं, मानवीय मूल्यों की रक्षा और अंततः उनकी अद्वितीय शहादत में अपने चरम रूप में अभिव्यक्त हुए। उनके व्यक्तित्व में शस्त्र और शास्त्र, वीरता और वैराग्य, आत्म साधना और लोक कल्याण तथा संघर्ष और क्षमा का जो संतुलन दिखाई देता है, वही उनकी संपूर्ण जीवन यात्रा को समझने की महत्वपूर्ण आधारभूमि निर्मित करता है।

गुरु परंपरा में नए गुरु धामों की स्थापना और पारिवारिक विरोध

सिख गुरु परंपरा के विकास में गुरु गद्दी के साथ नए स्थानों और नए गुरु धामों की स्थापना का विशेष महत्त्व रहा है। श्री गुरु नानक देव साहिब जी ने श्री गुरु अंगद देव साहिब जी को गुरु गद्दी की दात प्रदान करते हुए खडूर साहिब में निवास करने के लिए कहा था। इसके पीछे एक कारण यह माना गया कि करतारपुर में श्री गुरु नानक देव साहिब जी के सुपुत्रों श्रीचंद और लखमी चंद की ओर से गुरु गद्दी किसी अन्य को प्रदान किए जाने के कारण विरोध की स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। इसके साथ ही नए गुरु के नए स्थान पर निवास करने से सिख धर्म के प्रचार - प्रसार के लिए एक नवीन केंद्र के विकसित होने की संभावना भी बनती थी।

यह प्रक्रिया आगे भी दिखाई देती है। श्री गुरु अंगद देव साहिब जी ने श्री गुरु अमरदास साहिब जी को गुरु गद्दी प्रदान करते हुए गोइंदवाल साहिब में केंद्र स्थापित करने की प्रेरणा दी। श्री गुरु अमरदास साहिब जी ने श्री गुरु रामदास साहिब जी को गुरु गद्दी प्रदान करते हुए अमृतसर के विकास का दायित्व सौंपा। इसी परंपरा में चौथे गुरु साहिब के आदेश के अंतर्गत श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी द्वारा तरनतारन साहिब की स्थापना की गई।

इस प्रकार नए स्थानों का विकास केवल भौगोलिक विस्तार नहीं था; इससे नए गुरु धाम और धार्मिक, सामाजिक केंद्र अस्तित्व में आए तथा गुरु गद्दी से जुड़े पारिवारिक तनावों से भी कुछ सीमा तक स्थानीय दूरी बनी। इसके बावजूद गुरु परिवार के भीतर विरोध पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ। स्थान परिवर्तन के कारण उसकी तीव्रता कुछ समय के लिए कम अवश्य होती रही, किंतु आंतरिक विरोध की यह धारा विभिन्न रूपों में आगे भी उपस्थित रही।

विशेषतः श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी के समय से लेकर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 1675 ई. की शहादत तक लगभग 75 वर्षो के इस कालखंड में गुरु साहिबान को बाहरी राजनीतिक चुनौतियों के साथ - साथ आंतरिक पारिवारिक विरोधों से भी जूझना पड़ा। इन परिस्थितियों के बावजूद गुरु साहिबान अपने आध्यात्मिक उद्देश्य से विचलित नहीं हुए। विरोध और कठिनाइयों के मध्य भी उनकी अडोलता ने उन्हें सिख धर्म के सच्चे रहबर, प्रचारक और लोक कल्याण के पथ प्रदर्शक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की व्यापक धर्म प्रचार यात्राएँ

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष उनकी व्यापक यात्राएँ हैं। पंजाब से बाहर उन्होंने दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम और ढाका सहित अनेक राज्यों की यात्राएँ कीं और दूर - दराज की संगत के साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया। श्री गुरु नानक देव साहिब जी के पश्चात् श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की यात्राओं का भौगोलिक विस्तार सिख गुरु परंपरा में विशिष्ट स्थान रखता है।

इन यात्राओं के दौरान विभिन्न क्षेत्रों की संगत उनमें श्री गुरु नानक देव साहिब जी की उसी गुरु ज्योति का दर्शन करती थीं, जो गुरु परंपरा के माध्यम से निरंतर प्रवाहित हो रही थी। इस प्रकार उनकी यात्राएँ केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की घटनाएँ नहीं थीं, अपितु वे गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित आध्यात्मिक और मानवीय संदेश को व्यापक भूभाग तक पहुँचाने का माध्यम बनीं।

गुरु साहिब ने नए धार्मिक, सामाजिक केंद्रों के विकास की गुरु परंपरा को भी आगे बढ़ाया। उनके द्वारा स्थापित स्थानों में श्री आनंदपुर साहिब का विशेष महत्त्व है। इसकी नींव 19 जून 1665 ई. को 'चक नानकी' के रूप में बाबा गुरदित्ता रंधावा

बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र से रखवाई गई। कालांतर में यही स्थान आनंदपुर साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ और सिख इतिहास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण केंद्र बना।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी : आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी सिख चिंतन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। श्री गुरु अर्जुन देव साहिब जी के पश्चात् गुरु साहिबान में नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित है। उनकी बाणी में जीवन, मृत्यु, वैराग्य, निर्भयता, माया, अहंकार, प्रभु सिमरन और संसार की नश्वरता के प्रति अत्यंत गहन एवं परिपक्व दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है।

गुरु साहिब के 57 श्लोक 'सलोक महला 9' शीर्षक के अंतर्गत श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग क्रमांक 1426 से 1429 तक दर्ज हैं। इनके पश्चात् 'मुंदावणी' और 'राग माला' अंकित हैं। परंपरागत रूप से इन श्लोकों का पाठ समापन के समय 'भोग के श्लोकों' के रूप में भी किया जाता है।

इन श्लोकों के माध्यम से गुरु साहिब की आध्यात्मिक जीवन दृष्टि को निकटता से समझा जा सकता है। उनके चिंतन में प्रभु नाम से विहीन जीवन की सार्थकता पर प्रश्न उपस्थित होता है। 'गोबिंद' अथवा 'हरि' की अवधारणा यहाँ किसी संकीर्ण सीमा में बंधी न होकर व्यापक आध्यात्मिक और मानवीय चेतना से संबद्ध दिखाई देती है। सांसारिक धन, परिवार और संपत्ति स्थायी सहचर नहीं हैं तथा मानव शरीर स्वयं पंच तत्त्वों से निर्मित होकर अंततः उन्हीं में विलीन हो जाने वाला है। गुरु साहिब फरमाते हैं—

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥1॥

(अंग क्रमांक 1427)

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥5॥

(अंग क्रमांक 1427)

पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥11॥

(अंग क्रमांक 1426)

इन पंक्तियों में जीवन की नश्वरता का बोध निराशावाद के रूप में नहीं, अपितु मनुष्य को स्थायी और अस्थायी के मध्य अंतर समझाने वाली आध्यात्मिक चेतना के रूप में सामने आता है। धन, दारा और संपत्ति के प्रति आसक्ति को छोड़कर मनुष्य को उस परम सत्ता की ओर उन्मुख होने का संदेश दिया गया है, जिससे उसका वास्तविक अस्तित्व संबद्ध है।

निर्भयता, वैराग्य और अहंकार मुक्त जीवन

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी में निर्भयता केवल व्यक्तिगत साहस का गुण नहीं है, अपितु आध्यात्मिक रूप से विकसित मनुष्य की अवस्था है। न किसी को भय देना और न किसी से भय स्वीकार करना, यह गुरु साहिब की दृष्टि में ज्ञानी मनुष्य की पहचान है। इस प्रकार निर्भयता और वैराग्य एक-दूसरे से गहरे स्तर पर जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

वैराग्य का आशय केवल सांसारिक पदार्थों का बाहरी त्याग नहीं है। इसमें लोभ, अहंकार, स्तुति और निंदा जैसे उन मानसिक बंधनों से मुक्ति भी सम्मिलित है, जो मनुष्य को सांसारिक आकर्षणों से बाँधते हैं। इस दृष्टि से वैराग्य एक प्रकार का नैतिक मूल्य विधान बन जाता है। यह मनुष्य को निज केंद्रित चेतना से ऊपर उठाकर दूसरे मनुष्य और व्यापक समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध प्रदान करता है। गुरु साहिब की बाणी में यह अवस्था इस प्रकार व्यक्त होती है—

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥16॥

(अंग क्रमांक 1427)

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥17॥

(अंग क्रमांक 1427)

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥19॥

(अंग क्रमांक 1427)

इन श्लोकों में निर्भयता, वैराग्य और अहंकार-मुक्ति एक ही आध्यात्मिक चेतना के विभिन्न आयाम बनकर सामने आते हैं। जिस मनुष्य ने अहंकार का त्याग करके सृष्टिकर्ता को पहचान लिया, वही वास्तविक मुक्ति की अवस्था की ओर अग्रसर होता है। इस प्रकार गुरु साहिब की दृष्टि में बाह्य प्रतिष्ठा अथवा सांसारिक उपलब्धियाँ मनुष्य की श्रेष्ठता का अंतिम आधार नहीं हैं; वास्तविक मूल्य उसकी आंतरिक चेतना और आध्यात्मिक बोध में निहित है।

संसार की नश्वरता और अकाल पुरख में विश्वास

गुरु साहिब सांसारिक वस्तुओं, विकारों और भौतिक उपलब्धियों को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करते। उनका विश्वास 'गोबिंद', 'हरि' अथवा अकाल पुरख की उस शाश्वत सत्ता में दृढ़ है, जिसके सम्मुख सांसारिक जीवन अत्यंत अल्पकालिक है। इसी जीवन-दृष्टि में संसार को स्वप्न, पानी के बुलबुले और रेत की दीवार जैसे बिंबों के माध्यम से उसकी नश्वरता का बोध कराया गया है।

गुरु साहिब फरमाते हैं–

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥23॥

(अंग क्रमांक 1427)

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥25॥

(अंग क्रमांक 1427)

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥32॥

(अंग क्रमांक 1427)

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥39॥

(अंग क्रमांक 1427)

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥40॥

(अंग क्रमांक 1427)

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥46॥ (अंग क्रमांक 1427)

संसार की यह क्षणभंगुरता मनुष्य के सामाजिक संबंधों की सीमाओं को भी उद्घाटित करती है। सुख की अवस्था में अनेक लोग साथ दिखाई देते हैं, किंतु दुःख और अंतिम समय में सांसारिक संबंधों की सीमाएँ स्पष्ट हो जाती हैं–

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥32॥

(अंग क्रमांक 1428)

मनुष्य अपने जीवन में सुख की प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करता है और दुःख से बचना चाहता है, किंतु जीवन सदैव उसकी इच्छा अनुसार संचालित नहीं होता। गुरु साहिब इस सत्य को प्रभु की रज़ा के स्वीकार से जोड़ते हैं–

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥39॥

(अंग क्रमांक 1428)

इसी प्रकार संसार में मनुष्य की आवश्यकताओं और इच्छाओं के मध्य परम दाता के रूप में अकाल पुरख की सत्ता को स्वीकार करते हुए गुरु साहिब कहते हैं–

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥40॥

(अंग क्रमांक 1428)

संसार की अस्थिरता को गुरु साहिब अत्यंत प्रभावशाली प्रतीक के माध्यम से पुनः स्पष्ट करते हैं–

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥49॥

(अंग क्रमांक 1427)

यहाँ 'बालू की भीति' अर्थात् रेत की दीवार संसार की अस्थिरता का अत्यंत सशक्त रूपक बन जाती है। जो कुछ मनुष्य को स्थायी प्रतीत होता है, वह भी समय के प्रवाह में नष्ट हो जाता है। अतः गुरु साहिब का संदेश संसार को त्याग देने का नहीं, अपितु उसकी नश्वर प्रकृति को पहचानते हुए उसमें आसक्ति से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करने का है।

मृत्यु बोध और प्रभु की रज़ा

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन-दृष्टि में मृत्यु कोई ऐसी अनहोनी नहीं है, जिसके भय से मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करे। जन्म के साथ मृत्यु संसार की स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसलिए उस घटना की चिंता करना, जो इस संसार के प्रत्येक जीव के जीवन पथ का अनिवार्य अंग है, आध्यात्मिक दृष्टि से उचित नहीं माना गया–

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥51॥

(अंग क्रमांक 1429)

यह मृत्यु बोध गुरु साहिब की निर्भयता की अवधारणा को और अधिक व्यापक बनाता है। जब मनुष्य संसार की नश्वरता और मृत्यु की अनिवार्यता को स्वीकार कर लेता है, तब सांसारिक भय की शक्ति स्वतः क्षीण होने लगती है। इसीलिए गुरमत में मृत्यु केवल जीवन की समाप्ति नहीं, अपितु परम सत्य की अनुभूति से जुड़ा एक गहन आध्यात्मिक विषय भी है।

इस विचार की जड़ें श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहीत व्यापक संत वाणी में भी दिखाई देती हैं। सिख धर्म की संस्थागत स्थापना श्री गुरु नानक देव साहिब जी से होती है, किंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित बाबा फरीद, भगत कबीर जी और अन्य भक्तों की बाणी के माध्यम से इससे संबद्ध अनेक आध्यात्मिक विचार पूर्ववती शताब्दियों की संत परंपरा से संवाद स्थापित करते दिखाई देते हैं। मृत्यु के भय से ऊपर उठकर उसे परम आनंद की प्राप्ति से जोड़ने वाली चेतना भगत कबीर जी की

निम्न पंक्तियों में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त होती है–

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥22॥

(अंग क्रमांक 1365)

इस प्रकार गुरमत चिंतन में मानव जीवन प्रकृति और परम सत्ता से पृथक कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। मनुष्य का शरीर मिट्टी, पानी, वायु, अग्नि और आकाश, इन पंचतत्त्वों से निर्मित माना गया है। ये तत्त्व स्वयं प्रकृति के कादर की विराट सत्ता के ही प्रकटीकरण हैं। अतः मानव जीवन की सार्थकता नश्वर देह और भौतिक उपलब्धियों के प्रति आसक्ति में नहीं, अपितु उस मूल सत्ता को पहचानने में निहित है, जिससे जीवन उत्पन्न होता है और अंततः जिसमें समाहित हो जाता है।

सृष्टि, मानव अस्तित्व और समर्पण की चेतना

गुरमत चिंतन में सृष्टि कोई स्थिर संरचना नहीं, अपितु कादर की विराट सत्ता के अंतर्गत निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है। प्रकृति के इसी व्यापक विधान में सृष्टि नित्य नवीन रूप धारण करती है। इससे उत्पन्न होने वाला प्रत्येक जीव अंततः इसी में समाहित हो जाता है। मानव शरीर जिन तत्त्वों से निर्मित होता है, अंततः उन्हीं तत्त्वों में विलीन हो जाता है। इस दृष्टि से मनुष्य का अपने अस्तित्व और सांसारिक उपलब्धियों पर अधिकार बोध भी स्थायी नहीं रह जाता।

भगत कबीर जी की बाणी में यह चेतना पूर्ण समर्पण के भाव के साथ अभिव्यक्त होती है। मनुष्य के पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे वह पूर्णतः अपना कह सके। उसका अस्तित्व और उसके पास उपलब्ध प्रत्येक वस्तु उसी परम सत्ता की देन है। अतः उसी की वस्तु उसी को समर्पित कर देने में मनुष्य का अपना कुछ भी कम नहीं होता है।

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥203॥

(अंग क्रमांक 1374)

यह समर्पण मनुष्य को निष्क्रिय नहीं बनाता, अपितु अहंकार और स्वामित्व बोध से मुक्त करता है। जब 'मैं' और 'मेरा' का आग्रह क्षीण होता है, तब व्यक्ति व्यापक मानवीय चेतना से जुड़ने की दिशा में अग्रसर होता है। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी में व्यक्त वैराग्य, अहंकार मुक्ति और संसार की नश्वरता का बोध इसी व्यापक आध्यात्मिक दृष्टि के विभिन्न आयाम हैं।

गुरमत परंपरा में प्रेम, त्याग और शहादत

सिख धर्म का ऐतिहासिक विकास अनेक संघर्षों, कठिनाइयों और शहादतों से होकर हुआ है। गुरु साहिबान और सिख परंपरा के अनुयायियों को अपने धार्मिक और नैतिक आदर्शों पर अडिग रहने के कारण अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। इस ऐतिहासिक अनुभव में शहादत केवल मृत्यु की घटना नहीं रह जाती, अपितु सत्य और सिद्धांत के लिए स्वयं को समर्पित करने की सर्वोच्च अवस्था के रूप में सामने आती है।

इस चेतना का मूल स्वर श्री गुरु नानक देव साहिब जी की बाणी में ही स्पष्ट हो जाता है। प्रेम के मार्ग पर चलने के इच्छुक व्यक्ति से यहाँ संपूर्ण आत्म-समर्पण की अपेक्षा की गई है–

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, अंग क्रमांक 1412)

यहाँ 'सिरु धरि तली' का भाव प्रेम और सत्य के मार्ग में पूर्ण समर्पण की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करता है। इस मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अपने सिद्धांत के लिए सर्वस्व अर्पित करने को तत्पर रहता है। आगे चलकर सिख इतिहास में शहादत

की जो महान परंपरा विकसित हुई, उसमें इसी आध्यात्मिक दृढ़ता की ऐतिहासिक अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

आत्मिक बल और बंधनों से मुक्ति : गुरमत में बाह्य अथवा भौतिक शक्ति की अपेक्षा आत्मिक और मानसिक बल को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बाहरी शक्ति मनुष्य को परिस्थितियों पर कुछ सीमा तक नियंत्रण प्रदान कर सकती है, किंतु विपरीत परिस्थितियों में अपने सिद्धांत, विश्वास और नैतिक संकल्प पर अडिग रहने की क्षमता आंतरिक बल से ही उत्पन्न होती है।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी में 'बल' और 'बंधन' का संबंध अत्यंत गहरे आध्यात्मिक अर्थ में सामने आता है। बल के अभाव में मनुष्य स्वयं को बंधनों से घिरा और उपाय हीन अनुभव करता है–

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥53॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, अंग क्रमांक 1429)

इसके विपरीत जब आत्मिक बल जागृत होता है, तब वही बंधन टूटते दिखाई देते हैं और मनुष्य में परिस्थितियों का सामना करने की सामर्थ्य उत्पन्न होती है–

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभ किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥54॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, अंग क्रमांक 1429)

इन दोनों पदों को साथ रखकर देखने पर 'बल' की अवधारणा केवल शारीरिक शक्ति तक सीमित नहीं रहती। इसमें विश्वास, संयम, मानसिक दृढ़ता और अपने अकीदे अथवा निश्चय पर अडिग रहने की सामर्थ्य भी समाहित है। यही आंतरिक शक्ति मनुष्य को भय और असहायता से ऊपर उठाती है। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के जीवन और उनकी बाणी को एक साथ देखने पर इस सिद्धांत का व्यावहारिक रूप और अधिक स्पष्ट होता है। उनकी बाणी में जिस निर्भयता, वैराग्य, अहंकार मुक्ति और आत्मिक दृढ़ता का प्रतिपादन हुआ, वही मूल्य उनके जीवन व्यवहार और अंततः शहादत में भी अभिव्यक्त होते दिखाई देते हैं। इस अर्थ में उनकी बाणी और जीवन दृष्टि एक - दूसरे से पृथक न होकर परस्पर पूरक हैं।

साहित्यिक चेतना पर गुरमत का व्यापक प्रभाव

गुरमत की यह आध्यात्मिक जीवन दृष्टि भारतीय चिंतन और साहित्य की व्यापक परंपरा के साथ भी संवाद स्थापित करती है। आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रकृति, दुःख, विपत्ति, समर्पण और आध्यात्मिक स्वतंत्रता जैसे विषयों की अभिव्यक्ति अनेक रचनाकारों के साहित्य में दिखाई देती है। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की गीतांजलि में भी जीवन की उपलब्धियों के साथ - साथ दुःख और विपत्ति को स्वीकार करने की गहन आध्यात्मिक चेतना अभिव्यक्त हुई है।

टैगोर के चिंतन और मध्यकालीन भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के मध्य अनेक वैचारिक साम्य देखे जा सकते हैं। इस व्यापक परिप्रेक्ष्य में श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी में व्यक्त निर्भयता, समर्पण, वैराग्य और परम सत्ता में विश्वास की चेतना भारतीय आध्यात्मिक साहित्यिक विरासत की एक महत्त्वपूर्ण धारा के रूप में सामने आती है।

निष्कर्ष : श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन यात्रा का ऐतिहासिक अनुशीलन यह स्पष्ट करता है कि उनके व्यक्तित्व को केवल उनकी शहादत की अंतिम घटना तक सीमित करके नहीं समझा जा सकता। उनकी शहादत के पीछे एक दीर्घ आध्यात्मिक, नैतिक और वैचारिक साधना विद्यमान थी। बाल्यकाल की गंभीरता, शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा, गुरु परिवार की आध्यात्मिक विरासत, पारिवारिक विरोधों के प्रति क्षमाशीलता, व्यापक धर्म प्रचार यात्राएँ, नए धार्मिक सामाजिक केंद्रों की स्थापना तथा उनकी बाणी में अभिव्यक्त वैराग्य और निर्भयता, ये सभी उनके जीवन दर्शन के परस्पर संबद्ध आयाम हैं।

उनकी बाणी मनुष्य को संसार की नश्वरता का बोध कराती है, किंतु उसे जीवन से विमुख नहीं करती। वह सांसारिक मोह और अहंकार से ऊपर उठकर प्रभु सिमरन, आत्मिक दृढ़ता और निर्भय जीवन की ओर प्रेरित करती है। 'भै काहू कउ

देत नहि नहि भै मानत आन' का सिद्धांत इसी जीवन दृष्टि का केंद्रीय सूत्र बनकर सामने आता है, न किसी को भय देना और न स्वयं भय के अधीन होना।

इसी प्रकार संसार को स्वप्न, पानी के बुलबुले और रेत की दीवार के समान क्षणभंगुर मानने की चेतना मृत्यु के भय को कम करती है और मनुष्य को स्थायी आध्यात्मिक मूल्यों की ओर उन्मुख करती है। जब इस वैराग्य पूर्ण चेतना के साथ आत्मिक बल और सत्य के लिए सर्वस्व समर्पित करने की भावना जुड़ती है, तब शहादत केवल ऐतिहासिक घटना न रहकर एक उच्च नैतिक प्रतिमान बन जाती है।

इस दृष्टि से श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का जीवन और बाणी एक - दूसरे की व्याख्या करते हैं। उनकी बाणी में प्रतिपादित निर्भयता, त्याग, वैराग्य, अहंकार मुक्ति और प्रभु की रज़ा में विश्वास उनके जीवन में मूर्त रूप ग्रहण करते हैं; वहीं उनका जीवन उनकी बाणी के दार्शनिक और नैतिक संदेश को ऐतिहासिक प्रमाणिकता प्रदान करता है। यही समन्वय श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को भारतीय आध्यात्मिक और मानवीय इतिहास में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

सन्दर्भ

1. बलबीर कौर, "गुरु तेग बहादुर साहिब का जीवन", गुरु तेग बहादुर : जीवन ते सिखिआ, संपा. तारन सिंह, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1976, पृ. 2।
2. प्रो. प्रकाश सिंह, "गुरु तेग बहादुर जी की जीवनी", गुरु तेग बहादुर : जीवन, संदेश ते शहादत, संपा. तारन सिंह, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997, पृ. 3।
3. प्रो. बलबीर सिंह, गुरु तेग बहादुर जी, दीपक पब्लिशर्स, जालंधर, 1976, पृ. 14।
4. भाई जोध सिंह, "गुरु तेग बहादुर : जीवन, शहीदी ते उसदा सिख संगतां पुर असर", गुरु तेग बहादुर : जीवन, संदेश ते शहादत, पृ. 40।
5. तारन सिंह, "रचना ते रचना दा सर्वेक्षण (भाग दूसरा)", गुरु तेग बहादुर : जीवन ते सिखिआ, पृ. 62।
6. प्रो. गुरबचन सिंह तालिब, "गुरु तेग बहादुर जी दी बाणी दा दार्शनिक पक्ष", गुरु तेग बहादुर : जीवन, संदेश ते शहादत, पृ. 109।
7. तारन सिंह, "प्रतिभा दा विकास ते स्वरूप", गुरु तेग बहादुर : जीवन ते सिखिआ, पृ. 28।
8. प्रिंसिपल तेजा सिंह एवं डॉ. गंडा सिंह, सिख इतिहास (1469-1765), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2006, पृ. 55। डॉ. कृपाल सिंह, "गुरु तेग बहादुर जी दे देश रटण अते प्रचार दौरे", गुरु तेग बहादुर : जीवन, संदेश ते शहादत, पृ. 22।
9. प्यार सिंह (संपा.), श्री गुरु तेग बहादुर (फारसी स्रोत), गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1976, पृ. 79।
10. डॉ. फौजा सिंह, "गुरु तेग बहादुर जी दी शहादत", गुरु तेग बहादुर : जीवन, संदेश ते शहादत, पृ. 265।

बाणी संदर्भ : श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की बाणी से संबंधित संदर्भ प्रो. साहिब सिंह द्वारा रचित श्री गुरु ग्रंथ साहिब दर्पण के 'सलोक महला नावा', पृष्ठ 672-689, से लिए गए हैं।

आधार स्रोत संबंधी टिप्पणी

प्रस्तुत आलेख की मूल प्रेरणा एवं वैचारिक आधार डॉ. महिल सिंह (प्रिंसिपल, खालसा कॉलेज, अमृतसर) द्वारा रचित पंजाबी आलेख "श्री गुरु तेग बहादुर : जीवन-मारग" है, जो पंजाबी पुस्तक श्री गुरु तेग बहादुर : बाणी ते शहादत दा गौरव में प्रकाशित है। प्रस्तुत हिंदी आलेख को उक्त मूल रचना के विषय - विन्यास, ऐतिहासिक संदर्भों और वैचारिक आधार को ध्यान में रखते हुए शोधपरक एवं साहित्यिक स्वरूप में विकसित किया गया है। आलेख में प्रयुक्त ऐतिहासिक तथ्यों, उद्धरणों एवं विचारों के मूल स्रोतों को यथासंभव पृथक संदर्भों के रूप में उल्लेखित किया गया है।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

कुमाऊँ के प्रसिद्ध न्याय के देवता-गोल्ज्यू या गोलू

सत्यवीर खनका
शोधार्थी
डॉ. नवीन चंद रजवार
शोधार्थी
इतिहास विभाग, लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़

शोध सारांश

मध्य हिमालयी क्षेत्र को प्रकृति ने अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान किया है। अलौकिक-आध्यात्मिक क्षमता और सौंदर्य के कारण यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही अनेक देवी- देवताओं एवं ऋषि-मुनियों की जन्मभूमि एवं कर्म भूमि रही है। मध्य हिमालय के इस सम्पूर्ण क्षेत्र में समय-समय पर ऋषि-मुनियों के द्वारा विभिन्न पौराणिक ग्रन्थों की रचना की गयी है। इस क्षेत्र की रमणीय एवं अलौकिक सुन्दरता के कारण जहाँ एक ओर स्वामी विवेकानंद ने इस क्षेत्र को आध्यात्म का केंद्र बताया जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण चम्पावत जिले में स्थित मायावती आश्रम है। वहीं महात्मा गांधी ने बागेश्वर जिले में स्थित कौसानी को 'भारत का स्विट्जरलैंड' बताया। यह क्षेत्र अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के साथ-साथ आध्यात्म के लिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में पग-पग पर लौकिक एवं पारलौकिक देवी-देवताओं के मंदिर विद्यमान हैं। इन सभी देवी-देवताओं में से गोल्ज्यू या गोलू देवता, सम्पूर्ण कुमाऊँ क्षेत्र के प्रत्येक घर में 'न्याय के देवता' के रूप में पूजे जाते हैं। प्रस्तुत शोध- पत्र के अंतर्गत न्यायकारी गोलू देवता के इतिहास, मान्यताओं एवं प्रथाओं का अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द- कुर्मांचल, काली-कुमाऊँ, पाली-पछाऊँ, भोर, सिलबट्टा।

इतिहास

कुर्मांचल या कुमाऊँ के सम्पूर्ण क्षेत्र में घर-घर पूजे जाने वाले गोलू या गोल्ज्यू देवता की पौराणिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को निर्धारित करना अत्यंत कठिन कार्य है। गोल्ज्यू के देवता के रूप में वर्णित होने के संदर्भ में अनेक लोकगाथाएँ, मान्यताएँ एवं किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। काली-कुमाऊँ (वर्तमान चम्पावत) व पाली-पछाऊँ क्ष्वर्तमान समय में यह क्षेत्र द्वाराहाट (अल्मोड़ा) से बारह मील की दूरी पर स्थित है। कत्यूरी राजाओं के शासन काल से लेकर ब्रिटिश काल तक यह क्षेत्र कुमाऊँ का परगना था (https//:kafaltree.com) में प्रचलित किंवदंतियों के अनुसार गोल्ज्यू देवता का जन्म-स्थान चम्पावत है। पिथौरागढ़ क्षेत्र में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार गोल्ज्यू देवता का जन्म स्थान हलराई कोट माना गया है (वर्मा, 50: 2014)। अल्मोड़ा क्षेत्र में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार गोल्ज्यू देवता का जन्म धौली-धूमाकोट में हुआ था (अग्रवाल, 17: 2018)। किंवदंतियों के अनुसार गोल्ज्यू देवता कत्यूरी राजा तलराई के परपोते, हलराई के पोते एवं झलराई के पुत्र थे(अग्रवाल, 17: 2018)। गोल्ज्यू देवता की माता का नाम कलिंका था(वर्मा, 50: 2014)।

गोरल देवता की उत्पत्ति के संदर्भ में कीर्ति बल्लभ शक्टा अपनी पुस्तक 'उत्तराखंड देवभूम्यां कूर्माचलः' में लिखते हैंः

देवो यो गोरलाख्यः निवसति भवने पर्वते कूर्मकूटे,
श्वेतश्चारुसुचारु यस्यं वसनं गौरश्च यस्याऽकृतिः।
श्वेतो घोटकवाहनोऽस्ति सुखदः श्वेतश्छविः यस्य वै,
वन्दे तं करुणान्वितं नृपवरं श्रीगोरलं सर्वदा (शक्टा,14:2024)।।

अर्थात् गोरल देवता, कूर्मपर्वत पर निवास करते हैं, इनके वस्त्र सफेद हैं, आकृति गोरे वर्ण की है और सफेद घोड़ा इनका वाहन है, ऐसे विशेष राजा गोरल की मैं वन्दना करता हूँ (शक्टा,14:2024)।

गोलू देवता के जन्म के सन्दर्भ में लिखते हैं कि
आसीन्नेपालभारतदेशयोः सिम्नि उत्तरस्यां दिशि
महाकालीति नद्याः समीपे वर्तमाने धारचूलातः नातिदूरे
धूमाकोट इति स्थाने राजा हालरायस्य राजधानी (शक्टा,15:2024)।

भारत और नेपाल की उत्तरी सीमा में महाकाली नदी के निकट, वर्तमान धारचूला के समीप धूमाकोट नामक स्थान पर हालाराय की राजधानी थी (शक्टा,14:2024)।

पौराणिक एवं किंवदंतियों के अनुसार कत्यूरी राजा झालराई की सात रानियाँ थी लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। पुत्र प्राप्ति हेतु उन्होंने अनेक देवताओं की उपासना की। राजा ने कुछ पंडितों को अपनी जन्म-कुंडली दिखाई (अग्रवाल, 17: 2018)। ज्योतिष ने कुण्डली देखकर बताया कि वे आठवाँ विवाह करें। आठवें विवाह से उनकी संतान उत्पत्ति के योग हैं।चम्पावत गोल्ज्यू मंदिर के पुजारी बसंत पाण्डेय बताते हैं कि पौराणिक मान्यताओं एवं किंवदंतियों के आधार पर उसी अर्द्ध-रात्रि को राजा ने स्वप्न में एक नीलकंठ पर्वत में बैठी कन्या कलिंका को देखा। अगली भोर (सूरज की पहली किरण) को ही राजा, कलिंका की खोज में निकल पड़े और नीलकंठ पर्वत पहुंचे। नीलकंठ पर्वत पर राजा, कलिंका से मिले और कहा कि वह धौली- धूमाकोट के राजा हैं और उनकी सात रानियाँ हैं परन्तु अभी तक वे संतान हीन हैं इसीलिये वे उन्हें अपनी आठवीं रानी बनाना चाहते हैं। कलिंका ने राजा को साधु के पास जाकर विवाह की अनुमति माँगने को कहा। राजा, साधु के पास गये और उन्हें सम्पूर्ण बात बताई। राजा की बात सुनकर साधु ने राजा को कलिंका के साथ विवाह की अनुमति प्रदान की। अनुमति मिलने के बाद राजा, रानी कलिंका के साथ विवाह कर वापस अपने प्रदेश लौट आये (पाण्डेय बसंत , साक्षात्कारः 8 जुलाई 2026)। चम्पावत के स्थानीय निवासी बृज मोहन पुनेठा बताते हैं कि विवाह के कुछ समय पश्चात् राजा को रानी कलिंका की गर्भावस्था का समाचार प्राप्त हुआ। यह सुनकर राजा की अन्य सातों रानियाँ, कलिंका से ईष्या करने लगी और उसके शिशु को मारने की योजना बनाने लगी। जैसे-जैसे प्रसव का समय नजदीक आया, सातों रानियाँ कलिंका के प्रति झूठी सहानभूति प्रकट करने लगी और राजा से कहने लगी कि वह कलिंका की प्रसूति स्वयं करेंगी। सातों रानियों ने बच्चे को मारने की योजना बनाई और योजना को सफल करने के लिए कलिंका से कहाँ कि नवजात शिशु को देखना माँ और बच्चे दोनों के लिए खतरनाक हो सकता है यह कहकर सातों रानियों ने कलिंका की आँखों में पट्टी बाँध दी। जैसे ही नवजात शिशु ने जन्म लिया सातों रानियों के ईष्यावश बच्चे को मारने के लिए अनेक प्रयास किये। नवजात बालक को गाय के गोठ में डाला, बिच्छु घास में फैका ताकि उसकी मृत्यु हो जाए लेकिन रानियों के यह सारे प्रयास असफल सिद्ध हुए अंत में रानियों ने बच्चे को एक बड़े से लोहे के बक्से (संदूक) में बंद कर काली नदी में इस उम्मीद के साथ बहा दिया कि बच्चा मर जायेगा एवं रानी कलिंका के गर्भ के पास एक रक्त रंजित पत्थर के सिलबट्टे (स्थानीय भाषा में लोड़) को रख दिया। राजा जो यह सूचना दी गयी कि रानी ने एक पत्थर के सिलबट्टे को जन्म दिया है (पुनेठा बृजमोहन, साक्षात्कार : 8 जुलाई 2026)।

सात दिन एवं सात रात तक लगातार बहते हुए आठवें दिन यह बक्सा गौरीहाट पहुंचा। वहां भाना नामक एक मछुवारे के जाल में फसा। भाना विवाह के बारह वर्ष बीत जाने के बाद भी संतान हीन था। वह बालक को घर अपनी पत्नी के पास लेकर गया और दोनों बच्चे का पालन पोषण करने लगे(वर्मा, 52 :2014)। जब गोलू बड़ा हुआ तो उसने पिता से एक घोड़ा

माँगा। पिता निर्धन होने के कारण बच्चे को एक घोड़ा (पशु) नहीं दिला पाए लेकिन उन्होंने बच्चे की इच्छा का मान रखते हुए गोलू के लिए काठ का घोड़ा बनाया जिसमें बैठ गोलू सवारी करता। एक रात गोलू देवता को स्वपन्न आया, स्वप्न्न में उन्होंने अपनी माँ कलिंका एवं पिता झलराई और अपने जन्म के समय घटी सम्पूर्ण घटना को देखा।

एक बार जब गोलू देवता अपने काठ के घोड़े को पानी पिलाने काली नदी पर उसी स्थान पर ले गये जहाँ राजा झलराई की सातों रानियाँ स्नान कर रही थी। गोलू देवता ने रानियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे यह स्थान छोड़ दें ताकि उनका घोड़ा पानी पी सके। रानियों ने गोल्ज्यू का उपहास उड़ाते हुए उत्तर दिया कि काठ का बना घोड़ा भी कभी पानी पीता है? गोल्ज्यू ने रानियों को जवाब देते हुए बोला कि जब कोई महिला प्रसव के दौरान सिलबट्टे को जन्म दे सकती है तो काठ का बना घोड़ा पानी क्यों नहीं पी सकता? यह सुनकर रानियाँ आश्चर्य चकित हो गयी और घबराकर वहां से महल लौट गयी। जब राजा को इस घटना का पता चला तो राजा ने बालक को अपने दरबार में आमंत्रित किया। जब गोल्ज्यू देवता दरबार पहुंचे तो उन्होंने राजा को अपने जन्म के समय घटित सम्पूर्ण घटनाओं से राजा को अवगत कराया और बताया उनकी माता कलिंका के साथ कितना अन्याय हुआ है। राजा ने सातों रानियों को उनके कृत्य के लिए मृत्यु-दंड का आदेश दिया लेकिन गोल्ज्यू ने अपने पिता से रानियों की सजा को कम करने का आग्रह किया। गोल्ज्यू की बात को मानते हुए राजा ने सातों रानियों को राज्य से निष्काषित कर दिया (पाण्डेय राजेश , साक्षात्कार : 6 जुलाई 2026)। जब गोल्ज्यू देवता का राज्याभिषेक कर राजा बनाया गया। हरुवा और कलुवा को राजा गोल्ज्यू का दीवान नियुक्त किया गया। हरुवा और कलुवा, गोल्ज्यू की न्यायिक कार्यों में सहायता करते थे (पाण्डेय, उमेश चन्द्र, साक्षात्कारः 6 जुलाई 2026)।



चम्पावत स्थित गोल्ज्यू देवता मंदिर एवं गर्व गृह, कलुवा -हरुवा देवता (9 जुलाई 2026)

गोल्ज्यू देवता के धौली-धूमाकोट से चम्पावत आने के सन्दर्भ में भी अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। गोरल देवता के चम्पावत आने के सन्दर्भ में राम सिंह अपनी पुस्तक 'राग-भाग काली कुमाऊँ' में लिखते हैं कि गोरल डोटी नेपाल से बाजरिकोट के भंडारियों के साथ चम्पावत आया। एक किंवदंती के अनुसार गोल्ज्यू देवता के शासन काल के समय कुमाऊँ में राजा नागनाथ का शासन था उन दिनों चम्पावत में 'जटिया' नामक एक मसान का आतंक था। मसान के आतंक से लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए नागनाथ ने धौली-धूमाकोट के राजा गोल्ज्यू को आमंत्रित किया। जटिया को पराजित कर जब गोल्ज्यू देवता राजा नागनाथ के दरवार में आये तो राजा ने उन्हें अपने सिंहासन पर बिठाया और खुद संन्यास लेकर वन की ओर प्रस्थान किया। इसके पश्चात् गोलू देवता ने धौली-धूमाकोट से अपनी माँ को बुलाकर यहीं से अपना शासन चलाया।

गोल्ज्यू देवता के विभिन्न नामों का कारण

गोलू देवता को ग्वेल, गोलू, बाला गोरिया और गौर भैरव इन चारों नामों से जाना जाता है।

ग्वेल -कुमाऊँनी भाषा के शब्द 'ग्वेल' का अर्थ होता है 'रक्षक'। अपनी प्रजा की सभी प्रकार के संकटों से रक्षा करने

के कारण इन्हें ग्वेल कहा जाता है।

बाला गोरिया- भाना को काली नदी में बहता हुआ संदूक जिस स्थान पर मिला उस स्थान का नाम गौरीहाट था। गौरीहाट के नाम पर उन्हें बचपन में बाला गोरिया कहा जाने लगा।

गौर भैरव- भैरक के समान शक्तियाँ होने एवं गौर अर्थात् श्वेत वर्ण (गौरा) का होने के कारण इन्हें गौर भैरव कहा जाने लगा (पुनेठा हरिदत्त, साक्षात्कारः 8अगस्त 2026)।

कुमाऊँ मंडल में चम्पावत के गोरिल मंदिर के साथ-साथ गोल्ज्यू देवता के तीन अन्य प्रसिद्ध मंदिर भी हैं। चितई (अल्मोड़ा) स्थित गोरिल देवता मंदिर, गैराड़ (अल्मोड़ा) में स्थित कैल बिष्ट (गोलू) मंदिर एवं नैनीताल के घोड़ाखाल में स्थित गोल्ज्यू देवता मंदिर। गोल्ज्यू देवता की न्यायप्रियता के कारण इन चारों मंदिरों की अत्यधिक मान्यता है।



चितई स्थित गोल्ज्यू देवता मंदिर एवं घोड़ाखाल स्थित गोल्ज्यू देवता (4 जुलाई 2026)

गोलू देवता चम्पावत के खर्ककार्की गाँव की कार्की, शक्टा व गोस्वामी, मंडलक गाँव के पाण्डेय, नागार्जुन गाँव के गोस्वामी, बाजरीकोट गाँव के भंडारी एवं गोरलचौड़ के गिरी व् गोस्वामी जाति के कुल देवता है। कुल देवता के साथ-साथ गोल्ज्यू को सम्पूर्ण कुमाऊ मंडल में लोकदेवता के रूप में पूजा जाता है लोकदेवता के रूप में गोल्ज्यू देवता के दरवार में मुख्यतः धोखाधड़ी अर्थात् दीवानी मामलों पर न्याय की गुहार लगायी जाती है। जिस प्रकार न्याय के लिए लोगों के द्वारा न्यायालय में याचिका दायर की जाती है उसी प्रकार लोग अपनी समस्या को स्टाम्प पेपर पर लिखकर गोल्ज्यू के देवता के चरणों में रख देते है। जब लोगों की मनोकामना पूरी हो जाती है तो आभार स्वरुप भक्त जन गोल्ज्यू देवता के मंदिर में घंटिया चढ़ाते हैं। गोल्ज्यू देवता के मंदिर परिसरों में लगी लाखों घंटियाँ लोगों की आस्था एवं उनकी प्रार्थना और न्याय के देवता के रूप में लोगों की कहानियां कहती हैं। गोल्ज्यू देवता की लोक प्रियता का अनुमान इससे लगाया जाता है कि वर्तमान समय में अनेक गोल्ज्यू देवता पर अनेक जागरों एवं लोकगीतों का निर्माण किया गया है। अल्मोड़ा निवासी चंपा पाण्डेय द्वारा लिखित गोल्ज्यू देवता के लोकगीत के अंतर्गत उनकी सम्पूर्ण जीवनी का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है :

ओ म्यार दुधा धारी बाला गोरिया तुमरी जै जैकार।
कत्यूर वंश राजा झालुराई का च्यला,
आठु राणी कलिंगाक गर्भ बटी पैदा।
कलिंगाका बाला गोरिया तुमरी जै जै कार ...
ओ म्यार कष्ट का हरनी देवा तुमरी जै जैकार।

(https://devbhuoomidarshan.in)

इसी तरह के अनेक जागरों और लोकगीतों का सम्पूर्ण कुमाऊ मंडल में गायन किया जाता है। आज गोल्ज्यू देवता के

मंदिर में न केवल कुमाऊ मंडल के लोग आते हैं अपित सम्पूर्ण भारत वर्ष से लोग यहाँ अपनी मनोकामना लेकर आते है।

वर्तमान समय में यह चारों गोल्ज्यू देवता के मंदिर पुरातत्वविभाग के संरक्षण में हैं। चम्पावत में गोल्ज्यू देवता के मंदिर को आस्था के साथ-साथ पर्यटन की विकसित करने के उद्देश्य से लगभग 570 करोड़ रुपये की लागत से गोल्ज्यू कोरिडोर का निर्माण किया जा रहा हैं। गोल्ज्यू देवता की कहानियों एवं उनसे जुड़े लोकजागरों और उनकी न्यायप्रियता से लोगों को अवगत कराने के उद्देश्य से अपनी धरोहर संस्थान के द्वारा प्रतिवर्ष गोल्ज्यू सन्देश यात्रा का आयोजन किया जा रहा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल सी. एम. 2018. कुमाऊँ हिमालय के न्याय देवता गोलू , अल्मोड़ा बुक डिपो।
2. शक्टा, कीर्तिबल्लभ .2024. उत्तराखंड देवभूम्यां कूर्माचल, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी।
3. सिंह राम.2002. राग-भाग काली कुमाऊँ, पहाड़ पोथी, तल्ला डांडा, नैनीताल।
4. वर्मा, इंद्र लाल.2014 . जनपद चम्पावत के दर्शनीय स्थल, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून।
5. https//:kafaltree.com, अभिगमन तिथि- 7 जुलाई 2026।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

BRICS 2026 : नवाचार, सहयोग और वैश्विक परिवर्तन एक मूल्यांकन

डॉ. सुनील कुमार तिवारी
सहायक आचार्य
प्रभारी - रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा

सारांश

नई दिल्ली में भारत की अध्यक्षता में आयोजित 18वां BRICS सम्मेलन बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की बढ़ती कूटनीतिक भूमिका का महत्वपूर्ण संकेतक रहा। सम्मेलन में वैश्विक शासन सुधार, ग्लोबल साउथ की भागीदारी, तकनीकी सहयोग, महत्वपूर्ण खनिजों तथा आपूर्ति शृंखलाओं की मजबूती जैसे मुद्दे प्रमुख रहे। नई दिल्ली घोषणापत्र का सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। विस्तारित BRICS में राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक मतभेदों के बावजूद सदस्य देशों ने वैश्विक शासन, विकास, तकनीक और बहुपक्षीय सहयोग पर सहमति प्रदर्शित की। इससे स्पष्ट होता है कि BRICS विभिन्न शक्तियों के बीच व्यावहारिक सहयोग और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण मंच बन रहा है।

Keywords: Innovation, Global South, Multipolarity, International Cooperation, India, Strategic Autonomy.

प्रस्तावना

शीतयुद्ध के पश्चात लंबे समय तक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में पश्चिमी शक्तियों का प्रभाव प्रमुख रहा, किंतु वर्तमान समय में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की उभरती अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक शक्ति-संतुलन को प्रभावित कर रही हैं। इसी परिवर्तन की पृष्ठभूमि में BRICS एक महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच के रूप में उभरा। इसका प्रारंभ ब्राजील, रूस, भारत और चीन के साथ हुआ तथा बाद में दक्षिण अफ्रीका के जुड़ने से इसका विस्तार हुआ। हालिया विस्तार ने इसे व्यापक भौगोलिक एवं आर्थिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया है। BRICS का महत्व केवल आर्थिक क्षमता तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक शासन संस्थाओं में सुधार, विकासशील देशों के हितों की अभिव्यक्ति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के निर्माण से भी जुड़ा है। BRICS 2026 के संदर्भ में नवाचार, सहयोग और वैश्विक परिवर्तन विशेष महत्व रखते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित प्रौद्योगिकी, ऊर्जा सुरक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय सहयोग और आपूर्ति शृंखलाएँ अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित कर रही हैं। भारत के लिए BRICS रणनीतिक स्वायत्तता, वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं और अधिक प्रतिनिधिक वैश्विक शासन को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण मंच है। प्रस्तुत अध्ययन BRICS 2026 के प्रमुख आयामों का विश्लेषण करते हुए वैश्विक परिवर्तन में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करता है।

BRICS की स्थापना एवं उद्देश्य

BRICS विश्व की प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं का एक महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच है। सितम्बर के इसी महीने में, 20 साल पहले ब्राजील, रूस, भारत और चीन के विदेश मंत्रियों ने ब्रिक्स की पहली बैठक की थी। वर्ष 2001 में गोल्डमैन सैक के तत्कालीन अर्थशास्त्री जिम ओ'नील ने तेजी से बढ़ती इन चार अर्थव्यवस्थाओं (ब्राजील, रूस, भारत, चीन) के नामों के प्रथमाक्षरों के आधार पर इस समूह का नाम 'ब्रिक' रखा था। इसके बाद इन देशों के बीच राजनीतिक एवं आर्थिक समन्वय बढ़ा और 2006 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अवसर पर विदेश मंत्रियों की पहली अनौपचारिक बैठक हुई। 16 जून 2009 को रूस के येकातेरिनबर्ग में पहला ठत्प्ब शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ। 2010 में दक्षिण अफ्रीका को समूह में शामिल करने का निर्णय लिया गया और 2011 के सान्या शिखर सम्मेलन से ब्रिक से 'ब्रिक्स' हो गया। बाद में कई अन्य देश इससे जुड़े, कुछ पूर्ण सदस्य के रूप में तो कुछ आधिकारिक साझेदार के रूप में। आज ब्रिक्स अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक बेहद महत्वपूर्ण प्रयोग है, जो पश्चिमी-वर्चस्व से दूर वैश्विक शक्ति के पुनर्संतुलन और बहुध्रुवीय विश्व-व्यवस्था के उभार को बताता है। आज यह ग्लोबल साउथ की एक लगातार प्रभावशाली होती आवाज बन चुका है। BRICS की स्थापना का मूल उद्देश्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग को मजबूत करना तथा वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में विकासशील देशों की भूमिका को अधिक प्रभावशाली बनाना था। इसका उद्देश्य किसी देश के विरुद्ध सैन्य या राजनीतिक गठबंधन बनाना नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान, समानता, सहयोग और सहमति के आधार पर साझा हितों को आगे बढ़ाना है। BRICS के प्रमुख उद्देश्यों में आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग को बढ़ावा देना, निवेश और वित्तीय सहयोग को मजबूत करना, सतत विकास को प्रोत्साहित करना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ाना तथा वैश्विक आर्थिक संस्थाओं में सुधार की मांग करना शामिल है। BRICS का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य वैश्विक शासन व्यवस्था को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, न्यायसंगत और बहुध्रुवीय बनाना भी है। इसके सदस्य संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा अन्य बहुपक्षीय मंचों पर विकासशील देशों के हितों और आवाज को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सहयोग करते हैं। इसके साथ ही आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा और तकनीकी विकास जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी सामूहिक विचार-विमर्श किया जाता है। समय के साथ BRICS का सहयोग केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित न रहकर राजनीति एवं सुरक्षा, अर्थव्यवस्था एवं वित्त तथा सांस्कृतिक एवं जन-से-जन संबंधों तक विस्तृत हुआ है। इस प्रकार, BRICS की स्थापना का मूल लक्ष्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग, विकास और समन्वय को बढ़ाना तथा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में वैश्विक दक्षिण की भूमिका को सुदृढ़ करना रहा है।

2024-25 में मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान, सऊदी अरब और यूएई के भी जुड़ने के बाद से ब्रिक्स में अब दुनिया की लगभग आधी आबादी और वैश्विक जीडीपी का करीब 40% हिस्सा आता है (पीपीपी के आधार पर)। जबकि जी7 में दुनिया की 10% से भी कम आबादी और वैश्विक जीडीपी का 30% से भी कम हिस्सा है। जहां वैश्विक अर्थव्यवस्था में ब्रिक्स की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है, वहीं विकसित अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादकता और आर्थिक वृद्धि की रफ्तार 1990 के दशक से ही लगातार घटती रही है। पहले जहां पश्चिम का वैश्विक प्रभुत्व हुआ करता था, वहीं अब शक्ति और प्रभाव में अधिक व्यापकता और विविधता है। ब्रिक्स ने इस धारणा को चुनौती दी है कि विश्व-व्यवस्था द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित पश्चिम-नेतृत्व वाली संस्थाओं के इर्द-गिर्द ही केंद्रित रहनी चाहिए। गैर-पश्चिमी देशों के लिए ब्रिक्स की बढ़ती आर्थिक और भू-राजनीतिक अनिश्चितता के खिलाफ एक सुरक्षा-कवच है। कुछ हद तक अमेरिका भी इसमें मदद कर रहा है, जो वैश्विक नेतृत्व से पीछे हटने पर आमादा दिखाई देता है। यह रणनीतिक स्वायत्तता को आगे बढ़ाने और आर्थिक सहयोग का दायरा विस्तृत करने के लिए संस्थागत मंच भी उपलब्ध कराता है। ऐसे में, इसकी सदस्यता प्राप्त करने को लेकर विभिन्न देशों में उत्साह होना स्वाभाविक है। तीन दर्जन से अधिक देशों ने औपचारिक रूप से इसकी सदस्यता के लिए आवेदन किया है अथवा संगठन में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की है।

इनमें नाटो का सदस्य तुर्किये और अमेरिकी नौसैनिक बलों का प्रमुख ऑपरेशनल-हब बहरीन भी शामिल है। ब्रिक्स

के दस साझेदार देश भी हैं- बेलारूस, बोलीविया, कजाखस्तान, क्यूबा, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, युगांडा, उज्बेकिस्तान और वियतनाम- जो शिखर सम्मेलनों में भाग लेते हैं। यह ढांचा ब्रिक्स को सहयोग के अपने नेटवर्क का विस्तार करने और ग्लोबल-साउथ का प्रतिनिधित्व करने की अपनी क्षमता मजबूत करने में मदद करता है। ब्रिक्स महज एक प्रतीकात्मक समूह नहीं है। उसने संस्थान-निर्माण के क्षेत्र में ठोस प्रगति की है। न्यू डेवलपमेंट बैंक वैश्विक स्तर पर काम करने वाला पहला बहुपक्षीय विकास बैंक है, जिसकी परिकल्पना और अगुआई उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने की है। इसके संस्थापक ब्रिक्स सदस्यों की इसमें हिस्सेदारी और वोटिंग-अधिकार बराबर हैं। इसके विपरीत, विश्व बैंक और आईएमएफ- दोनों में ही अमेरिका के पास प्रभावी वीटो है। ब्रिक्स अंतरराष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था के भीतर मौजूद कमजोरियों को कम करने के लिए भी काम कर रहा है। अटकलों के विपरीत, यूरो जैसी किसी ब्रिक्स मुद्रा का गठन फिलहाल तो एजेंडे में नहीं है। लेकिन राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापारिक लेन-देन के निपटारे का विस्तार करने, सदस्य देशों की डिजिटल भुगतान प्रणालियों के बीच इंटरऑपरेबिलिटी बेहतर करने, केंद्रीय बैंकों की डिजिटल मुद्राओं को आपस में जोड़ने आदि पर यह ध्यान देता है।

ब्रिक्स सम्मेलन के बीच भारत-चीन संबंध

2020 के पूर्वी लद्दाख सैन्य टकराव के बाद भारत-चीन संबंधों में गंभीर तनाव आया था। ऐसे में सितंबर 2026 के 18वें BRICS सम्मेलन के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग की सात वर्ष बाद भारत यात्रा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता संबंधों में संवाद की वापसी का महत्वपूर्ण संकेत है। दोनों नेताओं ने संबंधों को दीर्घकालिक और रणनीतिक दृष्टि से देखने तथा मतभेदों को विवाद में न बदलने पर जोर दिया। भारत ने सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता को विकास की आवश्यक आधारशिला बताया तथा साथ ही, दोनों पक्षों ने सीमा संबंधी मौजूदा समझौतों का पालन और सीमा प्रश्न के शांतिपूर्ण समाधान की आवश्यकता दोहराई। हालाँकि, इन घटनाक्रमों को संबंधों में पूर्ण सुधार के रूप में देखना उचित नहीं होगा। वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े प्रश्न, रणनीतिक अविश्वास और आर्थिक असंतुलन जैसे मुद्दे अभी भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए वर्तमान चरण को "समझौते" की अपेक्षा "स्थिरीकरण और संवाद" के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध महत्वपूर्ण हैं, लेकिन भारत के लिए व्यापार घाटा, बाजार पहुँच और आपूर्ति-श्रृंखला से जुड़ी चिंताएँ बनी हुई हैं। 2026 की मोदी-शी वार्ता में भी संरचनात्मक व्यापार असंतुलन, आपूर्ति-श्रृंखला और बाजार पहुँच पर चर्चा हुई। ब्रिक्स भारत और चीन को अपने सभी द्विपक्षीय मतभेद समाप्त किए बिना साझा वैश्विक मुद्दों पर सहयोग का अवसर प्रदान करता है। वैश्विक शासन सुधार, विकास, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी सहयोग और ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं पर दोनों देशों के बीच समान हितों की संभावनाएँ मौजूद हैं।

भारत के लिए चीन के साथ संवाद बनाए रखना उसकी व्यापक विदेश नीति का एक हिस्सा है। अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी, रूस के साथ संबंध तथा पश्चिम एशिया के देशों के साथ सहयोग को आगे बढ़ाते हुए चीन के साथ स्थिर संबंधों का प्रयास भारत को विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ अपने हितों के अनुरूप संबंध संचालित करने का अवसर देता है। साथ ही, चीन के साथ आर्थिक संपर्क बढ़ाते समय महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अत्यधिक निर्भरता कम करना और वैकल्पिक आपूर्ति-शृंखलाएँ विकसित करना भी आवश्यक है। अतः 2026 का BRICS सम्मेलन भारत-चीन संबंधों में स्थिरता, संवाद और प्रतिस्पर्धा के संतुलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण को दर्शाता है। इसका दीर्घकालिक महत्व इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों देश सीमा, आर्थिक संबंधों और नियमित राजनीतिक संवाद से जुड़े मुद्दों पर आगे कितनी व्यावहारिक प्रगति करते हैं।

BRICS की चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ

BRICS की बढ़ती सदस्यता ने इसकी वैश्विक प्रतिनिधिकता और प्रभाव को विस्तार दिया है, किंतु इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सदस्य देशों की राजनीतिक व्यवस्थाएँ, आर्थिक संरचनाएँ और विदेश नीति की प्राथमिकताएँ

अलग-अलग हैं। भारत-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-पश्चिम तनाव, पश्चिम एशिया की अस्थिरता तथा विभिन्न क्षेत्रीय हित संगठन के भीतर सहमति को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अमेरिका और BRICS देशों के बीच बढ़ती आर्थिक एवं रणनीतिक प्रतिस्पर्धा भी महत्वपूर्ण चुनौती है। अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ और व्यापारिक प्रतिबंध वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता बढ़ा सकते हैं, जिससे व्यापार प्रवाह, आपूर्ति शृंखलाओं और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर प्रभाव पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में ब्रिक्स के सामने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों और आपूर्ति शृंखलाओं के विविधीकरण को बढ़ावा देने का अवसर है। हालांकि, साझा मुद्रा या पूर्णतः वैकल्पिक वित्तीय व्यवस्था विकसित करना सदस्य देशों की अलग-अलग आर्थिक नीतियों के कारण जटिल हो सकता है। इसलिए व्यावहारिक और चरणबद्ध सहयोग अधिक महत्वपूर्ण रहेगा।

ऊर्जा सुरक्षा BRICS के भविष्य का एक प्रमुख आयाम है। रूस, ईरान, सऊदी अरब जैसे ऊर्जा उत्पादक देशों तथा भारत और चीन जैसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं की उपस्थिति इसे वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था में महत्वपूर्ण मंच बनाती है। रूस-यूक्रेन संघर्ष, पश्चिम एशिया की अस्थिरता, समुद्री मार्गों में व्यवधान और ऊर्जा कीमतों में उतार-चढ़ाव से आयात-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं पर मुद्रास्फीति तथा आर्थिक दबाव बढ़ सकता है। इसलिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय एवं परमाणु ऊर्जा, रणनीतिक भंडार और सुरक्षित ऊर्जा परिवहन मार्गों पर सहयोग आवश्यक होगा। BRICS के लिए एक अन्य चुनौती इसकी पहचान से जुड़ी है। इसे केवल पश्चिम-विरोधी मंच बनाने के बजाय वैश्विक विकास, बहुपक्षीय सहयोग और संस्थागत सुधार के व्यावहारिक मंच के रूप में आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण होगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था की परस्पर निर्भरता को देखते हुए BRICS और पश्चिमी देशों के बीच पूर्ण आर्थिक अलगाव व्यावहारिक नहीं है। अतः प्रतिस्पर्धा के साथ संवाद और सहयोग की नीति आवश्यक होगी। भविष्य में BRICS का सहयोग स्थानीय मुद्रा व्यापार, डिजिटल भुगतान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऊर्जा, जलवायु वित्त, खाद्य सुरक्षा, महत्वपूर्ण खनिज, आपूर्ति शृंखला और वैश्विक संस्थागत सुधार जैसे क्षेत्रों में बढ़ सकता है। यदि सदस्य देश अपनी विविधताओं के बावजूद साझा हितों पर प्रभावी समन्वय स्थापित करते हैं, तो BRICS वैश्विक शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत के लिए यह मंच रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक दक्षिण के हितों के बीच संतुलन स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्ष

ब्रिक्स 2026 के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि यह मंच अब केवल उभरती अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक सहयोग का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि परिवर्तित वैश्विक शक्ति-संतुलन, बहुध्रुवीयता और वैश्विक दक्षिण की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने वाला प्रभावशाली बहुपक्षीय मंच बन चुका है। नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित प्रौद्योगिकी, ऊर्जा सुरक्षा, महत्वपूर्ण खनिज, आपूर्ति शृंखला तथा वैश्विक शासन-सुधार जैसे मुद्दे इसके एजेंडे को व्यापक बनाते हैं। सदस्यता के विस्तार ने BRICS की भौगोलिक एवं आर्थिक पहुँच बढ़ाई है, किंतु विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, आर्थिक हितों और सामरिक प्राथमिकताओं के कारण सहमति निर्माण और संस्थागत समन्वय इसकी प्रमुख चुनौती बने हुए हैं। भारत के लिए BRICS का महत्व उसकी रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय कूटनीति के संदर्भ में विशेष है। भारत वैश्विक दक्षिण की विकासात्मक आवश्यकताओं, अधिक प्रतिनिधिक वैश्विक शासन तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार की वकालत करते हुए अमेरिका, रूस, चीन और अन्य शक्तियों के साथ अपने संबंधों को समानांतर रूप से संचालित कर रहा है। भारत-चीन संबंधों में प्रतिस्पर्धा के बावजूद संवाद और स्थिरता की आवश्यकता यह दर्शाती है कि समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में प्रतिद्वंद्विता और सहयोग एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि समानांतर प्रक्रियाएँ हो सकती हैं।

वर्तमान भू-आर्थिक परिस्थितियों में अमेरिकी टैरिफ एवं व्यापारिक प्रतिबंध, आपूर्ति शृंखलाओं का पुनर्गठन, रूस-यूक्रेन संघर्ष तथा पश्चिम एशिया की अस्थिरता ने व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा को रणनीतिक प्राथमिकता प्रदान की है। ऐसे परिवेश में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, वैकल्पिक भुगतान प्रणालियाँ, ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, महत्वपूर्ण खनिजों की सुरक्षित

उपलब्धता और लचीली आपूर्ति शृंखलाएँ BRICS सहयोग के संभावित आधार बन सकते हैं। BRICS की प्रभावशीलता उसके विस्तार मात्र से नहीं, बल्कि विविध हितों के बीच सहमति, संस्थागत क्षमता और व्यावहारिक सहयोग विकसित करने की क्षमता से निर्धारित होगी। इसे केवल पश्चिम-विरोधी मंच के रूप में देखना इसके बहुआयामी स्वरूप को सीमित करेगा। यदि BRICS प्रतिस्पर्धा और सहयोग के बीच संतुलित संवाद बनाए रखते हुए साझा वैश्विक चुनौतियों पर ठोस सहयोग विकसित करता है, तो यह अधिक समावेशी और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस प्रक्रिया में भारत वैश्विक दक्षिण, रणनीतिक स्वायत्तता और सहयोगात्मक बहुपक्षवाद के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य कर सकता है।

सन्दर्भ

1. जयशंकर, एस. (2020).
   The India way: Strategies for an uncertain world- HarperCollins Publishers India
2. जयशंकर, एस. (2024).
   Why Bharat matters- Rupa Publications India
3. खन्ना, वी. एन. (2020).
   International relations- Vikas Publishing House
4. पंत, एच. वी. (Ed.). (2020).
   Indian foreign policy: An overview- Orient BlackSwan-
5. पंत, एच. वी., एवं जोशी, वाई. (2015).
   India's foreign policy: Challenges and opportunities- Cambridge University Press India-
6. चन्द्र, पी. (2016).
   International politics- Vikas Publishing House-
7. शर्मा, आर. (2021). भारत की विदेश नीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध. Pearson India
8. दैनिक जागरण।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

शंबूक : वर्णव्यवस्था, प्रतिरोध और मानवीय गरिमा का अध्ययन

डॉ. मुक्तारानी कंचकार
एम०ए०, पी-एच०डी०, नेट/सेट (हिंदी)
व्याख्याता- वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय
महाविद्यालय मरवाही जिला -जी०पी०एम० (छ०ग०)

सार- शंबूक कविता गुप्त जी का एक खंड काव्य है, जो रामायण के शंबूक प्रसंग को आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित करता है। इस काव्य में केवल धार्मिक घटना का वर्णन नहीं है बल्कि सामाजिक न्याय, जाति प्रथा, समानता और मानवाधिकारों को केंद्र में रखकर लिखा गया है। शंबूक के व्यक्तित्व को एक ऐसे मानव के रूप में चित्रित किया गया है जो दमनकारी व्यवस्था के सामने डटकर खड़ा होता है। शंबूक का चरित्र अन्याय के खिलाफ खड़ा मानव के रूप में दिखाया गया है।

इस कविता में शंबूक केवल 'शूद्र तपस्वी' के रूप में नहीं बल्कि एक विचारवान, साहसी और संघर्षशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह समाज की उस दमनकारी परंपरा को चुनौती देता है जिसमें ऊंची जाति से बाहर के लोगों के लिए ज्ञान, तप, साधना और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना वर्जित माना जाता था।

गुप्त जी कहते हैं–

शंबूक का दोष केवल इतना था कि वह जन्म आधारित सीमाओं को मान्यता नहीं देता था शंबूक को शूद्र तपस्वी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसकी तपस्या को रामराज्य के लिए संकट बताया गया है। एक ब्राह्मण बालक की मृत्यु का कारण शंबूक की तपस्या को ठहराया जाता है और अंततः उसे दंडित किया जाता है। यह प्रसंग वर्ण - व्यवस्था की कठोरता और जन्म आधारित सामाजिक विभाजन को उजागर करता है।

यह काव्य सामाजिक समानता, श्रम की गरिमा और मानवीय अधिकारों की वकालत करती है।कवि समाज की उन संरचनाओं को उजागर करता है, जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। इस काव्य में शंबूक केवल एक पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि सदियों से शोषित वंचित और उपेक्षित वर्ग की सामूहिक चेतना का प्रतीक बनकर उभरता है। 'शंबूक' काव्य का विश्लेषण दलित विमर्श, प्रगतिशील साहित्यिक चेतना तथा मिथक-पुनर्पाठ की आलोचनात्मक पद्धति के आलोक में किया गया है।

जगदीश गुप्त इस परंपरागत दृष्टि को स्वीकार नहीं करते वे शंबूक को अपराधी नहीं, बल्कि ज्ञान और आत्मोन्नति की आकांक्षा रखने वाला मनुष्य मानते हैं। उनके अनुसार यदि तप, ज्ञान और साधना केवल किसी एक वर्ग का अधिकार बन जाए तो वह धर्म नहीं बल्कि सत्ता का साधन बन जाता है। इस प्रकार कवि शंबूक प्रसंग को सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में पुनर्परिभाषित करता है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि जगदीश गुप्त का शंबूक साहित्य को सामाजिक परिवर्तन और वैचारिक हस्तक्षेप का माध्यम बनाता है।

बीज शब्द - जगदीश गुप्त, शंबूक, दलित विमर्श, वर्ण व्यवस्था, रामायण, मिथक, पुनर्पाठ, सामाजिक न्याय, प्रगतिशील चेतना।

प्रस्तावना- बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कवियों लेखकों ने यह अनुभव किया कि परंपरागत धार्मिक और सांस्कृतिक कथाएं केवल आस्था की वस्तु नहीं है, बल्कि वे सामाजिक सत्ता-संरचना को वैद्यता प्रदान करने के उपकरण भी रही हैं। रामायण का शंबूक प्रसंग भारतीय समाज की वर्ण-आधारित संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है। परंपरागत आख्यानों में शंबूक को वर्ण - धर्म के उल्लंघन का दोषी ठहराया गया और उसकी तपस्या को सामाजिक अपराध के रूप में प्रस्तुत किया गया इसी संदर्भ में रामायण, महाभारत और पुराणों के अनेक प्रसंगों को अनेक प्रसंगों को नये दृष्टिकोण से देखा गया।

गुप्त की काव्य- दृष्टि प्रगतिशील और दलित विमर्श से प्रभावित है। शंबूक काव्य केवल एक पौराणिक कथा का पुनर्कथन नहीं बल्कि वर्ण- व्यवस्था धार्मिक सत्ता और सामाजिक असमानता पर तीखा प्रश्न चिन्ह है। इसमें साहित्य, समाज और विचारधारा का गहन अंतर्संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

गुप्त का शंबूक काव्य - तीन वैचारिक आधारों पर स्थापित है–

(क) प्रगतिशील चेतना - यह काव्य सामाजिक समानता श्रम की गरिमा और मानवीय अधिकारों को चित्रित करती है। शंबूक ज्ञान और तप का अधिकार मांगता है जबकि सत्ता उसे अपराध घोषित करती है। कवि समाज की उन संरचनाओं को उजागर करता है, जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है।

(ख) दलित विमर्श - शंबूक इस काव्य में दलित और वंचित वर्ग की सामूहिक आवाज बनकर उभरता है। उसकी तपस्या और आत्मसम्मान अधिकार-बोध का प्रतीक है। गुप्त जी शंबूक के माध्यम से उस ऐतिहासिक अन्याय को सामने लाते हैं, जिसे वर्षों तक धार्मिक वैद्यता प्राप्त रही।

(ग) यह काव्य आधुनिक भारत में जाति-आधारित भेदभाव, सामाजिक असमानता और दलित आंदोलन से गहराई से जुड़ा हुआ है। शंबूक शोषित मानवता का प्रतीक है,राम सत्ता व्यवस्था के प्रतिनिधि हैं और ऋषि-मुनि धार्मिक प्रभुता के प्रतीक हैं।

विश्लेषण - गुप्त जी ने इस काव्य में पारंपरिक 'दैवीय न्याय; को चुनौती दी है। प्राचीन काल में माना जाता था कि तप केवल ब्राह्मण या ऋषि कर सकते हैं। गुप्त जी का शंबूक तर्क देता है कि 'ज्ञान किसी की बपौती संपत्ति नहीं है।' वह तप को व्यक्तिगत मोक्ष से हटाकर एक सामाजिक अधिकार बना देते हैं। शंबूक-वध को राम की वीरता के रूप में नहीं बल्कि त्रासदी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यहां शंबूक अपराधी नहीं बल्कि एक 'मार्टियर' (शहीद) है जो व्यवस्था की क्रूरता को उजागर करता है। यह काव्य नई कविता के दौर में मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय का एक ऐसा घोषणा पत्र है, जहां राम की मर्यादा और शंबूक की साधना के बीच का द्वंद्व आधुनिक लोकतंत्र की चुनौतियों को प्रतिबिंबित करता है।इस काव्य में राम का चरित्र भगवान का नहीं बल्कि एक राज्य प्रमुख का है। राम जानते है कि शंबूक निर्दोष है लेकिन ब्राह्मणों और समाज के तथाकथित रक्षकों के दबाव में वे निर्णय लेते हैं। यह काव्य आधुनिक राजनीति के उस चेहरे को दिखाता है जहां वोट बैंक या लोक-लुभावन वाद के लिए न्याय की बलि दी जाती है। शंबूक राम के सामने हथियार नहीं उठाता। उसका हथियार उसकी श्साधनाश और उसका 'मौन' है। शंबूक और राम के बीच जो प्रश्न उठते हैं वे आज के मानवाधिकारों से मेल खाते हैं वह पूछता है कि यदि ज्ञान अमृत है तो उसे पीने वाला अपराधी कैसे हुआ।

इस कविता में शंबूक के वध को उसकी पराजय नहीं, है बल्कि बौद्धिक विजय के रूप में स्थापित किया है। गुप्त जी ने शंबूक को श्बलि का बकराश नहीं बल्कि एक क्रांतिकारी के रूप में प्रस्तुत किया है। पारंपरिक रामकथा में शंबूक का वध धर्म की पुनर्स्थापना माना जाता था, लेकिन गुप्त जी के काव्य में यह सत्ता ज्ञान का दमन है।

यहां शंबूक का तर्क है– 'क्या तप का अधिकार केवल कुल - विशेष सीमित है?'

रामकथा के इस प्रसंग के माध्यम से लोकतंत्र, समानता और मानवाधिकारों की वकालत की गई है। कविता की भाषा तत्सम प्रधान होते हुए भी आधुनिक संवेदनाओं को व्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम है। इस कविता में केवल पौराणिक आख्यान

नहीं बल्कि जातिगत असमानता, सत्ता, न्याय और मानवीय गरिमा पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। कवि ने शंबूक को शूद्र तपस्वी मात्र नहीं, बल्कि शोषित एवं वंचित समाज के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया है। उसका तप ज्ञान, आत्मसम्मान और समान अधिकार प्राप्त करने का प्रतीक है। शंबूक का संघर्ष सामाजिक परिवर्तन की चेतना को व्यक्त करता है। कविता का मूल स्वर सामाजिक न्याय है यदि तप, ज्ञान और धर्म मनुष्य के आध्यात्मिक अधिकार है तो जन्म के आधार पर किसी को उनसे वंचित क्यों किया जाए।इस प्रकार कविता वर्ण व्यवस्था की अन्यायपूर्ण सरंचना का विरोध करती है। गुप्त जी ने परंपरागत धार्मिक दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए दिखाया है कि जब सत्ता धर्म के नाम पर अन्याय को उचित ठहराती है, तब वह मानवता के विरुद्ध खड़ी हो जाती है।

शंबूक अपनी जाति नहीं बल्कि अपने कर्म और मानव होने के अधिकार की पहचान चाहता है।कवि स्पष्ट करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य सम्मान, शिक्षा और आध्यात्मिक उन्नति का समान अधिकारी हैं।

निष्कर्ष - जगदीश गुप्त जी की शंबूक कविता आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्रबंध-काव्य रचना है। जिसमें पौराणिक कथा को समकालीन सामाजिक दृष्टि से पुनर्परिभाषित किया गया है। कवि ने शंबूक को केवल रामायण के एक पात्र के रूप में नहीं बल्कि दलित, शोषित और वंचित समाज की चेतना, आत्मसम्मान तथा समान अधिकार के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। साहित्यिक दृष्टि से शंबूक मिथक के आधुनिक पुनर्पाठ का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कविता का मूल संदेश यह है कि मनुष्य की श्रेष्ठता जन्म जाति या वर्ण से नहीं बल्कि उसके कर्म, ज्ञान,तप और मानवीय मूल्यों से निर्धारित होती है। शंबूक का संघर्ष सामाजिक समानता, शिक्षा के अधिकार और मानव गरिमा की स्थापना का संघर्ष है। इस प्रकार कवि वर्ण व्यवस्था की कठोरता तथा सत्ता द्वारा किए गए अन्याय पर गंभीर प्रश्न उठाते हैं। गुप्त ने प्राचीन आख्यान पुनर्पाठ को वर्तमान सामाजिक यथार्थ से जोड़कर उसे लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और मानवाधिकार की दृष्टि से नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

अतः कहा जा सकता है कि शंबूक केवल एक पौराणिक कथा का पुनर्लेखन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन, समानता, न्याय और मानवीय गरिमा का सशक्त घोषणा पत्र है यही कारण है कि यह कविता आज भी हिन्दी साहित्य में अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

जगदीश गुप्त - शंबूक काव्य नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण)।
डॉ. नगेन्द्र - नयी कवितारू स्वरूप और विकास (नयी दिल्ली)।
रामविलास शर्मा - परंपरा का मूल्यांकन (राजकमल प्रकाशन संस्करण -1981)।
नामवर सिंह - कविता के नये प्रतिमान (संस्करण 1974)।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपम् - आकृतिगणत्वस्य पाणिनीयव्याकरणे अध्ययनम्

Dr Bindhya K S
Associate Professor
Departement of Sanskrit Vyakarana
Govt- Sanskrit College
Thiruvananthapuram

सारांशः

पाणिनीयव्याकरणपरम्परायां गणपाठस्य स्थानं विशिष्टमस्ति। पाणिनीयसूत्रेषु सर्वेषां शब्दानां पृथक् पृथक् निर्देशं कृत्वा व्याकरणकार्यविधानस्य अपेक्षया समानधर्मयुक्तानां शब्दानां समूहः गणरूपेण संगृह्यते। एते गणाः सूत्रविधानस्य व्याप्तिं निर्धारयन्ति, पुनरुक्तिं निवारयन्ति, व्याकरणस्य लाघवं च साधयन्ति। गणेषु केचन निश्चितशब्दसमूहाः भवन्ति, केचन तु आकृतिमात्रस्य बोधकाः। आकृतिगणेषु पठिताः शब्दाः तद्गतसाधर्म्यस्य निदर्शकाः भवन्ति; अतः तेषां सदृशधर्मयुक्तानाम् अन्येषामपि शब्दानां ग्रहणं सम्भवति। एतादृशेषु गणेषु क्षुभ्नादिगणस्य स्थानं विशेषमहत्त्वपूर्णम् अस्ति।

अष्टाध्याय्याः अष्टमाध्यायस्य चतुर्थपादे "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" (८।४।३९) इति सूत्रं णत्वप्रतिषेधस्य विधानं करोति। सामान्यतः "रषाभ्यां नो णः समानपदे" (८।४।१) इति सूत्रेण रेफस्य षकारस्य वा प्रभावात् नकारस्य णकारादेशः विधीयते। तदनन्तरं "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" (८।४।२) इति सूत्रेण विशिष्टव्यवधानेऽपि णत्वस्य प्रवृत्तिः स्वीक्रियते। एतादृशस्य सामान्यविधानस्य विशिष्टेषु शब्देषु प्रतिषेधार्थं "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रं प्रवर्तते। काशिका तथा न्यासपरम्परायां क्षुभ्नादिगणः स्पष्टतया आकृतिगणत्वेन निरूपितः "क्षुभ्नादिराकृतिगणः" इति। अतः क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनं केवलं णत्वप्रतिषेधस्य अध्ययनं न भवति, अपि तु पाणिनीयगणव्यवस्थायाः, आकृतिगणस्य, सूत्रानुवृत्तेः, सामान्यापवादसम्बन्धस्य, तथा प्रक्रियाव्यवस्थायाः अध्ययनमपि भवति।

अस्मिन् लेखे क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपं, आकृतिगणत्वं, "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रस्य व्याकरणप्रयोजनं, णत्वस्य सामान्यविधानं, तस्य प्रतिषेधव्यवस्था, महाभाष्य-काशिका-न्यासादिग्रन्थेषु प्रतिपादिताः विचाराः, तथा क्षुभ्नादिगणस्य पाणिनीयव्याकरणे महत्त्वं च विवेच्यते।

प्रमुखशब्दाः क्षुभ्नादिगणः, आकृतिगणः, गणपाठः, णत्वम्, णत्वप्रतिषेधः, पाणिनीयव्याकरणम्, अष्टाध्यायी, महाभाष्यम्, काशिका, न्यासः।

उपोद्घातः।

पाणिनीयव्याकरणं संस्कृतभाषायाः अत्यन्तव्यवस्थितं वैज्ञानिकं व्याकरणतन्त्रम् च अस्ति। अष्टाध्याय्यां सूत्ररूपेण विन्यस्तानि विधानानि अल्पाक्षरत्वेन विशालां भाषिकव्यवस्थां नियच्छन्ति। पाणिनीयव्याकरणस्य विशेषता केवलं सूत्राणाम्

अल्पाक्षरत्वे नास्ति; अपि तु सूत्राणां परस्परसामञ्जस्ये, अधिकारानुवृत्तौ, प्रत्याहारप्रयोगे, इत्संज्ञायां, परिभाषासु, गणपाठे, अपवादव्यवस्थायां च निहिता अस्ति। अस्य सम्पूर्णस्य व्याकरणतन्त्रस्य सूक्ष्मता गणपाठस्य अध्ययनात् विशेषतया अवगम्यते।

"गण" इति संज्ञा पाणिनीयव्याकरणे समानव्याकरणकार्यसम्बद्धानां शब्दानां समूहस्य द्योतिका। सूत्रकारः यत्र बहूनां शब्दानां विषये समानं विधानं कर्तुमिच्छति, तत्र तेषां प्रत्येकस्य नाम पृथक् निर्दिश्य सूत्रस्य गौरवं न वर्धयति, अपि तु तेषां समूहस्य नाम निर्दिशति। गणपाठे तेषां शब्दानां संग्रहः क्रियते। एवं गणपाठः सूत्रस्य व्याप्तेः निर्धारकत्वेन कार्यं करोति। सूत्रस्य अर्थबोधाय केवलं सूत्रपाठः पर्याप्तः न भवति; गणपाठस्य ज्ञानमपि आवश्यकम्।

गणेषु आकृतिगणस्य संकल्पना विशेषरूपेण महत्त्वपूर्णा। आकृतिगणः केवलं निश्चितानां शब्दानां सूची न भवति। तत्र गणपाठे निर्दिष्टाः शब्दाः सामान्यधर्मस्य प्रतिनिधिरूपेण भवन्ति। तेषां शब्दानां साधर्म्यं यः व्याकरणिकधर्मः, स एव तद्गणस्य आकृतिः। अतः गणपाठे अनुक्तानामपि तादृशधर्मयुक्तानां शब्दानां ग्रहणस्य सम्भावना भवति। अस्मादेव कारणात् आकृतिगणस्य सीमा, तस्य स्वरूपम्, तथा तद्गतशब्दानां परस्परसम्बन्धः इत्येते विषयाः पाणिनीयव्याकरणे सूक्ष्मविचारणीयाः भवन्ति।

क्षुभ्नादिगणः आकृतिगणस्य अत्यन्तं महत्त्वपूर्णम् उदाहरणम् अस्ति। अस्य सम्बन्धः अष्टमाध्यायस्य चतुर्थपादे णत्वप्रकरणेन सह अस्ति। सामान्यतः रेफस्य षकारस्य वा प्रभावात् नकारस्य णकारादेशः भवति। तदर्थं पाणिनिना प्रथमं "रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति सूत्रं विधीयते। अनन्तरं विशिष्टवर्णव्यवधानेऽपि णत्वं भवतीति "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" इति सूत्रेण प्रतिपाद्यते। एतेन णत्वस्य सामान्यव्याप्तिः स्थापितेति वक्तुं शक्यते। किन्तु भाषायां सर्वत्र एतत् सामान्यविधानं प्रवर्तते इति नास्ति। केषुचित् विशिष्टेषु शब्देषु णत्वं न भवति। तादृशेषु स्थलेषु निषेधविधानस्य आवश्यकता भवति। "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रस्य प्रयोजनम् एतदेव।

क्षुभ्नादिगणः तथा आकृतिगणस्य संकल्पना।

आकृतिगणस्य स्वरूपं ज्ञातुं प्रथमं गणस्य सामान्यस्वरूपं ज्ञातव्यम्। गणपाठः पाणिनीयव्याकरणस्य अभिन्नाङ्गम् अस्ति। अष्टाध्याय्याः बहूनि सूत्राणि गणपाठेन सह सम्बद्धानि सन्ति। "सर्वादीनि सर्वनामानि", "भ्वादयः", "अदादयः" इत्यादयः प्रसिद्धगणाः। एतेषु केषुचित् गणेषु पाठितशब्दानामेव ग्रहणं प्रमुखं भवति; किन्तु आकृतिगणे पाठितशब्दाः सामान्यधर्मस्य निदर्शकाः भवन्ति। "आकृति" इति शब्देन सामान्यस्वरूपं, साधर्म्यं वा बोध्यते। यत्र समानस्वरूपयुक्तानां शब्दानां समूहः भवति, तत्र तद्गणस्य विस्तारः केवलं पाठितपदेषु न सीमितः भवति। गणपाठे निर्दिष्टशब्दाः उदाहरणभूताः भवन्ति। तेषां माध्यमेन समानव्याकरणिकधर्मयुक्तानां शब्दानामपि ग्रहणं भवति। अतः आकृतिगणस्य आधारः शब्दस्य केवलं पाठः न, अपि तु तस्य व्याकरणसाधर्म्यम् अस्ति।

क्षुभ्नादिगणस्य विषये काशिका-न्यासादिग्रन्थेषु स्पष्टं वचनम् उपलब्धं "क्षुभ्नादिराकृतिगणः" इति। एतत् वचनं अस्य गणस्य स्वरूपं निर्णेतुं मूलभूतं प्रमाणम् अस्ति। अनेन स्पष्टं भवति यत् "क्षुभ्ना" इति केवलं एकस्य शब्दस्य नामग्रहणं न, अपि तु तद्गतसामान्यधर्मयुक्तानां शब्दानां समूहस्य द्योतकत्वेन स्वीकृतम्।

आकृतिगणस्य अयं पक्षः पाणिनीयव्याकरणस्य लाघवसिद्धान्तेन सम्बद्धः। यदि प्रत्येकस्य समानधर्मयुक्तस्य शब्दस्य पृथक् पृथक् नियमः निर्दिष्टः स्यात्, तर्हि सूत्रपाठः अत्यन्तविस्तृतः स्यात्। आकृतिगणस्य साहाय्येन अल्पाक्षरैः व्यापकं विधानं सम्भवति। अतः आकृतिगणः पाणिनीयलाघवस्य महत्त्वपूर्णं साधनम् अस्ति।

"रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति सामान्यनियमः।

क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपं सम्यगवगन्तुं णत्वस्य सामान्यविधानं प्रथमं परीक्षितव्यम् अष्टाध्याय्याः "रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति। अत्र रेफः: षकारश्च णत्वस्य निमित्ते भवतः। ताभ्यां परस्य नकारस्य णकारादेशः समानपदे विधीयते। अस्य फलरूपं "णत्वम्" इति व्याकरणकार्यं प्रसिद्धम्। यथा—राम + इन → रामेन → रामेण। अत्र रेफस्य प्रभावात् नकारस्य णकारादेशः भवति। एवं—हरि + इन → हरिणा इत्यादिष्वपि णत्वस्य प्रवृत्तिः दृश्यते। पाणिनीयव्याकरणे णत्वं केवलं वर्णपरिवर्तनमात्रं न; अपि तु विशिष्टध्वनिसम्बन्धस्य परिणामरूपं व्याकरणकार्यं भवति। रेफः, षकारश्च नकारस्य मूर्धन्यत्वं जनयतः। अतः "रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति सूत्रं णत्वस्य मूलविधानरूपेण स्वीकर्तुं शक्यते। किन्तु पाणिनिना तस्य व्याप्तिः तत्कालवर्णसन्निधिमात्रेण

न सीमिता। तदनन्तरम् "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" ८।४।२ इति सूत्रेण विशिष्टेषु व्यवधानेष्वपि णत्वं भवतीति निर्दिष्टम्। अनेन सामान्यणत्वस्य क्षेत्रं विस्तारितं भवति। अतः रेफस्य वा षकारस्य वा तथा नकारस्य मध्ये निर्दिष्टवर्णाः स्थिताः सन्ति चेदपि णत्वस्य सम्भावना भवति। एवं सामान्यनियमस्य व्यापकत्वं दृष्ट्वा तस्य विशेषनिषेधस्य आवश्यकता स्पष्टा भवति। पाणिनीयव्यवस्थायां सामान्यविधानं सर्वत्र अनिवार्यतया न प्रवर्तते; तस्य विशेषस्थलेषु अपवादाः, प्रतिषेधाः वा भवन्ति। क्षुभ्नादिगणः तादृशस्य प्रतिषेधस्य निदर्शनम् अस्ति।

"क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रस्य स्वरूपम्।

अष्टाध्याय्याः अष्टमाध्याये चतुर्थपादे एकोनचत्वारिंशत् सूत्रमस्ति क्षुभ्नाऽऽदिषु च इति। सूत्रस्य पदच्छेदः क्षुभ्ना आदिषु च इति भवति। अत्र "क्षुभ्ना" इति गणस्य प्रारम्भिकपदं, "आदि" इति तदनन्तरपदानां ग्रहणार्थम्, "च" इति पूर्वविधानसम्बन्धसूचकं पदम्। काशिकाकारः पूर्वसूत्रसम्बद्धस्य निषेधार्थकस्य "न" इत्यस्य अनुवृत्तिं स्वीकृत्य सूत्रार्थं व्याचष्टे—नेति वर्तते। क्षुभ्ना इत्येवमादिषु शब्देषु नकारस्य णकारादेशो न भवति। अतः सूत्रस्य मूलार्थः स्पष्टः क्षुभ्नादिगणस्थेषु शब्देषु सामान्यसूत्रेण प्राप्तस्य नकारस्य णकारादेशस्य निषेधः भवति। महाभाष्यपरम्परायामपि अस्य सूत्रस्य प्रयोजनं स्पष्टतया निरूपितम्— "अविहितलक्षणो णत्वप्रतिषेधः क्षुभ्नादिषु द्रष्टव्यः" इति। अत्र "णत्वप्रतिषेधः" इति पदं सूत्रस्य मूलकार्यं स्पष्टयति। सामान्यलक्षणेन यत्र णत्वस्य प्राप्तिः सम्भवति, तत्र क्षुभ्नादिगणसम्बन्धेन तस्य निषेधः क्रियते।

क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपग्रहणविचारः।

क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनस्य एकः सूक्ष्मः विषयः "क्षुभ्ना" इति पदस्य ग्रहणस्वरूपम् अस्ति। किं "क्षुभ्ना" इति धातोः ग्रहणम्? अथवा तस्य शब्दस्वरूपस्यैव ग्रहणम्? परम्परागतव्याख्यायां अस्य विचारः विस्तरेण दृश्यते। न्यासकारस्य मतानुसारम्— "क्षुभ्ना इति स्वरूपग्रहणम्, न धातुग्रहणम्" इति। अस्य तात्पर्यं यत् सूत्रे "क्षुभ्ना" इति पदं केवलं तस्य धातोः सर्वरूपाणां ग्रहणार्थं न प्रयुक्तम्। यदि धातुग्रहणं सर्वथा स्वीकृतं स्यात्, तर्हि धातुसम्बद्धेषु सर्वेषु रूपेषु अनपेक्षितः णत्वप्रतिषेधः प्रसज्येत। अतः स्वरूपग्रहणस्य स्वीकारेण नियमस्य क्षेत्रं नियन्त्रितं भवति। अयं विचारः पाणिनीयव्याकरणस्य सूक्ष्मतां प्रकाशयति। सूत्रे प्रयुक्तस्य शब्दस्य ग्रहणप्रकारः तस्य नियमस्य व्याप्तिं निर्णीतुं महत्त्वपूर्णः भवति। स्वरूपग्रहणम्, धातुग्रहणम्, प्रातिपदिकग्रहणम्, अर्थग्रहणम् इत्यादीनां भेदः व्याकरणकार्यस्य क्षेत्रनिर्धारणे निर्णायकः भवति।

क्षुभ्नादिगणस्य आकृतिगणत्वं पुनः अस्य विचारं विस्तृततरं करोति। एकस्मिन् शब्दे दृश्यः धर्मः समानधर्मयुक्तेषु अन्येष्वपि शब्देषु नियमस्य प्रवृत्तिं सम्भावयति। अतः अत्र स्वरूपग्रहणम् तथा आकृतिगणत्वम् इति द्वौ पक्षौ परस्परं सम्बद्धौ स्तः, किन्तु तयोः कार्यक्षेत्रं पृथक् विवेचनीयम्।

क्षुभ्नादिगणस्य उदाहरणानि तथा णत्वप्रतिषेधः।

क्षुभ्नादिगणस्य प्रथमं प्रमुखम् उदाहरणम्—क्षुभ्नाति। इति। अत्र सामान्यणत्वप्रकरणस्य सन्दर्भः विचारणीयः। क्षुभ्नादिगणस्य गणपाठेन अस्य शब्दस्य सम्बन्धः स्थापितः। तदनन्तरं "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रेण णत्वप्रतिषेधः भवति। अतः क्षुभ्नादिगणस्य उदाहरणं सामान्यनियमस्य निषेधव्यवस्थां प्रत्यक्षतया दर्शयति। तथैव—क्षुभ्नीतः, क्षुभ्नन्ति इत्यादिष्वपि गणसम्बन्धः विचारणीयः। रूपभेदेऽपि गणस्य व्याकरणसम्बन्धः प्रक्रियायाः विभिन्नावस्थासु विचार्यते। क्षुभ्नादिगणस्य उदाहरणसम्पत्तौ—नृनमनम्, हरिनन्दी, हरिनन्दनः, गिरिनगरम् इत्यादयः प्रयोगाः परम्पराग्रन्थेषु चर्चिताः सन्ति। एतेषु कतिपयेषु स्थलेषु णत्वस्य प्राप्तिसम्भावना अन्यसूत्रेभ्यः भवति, किन्तु क्षुभ्नादिगणस्य निषेधेन णत्वं न भवति। विशेषतया—नरीनृत्यते इति प्रयोगः अत्र उल्लेखनीयः। नृत्-धातोः यङन्तप्रक्रियायां अभ्यासादिकार्येण रूपपरिवर्तनं भवति। तत्र नकारस्य णत्वप्राप्तिसम्भावना उत्पद्यते। सामान्यणत्वविधानं तथा व्यवधानसम्बन्धी नियमं दृष्ट्वा णत्वं सम्भाव्यते; किन्तु क्षुभ्नादिगणसम्बन्धेन तस्य निषेधः क्रियते। अतः—नरीनृत्यते इति रूपं सिद्ध्यति। तथैव—जरीगृह्यते इत्यपि उदाहरणं परम्परायां प्रसिद्धम्। अत्र धातुप्रक्रियायाः विभिन्नकार्याणि सम्पन्नानन्तरं नकारस्य णत्वप्राप्तेः सम्भावना विचार्यते। क्षुभ्नादिगणसम्बन्धितनिषेधेन णत्वं न भवति। एते उदाहरणाः दर्शयन्ति यत् "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रस्य प्रयोजनं केवलं सरलरूपेषु न, अपि तु जटिलप्रक्रियासु अपि दृश्यते।

क्षुभ्नादिगणस्य आकृतिगणत्वम्।

क्षुभ्नादिगणस्य सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णं वैशिष्ट्यं तस्य आकृतिगणत्वम् अस्ति। काशिका तथा न्यासादिषु—क्षुभ्नादिराकृतिगणः इति स्पष्टनिर्देशः अस्ति। यदि क्षुभ्नादिगणः केवलं नित्यगणः स्यात्, तर्हि गणपाठे निर्दिष्टानां शब्दानामेव ग्रहणं स्यात्। किन्तु आकृतिगणत्वेन तस्य सामान्यधर्माधारितं स्वरूपं स्वीकृतम्। अतः गणपाठे निर्दिष्टशब्दाः तद्गतसाधर्म्यस्य निदर्शकाः भवन्ति। आकृतिगणस्य सिद्धान्ते "पाठितत्वम्" तथा "समानधर्मत्वम्" इत्येतयोः सम्बन्धः अत्यन्तमहत्त्वपूर्णः। पाठितशब्दः नियमस्य प्रारम्भिकप्रमाणं भवति; तद्गतः सामान्यधर्मः नियमस्य विस्तारस्य आधारः भवति। एवं क्षुभ्नादिगणः पाणिनीयव्याकरणे शब्दसमूहस्य व्याकरणिकवर्गीकरणस्य एकं विशिष्टमुदाहरणम्। आधुनिकभाषाविज्ञानस्य दृष्ट्या अपि अस्य अध्ययनं रोचकं भवति, यतः शब्दानां वर्गीकरणं केवलं ध्वन्यात्मकसादृश्येन न, अपि तु विशिष्टव्याकरणिककार्यसम्बन्धेन क्रियते।

क्षुभ्नादिगणः तथा सामान्यापवादव्यवस्था।

पाणिनीयव्याकरणस्य नियमव्यवस्थायां सामान्यं विधानं तथा तस्य विशेषापवादः इत्ययं सम्बन्धः अत्यन्तमहत्त्वपूर्णः। क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनात् अस्य सम्बन्धस्य स्पष्टं उदाहरणं प्राप्यते। प्रथमं रषाभ्यां नो णः समानपदे इति सामान्यनियमः। ततः—अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि। इति तस्य व्याप्तिविस्तारः। अनन्तरं विभिन्नस्थलेषु णत्वस्य विशेषविधानानि वा निषेधाः वा भवन्ति। तेषु—क्षुभ्नाऽऽदिषु च। इति विशिष्टगणसम्बद्धः प्रतिषेधः। सामान्यनियमः प्रथमं क्षेत्रं निर्माति; अनन्तरं विशेषसूत्राणि तस्य क्षेत्रं सीमयन्ति, विस्तारयन्ति वा परिवर्तयन्ति। गणपाठः तत्र नियमस्य विशिष्टविषयसमूहं निर्धारयति। क्षुभ्नादिगणस्य महत्त्वं अत्रैव अस्ति। अयं गणः सामान्यणत्वनियमस्य निषेधक्षेत्रम् निर्माति। अतः गणपाठः केवलं शब्दानां संग्रहः न, अपि तु सामान्यनियमस्य व्यवहारिकसीमां निर्धारितुं समर्थं साधनम्।

महाभाष्ये क्षुभ्नादिगणस्य स्थानम्।

पाणिनीयव्याकरणस्य सूत्राणां गूढार्थबोधाय महाभाष्यस्य स्थानं सर्वोपरि। क्षुभ्नादिगणसम्बद्धे क्षुभ्नादिषु च (८।४।३९) सूत्रेऽपि महाभाष्यकारेण सूत्रस्य प्रयोजनं संक्षेपेण तथा गम्भीरतया निरूपितम्। "अविहितलक्षणो णत्वप्रतिषेधः क्षुभ्नादिषु द्रष्टव्यः" इति महाभाष्यवचनम् अस्य सूत्रस्य तात्पर्यं स्पष्टयति। सामान्यतः णत्वस्य लक्षणं "रषाभ्यां नो णः समानपदे" इत्यनेन प्रतिपादितम्। व्यवधानयुक्तेषु स्थलेषु "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" इत्यनेन तस्य विस्तारः कृतः। एतादृशे व्यापकनियमक्षेत्रे क्षुभ्नादिगणस्य प्रयोगे णत्वस्य निवारणं भवति। महाभाष्यस्य वचनात् स्पष्टं भवति यत् अयं प्रतिषेधः सामान्यविधानस्य विशिष्टनियमनार्थं प्रयुक्तः। महाभाष्यपरम्परा पाणिनीयसूत्रस्य केवलं भाष्यार्थं न व्याचष्टे, अपि तु सूत्रस्य प्रयोजनम्, तस्य क्षेत्रम्, अन्यसूत्रैः सम्बन्धं च परीक्षते। क्षुभ्नादिगणस्य उदाहरणे एषा परम्परा स्पष्टतया दृश्यते।

काशिकायां क्षुभ्नादिगणस्य विवेचनम्।

काशिका पाणिनीयसूत्रव्याख्यायाः प्राचीनतमेषु प्रमुखेषु ग्रन्थेषु अन्यतमा। "क्षुभ्नादिषु च" इति सूत्रस्य व्याख्यायां काशिकाकारौ प्रथमं पूर्वसूत्रस्य अनुवृत्तिं स्वीकरतः नेति वर्तते। ततः सूत्रार्थः क्षुभ्ना इत्येवमादिषु शब्देषु नकारस्य णकारादेशो न भवति इति निर्दिश्यते। अनेन सूत्रस्य निषेधस्वरूपं स्पष्टतया प्रतिपादितम्। अनन्तरं उदाहरणैः गणस्य व्यावहारिकव्याप्तिःप्रदर्श्यते। क्षुभ्नाति, नृनमनम्, हरिनन्दी, हरिनन्दनः, गिरिनगरम्, नरीनृत्यते इत्यादीनि उदाहरणानि तस्य विविधप्रयोगक्षेत्रं दर्शयन्ति। काशिकायाः विशेषता अत्र एषा यत् सा केवलं "णत्वं न भवति" इति न कथयति, अपि तु कस्य सामान्यनियमस्य प्रभावः निवार्यते इति प्रक्रियात्मकदृष्ट्या स्पष्टयति। अतः काशिका क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनाय अत्यन्तोपयोगिनी।

न्यासे आकृतिगणविचारः।

न्यासग्रन्थे क्षुभ्नादिगणस्य आकृतिगणत्वं विशेषतया प्रतिपादितम्। "क्षुभ्नादिराकृतिगणः" इति वचनं तस्य गणस्य मूलस्वरूपं प्रकाशयति। न्यासकारस्य चर्चायां स्वरूपग्रहणस्य प्रश्नः, गणस्य व्याप्तिः, शब्दस्य धातुत्वं वा प्रातिपदिकत्वं वा, तथा प्रक्रियायां तस्य सम्बन्धः इत्यादयः विषयाः परस्परं सम्बध्यन्ते। अत्र आकृतिगणस्य एकः महत्त्वपूर्णः सिद्धान्तः प्रकाशते गणस्य पाठः नियमस्य प्रारम्भिकसीमा अस्ति, किन्तु आकृतिगणत्वं तस्य सम्भावितव्याप्तिं विस्तारीकरोति। एवं क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनं केवलं सूत्रार्थबोधाय न, अपि तु गणपाठस्य व्याकरणतत्त्वबोधाय अपि आवश्यकम्।

क्षुभ्नादिगणस्य भाषाशास्त्रीयदृष्ट्या महत्त्वम्।

क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनं आधुनिकभाषाशास्त्रीयदृष्ट्यापि विचारणीयम्। आधुनिकभाषाविज्ञाने शब्दानां वर्गीकरणं ध्वन्यात्मकैः, रूपात्मकैः, वाक्यरचनात्मकैः, अर्थगतैः, प्रयोगगतैश्च धर्मैः क्रियते। पाणिनीयपरम्परायां गणविभागः अपि शब्दानां विशिष्टव्याकरणधर्माधारितवर्गीकरणं करोति। आकृतिगणस्य संकल्पना विशेषतया उल्लेखनीया। अत्र गणस्य सदस्यत्वं केवलं शब्दस्य शब्दरूपेण न निर्धारितं भवति; तस्य व्याकरणव्यवहारः अपि महत्त्वपूर्णः। अतः आकृतिगणः व्याकरणवर्गीकरणस्य गतिशीलं रूपं प्रदर्शयति। किन्तु पाणिनीय आकृतिगणस्य आधुनिक "सपदहनपेजपब बसें" इत्यनेन पूर्णतः समानता न स्वीकरणीया। पाणिनीयव्यवस्थायां गणस्य आधारः विशिष्टसूत्रस्य कार्यक्षेत्रम् अस्ति। क्षुभ्नादिगणस्य सन्दर्भे तस्य प्रमुखं कार्यं णत्वप्रतिषेधः। अतः अयं गणः विशिष्टव्याकरणकार्यसम्बद्धः वर्गः इति वक्तुं युक्तम्।

उपसंहारः

क्षुभ्नादिगणः पाणिनीयव्याकरणस्य गणव्यवस्थायां विशिष्टं स्थानमावहति। अयं गणः केवलं शब्दानां सूची न, अपि तु विशिष्टव्याकरणकार्यस्य क्षेत्रनिर्धारकः। "क्षुभ्नाऽऽदिषु च" इति सूत्रस्य माध्यमेन सामान्यतः प्राप्तस्य णत्वस्य विशिष्टेषु शब्देषु प्रतिषेधः क्रियते। अस्य सामान्यभूमिः "रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति सूत्रेण निर्मिता, तथा "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि" इति सूत्रेण तस्य व्याप्तिः विस्तृता। क्षुभ्नादिगणस्य सर्वाधिकं वैशिष्ट्यं तस्य आकृतिगणत्वम्। काशिका-न्यासपरम्परायां "क्षुभ्नादिराकृतिगणः" इति स्पष्टनिर्देशः अस्य स्वरूपं निश्चितयति। आकृतिगणत्वेन गणपाठे निर्दिष्टाः शब्दाः समानव्याकरणिकधर्मस्य निदर्शकाः भवन्ति। अतः गणस्य महत्त्वं केवलं पाठितशब्देषु निहितं न भवति; तद्गतसामान्यधर्मे तस्य वास्तविकं तत्त्वं निहितम् अस्ति। क्षुभ्नाति, क्षुभ्नीतः, क्षुभ्नन्ति, नृनमनम्, हरिनन्दी, हरिनन्दनः, गिरिनगरम्, नरीनृत्यते, जरीगृह्यते इत्यादीनां उदाहरणानां परम्परागतविवेचनात् ज्ञायते यत् क्षुभ्नादिगणसम्बन्धः विविधव्याकरणिकप्रक्रियासु प्रभावं जनयति। अत्र णत्वस्य प्राप्तिः, तस्य निषेधः, गणपाठस्य सीमा, प्रक्रियायाः विभिन्नावस्थाः च परस्परं सम्बद्धाः सन्ति।

क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनात् पाणिनीयव्याकरणस्य एकः व्यापकः सिद्धान्तः अपि प्रकाशते—व्याकरणनियमः केवलं सूत्ररूपेण न कार्यं करोति; सूत्रम्, गणः, अनुवृत्तिः, भाष्यम्, वृत्तिः, प्रक्रिया च परस्परं सम्बद्धाः सन्ति। गणपाठः सूत्रस्य क्षेत्रं निर्धारयति, आकृतिगणत्वं तस्य सम्भावितव्याप्तिं सूचयति, भाष्य-वृत्तयः तस्य सूक्ष्मार्थं प्रकाशयन्ति, प्रक्रियाग्रन्थाः तस्य व्यवहारिकप्रयोगं दर्शयन्ति।

अतः क्षुभ्नादिगणः पाणिनीयव्याकरणे केवलं णत्वप्रतिषेधस्य गणः इति सीमितरूपेण न द्रष्टव्यः। अयं गणः पाणिनीयव्याकरणस्य गणतत्त्वस्य, आकृतिगणसिद्धान्तस्य, सामान्यापवादव्यवस्थायाः, सूत्रानुवृत्तेः, व्याकरणिकवर्गीकरणस्य, तथा लाघवप्रधानसूत्ररचनायाः उत्कृष्टं निदर्शनम् अस्ति। विशेषतः आकृतिगणस्य दृष्ट्या क्षुभ्नादिगणस्य अध्ययनं पाणिनीयव्याकरणस्य अन्तर्निहितवर्गीकरणपद्धतिं प्रकाशयति। गणपाठे निर्दिष्टस्य शब्दस्य पृष्ठतः यः सामान्यव्याकरणिकधर्मः कल्पितः, स एव तद्गणस्य वास्तविकः आधारः। अतः आकृतिगणः पाणिनीयव्याकरणे केवलं शब्दसमूहस्य नाम न, अपि तु व्याकरणिकसामान्यधर्मस्य संकेतकः इति निष्कर्षः प्रतिपादयितुं शक्यते। अतः वक्तुं शक्यते यत् क्षुभ्नादिगणः पाणिनीयव्याकरणे आकृतिगणस्य स्वरूपं, गणपाठस्य प्रयोजनं, णत्वस्य सामान्यविधानं, तस्य विशेषप्रतिषेधं च एकत्र प्रकाशयन् अत्यन्तमहत्त्वपूर्णं व्याकरणनिदर्शनं भवति।

ग्रन्थसूची

१. पाणिनिः — अष्टाध्यायीसूत्रपाठः — वार्त्तिक-गणपाठ-धातुपाठ-पाणिनीयशिक्षा-परिभाषापाठ-सूत्रसूचीसहितः। संशोधकः सि. शङ्कररामशास्त्री। प्रस्तावनालेखिका श्रीमती रत्ना वासुदेवी। दिल्ली : शारदा-पब्लिशिङ्ग-हाउस, 1994

२. पतञ्जलिः — व्याकरणमहाभाष्यम्। संपा. भीमसिंह वेदालङ्कार, विद्यानिधि शोधसंस्थानम्, कुरुक्षेत्र, 2006

३. जयादित्य-वामनौ — काशिका (ज्योतिष्मती), सम्पा. रघुवीर वेदालङ्कार, संपूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी 1997.

४. जिनेन्द्रबुद्धिः – न्यासः (काशिकाविवरणपञ्जिका), सम्पादकौ एस. डी. शास्त्री तथा के. पी. शुक्लः, वाराणसी : प्राच्यभारती, 1967.
५. भट्टोजिदीक्षितः – सिद्धान्तकौमुदी (लक्ष्मी), संपा. श्री सभापति शर्मा, मोत्तिलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1966
६. वरदराजः – लघुसिद्धान्तकौमुदी, सम्पादकः पण्डितसदाशिव शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीस वाराणसी, 2001.
७. नागेशभट्टः – लघुशब्देन्दुशेखरः, सम्पा. नरहरि शास्त्री पेण्डसे, पुनः सम्पा. गोपालशास्त्री नेने; चन्द्रकला व्याख्यासहितम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्, वाराणसी, 2001

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

'अंधायुग' गीति-नाट्य की मूल कथ्य और लक्ष्य

डॉ. सिराजुल हक
सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग, बंगाईगाँव विश्वविद्यालय
बंगाईगाँव-783380
मो-7598608859

सारांशः

धर्मवीर भारती आधुनिक हिंदी साहित्य जगत के मशहूर लेखक तथा सामाजिक विचारक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं पर लेखन-कार्य किया है, जिसमें कहानी, कविता, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, आलोचना आदि चर्चित विधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त धर्मवीर भारती ने अंधायुग साप्ताहिक पत्रिका के प्रधान संपादक भी थे। इस दृष्टि से धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के एक अनोखे व्यक्ति थे, जिनका योगदान हिंदी साहित्य के लिए एक अपरिसीम रहा है। इनका अंधायुग गीति-नाट्य एक उत्कृष्ट कृति है। इसमें महाभारत कालीन कथा के साथ आधुनिक कालीन भावबोध के नये आयाम दिया है। धर्मवीर भारती ने इस कृति माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा आधुनिकता के नये उपमानों की खोज की हैं। इसमें महाभारत कालीन कौरव और पांडवों के युद्ध की विभीषिका, हत्यालीला, विविध उपदेश और अन्य कटु कला-कौशल आदि उजागर किया है। इन्हें विषयवस्तु का आधार बनाकर तत्कालीन परिस्थिति की विविध समस्याओं को दर्शाते हुए सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सौहार्द को बरकरार रखने के लिए एक मिसाल पेश किया है। साथ ही अनागत उज्ज्वल भविष्य की कामना इस कृति का मुख्य लक्ष्य है।

प्रस्तावनाः

धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के एक महान हस्ती थे। अंधायुग नाट्य कृति लिखने के बाद हिंदी नाट्य साहित्य में आधुनिकता का एक भूचाल शुरू हुआ था। यह कृति ऐतिहासिक और पौराणिक कहानी पर आधारित है। इसमें कौरव और पांडव दो पक्ष हैं। इनकी लंबी कहानी है। इनके मूल में सत्ता है। कौरव पक्ष अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए न जाने क्या-क्या मार्ग अपनाये हैं? जिसकी बलि पांडव पक्ष हुई। कालक्रमानुसार ये लोग सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म की लड़ाई की ओर अग्रसर हुएं। जिसके फलस्वरूप दोनों पक्ष में भयानक रक्तपात, मारकाट, मृत्यु, भ्रूणहत्या आदि विविध क्रियाएँ हुईं। अंत में पांडव पक्ष की विजय होती है, अशांति तथा अधर्म की हार होती है, युधिष्ठिर को राज्याभिषेक बनाया जाता है, फिर भी शांति कायम नहीं होती है। इसी अशांति के बीच कृष्ण के विविध उपदेश उल्लेखनीय तथा अधिक मायने रखता है। जो इस अंधायुग गीति नाट्य के संवादों में देखने को मिला है। अतः धर्मवीर भारती ने इन समस्याओं का जड़ उखाड़ फेंककर मानव कल्याण तथा सुखद भविष्य की चिंता-चर्चा की है।

बीज शब्दः मूल कथ्य, संवाद, वातावरण, लक्ष्य।

मूल कथ्यः

धर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधायुग एक प्रसिद्ध गीति नाट्य है, जिसकी कथ्य ऐतिहासिक और पौराणिक कथा से मिश्रित है। इसके साथ-साथ गीति नाट्य में कल्पित कथा और ऐतिहासिक घटनाओं का समाहार देखने को मिलता है। आज इसकी कथावस्तु जगजाहिर है। इस गीति नाट्य के मूल में महाभारत के प्रमुख पात्र श्रीकृष्ण, धृतराष्ट्र, गांधारी, संजय, कृपाचार्य, कृतवर्मा, विदुर, व्यास, युधिष्ठिर, बलराम आदि हैं। इसे विस्तारित रूप प्रदान करने के लिए स्वरचित कुछ काल्पनिक पात्र का भी संयोजन किया गया है, जिसमें वृद्ध याचक, गूँगा भिखारी, दो प्रहरी आदि शामिल हैं। इन सारे ऐतिहासिक तथा कल्पित पात्र के माध्यम से अंधायुग गीति नाट्य की कथावस्तु का विस्तारित आकार मिला है। इस गीति नाट्य की विषयवस्तु दो ऐतिहासिक पक्ष पर आधारित है, जिसमें एक पांडव पक्ष, दूसरा कौरव पक्ष है। अंधायुग गीति-नाट्य की दृष्टि से स्पष्ट होता है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे के विपरीत मेरु में विराजमान है। जो केवल सत्ता के लिए लालायित हैं। इसी को केंद्रीय बिंदु बनाकर सत्य-असत्य की लड़ाई को धर्मयुद्ध में बदल दिया गया। यह लड़ाई महाभारत के 18 वें दिन की संध्या से लेकर प्रभास-तीर्थ में श्रीकृष्ण की मृत्यु के क्षण तक चलती रही।

धर्मवीर भारती ने अंधायुग गीति नाट्य की शुरूआत स्थापना तथा अंधायुग के मंगलाचरण और उद्घोषणा करते हुए युद्धोपरांत का विस्तार वर्णन किया है। इसके बाद कथावस्तु तथा विषयवस्तु का पूर्ण रूप पाँच अंकों में समाप्त होता है। लेकिन गीति नाट्य के बीच में अंतराल और अंत में समापन भी है। जो कथावस्तु के विशेष रूप में सहायक बनते हैं। पहले अंक में कौरव नगरी की कथा है, जिसमें गायन करते हुए दोनों पक्ष की घमासान लड़ाई की चर्चा होती है। इसका परिणाम सुनने के लिए धृतराष्ट्र और उनकी धर्म पत्नी गांधारी उतावले हो जाते हैं। धृतराष्ट्र कहते हैं–

देखो।
विदुर देखो! संजय आये।[1]

इसी को आड़ में लेकर गांधारी कहती है–

होगी,
अवश्य होगी जय।
मेरी यह आशा
यदि अन्धी है तो है
पर जीतेगा दुर्योधन जीतेगा।[2]

ऐसे ही कौरवपति धृतराष्ट्र ने जन्मांधता और आजीवन अपनी आँखों पर पट्टी चढ़ाये रखनेवाली माता गांधारी ने कौरवों की जीत की उम्मीद पर कायम रहे। अंक दो में पशुत्व का उदय होता है। इसमें अश्वत्थामा की कार्य-लीला का वर्णन किया है। वह अपने पिता द्रोणाचार्य की मृत्यु तथा युधिष्ठिर के अर्द्धसत्य पर क्रोधित हो जाता है। उसकी क्रोध की सीमा अवर्णनीय है, क्योंकि उसने संजय को भी नहीं छोड़ा। उसने संजय को पांडव पक्ष का योद्धा समझकर मारने का प्रयास किया। बाद में संजय किसी तरह बचकर निकलता है, किंतु वृद्ध याचक को जान से मार देता है। वह कहता है–

वध, केवल वध, केवल वध
मेरा धर्म है।[3]

इसी तरह तीसरे अंक का आगमन होता है, जिसमें अश्वत्थामा का अर्द्धसत्य रखा गया है। इसमें कौरवपति धृतराष्ट्र के बेटे युयुत्सु की घर वापसी होती है। किंतु वहां पर उसे चौन-सुकून नहीं मिलता है, उसकी माता गांधारी की कटुता भरी बातें युयुत्सु की हृदयात्मा को छलनी कर देती है। वह कहता है–

यह क्या किया?
माँ ने यह क्या किया

विदुर?

अच्छा था यदि मैं
कर लेता समझौता असत्य से।[4]

इसी अंक में गूँगे सैनिक की चर्चा होती है। जिसे खुद युयुत्सु ने घायल किया था और वह किसी तरह बचकर निकला था। उसकी मुलाकात विदुर के माध्यम से अपने ही घर में हुई थी, विदुर ने उस सैनिक को पानी पिलाने को कहा, और युयुत्सु ने भी पानी पिलाने का प्रयास किया, लेकिन वह डरके मारे भाग निकला। इस घटना के साथ-साथ अश्वत्थामा का उत्तेजित रूप देखने को मिलता है। वह किसी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता है। वह पांडवों से बदला लेने के लिए पांडव शिविर की ओर रवाना होता है, किंतु रास्ते में विराटकाय दैत्य पुरुष का सामना करता है। यह दृश्य अंतराल में उपलब्ध होता है।

चौथे अंक में गांधारी का शाप दृष्टव्य है। इसमें अश्वत्थामा की हत्या-लीला के बारे में संजय के माध्यम से गाँधारी को सुनाया जाता है। जिसमें संजय ने हत्या-कांड के बारे में बताते हुए कहा कि अश्वत्थामा ने पांडव पक्ष के शिविर में प्रवेश कर धृष्टद्युम्न को अपने पंजों से गला दबोचकर मार दिया, फिर अपने अस्त्रों से शतानीक के घुटने काट दिया और शिखंडी के माथे पर वाण मारा, जोकि उसके मस्तक फाड़ धरती के अंदर समा गया। इन सारी बातों को सुनने के बाद गांधारी ने उस दृश्य को देखने के लिए लालायित हो जाती है। गाँधारी कहती है–

ठहरो
संजय ठहरो
दिव्यदृष्टि से मुझको दिखला दो एक बार
वीर अश्वत्थामा को।
.....
जो मेरे सौ पुत्र नहीं कर पाये
द्रोण नहीं कर पाये!
भीष्म नहीं कर पाये![5]

संजय कहता है–

माता
व्यास ने मुझको दिव्यदृष्टि दी थी
केवल युद्ध की अवधि के लिए
पता नहीं कब वह सामर्थ्य मुझसे छिन जाये।[6]

अंत में संजय की दिव्यदृष्टि खत्म हो जाती है और गाँधारी भी अश्वत्थामा की हत्या-लीला को देखने की आशा स्वप्न की तरह रह जाता है। इधर अश्वत्थामा पांडवों के वीर योद्धा को मारकर सीमित नहीं रहा, वह पांडवों की वंश परंपरा को मिटाने के लिए गर्भवती उत्तरा की ओर निशाना लगाकर ब्राह्मास्त्र निक्षेप करता है। जिससे वधुओं की भ्रूण हत्या हो जाती है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

यदि वह ब्रह्मास्त्र गिरता है तो गिरे
लेकिन जो मुर्दा शिशु होगा उत्पन्न
उसे जीवित करूँगा मैं देकर अपना जीवन।[7]

इसी प्रतिज्ञा के साथ अश्वत्थामा को ढूँढ़ने के लिए कृष्णार्जुन निकल पड़ते हैं। फिर अश्वत्थामा को पकड़ भी लिया जाता है। लेकिन उसे भ्रूण हत्या का शाप देकर छोड़ देते हैं। जो विदुर ने धृतराष्ट्र को कहा है–

छोड़ दिया!
केवल भ्रूण-हत्या का शाप
उसे दिया और
उससे मणि ले ली.....।[8]

इसी शाप की बात गांधारी को पता चलने के बाद गाँधारी संजय से कहती है–

संजय उसे रोको!
लोहा मैं लूँगी आज कृष्ण से उसके लिए।[9]

अर्थात् गाँधारी ने श्रीकृष्ण से बदला लेने के लिए कृष्ण को शाप दिया है। जो इस प्रकार है–

सारा तुम्हारा वंश
इसी तरह पागल कुत्तों की तरह
एक-दूसरे को परस्पर फाड़ खायेगा
तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षो बाद
किसी घने जंगल में
साधारण व्याध के हाथों मारे जाओगे।[10]

श्रीकृष्ण ने गांधारी को अपनी माता समझकर शाप को स्वीकार किया।

धर्मवीर भारती ने अंधायुग गीति नाट्य के अंक पाँच में विजयः एक क्रमिक आत्महत्या रखी है। इसमें युधिष्ठिर का राज्याभिषेश घोषित किया गया है, साथ ही साथ पूर्व राज्य (अंध धृतराष्ट्र) की शासन व्यवस्था और धर्म परायण युधिष्ठिर के राज्य की शासन व्यवस्था की तुलना करते हुए राज्य के विविध आत्मघातों की चर्चा की है। यहाँ पर आप युयुत्सु की मृत्यु, रक्तपात की घटना, विविध हत्या व ध्वंसलीला, भीषण दावाग्नि की घटना आदि देख सकते हैं। ऐसी घटना तथा स्थिति से हस्तिनापुर तथा कौरव नगरी ऊँब चुके थे। युधिष्ठिर कहते हैं–

और विजय क्या है
एक लम्बा और धीमा
और तिल-तिल कर फलीभूत
होने वाला आत्मघात
और पथ कोई भी शेष
नहीं अब मेरे आगे।[11]

ऐसी स्थिति के बाद समापन प्रभू की मृत्यु से शुरुआत होती है, जिसमें वन्दना करते हुए कथा गायन कर आगे बढ़ता है। श्रीकृष्ण की मृत्यु होते ही सभी नक्षत्र बूझकर सारी दुनिया में भयंकर छा गया। किंतु कृष्ण कहते हैं–

मरण नहीं है ओ व्याध
मात्र रूपांतर है यह
सबका दायित्व लिया मैंने अपने ऊपर
अपना दायित्व सौंपकर जाता हूँ मैं सबको
.....
क्योंकि इनका दायित्व लिया है मैंने।[12]
इतना ही फिर कहा-
लेकिन शेष मेरा दायित्व लेंगे
बाकी सभी.....

जीवित और सक्रिय हो उठँगा मैं बार बार।[13]

अतः उपरोक्त विचार से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि अंधायुग जैसी रचना के माध्यम से मानव-भविष्य पर प्रश्न उठाते हुए मानव-मूल्य की प्रतिष्ठा की ओर ध्यानाकर्षण करना और अनागत भविष्य की सुरक्षा का चरितार्थ करना इस गीति नाट्य की मूल कथावस्तु है।

लक्ष्यः

साहित्यकार समाज आधार स्तंभ है। साहित्य उसकी प्रतिच्छवि है। धर्मवीर भारती आधुनिक युग के नये मूल्यबोध पर सत्यता से अपनी बात प्रकट करनेवाले महान साहित्यकार हैं। उन्होंने अंधायुग गीति-नाट्य के माध्यम से पौराणिक कहानी और घटनाओं को नये प्याले तथा साँचे में रखने का प्रयास किया है। साथ ही इस गीति-नाट्य के माध्यम से धर्मवीर भारती ने नवीन परिवेश तथा नये युगबोध को भी जागृत किया है। भारती ने प्राचीन अंधत्व तथा नग्न यथार्थ को नकारते हुए आधुनिक मूल्यबोध की खोज पर अधिक बल प्रयोग किया है। मूल रूप में मानव जाति को अंध पशुत्व, युद्ध जैसी विभीषिका भरी प्रतिहिंसा, एक-दूसरे के खिलाफ विरूप प्रतिक्रिया और उनकी अंधी संस्कृति से निकल कर चेतन भरी संस्कृति की ओर संकेत तथा जागरूग करना इस गीति-नाट्य का एकमात्र लक्ष्य है।

बम संस्कृति कितने भयावह होती हैं। जिसका जिक्र धर्मवीर भारती ने अंधायुग गीति-नाट्य में उजागर किया है। इस गीति-नाट्य की बम संस्कृति के केंद्र में भारती ने अश्वत्थामा को रखा है। उसकी प्रतिहिंसा की आग थमने का नाम नहीं ले रहा था। वह ब्राह्मास्त्र की मदद लेता है। जिसके माध्यम से नरसंहार कर देता है। ऐसी ब्राह्मास्त्र रूपी खतरनाक संस्कृति का परिणाम उल्लेख करते हुए भयावह परिस्थिति के प्रति संकेत किया है। आज भी ऐसी परिस्थिति देखने को मिलता है। अश्वत्थामा के ब्राह्मास्त्र प्रक्षेपण के संदर्भ में व्यास कहते हैं–

मैं व्यास हूँ।
ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस ब्राह्मास्त्र का?
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु!
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जायेगी
जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह
गेहूँ की बालों में सर्प फुफकारेंगे
नदियों में बह-बह कर आयेगी पिघली आग।[14]

फिर व्यास ने कहा-

सूरज बुझ जायेगा।
धरा बंजर हो जायेगी।[15]

जिस प्रकार व्यास ने अश्वत्थामा को समझा कर थक चुके थे, फिर भी अश्वत्थामा पर कोई असर नहीं पड़ा था। ब्राह्मास्त्र प्रक्षेपण किया, परिणाम स्वरूप अनेकों की भ्रूणहत्या हुई थी। धर्मवीर भारती ने अश्वत्थामा के माध्यम से तटस्थता का विनाश की बात की है। जिसे नर तथा देश के शत्रु के रूप में आख्यायित करते हुए तटस्थ को अर्थहीन बताया है। जो इस प्रकार है–

तटस्थ?
मातुल मैं योद्धा नहीं हूँ
बर्बर पशु हूँ
यह तटस्थ शब्द
है मेरे लिए अर्थहीन।[16]

अंधायुग गीति-नाट्य के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि महाभारत के युद्ध कौरव-पांडव के बीच में हुआ था। ये सब अपने आत्मीय लोग थे। फिर भी ये लोग आपस में सुलह तथा शांति कायम नहीं कर पाये थें। फिर आज एक संप्रदाय से दूसरे संप्रदाय के साथ कैसे अपने भाईचारे बरकरार रख पायेंगे? अस्त्र-शस्त्र बन रहे हैं। जिसका कुछ उपयोग हुआ, कुछ हो रहा है और कुछ आनेवाले समय में होगा। अंधायुग गीति-नाट्य के दो प्रहरी कहते हैं–

प्रहरी 1- युद्ध हो या शांति हो
प्रहरी 2- रक्तपात होता है
प्रहरी 1- अस्त्र रहेंगे तो
प्रहरी 2- उपयोग में आयेंगे ही
प्रहरी 1- अब तक वे अस्त्र
प्रहरी 2- दूसरों के लिए उठते थे
प्रहरी 1- अब वे अपने ही विरुद्ध काम आयेंगे
प्रहरी 2- यह जो हमारे अस्त्र अब तक निरर्थक थे
प्रहरी 1- कम से कम उनका
प्रहरी 2- आज कुछ तो उपयोग हुआ।[17]

इसी तरह अंधायुग गीति-नाट्य में पांडव-कौरवों के भीषण युद्ध में पांडवों की जीत हुई, युधिष्ठिर का राज्याभिषेक किया, फिर भी मार-काट, हिंसा, रक्तपात, अत्याचार आदि घटनाएँ जारी रही। युधिष्ठिर असंतुष्टि प्रकट करते हुए कहा-

ऐसे भयानक महायुद्ध को
अर्द्धसत्य, रक्तपात, हिंसा से जीत कर
अपने को बिलकुल हारा हुआ अनुभव कर
यह भी यातना ही है.....[18]

इससे युधिष्टिर के पछतावा के बारे में स्पष्ट संकेत मिलता है। युधिष्ठिर की तरह गांधारी को भी श्रीकृष्ण को शाप देने के बाद पछतावा हुआ था। आज भी ऐसी अनेक घटनाएँ तथा असहज परिस्थितियाँ हो जाने के बाद लोग केवल उस घटना को लेकर सहनुभूति प्रकट कर अपना दायित्व खत्म कर देते हैं। जिसका उदाहरण जगजाहिर है।

अंत में धर्मवीर भारती ने एक वृद्ध के माध्यम से इन समस्याओं का जड़ उखाड़ फैंककर मानव कल्याण तथा सुखद भविष्य की चिंता-चर्चा की है। जो इस प्रकार है–

क्या कोई सुनेगा
जो अंधा नहीं है, और विकृत नहीं है, और
मानव-भविष्य को बचायेगा?[19]

इसी प्रश्नवाचक वाक्य से धर्मवीर भारती के अंधायुग गीति-नाट्य का सफल उद्देश्य प्रतिफलित होता है।

निष्कर्षः

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' एक सफल प्रासंगिक गीति-नाट्य है। इस

गीति-नाट्य के माध्यम से महाभारत कालीन परिस्थिति की ओर संकेत करते हुए वर्तमान समाज में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला है। समाज में मानव मूल्य की स्थापना करते हुए मानव के भविष्य की सुरक्षा और सुनिश्चित दायित्वबोध इस गीति-नाट्य की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ हैं।

संदर्भ ग्रंथ की सूची

1. धर्मवीर भारती- अंधायुग, पृष्ठा-14, 95 वें पुनर्मुद्रण-2023, किताब महल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. वहीं-16,
3. वही-33
4. वही-44
5. वही-65,
6. वही-65, 8. वही-78, 9. वही-78, 10. वही-80,
11. वही-81, 12. वही-96, 13. वही-105, 14. वही-75,
15. वही-76, 16. वही-28, 17. वही-89, 18. वही-85,
19. वही-107

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' में मानवीय मूल्य

डॉ. वी. गीता मालिनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एतिराज कॉलेज फॉर वुमन,
चेन्नई-600008

हिंदी साहित्य के नक्षत्र भगवतीचरण वर्मा आधुनिक काल के उन विरल साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से गद्य और पद्य दोनों समृद्ध किया। छायावादी कविता से अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू कर वे प्रेमचंदोत्तर युग के एक शीर्षस्थ उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनके साहित्य में तत्कालीन समाज का जीवंत यथार्थ और मानव जीवन के गहरे द्वंद्व मुखरित हुए हैं।

भगवतीचरण वर्मा जी का जीवन निरंतर संघर्षों और वैचारिक विकास की एक अनूठी दास्तान है। उनका जन्म 30 अगस्त 1903 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के सफीपुर गाँव में एक संभ्रांत कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता देवीचरण वर्मा पेशे से वकील थे। जब वर्मा जी मात्र पांच वर्ष के थे, तब उनके पिता का प्लेग महामारी के कारण असमय निधन हो गया, जिससे परिवार को भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा विपत्तियों के बीच पूरी की और बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय (प्रयागराज) से बी.ए. और एल-एल.बी. (वकालत) की डिग्रियां प्राप्त कीं। शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने कुछ समय वकालत की, लेकिन साहित्य के प्रति अगाध प्रेम के कारण वे स्वतंत्र लेखन की ओर मुड़ गए। उन्होंने कलकत्ता और मुंबई में फिल्म-कथालेखन किया, 'विचार' साप्ताहिक और दैनिक 'नवजीवन' का संपादन किया तथा आकाशवाणी के कई केंद्रों में भी अपनी सेवाएं दीं।

साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'भूले-बिसरे चित्र' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। वे राज्यसभा के मानद सदस्य भी मनोनीत किए गए। हिंदी साहित्य का यह महान साधक 5 अक्टूबर 1981 को पंचतत्त्व में विलीन हो गया। भगवतीचरण वर्मा जी का कृतित्व अत्यंत विशाल और विविधता से परिपूर्ण है। उन्होंने हास्य-व्यंग्य, दार्शनिक, राजनीतिक और सामाजिक सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। उपन्यासकार के रूप में वर्मा जी को देश-विदेश में अपार ख्याति मिली। वर्माजी के उपन्यास कहीं आत्मकथात्मक शैली में हैं, तो कहीं जीवनी शैली में, परंतु उन सब में कृतिकार के अमर व्यक्तित्व की छाप अवश्य है। विशेषतया वर्माजी के साहित्य में उनके जीवन और व्यक्तित्व का अंकन सर्वाधिक हुआ है। वर्माजी की कृतियों में संपूर्ण बीसवीं शताब्दी का जीता-जागता स्वरूप चित्रित हुआ है। भगवतीचरण वर्मा केवल कथाकार नहीं थे, बल्कि वे मानव नियति और मानवीय मूल्यों के गहरे पारखी थे। उनके निबंधों, उपन्यासों और कहानियों में मानवीय मूल्य अत्यंत प्रखर रूप में उभर कर सामने आते हैं। मानवीय मूल्य (Human Values) वे सकारात्मक गुण, विश्वास और सिद्धांत हैं जो इंसान को एक बेहतर इंसान बनाते हैं। ये मूल्य समाज में सही और गलत का अंतर समझाते हैं। यह व्यक्ति को समाज के साथ मिलकर सम्मानपूर्वक जीने की प्रेरणा देते हैं।

'चित्रलेखा' (1934) उनकी कालजयी और सर्वश्रेष्ठ कृति है, जो पाप और पुण्य की दार्शनिक समस्या पर आधारित

है। इस पर दो बार सफल फिल्मों का निर्माण भी हुआ। इस उपन्यास में वर्माजी ने 'पाप' और 'पुण्य' की समस्या उठाई है। 'पाप' और 'पुण्य' की अपनी सामाजिक मान्यताएँ रहती हैं जो युगानुरूप बदलती रहती हैं। यदि व्यक्ति यह समझ ले कि पाप और पुण्य कुछ भी नहीं तो समाज में भयंकर अराजकता फैल जाएगी। उपन्यास की शुरुआत महाप्रभुरत्नाम्बर के आश्रम से होती है। उनके दो शिष्य हैं—श्वेतांक और विशालदेव। दोनों अपने गुरु से पूछते हैं कि श्पाप क्या है और इसका स्वरूप कैसा होता है?श महाप्रभुरत्नाम्बर स्वयं को इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ पाते हैं और दोनों शिष्यों को व्यावहारिक संसार का अनुभव करने के लिए एक योगी और भोगी के पास भेजने का निर्णय करके उनसे स्वीकृति पूछते है। "विशालदेव! तुम ब्राह्मण हो और तुम्हारी ध्यान तथा आराधना पर अनुरक्ति है, इसलिए तुम्हें कुमारगिरि का शिष्य बनना उचित होगा। और श्वेतांक! तुम क्षत्रिय हो, तुम्हें संसार में अनुरक्ति है, इसलिए तुम्हें बीजगुप्त का सेवक होना पड़ेगा।"दोनों शिष्यों ने एक साथ उत्तर दिया—"स्वीकार है!" श्वेतांक को वे भोग-विलास का जीवन देखने के लिए सामंत बीजगुप्त के पास और विशालदेव को वे वैराग्य और साधना को समझने के लिए योगी कुमारगिरि के आश्रम में भेजते हैं। बीजगुप्त पाटलिपुत्र का एक युवा, धनी और प्रभावशाली सामंत (भोगी) है। वह मौर्य साम्राज्य की परम सुंदरी और राजनर्तकी चित्रलेखा से अगाध प्रेम करता है। चित्रलेखा भी बीजगुप्त से प्रेम करती है और दोनों बिना विवाह किए पति-पत्नी की तरह वैभवशाली जीवन जीते हैं। योगी कुमारगिरि एक युवा और प्रतिष्ठित योगी है, जिसने संसार और अपनी समस्त वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का दावा किया है। सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की सभा में चित्रलेखा और योगी कुमारगिरि का सामना होता है। चित्रलेखा अपनी वाकपटुता और तार्किक बुद्धि से योगी को शास्त्रार्थ में परास्त कर देती है। विजय और पराजय! दोनों स्वाभाविक हैं; पर यह पराजय भी विचित्र थी। स्त्री ने अपने ज्ञान से कुमारगिरि को शायद पराजित नहीं किया था, उसने कुमारगिरि को पराजित किया था अपनी उदारता से। सोने का विजय-मुकुट कुमारगिरि के मस्तक को अब भी सुशोभित कर रहा था, कुमारगिरि को उस मुकुट की याद हो आई। कुमारगिरि को क्रोध हुआ, उसने मुकुट अपने सिर से उतारकर पृथ्वी पर पटक दिया। इसके बाद उसने फिर सोचना आरम्भ किया—"पराजय!" यह शब्द उसके क्षेत्र में न था। विजय के लिए उसने सांसारिक सुखों को तिलांजलि दे दी थी; विजय के लिए ही उसने गहरी तपस्या की थी। चित्रलेखा कुमारगिरि के तेज और रहस्यमयी व्यक्तित्व के प्रति आकर्षित हो जाती है। वह बीजगुप्त के वैभव को छोड़कर कुमारगिरि की शिष्या बनने उसके आश्रम चली जाती है। जाते-जाते बीजगुप्त के भवन में एक पत्र रख देती जिसमें मानो मनोविज्ञान का एक सम्पूर्ण ग्रंथ था, जो इस प्रकार है, "पूज्य! आज वह करने जा रही हूँ, जिसकी कभी आशा तक न की थी। मैंने तुमसे प्रेम किया है—और अब भी करती हूँ। प्रेम में त्याग की आवश्यकता होती है, उसी त्याग को कर रही हूँ। मैंने तुम्हारे जीवन को निरर्थक बना दिया था-एक योग्य पुरुष को मेरे प्रेम ने कर्तव्यच्युत कर दिया था। उसका प्रतिकार करने जा रही हूँ। मैंने समझा-और इसीलिए मैं योगी कुमारगिरि से दीक्षा ले रही हूँ। तुम्हें विवाह करना ही होगा; यदि अपने लिए नहीं, तो मेरे अनुरोध से। मेरे रहते हुए तुम अपना विवाह न करोगे, यह मैं जानती हूँ-इसलिए तुमसे अलग होना पड़ रहा है। रही मैं, मैं विधवा थी, प्रेमवश मैं कर्तव्यभ्रष्ट हुई, एक बार फिर अपना कर्तव्य-पालन करूँगी-वैधव्य के संयम का पालन करने का प्रयत्न करूँगी। तुम्हारी-चित्रलेखा"।

आश्रम में रहने के दौरान, कुमारगिरि जो खुद को वासनाओं से ऊपर मानता था, वह चित्रलेखा के रूपजाल और सौंदर्य के आकर्षण में बँध जाता है। वह मानसिक रूप से अपनी साधना से भ्रष्ट हो जाता है और चित्रलेखा के प्रति आसक्त हो जाता है। चित्रलेखा के चले जाने से बीजगुप्त भीतर से टूट जाता है। इसी बीच, गणराज्य के मुख्य अधिकारी की पुत्री यशोधरा के विवाह का प्रसंग आता है। लोग बीजगुप्त को यशोधरा के लिए योग्य वर मानते हैं। लेकिन जब बीजगुप्त को पता चलता है कि उसका शिष्य श्वेतांक और यशोधरा एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो बीजगुप्त उच्च मानवीय मूल्य का परिचय देता है। वह अपनी समस्त संपत्ति, महल और उपाधि श्वेतांक को दान कर देता है और स्वयं एक भिखारी बनकर वहाँ से निकल जाता है। जब चित्रलेखा को कुमारगिरि की वासना का पता चलता है, तो उसका भ्रम टूट जाता है। उसे अपनी भूल का अहसास होता है और वह पश्चाताप की अग्नि में जलकर शुद्ध हो जाती है। वह सब कुछ छोड़कर पुनः बीजगुप्त को ढूँढ़कर क्षमा माँगती है तब बीजगुप्त कहते है—"चित्रलेखा! तुमने बहुत बड़ी भूल की। तुमने मुझे समझने में भ्रम किया। तुम मुझसे क्षमा माँगती

हो? चित्रलेखा! प्रेम स्वयं एक त्याग है, विस्मृति है, तन्मयता है। प्रेम के प्रांगण में कोई अपराध ही नहीं होता, फिर क्षमा कैसी! फिर भी यदि तुम कहलाना ही चाहती हो तो मैं कह देता हूँ मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ!" चित्रलेखा बीजगुप्त का चरण पकड़कर बोली—"नाथ! तो फिर तुम मुझे स्वीकार करो!""यह किस प्रकार सम्भव है? देवि चित्रलेखा! मैं भिखारी हूँ, मैं वैभव त्याग चुका हूँ—अब यह किस प्रकार सम्भव है?" अंत में, वह बीजगुप्त को एक साधारण भिखारी के रूप में पाती है और उसकी संगिनी बनना स्वीकार करती है।

एक वर्ष के बाद श्वेतांक और विशालदेव वापस अपने गुरु रत्नाम्बर के पास लौटते हैं। श्वेतांक (जो बीजगुप्त के साथ रहा) कहता है कि बीजगुप्त देवता है और कुमारगिरि पापी है। विशालदेव (जो कुमारगिरि के साथ रहा) कहता है कि कुमारगिरि महात्मा है और बीजगुप्त पतित (पापी) है। महाप्रभुरत्नाम्बर हँसते हुए कहते हैं कि ''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है—विवश है। वह कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है, फिर पुण्य और पाप कैसा?'' तुम दोनों विभिन्न परिस्थितियों में रहे और तुम दोनों की पाप की धारणाएँ भिन्न-भिन्न हो गई हैं। तुम लोग जा रहे हो— तुम्हारी विद्या पूर्ण हो चुकी है, अब अपना अन्तिम पाठ मुझसे सुनते जाओ—पाप केवल दृष्टिकोण का अंतर है, न कि कोई वास्तविक सत्ता। हर इंसान खास प्रवृत्ति के साथ पैदा होता है और संसार के रंगमंच पर अपना अभिनय (जीवन) करता है, जो उसके स्वभाव और परिस्थितियों से संचालित होता है। चूँकि मनुष्य विवश है और केवल साधन है, न कि कर्ता, इसलिए पुण्य और पाप जैसी कोई चीज़ नहीं है।"

इस उपन्यास में मानवीय मूल्यों को पारंपरिक या रूढ़िवादी चश्मे से न देखकर एक नए, यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से परखा गया है। 'चित्रलेखा' उपन्यास के आलोक में उभर कर आने वाले मुख्य मानवीय मूल्य निम्नलिखित हैं। उपन्यास में हर व्यक्ति को अपनी इच्छा और स्वतंत्र सत्ता के साथ जीने का अधिकार दिया गया है। मुख्य पात्र 'चित्रलेखा' समाज के बंधनों को तोड़कर अपनी शर्तों पर जीती है। वह परिस्थितियों के आगे घुटने टेकने के बजाय अपने जीवन के फैसले खुद लेती है। लेखक ने यह स्थापित किया है कि मनुष्य केवल परिस्थितियों का दास नहीं है, बल्कि उसके भीतर अपनी स्वतंत्र चेतना होती है। बीजगुप्त का चरित्र उच्च मानवीय मूल्यों, विशेषकर त्याग और निःस्वार्थ प्रेम का प्रतीक है। वह चित्रलेखा से अगाध प्रेम करता है लेकिन जब उसे पता चलता है कि उसका शिष्य श्वेतांक और यशोधरा एक-दूसरे को चाहते हैं, तो वह अपनी पूरी संपत्ति और उपाधि श्वेतांक को दान कर देता है। वह सर्वस्व त्याग कर एक भिखारी बनना स्वीकार करता है। यह त्याग मानवीय गरिमा को सर्वोच्च शिखर पर ले जाता है। उपन्यास समाज के झूठे नैतिक मापदंडों और पाखंड पर करारा प्रहार करता है। योगी कुमारगिरि जो स्वयं को संयमी और वासना से ऊपर बताते हैं, वे चित्रलेखा के रूपजाल में फँसकर अपनी साधना से भ्रष्ट हो जाते हैं। इसके विपरीत, नर्तकी चित्रलेखा और सामंत बीजगुप्त अपने जीवन को बिना किसी छलावे या पाखंड के जीते हैं। यहाँ लेखक दिखाते हैं कि अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना ही वास्तविक सत्य और मानवीय मूल्य है। उपन्यास में हृदय परिवर्तन दिखाया गया है कि मनुष्य से भूल होना स्वाभाविक है, लेकिन उस भूल का अहसास होना और पश्चाताप की अग्नि में जलकर शुद्ध होना ही सच्चा मानवीय मूल्य है। चित्रलेखा जब अपनी भूल को पहचानती है, तो वह ऐश्वर्य को छोड़कर पश्चाताप की राह चुनती है और अंत में 'कुंदन' की तरह निखर उठती है। उपन्यास के अंत में जब महाप्रभु रत्नांबर अपने शिष्यों को निष्कर्ष सुनाते हैं उनकी दृष्टि में संसार में न कोई पाप है और न पुण्य, बल्कि यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता है। यह विचार समाज में किसी को भी 'हेय' या 'अछूत' न मानकर सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखने का एक बड़ा मानवीय संदेश देता है।

निष्कर्षतः कथा साहित्य से परे, भगवतीचरण वर्मा मूलतः मानव नियति और जीवन-मूल्यों के एक संवेदनशील पारखी थे। यही कारण है कि उनकी कहानियों, उपन्यासों और निबंधों में मानवीय आदर्श बहुत दृढ़ता के साथ प्रकट होते हैं। वर्मा जी का मानना था कि संसार में कोई भी मनुष्य जन्म से पापी या पुण्यात्मा नहीं होता। परिस्थितियां ही मनुष्य से आचरण करवाती हैं। 'चित्रलेखा' में उन्होंने स्थापित किया कि 'पाप कुछ भी नहीं है, वह तो केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का ही दूसरा नाम है'। यह विचार मानव के प्रति गहरी सहानुभूति और सहिष्णुता जगाता है। वे पुरानी, सड़-गल चुकी

सामाजिक रूढ़ियों और संकीर्ण परंपराओं को छोड़कर व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी गरिमा पर जोर देते थे। उनका मानना था कि मनुष्य को अपनी सहज वृत्तियों और प्रेम को खुलकर जीना चाहिए, बशर्ते वह अनैतिक न हो। वे सच्चे अर्थों में मानवतावाद, दया, करुणा और आपसी सद्भाव को ही वास्तविक धर्म मानते थे। वर्मा जी ने शोषित, वंचित और समाज द्वारा उपेक्षित पात्रों , यहाँ तक कि वेश्यावृत्ति से पीड़ित नारियों के भीतर की पवित्रता और उदात्त मानवीय गुणों को समाज के सामने लाकर समरसता का संदेश दिया। जीवन के झंझावातों ने उन्हें कुछ हद तक भाग्यवादी या नियतिवादी बनाया, लेकिन उनका दर्शन अकर्मण्यता का समर्थन नहीं करता। वे मानव को विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष करने और कर्म पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देते हैं। उनका जीवन-परिचय संघर्ष की प्रेरणा देता है और उनके उपन्यासों में मानवीय मूल्य दृष्टिगोचर है। यह व्यक्ति को समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनाकर चरित्र निर्माणरू करता है। यह लोगों के बीच आपसी भेदभाव को मिटाकर सामाजिक एकता और भाईचारा बढ़ाता है। मूल्यों पर चलने से समाज में अपराध और मानसिक तनाव कम होकर व्यक्ति शांतिपूर्ण जीवन बिताता है। भगवतीचरण वर्मा द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्य आज के बिखरते समाज में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और मार्गदर्शक हैं।

संदर्भ

https://www.scribd.com/document/911316218/Hindi-Chitralekha-Bhagwaticharan-Verma
-चित्रलेखा (पी.डी.एफ़) - भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Dr. V. Geeta Malini
Assistant Professor – Department of Hindi (SS)
Ethiraj College for Women,
Chennai – 600008
9710691857
geetamalini-v@ethirajcollege.edu.in

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

The Arctic Sea Route And Climate Change: A New Maritime Alternative In An Era of Geopolitical Uncertainty

Dr. Kundan Kr. Singh
Research Supervisor (HOD of the Dept. of Pol. Sc., VKSU, Ara, Bihar)
Aqib Murtaza
Research scholar (Dept. of Pol. Sc., VKSU, Ara, Bihar)

Abstract

The Arctic Sea Route (ASR), particularly the Northern Sea Route (NSR), has emerged as one of the most strategically significant maritime corridors of the 21st century. Once considered inaccessible due to frozen ice sheet, the Arctic is rapidly transforming into a navigable region as climate change accelerates melting of ice. Simultaneously, geopolitical instability in the Middle East including disruptions in the Strait of Hormuz, Red Sea and the Suez Canal has exposed the vulnerabilities of traditional global maritime trade routes. These developments have renewed international interest in Arctic shipping routes as an alternative corridor linking Europe and Asia.

Arctic Sea Routes are no longer merely an environmental or geographical phenomenon; it has evolved into a focal point of geopolitical competition among Russia, the United States, China, the European Union, and other Arctic and non-Arctic stakeholders. Russia seeks to consolidate strategic control over the Northern Sea Route, China integrates the route into its Polar Silk Road initiative, while NATO and the United States increasingly view the Arctic through the lens of strategic competition and security. At the same time, commercial shipping companies perceive the route as an opportunity to reduce transit time, lower transportation costs, diversify supply chains, and mitigate risks arising from conflicts in traditional maritime chokepoints.

Despite these opportunities, Arctic shipping presents significant challenges. Seasonal navigability, insufficient infrastructure, high insurance costs, environmental vulnerabilities, climate sensitivity, legal disputes under international maritime law, and concerns over indigenous communities limit the route's commercial viability. Moreover, the paradox of climate change remains central: the very environmental crisis that opens Arctic waters also threatens fragile polar ecosystems and global climate governance.

This article examines the Arctic Sea Route through the interconnected perspectives of climate change, geopolitics, global trade, maritime security, and international law. It analyses the strategic implications of recent Middle East crises for global shipping, evaluates the economic and geopolitical interests of major powers, assesses the environmental consequences of increased Arctic navigation, and explores India's evolving Arctic policy and maritime strategy. The study argues that while the

Arctic Sea Route cannot replace traditional maritime corridors in the immediate future, it is poised to become an increasingly important complementary route that will reshape global trade patterns along the future of climate governance and strategic competition in the coming decades.

Keywords: Arctic Sea Route, Northern Sea Route, Climate Change, Middle East Crisis, Global Shipping, Russia, China, Polar Silk Road, Maritime Security, Arctic Geopolitics, India's Arctic Policy, Suez Canal, Red Sea Crisis.

Introduction

The International Maritime Transport constitutes the backbone of the global economy, accounting for approximately 80–90% of international merchandise trade by volume (United Nations Conference on Trade and Development [UNCTAD], 2024). Since the 19th century, global commerce has depended predominantly on strategic maritime corridors such as the *Suez Canal, the Strait of Hormuz, the Bab el-Mandeb Strait, the Strait of Malacca, and the Panama Canal* (Rodrigue, 2020). These maritime chokepoints have facilitated globalization and maintained supply chains by connecting continents and enabling the efficient transportation of goods, energy resources, and manufactured products.

Recent geopolitical crisis, however, have exposed the vulnerabilities of these traditional shipping routes. Conflicts in the Middle East, attacks on commercial vessels in the Red Sea, tensions surrounding the Strait of Hormuz, and disruptions linked to the *US-IRAN conflict* have significantly increased shipping costs, insurance premiums, and transit risks (International Monetary Fund [IMF], 2024). The blockage of the Suez Canal by the *Ever Given* in 2021 further demonstrated the fragility of global supply chains, highlighting how a single disruption could affect international trade and economic stability (UNCTAD, 2021). Against this backdrop, the Arctic Sea Route has emerged as a strategically significant alternative. Advances in navigation technology, combined with unprecedented reductions in Arctic sea ice caused by anthropogenic climate change, have transformed previously inaccessible waters into potentially viable commercial shipping corridors (IPCC, 2023). Scientific observations indicate that the Arctic is warming approximately three to four times faster than the global average, a phenomenon widely referred to as *Arctic Amplification* (Rantanen et al., 2022). Consequently, Thanks to the climate change that the seasonal ice-free navigation periods have expanded considerably, making Arctic maritime transport increasingly feasible during summer and early autumn months. This phenomenon widespread exacerbates the loom of climate change in the near future while providing accessibility to the alternative navigation routes in the near future.

Among the three principal Arctic maritime routes, *the Northern Sea Route (NSR), the Northwest Passage (NWP), and the Transpolar Sea Route (TSR).* The Northern Sea Route has attracted the greatest international attention (Lasserre, 2014). Extending along Russia's Arctic coastline from the Barents Sea to the Bering Strait, the route offers a substantially shorter connection between Northern Europe and East Asia than the traditional Suez Canal route. Depending on the ports involved, voyages may be shortened by approximately 30–40%, resulting in significant savings in fuel consumption, transit time, and operational costs (Brigham, 2018).

The growing strategic importance of the Arctic has transformed the region into an arena of major power competition. Russia has invested heavily in Arctic infrastructure, modern ports, nuclear-powered icebreakers, and military installations to strengthen its control over the Northern Sea Route

(Østhagen, 2021). China, despite lacking an Arctic coastline, declared itself a "Near-Arctic State" in its 2018 Arctic Policy White Paper and incorporated the *Polar Silk Road* into the Belt and Road Initiative (State Council Information Office of China, 2018). The United States, NATO, Canada, and Nordic countries have responded by expanding their Arctic strategies to safeguard freedom of navigation, enhance regional security, and counterbalance Russian and Chinese influence (Conley & Melino, 2016).

The economic significance of the Arctic extends beyond maritime transportation. According to the U.S. Geological Survey, the Arctic may contain approximately 13% of the world's undiscovered oil resources and 30% of its undiscovered natural gas reserves (Gautier et al., 2009). Consequently, control over Arctic maritime routes is closely linked with broader issues of energy security, resource governance, and geopolitical influence. Nevertheless, the Arctic's emergence as a commercial shipping corridor raises profound environmental imbalance and ethical concerns globally. The navigation of this route is itself controversial and unethical from the climate change perspectives as increased maritime traffic threatens fragile ecosystems through oil spills, black carbon emissions, underwater noise pollution, and biodiversity loss (Arctic Council, 2009). Indigenous communities also face growing socioeconomic and cultural challenges as traditional livelihoods intersect with expanding commercial activities (Arctic Council, 2021). Furthermore, unresolved legal disputes concerning maritime jurisdiction and freedom of navigation continue to complicate Arctic governance under the framework of the United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS) (United Nations, 1982).

For India, the Arctic represents an increasingly important dimension of its maritime and foreign policy. India's Arctic Policy (2022), scientific presence through the Himadri Research Station, expanding cooperation with Russia, and interest in diversified maritime connectivity collectively reflect New Delhi's recognition of the Arctic's growing strategic significance (Ministry of Earth Sciences, Government of India, 2022). As India pursues resilient supply chains, energy security, and enhanced connectivity with Europe, the Arctic Sea Route offers both opportunities and strategic as well as some ethical dilemmas. In this context, the Arctic Sea Route should not merely be viewed as an alternative shipping corridor. Rather, it represents the convergence of climate change, geopolitics, maritime economics, environmental governance, and international law.

Concept, Evolution and Geographical Setting of Arctic Ocean

The *Arctic Ocean* is the world's smallest and shallowest ocean, covering approximately 14 million square kilometres (National Snow and Ice Data Centre [NSIDC], 2023). It is bordered by eight Arctic states comprising Canada, Denmark (via Greenland), Finland, Iceland, Norway, Russia, Sweden, and United States (Alaska). The Arctic Ocean connects the Atlantic Ocean through the Greenland and Norwegian Seas and the Pacific Ocean through the Bering Strait. The Arctic Ocean and its marginal seas comprises of the Chukchi, East Siberian, Laptev, Kara, Barents, White, Greenland, and Beaufort (Britannica, 2026). These seas collectively constitute the maritime pathway of the Northern Sea Route and form the geographical foundation of Arctic shipping (Arctic Council, 2021).

The *Arctic Sea Route (ASR)* refers to the network of navigable maritime passages across the Arctic Ocean that connect the Atlantic and Pacific Oceans. Historically, these waters remained inaccessible for most of the year because they were covered by thick multi-year sea ice, making

commercial navigation practically impossible (Brigham, 2018). The 21st century has fundamentally altered this reality. Rapid warming of the Arctic, driven by anthropogenic climate change, has significantly reduced sea-ice extent and thickness, extending seasonal navigation periods and enabling commercial vessels to traverse Arctic waters with increasing regularity (IPCC, 2023). The age of exploration begins with *European interest* in Arctic navigation dates back to the 15th and 16th centuries when maritime powers sought alternative trade routes to Asia following the rise of Ottoman control over traditional overland trade routes (Brigham, 2018). Several exploratory expeditions attempted to discover northern passages including Martin Frobisher (1576) who explored the Canadian Arctic in search of the Northwest Passage followed by Willem Barentsz (1596), navigated Arctic waters north of Russia and discovered the Svalbard archipelago. Whereas Henry Hudson (1610) explored Hudson Bay in pursuit of a navigable northern passage and Vitus Bering (1728) mapped the strait separating Asia and North America, now known as the Bering Strait (Woodford, 2008). Despite these prolonged and continued efforts, harsh climatic conditions and thawed sea ice prevented commercial navigation for several centuries.

During the *Soviet Era,* the strategic importance of the Northern Sea Route increased significantly. Recognizing its economic and military potential, the Soviet Union invested heavily in Arctic infrastructure, including ports, meteorological stations, icebreaker fleets, communication systems, and search-and-rescue facilities (Brigham, 2018). The NSR primarily served domestic purposes by connecting isolated Siberian settlements and facilitating the transport of natural resources from northern Russia. However, international commercial use remained limited due to severe ice conditions and the requirement for continuous icebreaker assistance (Lasserre, 2014).

The 21st century marks a pivotal point in Arctic navigation after many efforts of the past decades. Satellite observations have documented a dramatic reduction in Arctic summer sea ice, transforming previously inaccessible waters into commercially navigable routes during certain months of the year (IPCC, 2023). This transformation has been accompanied by longer navigation seasons, improved ice forecasting, advanced satellite navigation systems, development of ice-class vessels, and increased international investment in Arctic infrastructure. Consequently, governments and shipping companies increasingly perceive the Arctic region as a viable alternative to traditional maritime routes connecting Europe and Asia (Østhagen, 2021).

Major Arctic shipping routes: -

(a) Northern Sea Route (NSR)- The Northern Sea Route extends from the Kara Gate near the Barents Sea to the Bering Strait, following Russia's Arctic coastline. This lies almost entirely within Russia's Exclusive Economic Zone (EEZ) supported by modern ports, navigation systems, and nuclear-powered icebreakers. The NSR is currently the most commercially viable Arctic shipping route because of its well-developed existing infrastructure and sophisticated navigation system. Russia regards the NSR as central to its Arctic strategy, national security, and long-term economic development (Østhagen, 2021).

(b) Northwest Passage (NWP)- The Northwest Passage traverses the Canadian Arctic Archipelago, linking the Atlantic and Pacific Oceans. This route provides an alternative route between Europe and Asia and consequently reduces dependence on Russian-controlled Arctic waters. Canada considers the passage part of its internal waters,

whereas the United States and several maritime powers regard it as an international strait subject to freedom of navigation (Byers, 2013).

(c) Transpolar Sea Route (TSR)- The Transpolar Sea Route crosses directly through the central Arctic Ocean rather than following coastal waters. Currently, this is commercially unviable due to coverage of extensive ice sheet for years. However, climate projections suggest that continued Arctic warming may make this route seasonally navigable during the second half of the twenty-first century (IPCC, 2023). The TSR could eventually reduce dependence on both Russian and Canadian territorial waters, potentially reshaping the geopolitical dynamics of Arctic navigation (Young, 2016).

Climate Change- A major factor driving Arctic navigation

Climate change is the principal driver behind the emergence of Arctic shipping hastened by *Arctic Amplification* that contributes the warming of the Arctic approximately three to four times faster than the Global average (Rantanen et al., 2022). The process occurs through a positive feedback mechanism due to which the rising global temperature melts the thawed and thick ice sheet due to Albedo effect. This in turn makes the surface of ocean darker to absorb more solar insolation. As the temperature increases due to climate change, the warming cycle accelerates and cause more additional ice sheet to melt rapidly and at much faster pace. Scientific observations indicate that Arctic summer sea-ice extent has declined by approximately 13% per decade since 1979, while multi-year ice has been progressively replaced by thinner first-year ice (NSIDC, 2023). These changes have further extended navigation seasons, reduced icebreaker dependence and thus increased commercial shipping opportunities. Climate models suggest these trends are likely to continue under most greenhouse gas emission scenarios (IPCC, 2023).

The Middle East Crisis and the Changing Dynamics of Global Shipping

For over a century, Global maritime trade has relied on a small number of strategic chokepoints that connect major oceans and facilitate the movement of goods, energy resources, and manufactured products. Among these, *the Suez Canal, the Bab el-Mandeb Strait, and the Strait of Hormuz* have been indispensable to trade between Europe, Asia, and Africa (Rodrigue, 2020). The *Suez Canal* is one of the world's busiest artificial waterways, linking the Mediterranean Sea with the Red Sea and providing the shortest maritime route between Europe and Asia. It Facilitates around 12–15% of global trade and carry a significant share of global container traffic. The route is significant as a major transit zone for oil and liquefied natural gas (LNG) shipments. The blockage of the canal by the *Ever-Given container ship* in 2021 demonstrated how a single incident could disrupt global supply chains, causing billions of dollars in economic losses and delaying hundreds of vessels. The incident highlighted the risks associated with excessive reliance on a single maritime corridor.

Similarly, *Bab el-Mandeb Strait,* located between Yemen and Djibouti/Eritrea, connects the Red Sea to the Gulf of Aden and the Indian Ocean. Its strategic importance stems from being a critical gateway to the Suez Canal which mainly facilitates Europe–Asia maritime trade. This route also remains significant for oil and commercial cargo traffic movement. Recent attacks on commercial vessels in the Red Sea have increased insurance costs, forced rerouting around the Cape of Good Hope, and heightened concerns about maritime security.

The Strait of Hormuz, located between Persian Gulf (Iran) and Gulf of Oman, is one of the world's most important energy corridors. Approximately one-fifth of global oil trade passes through this narrow waterway and any disruption caused by military confrontation, sanctions, or regional conflict has immediate consequences for global oil prices, energy security inflation and international shipping. This is underscored from the fact that the disruption caused due to the Iran-US conflict started from 28th Feb, 2026 intensified the global supply chains at an unprecedented level.

The repeated geopolitical crises in the Middle East have exposed the vulnerability of these maritime corridors and highlighted the risks associated with excessive dependence on a limited number of shipping routes (UNCTAD, 2024). Recent geopolitical instability has significantly affected global maritime logistics with increase in shipping costs including higher marine insurance premiums, increased freight rates, additional security expenditure, longer sailing distances and greater fuel consumption (IMF, 2024). These developments have further intensified inflationary pressures across global markets. Modern production systems rely heavily on just-in-time logistics, making supply chains particularly vulnerable to shipping delays. This has affected major manufacturing and electronics industries along with pharmaceutical supply chains. The food security crisis hit by the disruption of fertilisers trade is the major cause for unemployment rate and hunger has a direct correlation to a major crisis looming around in the near future.

Consequently, multinational corporations increasingly emphasize supply-chain resilience alongside operational efficiency. This has necessitated the search for alternative maritime route to diversify trade and connectivity. However, there are other alternatives routes like the Cape of Good Hope, the International North–South Transport Corridor (INSTC), the Arctic Sea Route, multimodal Eurasian transport corridors (UNCTAD, 2024). Etc, But among these alternatives, the Northern Sea Route offers the greatest potential for reducing both distance and transit time between Europe and Northeast Asia (Lasserre, 2014). Compared with the Suez Canal route, voyages between Northern Europe and East Asia via the Northern Sea Route may be shortened by 30–40%, depending upon the ports involved (Brigham, 2018). This reduction lowers fuel consumption, operating costs, and voyage duration. Thus, the Arctic Sea Route provides an additional strategic option capable of improving the flexibility and resilience of international maritime trade.

Russia's Investment, China's Polar Silk Road, USA's expansionist Policy and EU's Balanced Stance as a Strategic Theatre in the Arctic Sea Route

Russia occupies a dominant geographical position in the Arctic owing to its extensive Arctic coastline. Recognizing the economic and strategic importance of the Northern Sea Route, Russia has integrated Arctic development into its national security and economic strategies (Østhagen, 2021). Russia has undertaken extensive investments in Arctic deep-water ports. With its nuclear-powered icebreakers to crush ice through scientific advancement of Satellite navigation technology, the commercial viability of the Northern Sea Route enhances considerably. From military perspective, the Arctic has become an increasingly important theatre for Russian military strategy. Russia has reopened soviet-era military installations to modernize its arctic naval bases. It has also expanded air defence systems and deployment of submarines at massive scale (Conley & Melino, 2016). These measures are intended to protect strategic resources, maintain control over the NSR, and reinforce Russia's geopolitical influence in the High North. The Arctic contains some of the world's largest untapped

hydrocarbon reserves. Russia's Arctic energy security focuses on projects such as Yamal LNG, Arctic LNG-2 and offshore oil and gas exploration.

Although China is geographically distant from the Arctic, it has emerged as one of the most influential non-Arctic actors in the region. China's growing involvement reflects its broader objective of expanding global connectivity, securing energy supplies, and participating in the governance of emerging strategic spaces (State Council Information Office of China, 2018). In its 2018 *Arctic Policy White Paper*, China described itself as a *"Near-Arctic State",* emphasizing that developments in the Arctic have global implications, particularly for climate change, scientific research, international shipping, and resource development (State Council Information Office of China, 2018). China's Arctic engagement is closely linked to the *Polar Silk Road (PSR),* an extension of the Belt and Road Initiative (BRI). The PSR seeks to enhance maritime connectivity between East Asia and Europe through the Arctic Ocean, thereby reducing transportation costs, diversifying trade routes, and decreasing dependence on traditional maritime chokepoints such as the Suez Canal and the Strait of Malacca (Lanteigne, 2020).

The Arctic Sea Routes have become increasingly important to the *United States* as climate change, geopolitical competition, and disruptions to traditional maritime trade corridors reshape global commerce and security. The prolonged instability in the Middle East, particularly disruptions in the Red Sea and the Strait of Hormuz, has highlighted the vulnerability of conventional shipping routes and increased interest in Arctic alternatives such as the Northern Sea Route (NSR), the Northwest Passage, and the future Transpolar Sea Route. Although these routes remain seasonal, they have the potential to reduce shipping distances between Asia and Europe by up to 40%, lowering transportation costs, fuel consumption, and transit times while enhancing supply chain resilience (Reuters, 2026; Atlantic Council, 2025). For the United States, the Arctic is not merely a commercial opportunity but a strategic frontier in great-power competition. Greenland occupies a pivotal location between North America and Europe, overlooking the Greenland–Iceland–United Kingdom (GIUK) Gap and adjacent to emerging Arctic shipping lanes. President Donald Trump has repeatedly emphasized Greenland's strategic importance because it offers the United States a platform to monitor maritime traffic, strengthen military surveillance, and counter the expanding Arctic presence of Russia and China. The Arctic also holds immense economic value due to its abundant reserves of critical minerals, including rare earth elements, lithium, graphite, nickel, cobalt, and copper, which are essential for electric vehicles, semiconductors, renewable energy technologies, and advanced defence systems. Greenland alone possesses substantial untapped deposits of these minerals, offering the United States an opportunity to diversify supply chains and reduce dependence on China's dominance in critical mineral processing. Thus, the Arctic Sea Routes and Greenland together represent a strategic nexus of maritime security, economic competitiveness, energy transition, and resource security, making the Arctic an indispensable pillar of contemporary U.S. foreign and economic policy (CSIS, 2026; Reuters, 2026).

The *European Union (EU)* considers the Arctic a region of growing strategic importance due to its implications for climate change, environmental sustainability, energy security, maritime connectivity, and geopolitical stability. Although the EU is not an Arctic coastal power, three of its member states Denmark (through Greenland), Finland, and Sweden are Arctic countries, giving the Union a direct stake in the region's governance. The EU's Arctic policy, updated in 2021, emphasizes that the

Arctic is warming nearly four times faster than the global average, making it both a frontline of climate change and a region of increasing geopolitical significance (European Commission, 2021; Intergovernmental Panel on Climate Change [IPCC], 2023). The EU's approach to Arctic governance is founded on three interconnected pillars: *environmental protection, sustainable economic development, and rules-based international cooperation*. Environmental sustainability remains the Union's foremost priority, as the melting of Arctic sea ice threatens biodiversity, accelerates global sea-level rise, and intensifies extreme weather events.

The EU also supports the development of Arctic shipping routes, such as the Northern Sea Route, as complementary trade corridors between Europe and Asia, particularly in light of disruptions to traditional maritime routes caused by geopolitical tensions in the Middle East. Nevertheless, it emphasizes that increased shipping must comply with the *International Maritime Organization's Polar Code*, which establishes mandatory standards for vessel safety, crew training, pollution prevention, and emergency preparedness in polar waters (International Maritime Organization [IMO], 2021). Furthermore, the EU strongly advocates governance based on the *United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS)* and actively supports the *Arctic Council* as the principal forum for scientific cooperation, environmental protection, and sustainable development (United Nations, 1982; Arctic Council, 2021). As geopolitical competition intensifies due to Russia's Arctic ambitions and China's Polar Silk Road initiative, the European Union seeks to balance strategic interests with environmental stewardship, ensuring that the Arctic remains a region governed by international law, peaceful cooperation, and sustainable development.

India's Strategic Interests in the Arctic Sea Route

Although India is not an Arctic state, the region has emerged as an important component of its foreign, maritime, and economic policies due to its growing significance in global trade, climate governance, energy security, and geopolitics. Recognizing these opportunities, the Government of India launched its *Arctic Policy (2022),* which is built on six pillars: *scientific research, climate and environmental protection, economic and human development, transportation and connectivity, governance and international cooperation, and national capacity building* (Ministry of Earth Sciences [MoES], 2022). Among these, the Arctic Sea Route (ASR) particularly the Northern Sea Route (NSR) holds strategic importance as an alternative maritime corridor connecting Europe and Asia. As geopolitical instability in the Middle East, including disruptions in the Red Sea and the Strait of Hormuz, has exposed the vulnerabilities of traditional shipping routes, the ASR offers India an opportunity to diversify its maritime trade, reduce transit time, and strengthen the resilience of its supply chains (United Nations Conference on Trade and Development [UNCTAD], 2024).

The Arctic is also central to India's long-term energy security strategy. The region contains an estimated *13% of the world's undiscovered oil and 30% of its undiscovered natural gas reserves*, making it a significant source of future energy supplies (Gautier et al., 2009). India's growing cooperation with Russia in Arctic energy projects, particularly liquefied natural gas (LNG) initiatives, could facilitate more efficient transportation of energy resources through the Northern Sea Route. Furthermore, India has maintained a scientific presence in the Arctic through the *Himadri Research Station* in Svalbard since 2008, reflecting its commitment to understanding the region's influence on

the Indian monsoon, sea-level rise, and broader climate systems (MoES, 2022). By combining scientific diplomacy with strategic economic engagement, India seeks to position itself as a responsible stakeholder in Arctic governance. Consequently, the Arctic Sea Route aligns with India's broader vision of enhancing maritime connectivity, ensuring energy security, promoting resilient global supply chains, and contributing to a rules-based international order while balancing its strategic partnerships with both Russia and Western Arctic stakeholders.

Challenges and Future Prospects of the Arctic Sea Route as an Alternative Maritime Corridor

The Arctic Sea Route (ASR), particularly the Northern Sea Route (NSR), has emerged as a promising alternative to traditional maritime corridors such as the Suez Canal due to its potential to reduce shipping distances, transit time, and transportation costs between Europe and Asia. However, despite its growing strategic significance, the route continues to face numerous environmental, economic, legal, and geopolitical challenges that constrain its widespread commercial adoption. At the same time, evolving climate conditions, technological advancements, and changing geopolitical dynamics present significant opportunities for its future development.

One of the foremost challenges is the seasonal nature of Arctic navigation. Although climate change has reduced sea-ice coverage, the route remains navigable only for limited periods of the year, and many sections still require icebreaker assistance, increasing operational costs (Intergovernmental Panel on Climate Change [IPCC], 2023). Extreme weather conditions, unpredictable ice movements, poor visibility, and the lack of reliable hydrographic data continue to pose significant risks to safe navigation (International Maritime Organization [IMO], 2021). In addition, the Arctic suffers from limited infrastructure, including inadequate deep-water ports, search-and-rescue facilities, communication systems, repair stations, and emergency response capabilities, making commercial operations more complex and expensive (Østhagen, 2021).

Geopolitical tensions further complicate the route's development. Russia's dominance over the Northern Sea Route, coupled with its regulatory requirements for foreign vessels, has raised concerns regarding freedom of navigation and international maritime law. Moreover, Western sanctions on Russia following the Ukraine conflict have affected international investment, insurance, and commercial cooperation in Arctic infrastructure projects (Young, 2016). The increasing strategic competition among Russia, China, the United States, and NATO has also transformed the Arctic into a theatre of geopolitical rivalry, creating uncertainties for long-term commercial investment. Environmental concerns remain equally significant, as increased shipping activity threatens fragile Arctic ecosystems through oil spills, black carbon emissions, underwater noise, and biodiversity loss, while also affecting the livelihoods of Indigenous communities (Arctic Council, 2021).

Despite these constraints, the future prospects of the Arctic Sea Route remain promising. Continued reductions in Arctic sea ice are expected to lengthen navigation seasons and improve commercial viability over the coming decades (IPCC, 2023). Technological advancements in ice-class vessels, satellite navigation, weather forecasting, autonomous shipping, and digital maritime infrastructure are likely to enhance safety and operational efficiency. Furthermore, recurring disruptions in traditional maritime corridors such as the Red Sea crisis, tensions in the Strait of Hormuz, and congestion in the Suez Canal have increased global interest in diversifying shipping routes and strengthening supply-

chain resilience (United Nations Conference on Trade and Development [UNCTAD], 2024). The route also provides greater access to the Arctic's abundant reserves of hydrocarbons, critical minerals, and rare earth elements, reinforcing its long-term economic and strategic value.

Nevertheless, the Arctic Sea Route is unlikely to replace the Suez Canal or other established maritime corridors in the foreseeable future. Instead, it is expected to function as a complementary and strategic alternative, particularly during periods of geopolitical disruption or seasonal commercial opportunities. Its long-term success will depend on sustained investment in infrastructure, effective implementation of international regulations such as the IMO Polar Code, adherence to the United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS), environmental safeguards, and enhanced international cooperation among Arctic and non-Arctic stakeholders (IMO, 2021; United Nations, 1982). Consequently, the Arctic Sea Route is poised to play an increasingly important role in shaping the future architecture of global maritime trade, provided that economic ambitions are balanced with environmental sustainability and geopolitical stability.

Conclusion

The Arctic Sea Route represents one of the most significant transformations in global maritime geography in the twenty-first century. Accelerated by climate change and reinforced by geopolitical instability in traditional maritime corridors, the route has evolved from a largely inaccessible frontier into a strategically important shipping corridor. The Middle East crises, including disruptions in the Red Sea and tensions surrounding the Strait of Hormuz, have underscored the necessity of diversifying global trade routes, thereby enhancing the relevance of the Northern Sea Route.

At the same time, the Arctic has become a theatre of great-power competition involving Russia, China, the United States, and the European Union. While Russia seeks to consolidate control over the Northern Sea Route, China advances its Polar Silk Road initiative, and Western powers emphasize freedom of navigation and regional security. These competing interests highlight the Arctic's growing geopolitical significance.

Nevertheless, the expansion of Arctic shipping also raises profound environmental and governance challenges. Increased maritime traffic threatens fragile ecosystems, while unresolved legal and strategic disputes complicate the development of a stable governance framework. The future of the Arctic Sea Route will therefore depend on balancing economic opportunities with environmental sustainability, international cooperation, and adherence to international maritime law. As climate change and geopolitical shifts continue to reshape global trade, the Arctic Sea Route is likely to become an increasingly important component of the evolving international maritime order rather than a complete substitute for existing trade corridors.

References

Arctic Council. (2009). *Arctic marine shipping assessment 2009 report*. Protection of the Arctic Marine Environment (PAME). https://pame.is/projects/arctic-marine-shipping/arctic-marine-shipping-assessment-2009

Arctic Council. (2021). *Arctic council strategic plan 2021–2030*. https://arctic-council.org/about/strategic-plan/

Atlantic Council. (2025). *A U.S. and allied strategy for Greenland*. Atlantic Council. https://

www.atlanticcouncil.org/content-series/atlantic-council-strategy-paper-series/a-us-and-allied-strategy-for-greenland/

Brigham, L. W. (2018). *The Arctic in world affairs: A North Pacific dialogue on Arctic issues*. Korea Maritime Institute.

Britannica. (2026). *Arctic Ocean*. Encyclopaedia Britannica. https://www.britannica.com/place/Arctic-Ocean

Byers, M. (2013). *International law and the Arctic*. Cambridge University Press. https://doi.org/10.1017/CBO9781139135458

Conley, H. A., & Melino, M. (2016). *The new ice curtain: Russia's strategic reach to the Arctic*. Center for Strategic and International Studies. https://www.csis.org/analysis/new-ice-curtain

Center for Strategic and International Studies. (2026). *Greenland, rare earths, and Arctic security*. https://www.csis.org/analysis/greenland-rare-earths-and-arctic-security

European Commission. (2021). *A stronger EU engagement for a peaceful, sustainable and prosperous Arctic*. Joint Communication to the European Parliament and the Council. https://eur-lex.europa.eu/legal-content/EN/TXT/?uri=JOIN%3A2021%3A27%3AFIN

Gautier, D. L., Bird, K. J., Charpentier, R. R., Grantz, A., Houseknecht, D. W., Klett, T. R., Moore, T. E., Pitman, J. K., Schenk, C. J., Schuenemeyer, J. H., Sørensen, K., Tennyson, M. E., Valin, Z. C., & Wandrey, C. J. (2009). Assessment of undiscovered oil and gas in the Arctic. *Science, 324*(5931), 1175–1179. https://doi.org/10.1126/science.1169467

Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC). (2023). *Climate change 2023: Synthesis report. Contribution of Working Groups I, II and III to the Sixth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change*. IPCC. https://www.ipcc.ch/report/ar6/syr/

International Maritime Organization. (2021). *International code for ships operating in polar waters (Polar Code)* (2021 ed.). IMO. https://www.imo.org/en/OurWork/Safety/Pages/polar-code.aspx

International Monetary Fund. (2024). *World economic outlook: Global supply chains and geopolitical fragmentation*. International Monetary Fund. https://www.imf.org/en/Publications/WEO

Lanteigne, M. (2020). *China's Polar Silk Road: Scientific diplomacy and the geopolitics of the Arctic*. *The Polar Journal, 10*(1), 87–104. https://doi.org/10.1080/2154896X.2020.1738843

Lasserre, F. (2014). Case studies of shipping along Arctic routes: Analysis and profitability perspectives for the container sector. *Transportation Research Part A: Policy and Practice, 66*, 144–161. https://doi.org/10.1016/j.tra.2014.04.009

Ministry of Earth Sciences. (2022). *India's Arctic policy: Building a partnership for sustainable development*. Government of India. https://moes.gov.in/arctic-policy/

National Centre for Polar and Ocean Research. (2023). *Indian Arctic Programme*. Ministry of Earth Sciences. https://ncpor.res.in

National Snow and Ice Data Center. (2023). *Arctic sea ice news and analysis*. University of Colorado Boulder. https://nsidc.org/arcticseaicenews/

Østhagen, A. (2021). *The new geopolitics of the Arctic: Russia, China and the European Union*. Palgrave Macmillan. https://doi.org/10.1007/978-3-030-81253-9

Rantanen, M., Karpechko, A. Y., Lipponen, A., Nordling, K., Hyvärinen, O., Ruosteenoja, K., Vihma, T., & Laaksonen, A. (2022). The Arctic has warmed nearly four times faster than the globe since 1979. *Communications Earth & Environment, 3*(168). https://doi.org/10.1038/s43247-022-00498-3

Reuters. (2026, January 9). *Trump, Greenland and critical minerals: Why the Arctic matters*. Reuters. https://www.reuters.com/sustainability/sustainable-switch-trump-greenland-critical-minerals-2026-01-09/

Reuters. (2026, May 28). *Russia sends first LNG tanker this year eastward along Arctic route, data shows*. Reuters. https://www.reuters.com/business/energy/russia-sends-first-lng-tanker-this-year-eastward-

along-arctic-data-shows-2026-05-28/

Reuters. (2026, June 26). *NATO allies promised Trump they'd secure the Arctic. They've got work to do.* Reuters. https://www.reuters.com/business/aerospace-defense/nato-allies-promised-trump-theyd-secure-arctic-theyve-got-work-do-2026-06-26/

Rodrigue, J.-P. (2020). *The geography of transport systems* (5th ed.). Routledge. https://doi.org/10.4324/9780429346321

State Council Information Office of the People's Republic of China. (2018). *China's Arctic policy*. State Council Information Office. http://english.www.gov.cn/archive/white_paper/2018/01/26/content_281476026660336.htm

United Nations. (1982). *United Nations Convention on the Law of the Sea*. United Nations. https://www.un.org/depts/los/convention_agreements/texts/unclos/unclos_e.pdf

United Nations Conference on Trade and Development. (2021). *Review of maritime transport 2021*. United Nations. https://unctad.org/publication/review-maritime-transport-2021

United Nations Conference on Trade and Development. (2024). *Review of maritime transport 2024*. United Nations. https://unctad.org/publication/review-maritime-transport-2024

U.S. Geological Survey. (2008). *Circum-Arctic Resource Appraisal: Estimates of Undiscovered Oil and Gas North of the Arctic Circle*. USGS Fact Sheet 2008–3049. https://pubs.usgs.gov/fs/2008/3049/

U.S. Geological Survey. (2024). *Mineral Commodity Summaries 2024*. https://www.usgs.gov

Woodford, R. (2008). *The Northwest Passage*. Firefly Books.

Young, O. R. (2016). The future of the Arctic: Cauldron of conflict or zone of peace? *International Affairs, 87*(1), 185–193. https://doi.org/10.1111/j.1468-2346.2011.00967.x

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

The Olympic Movement: Origins, Evolution, Governance, Controversies, and Global Impact

Dr. Arun Kumar
Assistant professor, Department of Physical education
Guru Nanak Khalsa college, Yamuna Nagar, Haryana

Introduction

The Olympic Movement stands as one of the most influential and enduring phenomena in modern global culture, sport, and international relations. From its ancient roots in Olympia to its contemporary incarnation as a multi-billion-dollar, multi-sport spectacle, the Olympics have evolved into a complex institution that shapes and reflects the world's cultural, political, and economic landscapes. This review article provides a comprehensive examination of the Olympic Movement, tracing its historical origins, charting its evolution, analyzing its governance and legal frameworks, dissecting major controversies and reforms, and evaluating its far-reaching cultural, political, and economic impacts. Special attention is given to the role of the International Olympic Committee (IOC), the Olympic Charter, the processes of reform and commercialization, and the Movement's ongoing challenges and achievements in inclusion, sustainability, and legacy management.

Historical Origins of the Olympic Movement

The Ancient Olympic Games

The Olympic Games originated in ancient Greece, with the first recorded festival held in Olympia in 776 BCE. These Games were deeply embedded in religious rituals honoring Zeus and were held every four years—a tradition that established the concept of the "Olympiad" as a chronological marker in Greek history[12]. Initially, the Games featured a single event, the stadion footrace, but over the centuries expanded to include the diaulos (two-length race), dolichos (long-distance race), wrestling, pentathlon, boxing, chariot racing, and the pankration—a brutal mixed martial arts contest[12].

Participation was restricted to freeborn Greek men, though women could be victorious as chariot owners. The Games were a unifying force in Greek culture, promoting peace through the Olympic truce (ekecheiría), which allowed athletes and pilgrims safe passage to Olympia. However, the contests also served as proxies for city-state rivalries and political alliances[12].

The ancient Olympics continued under Roman rule but declined in importance and were eventually abolished around 393 CE by Emperor Theodosius I, primarily due to their pagan associations[12].

The Modern Revival

Interest in reviving the Olympic Games persisted through the centuries, culminating in the late 19th century with the efforts of French educator Pierre de Coubertin. Inspired by both the ancient Games and contemporary athletic festivals such as the Wenlock Olympian Games in England and the Zappas Olympics in Greece, Coubertin convened an international congress in Paris in 1894. This congress led to the founding of the International Olympic Committee (IOC) and the decision to hold the first modern Olympic Games in Athens in 1896[34].

The 1896 Athens Olympics featured 241 athletes from 14 nations, competing in 43 events across nine sports. The event was a resounding success, symbolizing the rebirth of the Olympic tradition and setting the stage for the Movement's global expansion[53].

Evolution of the Olympic Games: Format and Events

Summer, Winter, and Youth Olympics

The Olympic Games have undergone significant transformation since 1896. The Summer Olympics, held every four years, have grown from a handful of sports to over 30, encompassing hundreds of events and thousands of athletes. The Winter Olympics were introduced in 1924 in Chamonix, France, focusing on snow and ice sports. Until 1992, both editions were held in the same year; since 1994, they have alternated every two years, allowing for greater focus and financial stability[678].

The Youth Olympic Games (YOG), inaugurated in 2010 (Singapore for Summer, Innsbruck 2012 for Winter), aim to engage younger athletes and promote Olympic values among youth. The YOG features innovative formats and educational programs, reflecting the Movement's commitment to youth engagement and development[7].

Expansion of Sports and Gender Inclusion

The Olympic program has continually evolved, with sports added, removed, or reintroduced based on global popularity and relevance. Notably, women's participation has expanded dramatically—from exclusion in 1896 to full gender parity in the Paris 2024 Games, where 50% of athletes were women[910]. New disciplines such as skateboarding, surfing, sport climbing, and breaking have been introduced to appeal to younger audiences and reflect contemporary sporting trends.

Paralympics and Diversity Initiatives

The Paralympic Games, first held in Rome in 1960, have grown alongside the Olympics, providing a global platform for athletes with disabilities. The IOC and International Paralympic Committee (IPC) have strengthened their partnership, ensuring that the Paralympics are staged in the same host cities and venues as the Olympics, and promoting inclusivity and accessibility[11].

Other diversity initiatives include the Refugee Olympic Team, first introduced in Rio 2016, and the increasing representation of athletes from marginalized and underrepresented groups[9].

Governance Structure of the Olympic Movement

The International Olympic Committee (IOC)

The IOC is the supreme authority of the Olympic Movement, responsible for organizing the Olympic

Games, promoting Olympism, and safeguarding the Movement's values and integrity[127]. Founded in 1894, the IOC is a not-for-profit, independent international organization headquartered in Lausanne, Switzerland.

Structure and Leadership

The IOC comprises over 100 members, including royalty, heads of state, athletes, and business leaders. Members serve as trustees of the Olympic Movement, not as representatives of their countries. The President, elected for an eight-year term (renewable once for four years), leads the organization. The current President, as of 2025, is Kirsty Coventry—the first woman and African to hold the post[127].

The Executive Board, consisting of the President, four Vice Presidents, and ten other members, oversees daily operations and strategic direction. Various commissions and committees focus on athlete welfare, ethics, governance, anti-doping, and other key areas[1213].

The Olympic Charter

The Olympic Charter is the codification of the fundamental principles, rules, and by-laws adopted by the IOC. It governs the organization, actions, and functioning of the Olympic Movement, establishing the conditions for the celebration of the Games and the relationships between the IOC, International Federations (IFs), and National Olympic Committees (NOCs)[1415].

The Charter enshrines the values of Olympism—excellence, friendship, and respect—and mandates non-discrimination, fair play, and the autonomy of sport. It is regularly updated to reflect evolving standards and challenges.

National Olympic Committees (NOCs) and International Federations (IFs)

NOCs are responsible for developing, promoting, and protecting the Olympic Movement in their respective countries. They select athletes and teams for the Games and ensure compliance with the Olympic Charter. IFs govern individual sports at the international level, setting technical standards and overseeing global competitions[1511].

Organising Committees for the Olympic Games (OCOGs)

Each edition of the Games is organized by a dedicated OCOG, responsible for planning, executing, and delivering the event in accordance with IOC guidelines. OCOGs work closely with the IOC, NOCs, IFs, host city authorities, and other stakeholders to ensure successful Games[117].

The IOC Athletes' Commission

The IOC Athletes' Commission (AC) serves as the primary link between athletes and the IOC, ensuring that athletes' voices are represented in decision-making. The majority of AC members are elected by their peers at each Games, and the Chair sits on the IOC Executive Board. The Commission advocates for athlete rights, supports career development, and promotes clean and fair sport[1617].

Olympic Charter, Rules, and Legal Framework

The Olympic Charter is the foundational legal document of the Olympic Movement. It establishes the mission of the IOC, the rights and obligations of stakeholders, and the rules governing the organization and celebration of the Games[1415].

Key principles include:

- **Promotion of Olympism**: The IOC is tasked with promoting ethics, education, and the harmonious development of humankind through sport.
- **Non-Discrimination**: Participation in sport is a human right, and the Charter prohibits discrimination based on race, gender, religion, or other status.
- **Autonomy of Sport**: Sports organizations within the Olympic Movement have the right to self-governance, free from external interference.
- **Good Governance**: The Charter mandates transparency, accountability, and ethical conduct across all levels of the Movement.

The Charter also outlines the processes for host city selection, eligibility of athletes, media coverage, and dispute resolution.

Olympic Agenda Reforms and Governance Modernization

Olympic Agenda 2020 and 2020+5

In response to mounting challenges—ranging from cost overruns and corruption to demands for greater transparency and sustainability—the IOC launched a series of sweeping reforms known as Olympic Agenda 2020 (adopted in 2014) and Olympic Agenda 2020+5 (adopted in 2021)[1819].

Key Objectives and Achievements

- **Sustainability**: Emphasizing the use of existing and temporary venues, reducing environmental impact, and integrating sustainability into all aspects of the Games.
- **Credibility**: Strengthening good governance, transparency, and ethics; enhancing anti-doping measures; and protecting clean athletes.
- **Youth Engagement**: Innovating the Olympic program to appeal to younger audiences and fostering youth participation through the Youth Olympic Games.
- **Gender Equality and Inclusion**: Achieving gender parity in athlete participation and promoting diversity across the Movement.
- **Legacy and Adaptation**: Ensuring that the Games align with host cities' long-term development plans and deliver lasting benefits.

The reforms have profoundly changed the bidding process, host city contracts, and the overall philosophy of organizing the Games, shifting from a one-size-fits-all model to a more flexible, context-driven approach[2011].

Bidding, Host City Selection, and Organising Committees

The Bidding Process

Historically, the competition to host the Olympic Games was fierce, with cities investing heavily in elaborate bids. However, escalating costs, public opposition, and concerns over white elephant infrastructure led to a decline in candidate cities. Olympic Agenda 2020 introduced a new "Invitation Phase," encouraging cities to align their bids with long-term development goals and emphasizing sustainability, legacy, and cost control[2011].

The IOC now provides greater support and transparency throughout the process, including risk assessments, sustainability criteria, and public disclosure of host city contracts. The aim is to ensure that hosting the Games is accessible, beneficial, and sustainable for a wider range of cities and regions.

Organising Committees for the Olympic Games (OCOGs)

OCOGs are established within months of a city's selection and are responsible for all aspects of Games planning and delivery. Their tasks include venue construction and management, athlete services, ticketing, security, transport, and legacy planning. OCOGs work closely with the IOC, NOCs, IFs, host governments, and other stakeholders to deliver the Games on time and within budget[11].

Economic Impact and Legacy of Hosting the Olympics

Economic Benefits and Challenges

Hosting the Olympic Games is often promoted as a catalyst for economic development, urban regeneration, and global visibility. Benefits include infrastructure improvements, job creation, tourism, and enhanced international profile. For example, London 2012 reportedly generated a USD 15 billion boost to the UK economy, while Barcelona 1992 transformed the city's coastline and global image[1121].

However, the economic impact is highly variable and often less positive than anticipated. Many host cities have struggled with cost overruns, debt, and underutilized venues. The 1976 Montreal Games left the city with a 30-year debt, while Athens 2004's facilities contributed to Greece's financial crisis. Rio 2016 and Sochi 2014 experienced massive budget overruns and post-Games challenges[2223].

Recent reforms have sought to mitigate these risks by prioritizing existing infrastructure, reducing new construction, and integrating legacy planning from the outset. Paris 2024, for example, utilized 95% existing or temporary venues, significantly reducing costs and environmental impact[2425].

Legacy Management and Post-Games Venue Use

A critical measure of Olympic success is the long-term use and impact of venues and infrastructure. According to an updated IOC report, 86% of all permanent Olympic venues since Athens 1896, and 94% from the 21st century, are still in use today. These venues serve diverse purposes, from sports and recreation to culture, business, and community activities[2627].

Legacy strategies now emphasize multi-purpose, year-round use, community engagement, and alignment with urban development goals. The Paris 2024 Athletes' Village, for instance, will be converted into housing and public facilities, including social housing and green spaces[25].

Major Controversies and Scandals

Doping and Sport Integrity

The fight against doping has been a persistent challenge for the Olympic Movement. From the use of "magic potions" in ancient Greece to sophisticated state-sponsored programs in the modern era, doping scandals have repeatedly threatened the integrity of the Games[282930].

Key milestones include:

- **1960**: The first Olympic death linked to doping (Knud Enemark Jensen, Rome).

- **1967**: The IOC bans performance-enhancing drugs and establishes the Medical Commission.
- **1968**: First Olympic athlete disqualified for doping (Hans-Gunnar Liljenwall, Mexico City).
- **1970s–1980s**: Systematic doping by East German and Soviet athletes.
- **1988**: Ben Johnson stripped of gold for steroid use (Seoul).
- **1999**: Formation of the World Anti-Doping Agency (WADA).
- **2014–2018**: Russian state-sponsored doping scandal; Russia banned from the 2018 Winter Olympics, with athletes competing as "Olympic Athletes from Russia."
- **2024**: Ongoing controversies, including the Chinese swimming team case and debates over transparency and governance in anti-doping agencies[3130].

The IOC and WADA have implemented increasingly rigorous testing, sanctions, and educational programs, but challenges remain, including political interference, technological advances in doping, and the need for independent oversight.

Boycotts, Politics, and Human Rights

The Olympics have often been a stage for political protest, boycotts, and human rights controversies:

- **1936 Berlin**: Nazi propaganda and exclusion of Jewish athletes; Jesse Owens' triumph challenged Aryan supremacy[32].
- **1956 Melbourne**: Boycotts over the Suez Crisis and Soviet invasion of Hungary.
- **1968 Mexico City**: Black Power salute by Tommie Smith and John Carlos; Tlatelolco Massacre.
- **1972 Munich**: Terrorist attack on Israeli athletes.
- **1976 Montreal**: African nations boycott over New Zealand's rugby tour in apartheid South Africa.
- **1980 Moscow**: U.S.-led boycott over Soviet invasion of Afghanistan.
- **1984 Los Angeles**: Soviet-led boycott in response.
- **2008 Beijing and 2022 Beijing**: Human rights concerns, including Tibet, Xinjiang, and freedom of expression; diplomatic boycotts by several countries[3334].

The IOC has often struggled to balance its commitment to political neutrality with the realities of global politics and the Movement's influence on human rights and international relations.

Corruption and Governance Scandals

The Olympic Movement has faced numerous corruption scandals, particularly in the bidding and host city selection process. Notable cases include:

- **1998 Nagano**: Destruction of financial records related to IOC hospitality.
- **2002 Salt Lake City**: Bribery scandal led to the expulsion and sanctioning of IOC members.
- **2016 and 2020**: Investigations into corruption in the Tokyo and Rio bids[7].

Reforms have strengthened transparency, ethics, and compliance, but vigilance remains essential.

Gender, Inclusion, and Diversity

Women's participation in the Olympics has evolved from exclusion to full parity. However, challenges persist, including disparities in event offerings, media coverage, and leadership roles. The IOC has mandated gender equality in new sports and increased female representation in governance, but ongoing efforts are needed to address systemic barriers and promote inclusion for all, including athletes with disabilities, refugees, and sexual minorities[910].

Cultural and Symbolic Elements

Olympic Symbols and Ceremonies

The Olympic Movement is rich in symbolism, with the five interlocking rings representing the unity of the world's continents, the Olympic flame symbolizing continuity between ancient and modern Games, and the torch relay (introduced in 1936) serving as a powerful ritual of peace and connection[3536].

Opening and closing ceremonies blend sport, culture, and national identity, providing a global stage for artistic expression and political messaging. The Olympic Anthem, motto ("Citius, Altius, Fortius—Communiter"), and traditions such as the athletes' oath reinforce the Movement's values and ideals[154].

Olympic Education and Values

Olympic education programs aim to instill the values of excellence, friendship, and respect in youth and society. Initiatives such as the Olympic Values Education Program (OVEP) promote physical activity, cultural exchange, and ethical conduct, though implementation varies across countries and Games editions.

Media, Broadcasting Rights, Sponsorship, and Commercialisation

Broadcasting and Global Reach

The Olympics are among the most-watched events worldwide, with billions tuning in via television and digital platforms. Broadcasting rights are the primary source of IOC revenue, accounting for over 80% of income in recent cycles. The IOC has strategically expanded its media partnerships, ensuring global coverage and maximizing audience engagement[3738].

Sponsorship and Commercialisation

The commercialization of the Olympics has been both a driver of growth and a source of controversy. The IOC's TOP (The Olympic Partner) program, established in 1985, brings together a select group of global sponsors who provide significant financial and in-kind support. Domestic sponsorships, ticketing, licensing, and merchandising further contribute to the Movement's financial stability[3723].

While commercialization has enabled the expansion and professionalization of the Games, critics argue that it risks undermining the Movement's ethos and exacerbating inequalities among sports and athletes. Recent debates over prize money, athlete compensation, and the balance between amateurism and professionalism reflect ongoing tensions[3923].

Revenue Distribution

The IOC redistributes 90% of its revenue to support athletes, NOCs, IFs, and OCOGs, funding sport development and the staging of the Games. This solidarity model is central to the Movement's mission but requires constant adaptation to changing economic and social realities[3738].

Environmental Sustainability and Climate Commitments

Paris 2024: A New Standard

Paris 2024 has set new benchmarks for sustainability, aligning fully with Olympic Agenda 2020. Key initiatives include:

- **95% existing or temporary venues**: Minimizing new construction and associated emissions.
- **50% reduction in carbon footprint**: Compared to London 2012 and Rio 2016.
- **100% renewable energy**: All venues connected to the grid, with solar and geothermal systems.
- **Circular economy**: Reuse and repurposing of equipment and materials.
- **Sustainable food and transport**: Emphasis on plant-based meals, reduction of single-use plastics, and electric/hybrid vehicle fleets.
- **Legacy planning**: Conversion of the Athletes' Village into housing and community facilities[2425].

These measures reflect a broader shift toward integrating environmental, social, and economic sustainability into all aspects of the Olympic Movement.

Athlete Representation, Rights, and the Athletes' Commission

The IOC Athletes' Commission plays a pivotal role in ensuring that athletes' perspectives are central to the Movement's decisions. The Commission advocates for athlete rights, supports dual careers, promotes mental and physical health, and leads initiatives on anti-doping, gender equality, and safe sport[1617].

The Athletes' Declaration, adopted in 2018, outlines aspirational rights and responsibilities, including non-discrimination, fair competition, education, and freedom of expression. The Commission also organizes the International Athletes' Forum and consults widely on key issues such as Rule 50 (athlete expression) and safeguarding.

International Relations and Soft Power

The Olympics are a powerful tool of soft power, enabling host nations to project their image, values, and achievements to a global audience. The 2008 Beijing Olympics, for example, marked China's emergence as a global player and showcased its organizational capacity, cultural heritage, and economic strength[3334]. However, the Games also expose hosts to scrutiny over human rights, environmental standards, and political freedoms, with reputational risks and opportunities for both empowerment and "soft disempowerment."

The Movement's commitment to neutrality and universality is continually tested by geopolitical tensions, but the Olympics remain a unique forum for diplomacy, cultural exchange, and the promotion of peace.

Legacy Management and Post-Games Use

Effective legacy management is now a core objective of the Olympic Movement. The vast majority

of permanent venues from recent Games are still in use, serving communities as sports facilities, cultural centers, and public spaces. Legacy strategies prioritize multi-purpose, year-round use, community engagement, and alignment with urban development goals[2627].

The IOC provides financial and technical support for legacy planning, facilitates knowledge sharing among host cities, and monitors post-Games outcomes. The aim is to ensure that the benefits of the Games endure long after the Olympic flame is extinguished.

Academic Perspectives and Critiques

Scholars have examined the Olympic Movement from diverse perspectives, highlighting its role in globalization, commercialization, and cultural exchange. The concept of "glocalization" captures the interplay between global Olympic norms and local adaptations, as seen in the distinctive features of each host city's Games[34].

Critiques focus on issues such as the commodification of sport, the persistence of inequalities, the environmental and social costs of mega-events, and the challenges of maintaining the Movement's values in a rapidly changing world. Ongoing debates over athlete compensation, governance, and the balance between tradition and innovation reflect the Movement's dynamic and contested nature[3923].

Table: Key Olympic Milestones by Year

Year	Event/Milestone
776 BCE	First recorded ancient Olympic Games held in Olympia, Greece
393 CE	Ancient Olympic Games abolished by Emperor Theodosius I
1850	Wenlock Olympian Games founded by William Penny Brookes
1894	IOC founded by Pierre de Coubertin in Paris
1896	First modern Olympic Games held in Athens
1900	Women officially compete in the Olympics (Paris)
1924	First Winter Olympics held in Chamonix, France
1936	Olympic torch relay introduced at Berlin Games; Games used for Nazi propaganda
1940/44	Olympics cancelled due to World War II
1956	Multiple boycotts over Suez Crisis and Soviet invasion of Hungary (Melbourne)
1960	Paralympic Games debut in Rome
1968	Black Power salute at Mexico City Olympics; Tlatelolco Massacre
1972	Munich Olympics marred by terrorist attack
1976	Montreal Olympics: African boycott; financial debt for host city
1980	U.S.-led boycott of Moscow Olympics over Soviet invasion of Afghanistan
1984	Soviet-led boycott of Los Angeles Olympics
1988	IOC allows professional athletes to compete
1992	Last year Summer and Winter Olympics held in same year

1995	IOC adds environment as third pillar of Olympic vision
1999	Formation of World Anti-Doping Agency (WADA)
2000	Sydney Olympics: "Green Games" initiative
2008	Beijing Olympics showcase China's global emergence
2010	First Youth Olympic Games held in Singapore
2012	First Winter Youth Olympic Games held in Innsbruck
2016	First Refugee Olympic Team competes in Rio de Janeiro
2020	Tokyo Olympics postponed due to COVID-19 pandemic
2024	Paris Olympics achieve full gender parity; set new sustainability standards
2025	Kirsty Coventry elected first female and African IOC President
2027	Inaugural Olympic Esports Games to be held in Riyadh

This table encapsulates the major milestones that have shaped the Olympic Movement, reflecting its evolution, challenges, and achievements across more than two millennia[7923].

Conclusion

The Olympic Movement is a living institution—rooted in ancient tradition yet continually adapting to the demands and opportunities of the modern world. Its history is marked by moments of triumph and tragedy, innovation and controversy, unity and division. The Movement's governance, led by the IOC and guided by the Olympic Charter, has undergone significant reforms to enhance sustainability, credibility, and inclusivity.

The Olympics remain a powerful force for cultural exchange, international diplomacy, and the promotion of sport and human development. Yet, the Movement faces ongoing challenges: ensuring economic and environmental sustainability, safeguarding integrity and fairness, advancing gender and social inclusion, and balancing commercial imperatives with its foundational values.

As the world looks to future editions of the Games, the Olympic Movement's ability to inspire, adapt, and lead will determine its continued relevance and impact. Its legacy—measured not only in medals and records but in the lives it touches and the values it upholds—endures as a testament to the enduring power of sport to unite, challenge, and transform societies.

References

1 *Ancient Olympic Games | Greece, History, Events, Running, & Facts ....* https://www.britannica.com/sports/ancient-Olympic-Games

2 *Ancient Olympic Games - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Ancient_Olympic_Games

3 *1896 Summer Olympics - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/1896_Summer_Olympics

4 *History of the IOC - Olympics.com*. https://www.olympics.com/ioc/history

5 *Athens 1896 Summer Olympics - Athletes, Medals & Results*. https://www.olympics.com/en/olympic-games/athens-1896

6 *Since when have the Summer and Winter Games no longer been held in the ....* https://www.olympics.com/

ioc/faq/history-and-origin-of-the-games/since-when-have-the-summer-and-winter-games-no-longer-been-held-in-the-same-year

7 *International Olympic Committee - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/International_Olympic_Committee

8 *Why Are the Olympics Held Every Four Years? | History, Summer and ....* https://www.britannica.com/sports/Why-Are-the-Olympics-Held-Every-Four-Years

9 *Participation of women in the Olympics - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Participation_of_women_in_the_Olympics

10 *Women at the Olympic Games - History and Milestones*. https://www.topendsports.com/events/summer/women.htm

11 *THE OLYMPIC GAMES FRAMEWORK*. https://stillmed.olympic.org/media/Document Library/OlympicOrg/IOC/Olympic_Games/Olympic_Games_Candidature_Process/Olympic_ Games_Candidatures_ Beyond_2024/Beyond_2024/EN_IOC_Olympic_Games_Framework.pdf

12 *International Olympic Committee (IOC), History and Structure*. https://www.studyiq.com/articles/international-olympic-committee-ioc/

13 *International Olympic Committee: Structure, Headquarters, & More.*. https://testbook.com/ias-preparation/international-olympic-committee

14 *Olympic Charter*. https://www.olympics.com/ioc/olympic-charter

15 *Olympic Charter - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Olympic_Charter

16 *IOC Athletes Commission - Athlete Involvement in the Olympic Movement*. https://www.olympics.com/ioc/athletes-commission

17 *IOC Athletes' Commission - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/IOC_Athletes'_Commission

18 *OLYMPIC AGENDA 2020*. https://stillmed.olympic.org/Documents/Olympic_Agenda_2020/Olympic_Agenda_2020-20-20_Recommendations-ENG.pdf

19 *Olympic Agenda 2020 - Strategic Roadmap for the Olympic Movement*. https://www.olympics.com/ioc/olympic-agenda-2020

20 *2024 bid process gets underway with new Invitation Phase as IOC begins ....* https://www.olympics.com/en/news/2024-bid-process-gets-underway-with-new-invitation-phase-as-ioc-begins-to-implement-olympic-agenda-2020-reforms

21 *Economic benefits of hosting the Olympic Games*. https://www.olympics.com/ioc/becoming-an-olympic-games-host/economic-benefits-of-hosting-the-olympic-games

22 *From Medals to Markets: The Economic Impact of the Summer Olympic Games ....* https://equilibriumecon.wisc.edu/2025/07/15/from-medals-to-markets-the-economic-impact-of-the-summer-olympic-games-on-host-nations-and-athletes/

23 *Microsoft Word - Young book.doc - ResearchGate*. https://www.researchgate.net/profile/Alan-Tomlinson-2/publication/242591055_The_commercialization_of_the_Olympics_Cities_corporations_and_the_Olympic_commodity/links/54b3bfa60cf26833efceb4b3/The-commercialization-of-the-Olympics-Cities-corporations-and-the-Olympic-commodity.pdf

24 *All you need to know about Paris 2024 sustainability - Olympics.com*. https://www.olympics.com/ioc/news/all-you-need-to-know-about-paris-2024-sustainability

25 *Paris Olympics - Greenly*. https://greenly.earth/en-gb/leaf-media/data-stories/paris-olympics

26 *Updated IOC report shows 86 per cent of all permanent Olympic venues ....* https://www.olympics.com/ioc/news/updated-ioc-report-shows-86-per-cent-of-all-permanent-olympic-venues-still-in-use

27 *Over 125 years of Olympic venues: post-Games use*. https://www.olympics.com/ioc/olympic-legacy/over-125-years-of-olympic-venues

28 *Doping at the Olympic Games - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/Doping_at_the_Olympic_Games
29 *Olympic Testing - WADA and the IOC Fight Against Doping*. https://www.olympics.com/ioc/fight-against-doping
30 *Doping Scandals and Hidden Positive Drug Tests at the Olympics - BSCG*. https://www.bscg.org/blogs/single/doping-scandals-and-hidden-positive-drug-tests-that-have-impacted-the-olympic-games
31 *World Anti-Doping Agency - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/World_Anti-Doping_Agency
32 *Racism, Politics, and Protest at the Olympics: From Berlin 1936 to ...*. https://studycorgi.com/racism-politics-and-protest-at-the-olympics-from-berlin-1936-to-mexico-city-1968/
33 *The Beijing Olympics and China's Soft Power - Brookings*. https://www.brookings.edu/articles/the-beijing-olympics-and-chinas-soft-power/
34 *The Beijing 2008 Olympics: Examining the Interrelations of China ...*. https://www.cambridge.org/core/journals/european-review/article/beijing-2008-olympics-examining-the-interrelations-of-china-globalization-and-soft-power/E03E9DE718AC0F327336BA3850B41CE1
35 *1936 Summer Olympics torch relay - Wikipedia*. https://en.wikipedia.org/wiki/1936_Summer_Olympics_torch_relay
36 *Olympic Torch Relay - History, Highlights & Torch Bearers*. https://www.olympics.com/en/olympic-games/olympic-torch-relay
37 *OLYMPIC MARKETING July 2025 FACT FILE - stillmed.olympics.com*. https://stillmed.olympics.com/media/Documents/International-Olympic-Committee/IOC-Marketing-And-Broadcasting/IOC-Marketing-Fact-File.pdf?displayAsWebViewlight=true
38 *IOC revenues - Understanding the Olympics - Academic library*. https://ebrary.net/307130/business_finance/revenues
39 *Commercialization and the Olympics: A step too far?*. https://onlinelibrary.wiley.com/doi/epdf/10.1111/bioe.13295

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

विश्व हिंदी साहित्य में विकलांग विमर्श

शरद कुमार मिश्रा
शोध छात्र, हिन्दी

विश्व साहित्य में विकलांगता विषयक रचनाएं भरी पड़ी हैं, जिनमें उनकी दिव्यांगता का निरूपण है। चीनी साहित्य में व जापानी साहित्य में इस प्रकार की अनेकों रचनाएं बिखरी पड़ी हैं। उन्हें संकलित करने की आवश्यकता है। उर्दू में भी विकलांगता विषयक अनेक रचनाएं दृष्टिगोचर होती हैं। इनमें मुख्यतः विकलांगता की निम्न वैचारिकी मिल जाती है–

1. विकलांगता की अधिकार विषयक मॉडल[1]
2. विकलांगता की सामाजिक मॉडल[2]
3. विकलांगता की पुनर्वास विषयक मॉडल[3]
4. विकलांगता की चिकित्सकीय मॉडल[4]
5. विकलांगता की समानुभूति विषयक मॉडल[5]
6. विकलांगता की सहानुभूति विषयक मॉडल[6]
7. विकलांगता की पाप एवं अपशकुन विषयक मॉडल[7]

उपरोक्त सभी मॉडलों में विकलांगता का अधिकार विषय मॉडल सर्वश्रेष्ठ है जिसमें विकलांगों के अधिकारों को प्रदत्त किया जाना सरकार की समाज की जिम्मेदारी है। इस मॉडल को सबसे अधिक विकलांगोपयोगी माना जा सकता है।

इसके अलावा विभिन्न कहानियों में विकलांगता के पाप विषय मॉडल का निरूपण मिल जाता है। इसके सन्दर्भ में विकलांगता पिछले जन्मों के पापों का परिणाम है। विकलांग व्यक्ति को अपशकुन माना जाता है। एक आँख से विकलांग को तो लोग देखना तक नहीं चाहते।

इन रचनाओं में दिव्यांग व्यक्तियों की समस्याओं को उभारा गया है। इनमें उनके अन्दर की दिव्यांगता को प्रमुख रूप से निरूपित किया गया है। उनके अन्दर जो दिव्यांग गुण है उसे निरूपित किया गया है। बीमारी, दुर्घटना, गरीबी आदि कारणों से इनका एक अंग भले न काम करे। अन्य या विशिष्ट दिव्यांगता इनके अन्दर होती है। जिससे वे आदर्श के रूप में समाज के सामने उपस्थित होते हैं।

तोत्तोचान[8] नामक विश्व प्रसिद्ध चीनी साहित्य में एक ऐसी लड़की व लड़के की कहानी है जो लड़की, लड़के की सहपाठिनी है विकलांग को पेड़ पर चढ़ना, जीवन की अन्य दैनिक क्रियाएं सिखाने का कार्य करती है।

विश्व साहित्य में 'महाभारत', 'गीता' आदि महान आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं। इनको विश्व इपिक समुदाय में स्थान प्राप्त है। इनमें महाभारत में तीन विकलांग पात्र हैं : धृतराष्ट्र, शकुनि और गांधारी। इनमें गांधारी स्वयं विकलांगता का जीवन जीना चाहती है। शकुनि भी दुष्ट विकलांग की श्रेणी में आता है परन्तु उसकी भी मजबूरी शुरू में दुष्ट बनने को मजबूर करती है। जब उसकी सुन्दर बहन का अपहरण कर उसकी शादी धृतराष्ट्र से जबरन भीष्म पितामह करा देते हैं।[9] इस प्रकार विश्व भर के साहित्य में बहुत सारे दिव्यांग पात्रों का निरूपण किया गया है।

हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श विकलांगों के जीवन पर आधारित एक महान विमर्श है जो उन दबे, कुचले, शोषित वर्ग की आवाज उठाता है जिनको समाज में स्थान नहीं मिला है। उनको पाप का फल माना गया है पूर्वजन्म का पाप माना गया है। उन्हें तरह-तरह के नामों से निरूपित किया गया है। उनको पुकारते समय अन्धे, सूरे, लंगड, काने, बहरे, बहरान, कुबड़े, कुबड़ी, चश्मू, वश्मुद्दीन आदि नामों से पुकारा जाता है। इनके बारे में साहित्य में दो तरह के निरूपण मिल जाते हैं–

1. विकलांगों द्वारा लिखित साहित्य

2. गैर-विकलांगों द्वारा लिखित साहित्य।

इस विषय में लेखकों की एक बड़ी संख्या है।

* क्या पाण्डु की मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र ने राज्य नहीं चलाया था?

* क्या विदुर ने राज्य चलाने में धृतराष्ट्र की सहायता न की थी। वे पहले भी सहायता करते ही क्योंकि वे महामंत्री थे। जब पाण्डु मर गये तो भी विदुर ने मदद की, जब पाण्डु जिन्दा थे तब भी विदुर ने राज्य संचालन में मदद की थी। तो बड़े पुत्र के रूप में धृतराष्ट्र राजा बनते तो भी विदुर उनकी मदद व सहकर्ता के रूप में राज्य चला सकते थे। तो धृतराष्ट्र को हीन भावना न आती वे अपनी अधूरी इच्छा अपने पुत्र के रूप में पूर्ण न करते। अपनी अधूरी इच्छा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने लगातार मन में सोचा कि कैसे मेरे हिस्से का अधिकार मेरे पुत्र को मिल सकता है। हालांकि दुर्योधन को वे लगातार युवराज के रूप में देखने का स्वप्न देखते रहे।

प्रो. ओम मिश्र व पं. काशीरामजी मिश्र जो एक राष्ट्रकवि हैं क्रमशः 'धृतराष्ट्र', 'मोह' नाम से दो रचनाओं का सृजन किया जिसमें 'धृतराष्ट्र' उनकी महाकाव्यकार की प्रतिभा के दर्शन होते हैं। उन्होंने इसमें धृतराष्ट्र के धृतराष्ट्र, मोही, स्वकेन्द्रित बनने के पीछे के कारणों पर भी गहन प्रकाश डाला है।

'धृतराष्ट्र' रचना में उन्होंने कई नवीन प्रश्नों को उकेरा है, जैसे–

क्या एक विकलांग को अपना जीवन जीने का हक नहीं है?

क्या एक विकलांग को उसके हिस्से के अधिकार नहीं मिलने चाहिए?

क्याएक दृष्टिहीन व्यक्ति राजा नहीं बन सकता?

क्या एक दृष्टिहीन व्यक्ति से उसकी दृष्टिहीनता के कारण उसके अधिकार छीन लिए जा सकते हैं?

इसी प्रकार मनोविज्ञान में एक सिद्धान्त प्रसिद्ध है जिसमें साफ-साफ लिखा है कि व्यक्ति जब अपनी इच्छाओं को स्वयं नहीं पूर्ण कर पाता है तो वह अपनी इच्छाओं को अपनी संतान के द्वारा पूर्ण करने का प्रयास करता है जैसे जब कोई आई.ए.एस., डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन पाता है तो वह अपने पुत्र/पुत्रियों को आई.ए.एस, डॉक्टर या इंजीनियर बनाता है।

इसी सिद्धांत के द्वारा समझा जा सकता है कि धृतराष्ट्र से जब राजा बनने का सपना छीन लिया गया और पाण्डु को राजा बना दिया गया तो धृतराष्ट्र की राजा बनने की इच्छा दब गयी परन्तु मन ही मन वे उस इच्छा को मार नहीं पाए। वह इच्छा बलवती होती गयी। उम्र के साथ-साथ उन्होंने उस दबी इच्छा को पूर्ण करने का प्रयास किया। अपनी कमजोरी को पूर्ण करने के लिए उन्होंने पत्नी समेत सौ पुत्रों के जन्म का आशीर्वाद मांगा। सौ पुत्रों की शक्ति से वे अपनी इच्छा को पूर्ण करने की सोची। स्वयं राज्य का राजान बन पाने के कारण अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को राजा बनने की योजना सोची कि उसकी जो अधूरी इच्छा थी वह अपने पुत्र के रूप में पूर्ण होते उसे दिखेगी। इससे उसे शान्ति मिलेगी। मनोविज्ञान के अनुसार यह सत्य है और अपने अधूरे स्वप्नों को पूर्ण करने की अधूरी योजना को धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र दुर्योधन को राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में राजा बनाकर पूर्ण करने का सतत प्रयास किया। क्या यह इच्छा धृतराष्ट्र की गलत इच्छा थी?

क्या धृतराष्ट्र बड़े पुत्र नहीं थे?

क्या वे राजा बनने के अधिकारी नहीं थे?

क्या उनको राजा बनाकर पाण्डु उपराजा या सहराजा बनकर राज्य नहीं चला सकते थे।

दिव्यांग, शोषित, दमित, पीड़ित, त्रासद कारूणिक जीवन बिताने, उपेक्षित करते है। विवश, लाचार, बेचारे नहीं है। वे

किसी की दया के मोहताज नहीं है। वे अंग-भंग वाले शब्दों से सम्बोधित किए जाते हैं उन्हें इस प्रकार के सम्बोधनों की आवश्यकता नहीं है। समाज में विकलांगों के लिए प्रयुक्त सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के शब्द साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं—जैसे दिव्यांग, अन्यथा सक्षम, विभिन्न सक्षम, डिफरेन्टवी एवल्ड, निःशक्त, अशक्त, विकलांग अपंग, अंधे, लूले, लंगड़े, बहरे, काना आदि शब्द।[9] प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा विकलांगों की शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिरुचि का अध्ययन किया जा सकेगा और परिणामों के आधार पर नीतिनिर्माण किया जा सकेगा।

शोध पत्र का महत्व इसलिए है कि आज विश्व में लगभग सौ मिलियन लोग विकलांगता के शिकार हैं। यह विकलांगता सभी देशों में कुछ न कुछ प्रतिशत तक विद्यमान है। देश की उन्नति जभी सम्भव है जब विकलांग भी आर्थिक स्तर पर देश को प्रशस्त करें। देश के सामाजिक, आर्थिक विकास में विकलांगों के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक राष्ट्र की जिम्मेदारी है कि इनको शिक्षित-प्रशिक्षित करे। भारत में ऐसे विकलांग लोग है जिन्होंने विश्व स्तर पर देश का नाम रोशन किया है और उच्चशिक्षा प्राप्त की है। अब विकलांग सहानुभूति, दया के पात्र नहीं हैं। वे संघर्ष करने में पूर्ण समर्थ हैं कुछ तो संपूर्ण दुनिया के लिए आदर्श हैं।

दिव्यांग लोगों ने आज अनेक कीर्तिमान स्थापित किए है। उनके कीर्तिमानों को देखकर लगता है कि कुल मिलाकर वे विकलांगता की परिभाषा में परिवर्तन कर एक ऐसे नवीन युग का सूत्रापात कर रहे हैं जो निश्चित दांतों तले उंगली दबाने वाला है किसी भी समाज की उन्नति में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रसिद्ध समाजशास्त्रीय दुर्खिम के अनुसार ''शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा समाज बच्चों में अपने अस्तित्व की अनिवार्य अवस्था को तैयार करता है।''[10] शिक्षा और समाज का एक दूसरे से मणिकांचन सहयोग है। शिक्षा आज विश्व की प्रसिद्ध प्रक्रिया है। शिक्षार्थी के जीवन में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज कम्प्यूटर के युग में भी शिक्षक की भूमिका निःसन्देह महत्वपूर्ण है। इसी कारण डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा है ''अध्यापक का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है वह एक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक संस्कृतियों और तकनीकि कौसलों को पहुंचाने में मुख्य भूमिका अदा करता है। और सभ्यता के दीपक को जलाए रखता है।''[11] आज समाज में विकलांगों की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि अब विकलांगता अभिशाप नहीं रह गई। उनमें दया और सहानुभूति दिखाने के बजाय विकलांगों को मात्र प्रेरित करने की आवश्यकता है। वे सकलांगों से भी ज्यादा राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण है। एन. सी.एफ (2005) समावेशन की नीति को हर स्कूल और सारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से लागू किये जाने की जरूरत है। बच्चें के जीवन के हर क्षेत्र में वह चाहे स्कूल हो या घर विकलांग बच्चों की भागीदारी भी सुनिश्चित करना आज समाज का अनिवार्य अंग है। विकलांग बच्चों को शिक्षा के महत्वपूर्ण फायदे मिले यह सुनिश्चित किया जाना सरकार ने आवश्यक कर दिया है और स्कूलों को इन बच्चों के लिए सारी सुविधाएं मुहैया कराने की व्यवस्था भी की है।[12]

विकलांगता की परिभाषा तथा प्रकार : जनगणना (2011) शारीरिक रूप से जो व्यक्ति देखने, बोलने, सुनने, चलने और अन्य कार्य करने में कठिनाई का सामना करता हो शारीरिक रूप से विकलांग है। भारत में विकलांगों की साक्षारता मात्र 55 प्रतिशत है। यदि स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने की बात करें तो 5 से 19 वर्ष के सम्पूर्ण विकलांग छात्रों में 57 प्रतिशत बालक और 47 प्रतिशत बालिकाएं ही स्कूल जाती है। सम्पूर्ण विकलांगों की जनसंख्या 2.68 करोड़ में से 11 प्रतिशत विकलांग प्राथमिक शिक्षा तक नहीं प्राप्त कर पाए। 12 प्रतिशत मात्र प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर पाए और 9 प्रतिशत मात्र माध्यमिक शिक्षा और तीन प्रतिशत मात्र स्नातक शिक्षा (जनगणना 2011)।[13]

विकलांग बच्चों की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि समावेशी शिक्षा की कक्षा प्रक्रिया में शिक्षक के दृष्टिकोण (अभिवृत्ति) एवं व्यवहार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।[14] क्योंकि समावेशी शिक्षा की कक्षा प्रक्रिया के बारे में राम (2014) ने शोध कार्य में निष्कर्ष निकाले कि शिक्षकों के द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों से प्रश्न न पूछना एवं उनके गृहकार्य की जांच को अन्य विद्यार्थियों के समान न करना इस प्रकार का व्यवहार बच्चों को हासिए की तरफ ढकेलता है। इस प्रकार का शिक्षकों का दृष्टिकोण एवं व्यवहार समावेशी शिक्षा के गठन व संचालन में बाधा उत्पन्न करता है। सामान्यतया शिक्षक का दृष्टिकोण एवं व्यवहार विकलांग विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होता है। जिससे शिक्षक इस प्रकार के विद्यार्थियों को

अन्य विद्यार्थियों से कमजोर समझता है। या कहें कि इन्हें सिखने लायक छात्र ही नहीं समझता है। परिणामस्वरूप ये बच्चे कक्षा में बैठे तो रहते है परंतु अपने को कक्षा से अलग पाते है। ज्यादातर शिक्षक विकलांग छात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते है। अतः सामान्य दृष्टि से देखा जाए तो दिव्यांगों की उपेक्षा ही होती रहती है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही कमजोर होते है। लेकिन उनका मस्तिष्क तो परिपक्व होता है। इसी कारण 60 प्रतिशत अस्थि विकलांगता वाले अस्थि विकलांग छात्र योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में जुड़ रहे है। और अपना जीवन सामान्य व्यक्ति की तरह व्यतित कर सकते है।

पाश्चात्य ग्रंथों में दिव्यांग बालकों की उपेक्षा का वर्णन मिल जाता है। पहले विकलांग लोगों को समाज स्वीकार करने से स्वयं को अलग रखता था। और इनकी उपेक्षा करता था। यूनान तथा स्पार्टा में इस प्रकार के बच्चों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। किसी प्रकार अगर वे जिन्दा भी रह जाते थे तो उन्हें उपेक्षित जीवन जीना पड़ता था। यूनान के प्रसिद्ध कवि होमर की आंखे ठीक नहीं थीं। इसी कारण उनका नाम मेलसिग्नी रख दिया गया था परन्तु तत्कालिक भाषा में इसका अर्थ नेत्रहीन है।[15] प्राचीनकाल में दिव्यांगों की खूब उपेक्षा की जाती थी। चाहे वह कोई भी धर्म हो सभी धर्मों में शारीरिक अंगों की कमियों को पुराने जन्मों के पापों का फल माना जाता था/ है।[16] धीरे-धीरे विकलांगता को लेकर लोगों का नजरिया बदला और लोग मानने लगे कि चिकित्सा एवं सामाजिक उपायों के द्वारा उन कमियों को दूर किया जा सकता है और जन्म के समय तथा दुर्घटना आदि के द्वारा जो विकलांगता बढ़ रही है उसे कम किया जा सकता है। इस विचार के द्वारा विकलांगों को चिकित्सा द्वारा मुख्यधारा में लाया जा सकता है। विश्व भर के साहित्य में विकलांग चरित्र भरे पड़े हैं। चीन साहित्य की 'तोत्तोचान' रचना जिसका अनुवाद पूर्वा यात्रिक है।

हिन्दी साहित्य में विकलांग पात्रों का निरूपण सर्वत्र मिल जाता है। आज लगभग सभी रचनाओं में से 10% रचनाओं में विकलांग पात्रों का निरूपण किया गया है। इनमें बहुत सारे आदर्श विकलांग पात्र हैं। जो लोगों के लिए आदर्श हैं। 'धृतराष्ट्र' एक इसी प्रकार का पात्र है जो दृष्टि विकलांग होने के कारण अपने अधिकारों से वंचित कर दिया गया। गांधारी भी इसी प्रकार की विकलांग पात्रा है जो अपना जीवन अपने पति जिसका अधिकार छीन लिया गया उसके लिए प्राण हानि तक से ज्यादा जन्म भर अंधी बन गई। उसने अंधत्व की स्वानुभूति की। इसी प्रकार श्रवणकुमार ने एक विकलांग सेवक के रूप में अपने अंधे माँ-बाप को सम्पूर्ण संसार का आनन्द उनकी आँखें बनकर दिलाया।

'विकलांग' उपन्यास विकलांगता-विषयक रचनाओं में अग्रगण्य रचना है। इसमें एक विकलांग की कहानी है जो सभी विकलांगों का प्रतिनिधित्व है। उसके चरित्र में सभी विकलांगों के जीवन के संघर्षों का प्रतिनिधित्व मिल जाता है। वह नौकरी लगने के बाद भी परेशान किया जाता है। उसका प्रमोशन इसलिए नहीं हो पाता है कि वह अपने प्राचार्य की तबल मंजरी नहीं कर पाता है। प्राचार्य एक दूसरे शिक्षक के द्वारा उसको लेटर देकर उसे इन्टरव्यू में नहीं बैठने देते हैं। साक्षात्कार से एक घण्टा पहले विकलांग को ई-मेल आती है कि आप प्रमोशन के योग्य नहीं हैं। जबकि विकलांग ने दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन में आयोजित 7 दिवसीय एफ.डी.पी./विन्टर स्कूल पूरा किया था। उसके बाद भी जानबूझ कर उसके प्रमोशन को रोका गया। विकलांग ने एम.एड. प्रोग्राम भी पार्ट टाइम किया था जिसको एफ.डी.पी. आदि के इन्वावेलेंट माना गया है। फिर भी दिव्यांग का प्रमोशन रोका गया। इसके बाद तत्कालीन प्राचार्य का रिटायरमेन्ट हो गया, अगले प्राचार्य प्रो. आर.एन. दुबे बने, उन्होंने पहले तो कहा कि ठीक है करूँगा फिर पहले से चले आ रहे कोर्ट केस की नोटिस आते ही उन्होंने उसे व्यक्तिगत अपमान के रूप में ले लिया तथा विकलांग पर विभिन्न इनक्वायरी बिठा दीं। उसे सस्पेंड करने की धमकी दी गयी, मेमो दिए गए, हड़काया गया।[16] प्राचार्य ने अपने चैम्बर में बुलाकर विकलांग से कहा, ''जिस पैर के तले गर्दन दबी हो उसे सहलाना ही अच्छा है।'' और यह भी बताया कि यह उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी का संवाद है।

उन्होंने हमें बार-बार विकलांग को परेशान किया, मुकदमा चलाने, सस्पेंड करने आदि की धमकियाँ दीं। विकलांग ने वैसे तो प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया परन्तु सत्ता प्रशासन के यहाँ तो उसकी क्या चलती। दिव्यांग ने फिर कई प्रार्थनापत्र विश्वविद्यालय में भी दिए परन्तु कुछ भी न हुआ। उसके बाद दुबे भी रिटायर हो गये। अब नये प्राचार्य बने प्रसाद जी। उन्होंने भी प्रमोशन

के नियमानुकूल प्रमोशन इशु डेट से देने का वचन दिया परन्तु कुछ लोगों द्वारा कान भर दिए जाने के कारण से उन्होंने कहा कि प्रमोशन कोई सरल काम है। इसमें समय लगेगा यह कहकर टाल दिया। इसके बाद जो IQAC के संयोजक का हाल तो काबिले-तारीफ है। ललित जी के पीछे-पीछे जूतों के तलवे घिस गये। उन्होंने स्पष्ट किया—''अरे अभी परीक्षा है'' परीक्षा में बिजी हैं। फिर परीक्षा समाप्त हो गयी। महीनों बीत गये। इसके बाद लगभग तीन वर्ष बीत गए ललित जी की कनाविनरशिप बीत गयी। इसके बाद एक नयी मोहतरमा कनविनर बनी। उन्होंने भी अनेक आश्वासन दिए। विकलांग बार-बार मोहतरमा के पीछे-पीछे घूमने तथा हाथ-पैर जोड़ता। मोहतरमा फिर कहती देख लूँगी। इसके बाद बार-बार कहने पर प्राचार्य ने एक कमेटी बना दी उसमें उसी व्यक्ति को रख दिया जिसने-जिसने दिव्यांग का प्रमोशन रोका था। ललित जी व विष्णु मोहन दास तक जिसने एफ.डी.पी. को नहीं माना दूसरे जिन्होंने अपना प्रमोशन डयू डेट से पहले ले लिया। अब जो व्यक्ति स्वयं भ्रष्ट है वह कैसे विकलांग का प्रमोशन करते। आज तक दो वर्ष बाद भी विकलांग का प्रमोशन कहीं नहीं हो सका।

इसी प्रकार 'धृतराष्ट्र' खण्डकाव्य में भी डॉ. ओम मिश्र ने बहुत महत्वपूर्ण विषय की ओर प्रकाश डाला है। कैसे धृतराष्ट्र को उसके अधिकारों से वंचित किया गया। उसके सपने मार डाले गये। उसने अपने सपनों को दबा लिया। उनको अपने पुत्र के रूप में पूर्ण होते देखा। उसका मन केवल अपने पुत्र को राजा बनते देखना था। इसके अलावा उसने अपने पुत्र को किसी भी क्षण दुष्टता का पाठ न पढ़ाया। पुत्र की धृष्टता पर उसने एक-आध स्थल पर मौन अवश्य धारण किया, जबकि उसकी पत्नी गांधारी ने तो कहीं पर भी अपने पुत्र को असत्य पथ पर चलने की सलाह न दी फिर भी धृतराष्ट्र को उसके हक का अधिकार न मिल सका।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में कई विकलांग पात्रों का निरूपण मिल जाता है। इनमें कहानी, उपन्यास से लेकर कविता, महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि सभी में विकलांग पात्रों का निरूपण मिल जाता है। चाहे धृतराष्ट्र हो या गांधारी, शकुनि, दिव्यांग, विकलांग, लुंज, अलोपीदीन, अद्दा, शालिनी, अष्टावक्र, सूरदास, सूरे, कुन्ती, कान्ता, मणिका, मेलसिनी, लंगड़ (रागदरबारी)।

सन्दर्भ

1. विकलांग जीवन की कहानियाँ, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, पृ. 18
2. वही, पृ. 28
3. वही, पोलियो कहानी, विकलांग विमर्श की कहानियां, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, पृ. 21
4. विकलांग विभूतियों की जीवन गाथाएं, डॉ. विनोद मिश्र, पृ. 46
5. निशक्त जीवन की कहानियां, डॉ. रिम्पी, पृ. 36
6. निशक्त चेतना, पृ. 21
7. विकलांग विमर्श, प्रो. ओम मिश्र, पृ. 61
8. शरणवाल 13 मई हिन्दुस्तान टाइम्स, सम्पादकीय, पृ. 5
9. विकलांग शिक्षा सिन्धु, अनिल सदगोपाल, पृ. 61
10. निशक्त चेतना, रिम्पी, पृ. 31
11. रंगभूमि, प्रेमचंद, पृ. 13
12. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृ. 26
13. राग दरबारी, आचार्य शुक्ल, पृ. 48
14. ज्यों मेहंदी के रंग, मृदुला सिन्हा, पृ. 21
15. वैशाखी, दैनिक जागरण, पृ. 2, रविवासरीय।
16. विकलांग, डॉ. ओम मिश्र, दिव्यांग, साहित्य अकादमी, उ. प्र., 2024, पृ. 28

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

धूमिल की कहानियों में मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सरोकार

विनय कुमार विश्वकर्मा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

सुदामा पाण्डेय धूमिल कवि होने के साथ-साथ कथाकार और नाटककार भी हैं। उन्होंने कहानियाँ और लघुकथाएँ भी लिखी हैं। उन्होंने लघु नाटक भी लिखे हैं।

सुदामा पाण्डेय धूमिल की कहानियों एवं नाटकों में मानवीय संवेदना के कई-कई पहलू सामने आते हैं। धूमिल ने सामाजिक सरोकार वाली कहानियाँ लिखी है और नाटक भी लिखा है।

धूमिल की कहानियों में दलित-चेतना, वर्ग चेतना और दार्शनिक भावना के दर्शन होते हैं।

धूमिल ने 'रतना', फिर भी वह जिन्दा है, कुसुम दीदी, नई पौध नया माली, सीमाओं का बोझ जैसी कहानियाँ लिखी है। उन्होंने बच्चे का जन्म, आँखें भींग गई, भिखारी और चित्रकार, नशे में और दिल की जली जैसी लघुकथाएँ लिखी हैं। उन्होंने 'धरती की प्यास' और 'मियाँ की जूती, मियाँ के सर' नाम से दो लघु नाटक भी लिखा है।

धूमिल के नाटकों और उनकी कहानियों में मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकार के विविध पहलूओं को देखने के लिए उनका विवेचन और विश्लेषण आवश्यक है।

धूमिल की कहानी 'रतना' दलित चेतना के उत्थान की कहानी है। मंदिर में दलितों के प्रवेश को लेकर मनाही के विरोध में दलितों में आक्रोश है। दलितों का मानना है कि भगवान सबके हैं और भगवान पर सबका समान अधिकार है। कहानी का प्रारंभिक अंश देखें–

गाँव के दक्षिण और विशाल वट वृक्ष की छाया में चमारों की पंचायत बैठी थी। अछूतों की पंचायत में, समाज के वे पंगुल अंग इकट्ठे हुए थे जिनकी परछाईं भी छूना पाप समझा जाता है।

रतना उनका चौधरी है, उनको राह दिखाने वाला है। रतना का बाप भी चौधरी था और उसके मरने पर आज छब्बीस साल के रतना पर वही पगड़ी बाँध दी गई है।

बूढ़ा बाप घिस-पिटकर सूखी रोटी के कौर काट-काटकर जीवन के ऊबड़-खाबड़ से उठ-गिरकर उसे 6वीं कक्षा तक की शिक्षा दे पाया था, किन्तु अपने समय की कटुता से बहुत कुछ सीखकर नौजवान रतना अनुभव में बूढ़ों के कान काटता है।

चमारों की उस जमात में रतना रतना नहीं, राम रतन है। और तभी तो सब उसके सामने बैठे ऐसे टुकुर-टुकुर ताक रहे हैं, जैसे कि भ्रान्त-पथिक दूर जलते दीये की लौ को आँख में बिठाए रहता है!

चिलम भैरो के हाथ में थमाते हुए रतना ऊँची आवाज में कहने लगा, ''भाइयो! मन्दिर का भगवान सभी का है। सभी को उसने जनम दिया है। क्या ऊँच, क्या नीच, उसकी निगाह में सभी एक समान हैं।''[1]

'रतना' कहानी में समाज में व्याप्त विषमता को भी केन्द्र में रखा गया है। दलित और अछूत समझी जानेवाली जातियों में भी स्वतंत्रता के पश्चात् आत्माभिमान की भावना जाग्रत हुई है। वे तथाकथित वर्णाश्रम को नहीं मानते। वे सभी मनुष्यों

को एक समान समझते हैं, परंतु ऊँची जाति वालों को यह बात कहाँ पचती है। उन्हें अच्छा नहीं लग रहा है कि कोई छोटी जात वाला उनकी बराबरी करें–

''आजकल बहुत-सी नई-नई बात गाँव में हो रही है।'' पंडित जी ने बात का रुख बदलते हुए कहा।

''कौन-सी नई बात?'' रतना ने पंडित जी की ओर देखते हुए पूछा।

''नहीं मालूम है तुम्हें क्या?'' मन में कुढ़ते हुए पंडित जी ने कहा। वे सोच रहे थे कि कल का यह छोकरा कितना चालाक है! सारी बात मेरे ही मुँह से कहलवाना चाहता है।

पंडित जी के मन की बात रतना ताड़ रहा था।

अनजान बनते हुए उसने कहा, ''मुझे क्या मालूम पंडित जी !''

'इतना बन क्या रहा है, रतना', पंडित जी फूट पड़े, ''क्या कल तुम लोग शिवरात्रि पर मन्दिर में प्रवेश करने नहीं जा रहे हो? तुम्हारी ही चौधरियाई में यह सब हुआ, और तुम कहते हो कि''

''तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते पंडित जी?'' रतना भी ताव खा गया।

''लेकिन इसमें नई बात कौन-सी है?''

आग में घी पड़ गया।

''नई बात नहीं है, नई बात...?'' पंडित जी उत्तेजित हो गए, ''शास्त्र, वेद सब झूठे हैं? इतना सनातन से चला आता नियम वर्णाश्रम-धर्म झूठा है–सब झूठा है?....बस, तुम सच्चे हो। बड़े आए....''

आवाज सुनकर बस्ती के बहुत-से लोग इकट्ठे हो गए थे पर रतना शान्त रहा, धीरे से उसने कहा, ''शास्त्र, वेद को हम झूठा नहीं कहते और न आपको। हम, तो अपना हक चाहते हैं। भगवान हमारा भी है। उसके दर्शन का अधिकार हमें भी है।''[2]

'रतना' कहानी में धूमिल ने प्रेमचंदयुगीन हृदय-परिवर्तन की अवधारणा को पकड़ा है। दलितों के विद्रोह ने जब उग्र रूप धारण किया, तो उनके द्वारा फेंके गये पत्थर को रतना ने खुद झेला और पुजारी को बचाया। इस घटना से पुजारी का हृदय परिवर्तित हो गया। यह कहानी मानवता में विश्वास की कहानी है। इसका अंत देखें–

पलक झपकते रतना ने यह सब देख अपने स्थान से उछला और पंडित जी के सामने जाकर खड़ा हो गया। सरसराता हुआ पत्थर का टुकड़ा उसके मस्तक से टकराया और खून से लथपथ रतना कटे वृक्ष की तरह धरती पर गिर पड़ा। आह भी मुँह से नहीं निकली। सिर क्षत-विक्षत हो गया।

क्षण भर भीड़ इस आकस्मिक प्रसंग से ठगी-सी खड़ी रही।

'खून हो गया!' - सहसा आत्म-रक्षा की भावना ने सबकी चेतना को झकझोर दिया। सभी को अनुभव हुआ कि कानून का लम्बा हाथ उनके गले की ओर बढ़ रहा है।

और दूसरे ही क्षण मैदान खाली था। न तो वादी थे और न प्रतिवादी।

सामने पंडित जी आश्चर्यचकित से खड़े थे और चबूतरे के नीचे रतना का लहूलुहान शरीर। बेहोश था वह। घाव बहुत गहरा था।

'यदि रतना बीच में न आता तो?' पंडित जी के मस्तिष्क में यह प्रश्न तीर की तरह घुसा।

उन्हें लगा कि मन्दिर की दीवार के कण-कण से उनके लिए श्राप निकल रहा है। काँपते हाथों से उन्होंने मन्दिर का दरवाजा खोला ...खड़....खड़...खड़....!

'रतना बीच में न आता तो?' बेचैन-से पंडित जी घूम पड़े। न जाने बूढ़े शरीर में कहाँ की ताकत आ गई थी! उन्होंने रतना की विक्षत देह को गोद में उठा लिया और दरवाजा ठेलकर मन्दिर में घुस गए।[3]

'फिर भी वह जिन्दा है' शीर्षक कहानी धूमिल की अधूरी कहानी है। यह कहानी सांप्रदायिक सौहार्द और सर्वधर्म समभाव की कहानी है। यह मनुष्य के भीतर की श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और नैतिकता को जगानेवाली कहानी है–

फिर भी वह जिन्दा है

अब तो सब कुछ घने अँधेरे ने समेट लिया है। वह पश्चिम का आकाश, जो सूरज डूबने से पहले लाल था, काला हो चुका है और उसी अँधेरे में एक सितारा राह भूले राही की तरह झिलमिला रहा है। बगल वाली कदम्ब की डाली पर चिड़ियों का शोर...। यह सड़क और यह मस्जिद जैसे सबको काठ मार गया है। निस्तब्ध वातावरण रात की काली चादर ओढ़े खड़ा है, निस्पन्द...। दीपू देख रहा है– सड़क पर बत्तियाँ जल उठी हैं।

मस्जिद पर बैठे हुए कबूतर, ईंट की ताखों पर मिट्टी के लोंदे-से दिख रहे हैं : काले-काले लोंदे, जो शाम को इतना तड़फड़ा रहे थे, जिन्होंने अपने आसपास की जगह पर अपना सिक्का जमा रखा था। घड़ी भर आराम करने की चाह लिये आनेवाले को डैनों से मारकर दुत्कार दिया था, अब वे सो रहे हैं। दिनभर के बाद... भूख और अधिकार रक्षा के बाद....थककर सो रहे हैं।[4]

'फिर भी वह जिन्दा है' कहानी मनुष्य के भीतर की मनुष्यता को बचाये रखने की कहानी है। यह कहानी मानव को सर्वप्रथम मानव समझने का संदेश देती है–

मन्दिर... मस्जिद.....गिरजाघर।

दीपू सोच रहा है। सोच रहा है और ऊँघ रहा है। यद्यपि आँखों में नींद की परछाईं भी नहीं है। एक हसरत है, एक थकान है, बस... और कुछ नहीं।

हाँ, तो यह गेरुए रंग में रंगा हुआ मन्दिर, पीला-पीला ऊँचा-सा गिरजाघर और दूध जैसी सफेद मस्जिद-सबके निर्माण में एक ही धरातल हैः विश्वास का श्रद्धा का, प्रेम का। निर्माण में ईंटें लगी हैं, पत्थर और चूना है, और सीमेंट भी ठीक उसी तरह, जैसे सभी पहले आदमी हैंः खून, हाड़, मांस के आदमी और फिर हिन्दू, ईसाई और मुसलमान...फिर काले-गोरे, लेकिन हैं आदमी ही।

लेकिन अब आदमी आदमी रहा ही कहाँ?

दीपू को अपने विचारों पर आश्चर्य हुआ और साथ ही दुख भी। कितना अप्रिय सत्य था यह! तो क्या सचमुच अब आदमी....?

बीते दिनों की याद आ गई।

लाहौर की एक गली में वह अकेला रहता था। गली के अन्दर की गन्दगी में भी कितने जिन्दगी के दिन काट रहे थे! धूल में भरे लदबदे बच्चे उसके खोमचों को चारों ओर से घेरकर खड़े हो जाते और वह उन ढलकती उम्र के स्वप्नों को देखता रहता, जो उसके सामने साकार खड़े रहते थे। (अधूरी-पत्रिका को दीमक खा गया है। सं.,[5]

धूमिल की 'कुसुम दीदी' कहानी एक गलतफहमी की कहानी है। गलतफहमी और वह भी किसी स्त्री के बारे में। यह तो अनर्थ ही है। कुसुम की कुछ बातें सुनकर कथावाचक उसे चरित्रहीन स्त्री समझ बैठता है। परंतु जब उसे पता चलता है कि पेट पालने के लिए वह ठोंगा बनाती है तो वह बहुत शर्मिन्दा होता है–

कुसुम दीदी

कुसुम दीदी की आँखों में पानी नहीं है। वैशाखी नीम की निर्वसन शाख-सी कुसुम दीदी...। गली जहाँ खत्म होती है, उसी की बगल में कोठरी है। सामने बिसाती की दुकान। उसी दुकान की आधी जगह में बुद्धू की परचून की दुकान है।

कुछ मिठाइयाँ, तेल की जलेबियाँ किसी मनचले की शह पर खींचे गए केन्द्रहीन काले वृत्तों-सी गिलट की थाल में मक्खियों और भौंरों के लिए खास आकर्षण हैं।

गुड़ के सेव पर मुहल्ले के बच्चे मँडराते रहते हैं और लाई-चना कई-कई दिनों की बासी, लेकिन ताजगी के लिए कई कसमें एक साथ ढोता है। बुद्धू झूठ नहीं बोलता। यह पेट का धन्धा है। एक राम-कहानी की तरहः न कहने वाले का दोष,

न सुनने वाले का दोष। ये बुद्धू के गवाही के शब्द हैं। और वह कुछ तेज स्वर में इसे दुहराता है।

जब कुसुम दीदी के टाट लगे दरवाजे के पीछे आकृति की एक धुन्ध होती है. मुझे न जाने क्यों यह कथन बुरा.... शायद तटस्थ कडवा-सा लगता है।[6]

'कुसुम दीदी' स्त्री जीवन की विडंबनाओं की कहानी है। यह सच है कि अकेली स्त्री के चरित्र को सभी संदेह की नजर से ही देखते हैं। स्त्री की सफलता का मार्ग उसकी देह से ही होकर जाता है, ऐसा पूर्वग्रह समाज में फैला है। यह कहानी इसका विलोम रचती है–

अन्धकार में कई आकृतियाँ काँप रही हैं। मैं... मुझमें कुछ जल रहा है। अथाह गहराइयों में डूबने के बावजूद दुर्निवार प्रवाह मेरे रोम-रोम में सहसा बढ़ता जा रहा है। दीदी और...

बुद्धू की तेज हँसी मुझसे टकराती है और अन्धकार के कंधों पर दूर-दूर घूमती हुई मुझमें डूब जाती है। सन्नाटा गहरा हो गया है। कैलेंडर की तमाम पुरानी तारीखें मिट गई हैं केवल काले बार्डरों से घिरा एक अन्धकार चित्र दीवाल पर झूल रहा है।

दीदी वापस अपने कमरे में लौट गई हैं।

बाहर से आवाज आती है :

'कितने दिये ?'

'दो रुपए।'

'मैं तो तीन लूँगी।'

'तुम अपनी बात छोड़ो सहुआइन।'

बुद्धू की हँसी से खनकती आवाज आती है। यह सब... यह सब क्या है? उफ! ... और मैं झटके से दीदी के दरवाजे पर पहुँचकर एक धक्का दे देता हूँ : तुम ऐसी हो... दी... दी...?

दीदी चौंक पड़ी हैं। अवाक् वे मुझे निहार रही हैं और मैं उनके हाथ में अधबने कागज के ठोंगे को। चारों ओर कागज की कतरनें हैं और पीतल की कटोरी में आटे की लेई....। ढिबरी की रोशनी कुछ तेज हो रही है। अन्धकार कमरे से भागता जा रहा है।[7]

धूमिल की कहानी 'नई पौध नया माली' समाज में वर्गभेद को दूर करने का संदेश देती है। समय कोई भी हो, गरीब आदमी का हर काम धनी व्यक्ति को बुरा ही लगता है। इस कहानी में भी यही होता है–

नई पौध : नया माली

ज्ञान जिस समय अन्तिम क्यारी की घास निकाल चुका था, उस समय पश्चिम आकाश में क्षितिज की घनी कालिमा के पीछे सूर्य डूब चुका था और अन्धकार की एक पतली परत आकाश में धीरे-धीरे बिछ रही थी।

हाथ में खुरपी लिये ही लिये वह खड़ा हुआ और दिन भर की थकान से चूर बूढ़े शरीर को जरा दाएँ-बाएँ किया। एक लम्बी-सी साँस खींची। माथे पर चुहचुहाते पसीने को अँगुली से पोछकर हवा में झटक दिया।

''चल बिटिया,'' उसने कहा और पास ही मेंड़ पर अपने घरौंदे से उलझी हुई नन्ही-सी मासूम बच्ची उसके साथ आ खड़ी हुई।

दोनों चल पड़े।

पास ही बगीचे के एक कोने में छोटी-सी झोंपड़ी अपना विस्तार बढ़ाए खड़ी थी। यही है ज्ञान का रैन बसेरा, जो रात को बसता और सवेरे उड़ जाने वाले पंछी की राह उदास-सा देखता रहता। दिन निकलने पर उसका भाग्य सो जाता और दिन डूबने पर जागता था।[8]

'नई पौध नया माली' एक सपने की कहानी है, जिसमें धूमिल एक सपना देखते हैं कि एक सुबह ऐसी भी आएगी

जब कोई अमीर नहीं होगा, कोई गरीब नहीं होगा। सब बराबर होंगे -

प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित है। बड़े सरकार परिवार सहित विक्षिप्त-से चिल्ला रहे हैं।

ज्ञान अपने को न रोक पाया। जीवन भर का श्रम क्षण भर में धूल में मिल रहा है। ये सुन्दर फूल... धरती का सुहाग उजड़ रहा है।

'रोको यह सब', वह पागल-सा उसी ओर दौड़ पड़ा और तभी एक गोला उसके ऊपर आ गिरा, भभककर उसका शरीर जल उठा।

चिल्लाकर ज्ञान चारपाई पर बैठ गया। नींद टूट गई। उसका हृदय धक-धक कर रहा था। कहीं कुछ नहीं था। बँगले से ज्योति की एक क्षीण रेखा बाहर निकल रही थी। झोंपड़ी के आसपास अभेद्य अन्धकार छाया हुआ था।

'कितना भयानक सपना!' उसने मन-ही-मन कहा और फिर चुपचाप सो गया।

प्रातः की प्रथम किरण ने साश्चर्य देखा कि वह नये आए पौधों की अन्तिम पौध लगा चुका है और एक बड़े से खिले फूल के सामने खड़े होकर कह रहा था :

"हँसो... विश्व में इतना हास, इतनी खुशी भर दो कि आदमी तुम्हारी तरह कोमल और स्वच्छ बन जाए। इतनी सुगंध भर दो कि वह द्वेषरहित उन्मुक्त हँसी हँस सके।"

फूल डाल भर झूल रहे थे और माली की आँखों में अश्रुकण...![9]

'सीमाओं का बोझ' धूमिल की एक दार्शनिक कहानी है। इस कहानी का कथानक अत्यंत रहस्यात्मक है। यह कहानी अनसुलझे जीवन-रहस्यों को सुलझाने की कहानी है। यह कहानी अपनी हदों को तोड़कर अनहद हो जाने का संदेश देती है—

सीमाओं का बोझ

दूर से देखने पर वे केवल धब्बे-से लगते थे-मटमैले धब्बे, जैसे किसी ने नारंगी का छिलका उतारकर फेंक दिया हो और वह गर्द से और नम हवा में आहिस्ता-आहिस्ता सूखकर आधा मुड़ गया हो!

किन्तु अब वे रेंगने लगे थे, एक सीधी रेखा के किसी नपे-तुले क्रम में। और उनकी यह चाल बड़ी धीमी थी, शायद वे और तेजी से चलना चाहते थे।

चौपाटी के आसपास काफी भीड़-भाड़ थी। इसलिए वे किसी एकान्त की तलाश में थे। उनके पीछे आहटों की एक लकीर छूटती जा रही थी जिस पर ज्वार का पानी रह-रहकर अपने छींटे उलीचे देता था। सारा आकाश समुद्र की सीमाओं से छू लिया गया था और किनारे की रेत नम हो आई थी। हवा तनिक 'कुनकी' भरी थी, किन्तु उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। वे केवल जल्दी से जल्दी बालू के उस टीले के पास पहुँचना चाहते थे जिसके आसपास पैरों के चिह्न पानी की उलीच ने मिटा दिये थे और जहाँ से सूरज का डूबना सबसे करुण दिख पड़ता था।

सूरज की परछाईं नीले 'ग्राफ' पर तीस अंश के कोण बना रही थी और सारा वातावरण एक अजीब रंग से भर गया थाः ऐसा रंग, जो प्रत्येक देखने वाले की आँख में अलग ढंग से उभरा था।[10]

'सीमाओं का बोझ' कहानी व्यर्थ की बातों को छोड़कर जीवन के हर पल का आनंद लेने का संदेश देती है। यह कहानी यह भी संदेश देती है कि मनुष्य जीवनभर जीने के लिए साधन ही जुटाता रह जाता है परंतु जी नहीं पाता है। इसके लिए जरूरी है कि वह अपने सीमाओं के बोझ से मुक्त हो-

क्षणों की कैद से छूटने का प्रयास-सीखचे टूटते हैं। पहला धीरे-धीरे बोलता है—मैं दृश्य के स्थिति-बोध की बात नहीं कर रहा था और न दृश्यों के एकान्त सहभोग की। मैं, दृश्य का होना अनुभूति की वैयक्तिक आवश्यकता नहीं मानता बल्कि क्षण में रीतने की, दर्द को झेलने की शर्त मानता हूँ। मैं नहीं कहता कि चीज है या नहीं है किन्तु उसके होने या न होने के व्यवधान का दुख अनुभूति की ईमानदारी का साझीदार होता है और यह दुख नहीं बल्कि दुख की आँख है जो हमें दृश्य की अनुभूति सही अर्थों में कराती है।

एक लम्बी साँस खींचकर वह चुप हो जाता है, और दूसरा, जो शायद इसी अवसर की तलाश कर रहा था, बोला- यदि कला के लिए दुख की आँख ही...।

सब व्यर्थ है, तीसरा चीख पड़ा-कला, संस्कृति, सभ्यता, सारी की सारी बातें मेज पर सजी खाने की प्लेटों पर खुदी रंगीन चित्रकारियाँ हैं जिसकी सार्थकता उपयोग की पहली शर्त है। व्यर्थ ही इन बातों में हमने इतनी अच्छी शाम खराब की। और वे पहली बार एक-दूसरे से सहमत थे और खुश थे।

ठंड बढ़ गई थी और पानी का काला पक्षी बार-बार अपने डैने फड़फड़ा रहा था। सीमाओं में बँधी इस उड़ान के चिह्न पानी के छींटे कितनी बार मिटा चुके थे, कौन जाने! रेत नम थी और हवा 'कुनक' भरी।

वे पुनः रेंगने लगे। हाँ, अब उनके मुखों के आगे दिशाओं का दूसरा नाम था और पीठ पर नारंगी के सूखे छिलके-सी कड़ी खोल...।

वे तीन घोंघे थे जो उसी रास्ते लौट रहे थे जिस पर चलकर वे यहाँ तक आए थे।[11]

'बच्चे का जन्म' कहानी एक प्रतीकात्मक लघुकथा है, जिसमें दो कुँओं को माध्यम बनाकर धूमिल जीवन का रास्ता बताते हैं। एक पक्का कुआँ है, पर उसका पानी खारा है एक कच्चा कुआँ है, जिसका पानी मीठा है। यह कहानी जीवन को सरलता से जीने का संदेश देती है–

बच्चे का जन्म

कुआँ रज्जो के घर से कुछ दूर है। वैसे तो गाँव भर में दो कुएँ हैं : एक पक्का और दूसरा कच्चा। पक्के कुएँ को ठाकुर ने बड़ी लगन से बनवाया था। लोग कहते कि ऐसा कुआँ चार-पाँच कोस के इर्द-गिर्द नहीं है। बड़ा पैसा लगा है उसकी बनवाई में, लेकिन उसका पानी पीने के लायक नहीं क्योंकि खारा है। न दाल उसमें गल पाती है और न प्यास बुझती है।

दूसरा एक कच्चा कुआँ है। ईंट की बँधाई भी नहीं। दो-तीन लकड़ी के कुन्दे रखकर उसी पर से लोग पानी खींचते हैं। एक गड़ारी थी, वह भी लोगों की भीड़- भाड़ से धकियाकर कुएँ में चली गई है। पानी निकालने में बड़ी दिक्कत पड़ती है। लेकिन पानी मीठा है।

रज्जो का जी कुछ भारी-भारी-सा लग रहा था। फिर भी पानी लेने के लिए वह कुएँ पर जा पहुँची।[12]

'आँखे भींग गई' धूमिल की एक लघुकथा है, जो गरीबी, बेबसी और लाचारी का वर्णन करती है। एक असहाय वृद्ध पिता और लाचार माँ की कहानी है यह। यह लघुकथा घर-घर की कहानी बयान करती है–

आँखें भीग गईं

बूढ़े बाप की झुकी कमर अब घर (परिवार) का बोझ उठाकर चलने में असमर्थ थी। माँ : ''हर समय इस तरह से कहना...''

बीच में वह बोल पड़ा : ''बात यह नहीं है। बच्चू की माँ, कौन है ऐसा जो अपने बेटे को आराम न देना चाहे? लेकिन...'' बीच में बूढ़ा चुप हो गया।

बच्चू की माँ ने देखा कि आँसू की एक लम्बी लकीर गड्ढ़े में धँसी आँखों से निकली और चुचके गालों की झुर्रियों में बहती हुई टप् से थाली में टपक पड़ी।

''बच्चू के बाबू!'' और उसकी भी आँखें भीग गईं। मुँह खुला का खुला रह गया।[13]

'भिखारी और चित्रकार' धूमिल की एक लघुकथा है, जिसमें उन्होंने अपनी कला को पैसे में न बदल पानेवाले कलाकार की विवशता की कहानी बयाँ की है–

भिखारी और चित्रकार

प्रदर्शनी का दिन सिर पर आ गया था। किन्तु चित्रकार स्थिर न कर पा रहा था कि किस प्रकार का चित्र वह बनाए। अपने चारों ओर बिखरे हुए प्रकृति के विविध उपादानों में वह अपनी साधना समाधिष्ठ करने में असमर्थ सा हो रहा था। ...मेघदूत..कृष्ण-गोपी, किसान-मजदूर, राजा-रंक या कुछ...तब? तब क्या? और मन की यह दुविधा उसका हृदय मथ रही थी। वह व्याकुल हो उठा था।

फिर भी चित्र तो बनाना ही था। एक ऐसा चित्र, जिसे आँख देखे तो देखती रह जाए, मन न माने और हृदय भर जाए।

लक्ष्मी ने उसके सिर से हाथ उठा लिया था किन्तु कला का कोमल हाथ उसकी पीठ पर था। मुरझाई प्राण-लता को आँसुओं से सींचता हुआ वह इसी आस पर जी रहा था कि कभी वह दिन आएगा, जब आगे चलनेवालों की पंक्ति में उसका भी स्थान होगा।[14]

'नशे में' शीर्षक कहानी धूमिल की एक लघुकथा है। इस कहानी में धूमिल नशे की आदत पाल बैठे लोगों की बदनसीबी और लाचारी का वर्णन करते है। साथ ही यह सच भी सामने रखते हैं कि व्यक्ति नशे में झूठ नहीं बोलता—

नशे में

''उस दिन तेरे पैसे मैंने ही निकाल लिये थे,'' मिट्टी का पुरवा मिट्ठू के आगे बढ़ाए-ही-बढ़ाए जंगी ने कहा।

मिट्ठू कुछ बोला ही नहीं। बोतल की शराब उसके पात्र में उड़ेलता रहा। उसका पूरवा भर जाने पर उसने अपने लिए भी भरा और फिर गट-गट कर दोनों ने एक साँस में पूरा पात्र खाली कर दिया। तीखी शराब जलती हुई कलेजे से पेट में उतर गई। दोनों ने होंठों को सिकोड़ा और फिर जीभ से सूखते होंठ को तर किया।

गाँव से कुछ हटकर एक लम्बी-पतली सड़क चली गई है और उसी के एक किनारे टूटे-गिरे घर में कलवरिया है। शराब बिकती है और दिन भर की उलझन का समाधान करनेवाले थके-हारे प्राणी यहाँ पर आते हैं।

लाल-लाल शराब...और बोतल की गहराइयों में डूबकर जिन्दगी से भागे हुए मरियलों का जमघट, शाम को भाग्य के जिस सवेरे की खोज में आ जुटता है, उसके आने पर भी दुनिया से बेखबर बेहोश-सा पड़ा रहता है और हर सवेरे जब दुनिया की अँगुलियों से कोंच-कोंच कर जगाया जाता है तो वहाँ न आने की कसम खाता है। पर जीभ की चाह मस्तिष्क को घुमाती है और मस्तिष्क पाँवों को। हर शाम को पुनः वह अपने स्थान पर होता है। सामने शराब की बोतल और हाथ में मिट्टी का पात्र। यह लत शायद चिता पर ही जाकर छूटने वाली है।[15]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धूमिल की कहानियों में मानवीय संवेदनाएं यत्र-तत्र-सर्वत्र अनुगूँजित है और इन कहानियों के सामाजिक सरोकार भी स्पष्ट परिलक्षित हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रतना, धूमिल समग्र-भाग-2, संपादक-डॉ. रत्नशंकर पाण्डेय, पृ. 127, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021
2. उपरिवत्, पृ. 130
3. उपरिवत्, पृ. 134
4. फिर भी वह जिन्दा है, उपरिवत्, पृ. 140
5. उपरिवत्, पृ. 140
6. कुसुम दीदी, उपरिवत्, पृ. 142
7. उपरिवत्, पृ. 145

8. नई पौध : नया माली, उपरिवत्, पृ. 135
9. उपरिवत्, पृ. 135
10. सीमाओं का बोझ, उपरिवत्, पृ. 146
11. उपरिवत्, पृ. 148
12. बच्चे का जन्म, उपरिवत्, पृ. 151
13. आँखें भीग गई, उपरिवत्, पृ. 154
14. भिखारी और चित्रकार, उपरिवत्, पृ. 152
15. नशे में, उपरिवत्, पृ. 153

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

व्यंग्य : जीवन मूल्यों के संवर्धन की प्रेरक विधा

डॉ. रमणीक मोहनी
कृपा कुटीर, महता मोहल्ला बेडिंग (होशियारपुर)-144223
दूरभाष : 9463706145
e-mail : mohaniramnik162@gmail.com

वर्तमान समय में जीवन मूल्यों का ध्वस्तीकरण, अत्यंत तीव्रता से हो रहा है। अर्थप्रधान संस्कृति, नैतिकता और मर्यादा को परे धकेल कर, मनुष्य के मस्तिष्क पर अधिकार जमाती जा रही है। और तो और, मनुष्य परिवार की भी अवहेलना करने से नहीं चूकता, परिणाम स्वरूप, पारिवारिक मूल्य भी धूल-धुसरित होते जा रहे हैं। वर्तमान समय की संतान, अभिभावकों को ठेंगा दिखाने में वीरता का अनुभव करती है। माता-पिता दोनों ही कठिन परिश्रम करके अपनी संतान को बढ़िया से बढ़िया परिवेश देने का प्रयास करते हैं, परंतु बच्चों की अपेक्षाएं सुरसा के मुख की भांति बढ़ती रहती हैं। इसके परिप्रेक्ष्य में सबसे सशक्त कारण यह है कि जीवन को अपने ही ढंग से जीने की आकांक्षा। यद्यपि कुछ सीमा तक यह उचित भी है परंतु इसके साथ-साथ यह ध्यातव्य रखना आवश्यक है कि अपने ही ढंग से जीने की चाहत में कहीं सामाजिक नियम तो विघटित नहीं हो रहे? कहीं पारिवारिक मर्यादाएं तो ध्वस्त नहीं हो रही? कहीं मनुष्य अनुशासनहीनता के पथ पर तो गतिशील नहीं हो रहा?

इस संदर्भ में व्यंग्य ऐसा सचेतक प्रहरी है जो मनुष्य के मन में उचित और अनुचित में विवेक करने के लिए प्रेरित करता है, उसके अंतर्मन में चेतना का भाव जगाता है। वह यह नहीं बताता कि समकालीन समय में क्या हो रहा है? वह यह बताता है कि क्या होना चाहिए, और जो होना चाहिए वह अपरिहार्य रूप से श्मूल्यश आधारित ही होना चाहिए, क्योंकि श्मूल्यश ही वह कसौटी है जिसके आधार पर मानव पशुता की श्रेणी से पृथक परिगणित होता है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए व्यंग्य और मूल्य की, विद्वानों द्वारा कही गई कुछ परिभाषाएं, जानना समीचीन रहेगा।

व्यंग्य -हिंदी शब्द सागर में धीरेंद्र वर्मा ने व्यंग्य का अर्थ बताते हुए लिखा है—"अप्रत्यक्ष दिशा निर्देश।" अर्थात व्यंग्य तीसरी शब्द शक्ति व्यंजना से अनुप्राणित है। व्यंग्य आलंबन पर सीधा प्रहार ना कर करके परोक्ष रूप से निर्देश देता है, जो करणीय है, वैसा करने के लिए प्रेरित करता है।

सुभाष चंदर ने हिंदी व्यंग्य का इतिहास पुस्तक में सुरेश माहेश्वरी के कथन को उद्धृत करते हुए लिखा है—"व्यंग्य, युगीन विसंगतियों की वैद्वध्य पूर्ण शैली में जीवन का तीखा प्रहारात्मक स्वर है। "सुरेश माहेश्वरी के कथन का भाव यह है कि व्यंग्य समकालीन मूल्यहीनता की स्थिति को कलात्मक ढंग से सुधारने की शक्तिशाली और बुलंद आवाज है।

राहुल देव द्वारा संपादित पुस्तक समकालीन व्यंग्यकार आलोचना का आईना के अंतर्गत गिरीश पंकज ने व्यंग्य के विषय में लिखा है—"व्यंग्य, हस्तक्षेप की सशक्त विधा है। अपने समय की विसंगतियों पर व्यंग्य के माध्यम से ही हमला किया जा सकता है। व्यंग्य, अपने आप में प्रगतिशील नजरिया है। संकुचित मन वाला व्यंग्यकार बन ही नहीं सकता।"[1] गिरीश पंकज के कथन से स्पष्ट है कि व्यंग्य यात्रा का पथिक न केवल विशाल हृदय का स्वामी होता है अपितु वह अपनी प्रहारक व्यंजना शब्द शक्ति से, समाज की विसंगतियों पर कड़ा आक्षेप भी करता है। परंतु उसकी चोट कुंभकार की भांति होती है। इस प्रहार

के द्वारा वह एक सम्यक, शिष्ट और परिष्कृत समास के गठन की परिकल्पना को सकारात्मकता तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील होता है।

समाज में फैली, मूल्यहीनता के परिप्रेक्ष्य में, बढ़ती हुई धन लिप्सा को कारण बताते हुए सुरेश आचार्य ने व्यंग्य का समाज दर्शन पुस्तक के अंतर्गत लिखा है—"अधिक से अधिक धानार्जन की होड़ समाज की केंद्रीय गति बन गई है।"[2] यद्यपि धनार्जन अनुचित नहीं है, क्योंकि जीवन की गतिशीलता के लिए धन की प्राप्ति आवश्यक है, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन व्यय करना पड़ता है, पर इसके लिए सदियों से संचित परंपरागत मूल्यों को ताक पर रख देना बुद्धिमानी नहीं। सुरेश आचार्य ने आगे लिखा है -"मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों ने अंग्रेजी मानसिकता को ढोते हुए, भारतीय सांस्कृतिक , सामाजिक और नैतिक मूल्यवत्ता की रक्षा का ना तो कोई बड़ा और सार्थक प्रयास किया और ना ही उसे पुनर्व्याख्यायित किया।"[3]

सुरेश आचार्य उपर्युक्त कथन के माध्यम से मानव को उसके वास्तविक और प्राकृतिक उत्तरदायित्व से अवगत कराना चाहते हैं। प्रकृति का सर्वोत्कृष्ट घटक होने का प्रमाण तो मानव को देना ही पड़ेगा। वर्तमान मानव अपने अनिवार्य और अपेक्षित दायित्व को भूलकर केवल अपने सुख सुविधा के उपकरण जुटाने में लगा हुआ है। प्रकृति को तो अपने समग्र प्राणियों का ध्यान रखना था,इसलिए उसने मानव को सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ बनाया ताकि वह प्रकृति के लघु जीवों के संरक्षण में उसका हाथ बंटाए। अन्य जीवों की तो बात बहुत दूर है, वह तो अपने ही जाति के अंतर्गत, अपने किसी दायित्व का समुचित निर्वहण नहीं कर रहा। वह अपने माता-पिता, बहन भाई, मित्र किसी के प्रति भी कर्तव्य निर्वहण के लिए प्रतिबद्धता नहीं दर्शाता।

श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य को एक प्रहारक अस्त्र के रूप में देखते हैं, संतोष बिश्नोई ने स्वातंयोत्तर हिंदी व्यंग्य निबंधों की परंपरा और रविंद्रनाथ त्यागी पुस्तक के अंतर्गत श्री लाल शुक्ल के कथन को उद्धृत करते हुए लिखा है—"मैंने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है।"[4]

वर्तमान विसंगतियों के विकराल समय में ऐसे शस्त्र की शिद्दत से आवश्यकता महसूस होती है जो बिना बाहरी चोट पहुंचाए, समाज में एक सार्थक और सकारात्मक परिवर्तन सुनिश्चित करे। इसी पुस्तक में संतोष बिश्नोई नरेंद्र कोहली के कथन का साम्यभाव श्री लाल शुक्ल के कथन से सुनिश्चित करते हुए उनके कथन को उद्धृत करते हुए कहती हैं—"कुछ अनुचित, अन्यायपूर्ण अथवा गलत होते देखकर जो आक्रोश जगता है—वह यदि काम में परिणत हो सकता, तो अपनी असहायता में वक्र होकर जब अपनी तथा दूसरों की पीड़ा पर हंसने लगता है तो वह विकट व्यंग्य होता है, वे पाठक के मन को चुभता नहीं, सहलाता नहीं, बल्कि कोड़े लगाता है, अतःसार्थक और सशक्त व्यंग्य कहलाता है।"[5]

उपर्युक्त कथन दर्शाता है कि समाज में असंगत व्यवहार होते हुए देखकर व्यंग्य कार अपने अंतर्मन में रोष का अनुभव करता है, और अनुचित व्यवहार करने वाले को व्यंग्य के प्रहार द्वारा सचेत करने की चेष्टा करता है।

मूल्य परायणता ही मानव की वास्तविक पहचान है, मूल्य से आबद्ध होकर ही मानव सामाजिक बना धर्मपाल मैनी द्वारा सम्पादित मानव मूल्य व्याख्या कोश (भागः5) में 'दो शब्द' के अतर्गत सत्येंद्र शर्मा ने मूल्य की परिभाषा देते हुए लिखा है—"किसी देश काल और परिस्थिति में जन सामान्य की उदात्त मान्यताएं ही ही मानव- मूल्य होती हैं।" मंगल रानी ने हिंदी साहित्य मूल्यान्वेषण पुस्तक के अंतर्गत पाश्चात्य विचारक जी.ई . मूर द्वारा दी गई मूल्य की सार गर्भित परिभाषा देते हुए लिखा है—"मूल्य अखंड, अभेद्य एवं अनिवर्चनीय हैं।"[6]

उपर्युक्त कथन का अभिप्राय है कि मूल्य का भेदन असंभव है, इससे मानव अपने सहज मानवीय पथ से विचलित हो सकता है। जो मानवता का हितकामी है, वही श्मूल्यश है, उसे विस्मृत कर, यदि संसार भर का भी ऐश्वर्य मिल जाए तो क्या लाभ? भारतीय सांस्कृतिक मूल्य पुस्तक के अंतर्गत, बजरंग लाल गुप्ता ने लिखा है—"जीवन मूल्यों का आधार होती है जीवन दृष्टि, और फिर जीवन मूल्यों से बनते हैं जीवनादर्श।" अर्थात मानव अपने जीवन में जिन आदर्शों के पथ पर अग्रसर होता है वह आदर्श तब बनते हैं, जब वह जीवन मूल्यों को अपने आचरण द्वारा सुनिश्चित करता है। जीवन मूल्यों के निर्वहण का महत्व बताते हुए बजरंग लाल गुप्ता ने आगे लिखा है—"जीवन मूल्य व्यक्ति व समाज के व्यवहार को निर्देशित एवं नियमित करते हैं, कार्य को दिशा और प्रेरणा देते हैं।"

'मूल्य' की उपर्युक्त परिभाषाएं यह सुनिश्चित करती हैं कि एक सुगठित, उन्नत और अनुशासित समाज की परिकल्पना तभी सार्थक स्वरूप ग्रहण करती है जब मानव पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर मूल्य बोध से समन्वित होता है।

व्यंग्य मानव जगत को जीवन मूल्यों के निर्वहण के लिए प्रेरित करता है, विसंगतियों का परिष्कार करता है और समाज को जीवन मूल्यों से समन्वित करने के लिए आग्रही होता है। इसके लिए वह आक्रोश, उपालंभ और हास्य इत्यादि साधनों का उपयोग करता है। सुरेश आचार्य ने व्यंग्य का समाज दर्शन पुस्तक के अंतर्गत लिखा है—"व्यंग्यकार, समाज का निंदक और दोष दिखाने वाला ही नहीं, उसका सुधारक भी होता है।"

वर्तमान में समाज के परिष्कार की आवश्यकता सर्वाधिक प्रबल है। क्योंकि अधिकाधिक धन बटोरने की आकांक्षा, अधिक से अधिक सुविधाजनक साधन जुटाने का जुगाड़, मानव की मूल्यबद्धता को खंडित किये जा रहा है। परिवार की तो बात ही क्या? मानव तो परम शक्तिशाली प्रकृति का भी अंधाधुंध दोहन करने से बाज नहीं आता। पृथ्वी के तीन चौथाई भाग पर जल है और एक चौथाई भाग स्थल। स्थल भाग पर मानव और अन्य स्थलीय जीव रहते हैं। बाकी जीव प्रकृति के कार्यों में रुकावट नहीं डालते। वह प्रकृति से उतना ही ग्रहण करते हैं, जितनी उन्हें त्वरित आवश्यकता हो। मानव की अपेक्षाएं बहुत अधिक है, वह अपने लिए ही नहीं, अपनी आगामी अनेक पीढ़ियों के लिए सुख साधन एकत्रित करने में की जान से जुटा रहता है। इस प्रकार में अपना जीवन तो भ्रष्ट और नीरस बनाता ही है, अपनी संतान के लिए भी पतन का मार्ग ही प्रशस्त करता है। धन की अधिकता से उसकी संतान बुरी आदतों का शिकार बन जाती है, अकर्मण्य बन जाती है। अर्थात दोनों तरफ से हानि ही हानि।

योग के नियमों में भी अपरिग्रह को अपनाने पर बल दिया गया है। अगर मानव के पास अपनी आवश्यकता से अधिक साधन है तो उसे अपने समाज में वितरित कर देना चाहिए, यही धन का और अन्य साधनों का सदुपयोग सिद्ध होगा, क्योंकि लोभ, अन्य दुर्गुणों को भी आकर्षित करता है।

महेश शर्मा द्वारा संपादक पुस्तक चाणक्य नीति में, चाणक्य द्वारा कहा गया कथन ध्यातव्य है—"यदि मनुष्य लोभी है, तो उसे दुर्जनों की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि लोभ ही इसका सबसे बड़ा शत्रु होता है जो उसे नाश की ओर धकेलता है।"[7] चाणक्य द्वारा कहे गए कथन का सत्यता और ईमानदारी से चिंतन किया जाए तो लालच की वृत्ति से बचने में अवश्य सहायता मिलेगी। वस्तुतः लोभी व्यक्ति, जीवन में कभी सुखी नहीं हो पाता, क्योंकि उसे हमेशा और अधिक और अधिक पाने की लालसा सताती रहती है। असंतुष्टि के इस भाव के कारण वह हमेशा चिंतित रहता है। व्यंग्य, सत्यान्वेषी होता है, अतः वह मानव को मानवीय दुर्बलताओं से दूर रहने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि व्यंग्य परिष्कारिक विधा है, सुधार का अस्त्र है, मिथ्याचारों ,आडंबरों का विरोधी है, जीवन मूल्यों का उन्नायक है, उसका लक्ष्य गरिमा मंडित है और वह है -समाज सुधार। कुछ व्यंग्य की, कुछ व्यंग्य कारों की पुस्तक के अंतर्गत हरीश नवल ने लिखा है—"व्यंग्य, सामाजिक बदलाव के लिए वैचारिक संघर्ष को पुष्पित करता है, व्यंग्य कंटको में फूलों की संभावनाएं निर्मित करता है, उसकी प्रवृत्ति दुर्गंध में से सुगंध खोजने की कोशिश है।"

हरीश नवल के कथन से स्पष्ट है कि व्यंग्य का लक्ष्य समाज में परिवर्तन लाना है और इस परिवर्तन का सकारात्मक होना, समाज के लिए कल्याणकारी होना अति आवश्यक है। ज्ञान चतुर्वेदी ने समकालीन व्यंग्यकार आलोचना का आईना पुस्तक के अंतर्गत लिखा है—"एक संपूर्ण व्यंग्य... जीवन कैसा होना चाहिए, वैसी शक्ल बनाने की कोशिश करता है।"

ज्ञान चतुर्वेदी के कथन द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्रामाणिक रूप से स्पष्ट हो जाता है। व्यंग्य यह निर्देशित करता है कि मानव जीवन की वास्तविक कार्य प्रविधि कैसी होनी चाहिए? व्यंग्य, वह मापदंड सुनिश्चित करता है जिसके आधार पर मानव का जीवन सार्थकता की ओर अग्रसर होता है।

संदर्भ सूची

1. बिश्नोई, संतोष, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य निबंधों की परंपरा और रविंद्र नाथ त्यागी. विकास प्रकाशन, 2020.
2. रानी, मंगला, हिंदी साहित्य मूल्यान्वेषण. मांगलिका प्रकाशन, 2001.
3. शर्मा, महेश, चाणक्य नीति. प्रभात पेपर बैग्स, 2016.
4. आचार्य, सुरेश, व्यंग्य का समाज दर्शन. अनुज्ञा बुक्स, 2018.
5. गुप्ता, बजरंग लाल, भारतीय सांस्कृतिक मूल्य. प्रभात प्रकाशन, 2018.
6. नवल, हरीश, कुछ व्यंग्य की कुछ व्यंग्यकारों की. हिंदी साहित्य निकेतन, 2016.
7. मैनी, धर्मपाल, मानव मूल्य व्याख्या कोश. किताबघर, 2009.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

रीतिकालीन कविता और सांस्कृतिक चेतना

पूजा तिवारी
शोध छात्रा (हिन्दी)
अरमापुर पीजी कॉलेज कानपुर

हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल की समय सीमा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने संवत् 1700 से 1900 विक्रमी के मध्य माना है। इस काल की कविता को प्रायः हम श्रृंगार, रस, छंद, अलंकार और दरबारी संस्कृति के रूप में जाना जाता है। इसी कारण से रीतिकाल के साहित्य का अवलोकन मुख्यतः उसकी नायिका भेद और श्रृंगारिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया जाता रहा है। परन्तु इस काल में रचनाओं का अध्ययन सांस्कृतिक चेतना की अनुभूतियों से व्यापक रूप से किया जाए तो उस समय के समाज में लोकाचार, धार्मिकता, सौंदर्य, उत्सव-धर्मिता तथा दरबारी कविता के अनेक पक्ष दिखाई देते हैं क्योंकि रीतिकाल के कवियों ने नायक-नायिका के सम्बन्धों का ही चित्रण नहीं किया, बल्कि उस वक्त की सांस्कृतिक चेतना को भी अपनी कविया में व्यक्त किया। बिहारी, केशव, मतिराम, देव, पद्माकर, घनानंद, भूषण आदि कवियों की रचनाओं में तत्कालीन प्रवृत्तियों के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में रीतिकालीन कविता को सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से अवलोकित करने का प्रयास किया गया है। जिसमें यह स्पष्ट है कि रीतिकाव्य दरबारी साहित्य के साथ ही साथ समय की तथा युग की सांस्कृतिक चेतना का महत्वपूर्ण अंग भी है।

हिंदी साहित्य की अगर बात करें तो इसमें रीतिकाल का विशेष स्थान है। यह काल संस्कृति की दृष्टि से भारतीयता का दर्शन करवाता है। रीतिकाल के संबंध में लंबे समय तक यह अवधारणा रही कि यह काल सामाजिक जीवन से अलग और कटे हुए कवियों का काल है। अगर हम गंभीरता से दृष्टिपात करते हैं तो यह आंशिक रूप से सही भी लगता है किंतु पूर्णतः सत्य नहीं है। किसी भी साहित्य को समझने के लिए उसके सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को भी समझना महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक चेतना का मतलब सामाजिक जीवन-पद्धति, मान्यता, विश्वास, परंपरा, कला, धारणा, अवधारणा, उत्सव, लोक व्यवस्था, सामाजिकता और व्यवहार के प्रति उसकी सजग अनुभूति से है। जैसे कवि वृंद कहते हैं–

"भले बुरे सबे एक सम, जौ लौ बोलत नाहिं।
जान परत हैं काग, पिक ऋतु बसंत के माहिं।।"[1]

इस दृष्टि से रीतिकाल की कविता तत्कालीन भारतीयता की स्थिति और संस्कृति के अनेक बिंबों का प्रतिरूप दिखाई देती है। इस काल में सांस्कृतिक विविधताओं का पुट स्पष्ट प्रतीत हुआ है। एक ओर मुगल संस्कार और विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृति विकसित होती दिख रही थी, तो दूसरी ओर गंवई और जनजीवन की परंपरा निरंतरता के साथ चलती हुई प्रतीत हो रही थी। सांस्कृतिक कार्य जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। राजदरबार ने रीतिकाव्य की शैली को अत्यधिक प्रभावित किया। राजाओं तथा सामंतों के सानिध्य में रहने वाले कवियों के लिए अपनी कविता करने की कला का प्रदर्शन करने के अलावा आश्रयदाता की प्रशंसा करना और भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसी कारण इनकी आजीविका चलती थी। नहीं तो कई कवि आश्रयदाता के अभाव में भटकते नजर आए। इस काल की कविता में राजसी वैभव और सौंदर्य चित्र दिखाई देने के ये महत्वपूर्ण कारण हैं।

इसके साथ ही इस समय की कविता में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के पौराणिक तत्व भी शामिल रहे हैं। कृष्ण-राधा की अलौकिक प्रेम-परंपरा, ब्रज की संस्कृति का वर्णन, ऋतुओं का वर्णन, लोक-उत्सव इसके उदाहरण हैं। रीतिकालीन कविता की प्रमुख विशेषता श्रृंगारिकता है। इस को केवल स्त्री-पुरुष के शारीरिक के प्रेम तक सीमित करना उचित नहीं है। वरन् इसके माध्यम से तत्कालीन मानव की सौंदर्यता, प्रेम, व्यवहार और भावना को भी समझा जा सकता है। नायिका के रूप का वर्णन, वस्त्र का चित्रण, केश-विन्यास और शारीरिक बनावट का विस्तृत चित्रण मिलता है। इससे तत्कालीन समाज में प्रचलित प्रेम, प्यार, व्यापार, अवधारणा, सौंदर्यबोध की जानकारी प्राप्त होती है। बिहारी की 'सतसई' में कम शब्दों में प्रेम, सौंदर्य और व्यवहार सूक्ष्मता से प्रभावशाली वर्णन मिलता है। इसी प्रकार मतिराम, देव तथा पद्माकर आदि की कविताओं में श्रृंगार के विभिन्न रूपों से तत्कालीन सौंदर्य-बोध सामने आता है। यह सत्य है कि रीतिकाल के कई कवि राज दरबारों से जुड़े थे, इसके बावजूद उनकी कविता में लोक-जीवन के अनेक अनेक चित्र मौजूद हैं।

जैसे होली, फाग, वर्षा, बसंत, झूला, दीपावली, किसी देवी देवताओं आदि अवसरों से जुड़े सांस्कृतिक भाव रीतिकाल में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। फाग की ही बात करें तो पद्माकर की यह कविता दृष्टव्य है–

"फाग की भीर अभीरन में गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई अबीर की झोरी।।
छीन पीताम्बर कम्मर ते, सुबिदा दई मी मिड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाय, कही मुसकाय लला फिर आइयो खेलन होरी।।"[2]

होली के वर्णन में रंग, सांस्कृतिक दृष्टि से उल्लास और सामाजिक मेल-जोल दिखाई देता है। वर्षा-वर्णन में ग्रामीण पृष्ठभूमि की जीवन गाथा, प्रकृति और मानवीय संबंधों का सुंदर सद्भाव स्थापित होता है। यह केवल काव्य-सौंदर्य की विषयवस्तु नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक जीवटता के पोषक भी बन जाते हैं।

रीतिकाल की कविता पर योगेश्वर कृष्ण के भक्ति की भी पहले से चलती आ रही सुनहरी परंपरा का भी गहन प्रभाव था। राधा-कृष्ण का प्रेम भारत के मानस पटल पर दीर्घकाल से प्रेम व भक्ति एवं सौंदर्य के प्रतीक के रूप में दिखाई देता रहा है।

किंतु इस समय की कविता में राधा-कृष्ण के प्रेम को अलौकिक श्रृंगार से उतारकर लौकिक श्रृंगार की दृष्टि से भी वर्णित किया गया। जिसने समाज को प्रेम करना सिखाया। जिससे भक्ति और प्रेम के मध्य एक सांस्कृतिक और सामाजिक सेतु का निर्माण हुआ। जिसमें वात्सल्य का भी प्रभाव दिखता है। मतिराम लिखते हैं–

"लाल तिहरे संग में, खेले खेल बलाइ।
मौदत मेरे नैन हो, करिन कपूर लगाइ।।"[3]

रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति तथा ऋतुओं का वर्णन भी नीतियों की पृष्ठभूमि पर शाश्वत प्रभाव में किया, लेकिन इसके साथ ही इसमें तत्कालीन मनुष्यता और प्रकृति-संबंध का भी वर्णन मिलता है। वसंत का वर्णन प्रेम और उल्लास का प्रतीक के रूप में हुआ है। वर्षा विरह एवं व्यथा के रूप में मन को उद्वेलित करती है। शरद के माध्यम से कवियों ने प्राकृतिक संवेदनाओं को मानवीय भावनाओं से जोड़ा है। केशवदास की कविता में प्रकृति और लाक्षणिक सौंदर्य का संबंध प्रबल रूप से दिखाई देता है। इसके बाद की रचनाएं भी प्रकृति को नायक-नायिका के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि रीतिकाल में सांस्कृतिक चेतना में प्रकृति की प्रबलता केवल वाह्य दृश्य नहीं बल्कि मानवीय संवेदना के आंतरिक रूप का सक्रिय हिस्सा थी। इसके अलावा रीतिकालीन कविता में नारी का चित्रण भी है। जो कि नायिका-भेद के रूप में रीतिकाव्य की विशेषता को दर्शाता है। कवियों ने स्त्री के विभिन्न भावों और मनःस्थितियों का चित्रण किया बड़ी ही शास्त्रीय तरीके से किया। हालाँकि इसमें नारी का चित्रण कवियों ने कहीं कहीं शारीरिक रूप से ही किया है। जो कि कई बार पुरुष को मोहित करने वाले सौंदर्य-दृष्टि तक सीमित हो जाता है। फिर भी इसमें भावनात्मकता दिखाई देती है। स्त्री प्रेमिका के रूप में सामने आती है, प्रेमी का मान करती है, विरोध भी करती है लेकिन अपने प्रेम का प्रदर्शन भी करती है। महाकवि देव लिखते

हैं–

"दूलह को देखत हिए में हूलफूल है,
बनावति दुकूल फूल फूलनि बसति है।
सुनत अनूप रूप नूतन निहारि तनु,
अतनु तुला में तनु तोलति सचति है॥"[4]

इस प्रकार से भी रीति काल की कविता उस समय की सांस्कृतिक स्थिति को समझने का मार्ग प्रशस्त करती है। दरबारी परिवेश भी उस काल की सांस्कृतिक सौंदर्य का महत्वपूर्ण पक्ष है। अनेक कवि दरबारों के आश्रय में रहते थे। इसलिए उनकी कविता में राजदरबार, वैभव, वीरता, ऐश्वर्यऔर प्रशस्तिपूरक विरुदावलियों की प्रवृत्ति दिखाई देती है। भूषण, पद्माकर आदि की रचनाओं में राजसी ठाठबाट, शाही वातावरण के विविध चित्र मिलते हैं। इस प्रकार की कविता में वीरता, स्वाभिमान और सम्मान की भावना प्रमुख है। जो कि यह बताता है कि रीतिकाल में केवल श्रृंगारिकता ही नहीं थी बल्कि वीरता और राजकीय संस्कृति भी उसकी महत्वपूर्ण छटाओं के रूप में भी थीं। रीतिकाव्य में इनका उल्लेख राज दरबार के श्रेष्ठ वर्ग की जीवन स्थिति को प्रस्तुत करती है। रीतिकालीन कविता में ब्रजभाषा की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। ब्रजभाषा इस समय की अत्यंत प्रतिष्ठित भाषा बनी। इसकी मधुरता और भावाभिव्यक्ति जो कि भक्ति काल से ही बहुत प्रबल रूप में विद्यमान थी, ने इसे श्रृंगार और भक्ति दोनों के लिए ही उपयुक्त बनाया। भाषा चाहे लिखित हो या मौखिक वह केवल संप्रेषण का ही माध्यम नहीं होती अपितु वह संस्कृति को भी संरक्षण प्रदान करती है। रीतिकाल में कवियों द्वारा प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लोक-प्रतीक तत्कालीन समाज की मानसिकता को दर्शाने का महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। बिहारी के सतसई की ही बात करें तो इसके दोहों की संक्षिप्तता में ही लोक अनुभव की गहराई दिखती है। इस प्रकार से भी ब्रजभाषा रीतिकाल की सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण स्रोत बनकर हमारे सामने आती है। अगर रीतिकाल में कवियों की परम्परा की बात करें तो केशवदास को इस परंपरा का प्रमुख माना जाता है क्योंकि उनकी कविताओं में काव्यशास्त्र के सभी तत्वों एवं नियमों के साथ ही साथ भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। 'रसिकप्रिया' में तो प्रेम और नायिका-भेद का सर्वोच्च विवेचन मिलता है।

बिहारी की रचना 'बिहारी सतसई' भी रीतिकाल की कलात्मक परंपरा का जीवन्त और महत्वपूर्ण उदाहरण है। उनके दोहों में सामाजिक और लौकिक प्रेम, सौंदर्य, व्यवहार और मानव के मनोविज्ञान का सूक्ष्म और सहज अभिव्यक्ति मिलती है। भूषण की बात करें तो उनकी कविता में वीरता और राजनीतिक-सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख स्वर निहित है। उनकी कविता से यह सिद्ध होता है कि रीतिकाल को केवल साहित्य की दृष्टि से श्रृंगार से परिपूर्ण मानना ही उचित नहीं है वरन उसमें वीर रस का भी पुट दिखाई देता है।

"साजि चतुरंग सेन अंग मे उमंग भरि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद विहद नगारन के
नदी मद मद गब्बरन के रलत हैं।"[5]

भूषण की यह कविता केवल राज प्रशस्ति नहीं थी, वरन् सम्पूर्ण हिंदुओं को जगाने के लिए थी।

घनानंद की कविता में व्यक्तिगत प्रेम और विरह की गहरी अनुभूति मिलती है क्योंकि उनका सुजान से प्रेम केवल शारीरिक सीमा तक ही नहीं था, वह उन्हें सच्चा और ईश्वरीय प्रेम के समान प्रेम करते थे। किंतु राजा द्वारा राज दरबार से निकाले जाने पर सुजान द्वारा साथ जाने के लिए मना कर देने से उनके मन में जो विरह की प्रवाह निकला है वही उनकी कविता का अंग बना। इस वजह से इनकी कविता में विरह एक अलग ही स्तर पर दिखाई देता है और प्रेम अधिक आत्मीय और अनुभूति का दर्पण बन जाता है।

"मन जैसे कछु तुम्हे चाहत है, सो बखानिये कैसे सुजान ही हों।
इन प्राननि एक सदा गति रावरे, बावरे लौं लगिये नित लौं।।"[6]

इस प्रकार वे रीतिकाव्य में एक अलग ही भावपूर्ण परंपरा को दिशा प्रदान करते प्रतीत होते हैं। इसी तरह पद्माकर के काव्य में भी राजसी जीवन, प्रकृति और परंपरा के विविध रूप दिखाई देते हैं। उनकी कविता का जो विषय रहता था वह भी तत्कालीन सांस्कृतिक वातावरण के रूप को अपने में समेटे हुए दिखाई देता था।

प्रत्येक काल की कुछ विशेषताएं होती हैं तो कुछ सीमाएं भी होती हैं। यही कुछ रीतिकाल में भी दिखाई देता है। सांस्कृतिक चेतना के बारे में बात करते हुए हमें यह भी दिखाई देता है कि इस काल में अधिकांश कवि और उनकी कविता दरबारी आश्रय पर निर्भर थी। जिन कवियों को राज आश्रय नहीं मिला था उन्हें काफी कष्ट का सामना करना पड़ा। इसलिए राज लोलुप कविता करना उनकी मजबूरी भी थी। इसी कारण उसमें जनता के जीवन की परवाह न होकर अभिजात वर्ग की परवाह अधिक दिखाई देती है। यही वजह है कि रीतिकाल की कविता को संपूर्ण समाज का प्रत्यक्ष और सच्चा प्रतिनिधि मानना हितकर नहीं होगा ऐसा कुछ विद्वानों का अभिमत है। यह सामान्यतः उस काल खण्ड की विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक वर्ग की संवेदना को सामने लाती है लेकिन यही सत्य नहीं है। केवल इसे ही मानना एकतरफा आलोचना करने के अलावा और कुछ नहीं होगा। यह काल खण्ड अपनी इस सीमा के बावजूद अपने युग की प्रत्यक्ष अनुभूतियों को कविता के माध्यम से हमारे सामने लाने में सफल रहा है। यही इसका महत्वपूर्ण पक्ष है।

निष्कर्ष

रीतिकाल का सूक्ष्म अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि रीतिकालीन कविता के भीतर तत्कालीन भारतीय समाज के अनेक सांस्कृतिक रूप सुरक्षित हैं। इस काल में कवियों ने सांस्कृतिक संवेदना के विभिन्न रूपों को व्यक्त किया। बिहारी के दोहे हों या केशवदास की काव्यशास्त्रीय दृष्टि, भूषण की वीरता हो या घनानंद का आत्मीय प्रेम, सभी रीतिकालीन संस्कृति का बहुआयामी चित्र प्रदर्शित करते हैं। इस कारण से रीतिकालीन कविता को केवल दरबारी या श्रृंगारिक कह देना उचित नहीं होगा। वस्तुतः रीतिकाव्य अपने समय के सौंदर्य-बोध, समाज के व्यवहार, धार्मिक आस्था, लोकपरंपराओं और जीवन का साहित्यिक प्रतिबिंब है। जो कि भारतीय सांस्कृतिक इतिहास को जानने का महत्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध कराता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इसमें सांस्कृतिक चेतना जीवन-पद्धति, सौंदर्य-बोध, प्रेम एवं शौर्य, धार्मिक परंपरा, प्रकृति और सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवहार के चित्रण के रूप में व्यक्त हुई है। यही इसकी विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना का रूप है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भार्गव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद, पृष्ठ -196.
2. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, ज्ञानवाणी प्रकाशन, पृष्ठ -212.
3. विजयपाल सिंह, रीतिकालीन साहित्य कोश, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-147.
4. विजयपाल सिंह, रीतिकालीन साहित्य कोश, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-169.
5. अरिहंत, नेट जे.आर.एफ, अरिहंत पब्लिकेशन इंडिया लिमिटेड, पृष्ठ- 215.
6. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ- 335.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

A STUDY OF: CONSUMER BEHAVIOUR OF TEENAGERS IN RESPONSE TO SALES PROMOTIONS

Dr. Ajay Kumar Barnwal
Assistant Professor of Commerce Department, AISECT University, Hazaribag
E-mail: ajayakbarnwal@gmail.com
Satyarthy Gyan Prakash
Assistant Professor Department of CS&IT, AISECT University, Hazaribag
E-mail: satyarthypandey@gmail.com

Abstract

Consumer behavior is a key part of marketing. It helps businesses understand how people make purchasing decisions. Teenagers are a particularly influential consumer group. This is due to their growing independent buying power, significant impact on family spending, and deep connection to digital technology. Sales promotions, such as discounts, coupons, cashback offers, buy-one-get-one-free (BOGO) deals, loyalty rewards, and seasonal clearance events, strongly affect how teenagers shop. This paper examines how teenagers respond to sales promotions. It looks at the psychological, social, cultural, economic, and technological factors that influence their buying choices. Using a thorough literature review, this study combines established theories and recent research to outline the teenage consumer journey. The findings show that sales promotions significantly affect both teenagers' intentions to buy and their actual purchasing behaviour. This effect is even stronger today due to the widespread use of social media marketing, targeted algorithms, and easy e-commerce platforms. Ultimately, this research offers important insights for marketers who want to engage the next generation of consumers in a responsible and effective way.

Keywords: Consumer Behaviour, Teenage Consumers, Sales Promotion, Purchase Decision-Making, Social Media Marketing..

1. Introduction

Consumer behaviour refers to the study of how individuals make decisions about purchasing and using goods and services. Teenagers are an important and rapidly growing consumer segment whose preferences are influenced by social media, peers, celebrities, digital advertising, and lifestyle trends. Their increasing purchasing power and influence on family buying decisions have encouraged marketers to focus on this group. Sales promotions are short-term marketing strategies used to encourage immediate purchases and increase product awareness. Common promotional tools include discounts, coupons, free samples, cashback offers, contests, loyalty rewards, and online campaigns.

Teenagers are often attracted to these promotions because they value novelty, excitement, affordability, and attractive offers. Such promotional activities can influence their purchase decisions, brand preferences, impulsive buying behaviour, and loyalty. Studying teenagers' responses to sales promotions helps businesses understand the psychological, social, and economic factors affecting their purchasing patterns. It also provides valuable insights for developing effective marketing strategies in both online and offline markets.

1.1 Background and Paradigm Shifts

Consumer behaviour refers to the study of how individuals, groups, and organizations select, purchase, use, and dispose of goods and services to satisfy their needs and wants. Traditionally, consumer behaviour was mainly examined from an economic perspective, focusing on price, utility, and purchasing decisions. However, with changes in technology and society, the field has undergone significant paradigm shifts. Contemporary consumer behaviour research increasingly considers psychological, social, cultural, technological, and digital factors that shape consumer decisions. Teenagers, generally between 13 and 19 years of age, constitute a distinctive and influential consumer segment. Their purchasing behaviour is shaped by peer groups, family, social media, celebrities, influencers, fashion, technology, and emerging lifestyle trends. Although teenagers may have limited independent income, they increasingly influence household purchasing decisions and demonstrate considerable brand awareness. Sales promotions have also evolved from traditional discounts and coupons to cashback offers, loyalty rewards, flash sales, contests, free gifts, and personalized digital campaigns. These promotional techniques can create perceived value and encourage immediate purchases among teenagers. The rapid expansion of smartphones, e-commerce, and social networking platforms has further transformed how promotional messages reach young consumers. Thus, the study of teenage consumer behaviour has shifted from conventional purchase analysis toward a broader understanding of digital engagement, social influence, emotional responses, and promotional effectiveness. This paradigm shift provides an important foundation for examining how sales promotions influence teenage purchasing decisions and brand preferences.

2. Consumer Behaviour Theory

According to Kotler and Keller (2016), consumer behaviour is influenced by cultural, social, personal, and psychological factors. These factors collectively determine how consumers perceive products and make purchase decisions. In the context of adolescents, these four pillars undergo a distinct structural shift; psychological factors are heavily dominated by a desire for instant gratification, while social factors are dictated by peer-group compliance rather than institutional norms.

Schiffman and Wisenblit (2019) argued that consumer decision-making involves problem recognition, information search, evaluation of alternatives, purchase, and post-purchase evaluation. Marketing promotions can influence each stage of this process. Within this structural flow, a well-timed sales promotion has the power to compress the timeline between problem recognition and the final purchase decision, frequently bypassing the evaluation of alternatives entirely.

2.1 Teenagers as Consumers

John (1999) highlighted that children and teenagers develop consumer skills gradually and become increasingly independent in their purchasing decisions during adolescence. This developmental journey, known as consumer socialization, involves acquiring the knowledge, attitudes, and skills necessary

to function effectively as consumers in the marketplace. As teenagers move through later stages of socialization, they transition from purely emotional, perceptual thinkers into analytical consumers capable of assessing brand equity, though they remain highly susceptible to immediate rewards.

Moschis and Churchill (1978) found that peer groups play a crucial role in shaping teenage consumer behaviour. Teenagers often imitate the consumption patterns of friends and social groups to gain acceptance and social status. This relies on the concept of symbolic consumption, where the social value of a product outweighs its functional utility. Sales promotions lower the economic barriers to acquiring these socially significant goods.

2.2 Impact of Sales Promotions

Blattberg and Neslin (1990) described sales promotions as short-term incentives designed to encourage purchases. Their research indicated that price reductions and promotional offers significantly increase sales volume by shifting demand curves forward. However, it also presents challenges regarding long-term brand equity, as frequent discounting can dilute a brand's perceived premium status.

DelVecchio, Henard, and Freling (2006) found that sales promotions positively affect consumer purchase intentions, particularly among price-sensitive consumers. Teenagers are often highly responsive to discounts because of their limited financial resources. Because their reservation price—the maximum price a consumer is willing to pay—is naturally lower due to restricted income, promotional frameworks like buy-one-get-one-free (BOGO) alter their perceived transaction utility, making the purchase seem like an undeniable economic victory.

2.3 Influence of Social Media

Kaplan and Haenlein (2010) emphasized that social media has transformed consumer behaviour by enabling consumers to access information, reviews, and recommendations from peers and influencers. This democratization of information creation means that corporate marketing messages are constantly evaluated alongside real-time user reviews.

Djafarova and Rushworth (2017) found that social media influencers significantly affect young consumers' purchasing decisions. Teenagers often perceive influencers as trustworthy sources of product information. This dynamic is rooted in parasocial interaction theory, where a follower develops a one-sided sense of intimacy and friendship with a digital creator. When an influencer delivers a time-limited promotional code, it is processed by the teenager as a trusted personal recommendation rather than a cold corporate sales tactic.

2.4 Online Shopping and Teenagers

Kim and Ammeter (2018) reported that online shopping platforms provide convenience, variety, and promotional opportunities that appeal strongly to younger consumers. Flash sales and personalized recommendations encourage impulse purchases among teenagers. The digital storefront strips away the physical transaction frictions of traditional retail (such as waiting in lines or dealing with physical cash), creating an optimized environment for immediate, emotion-driven consumption.

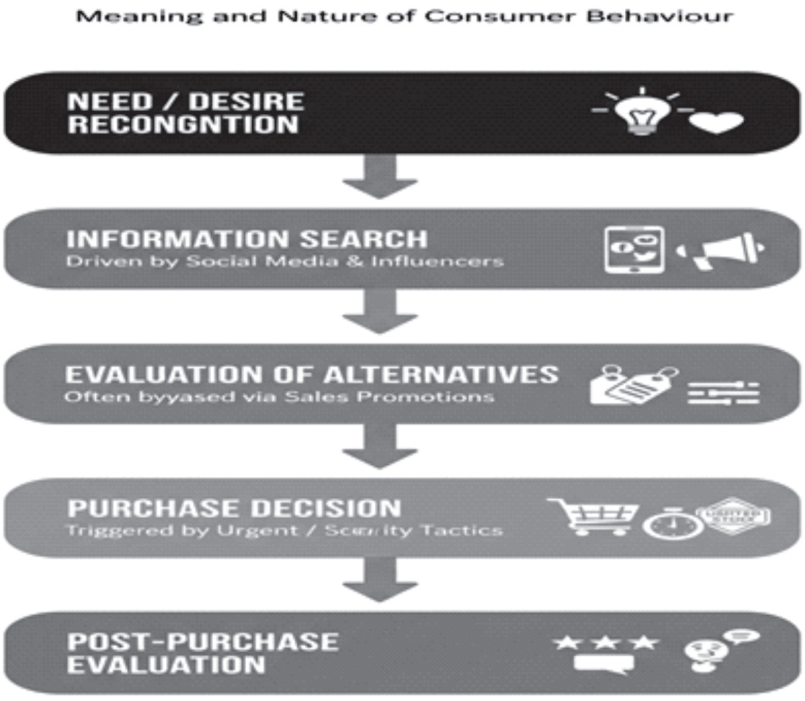
3. Objectives of the Study

To ensure a methodical and comprehensive investigation, this study operates under a structured set of empirical goals. The major objectives of this study are:

1. **To understand the concept of consumer behaviour among teenagers:** Mapping out the cognitive and emotional pathways that characterize adolescent market decisions.
2. **To examine the influence of sales promotions on teenage purchasing decisions:** Quantifying and qualifying the shift in purchase intent when incentives are introduced.
3. **To identify factors affecting teenagers' responses to sales promotions:** Dissecting the internal (psychological, economic) and external (social, technological) variables that govern consumer patterns.
4. **To evaluate the role of social media and digital marketing:** Assessing how algorithms, influencer content, and platform interfaces optimize the performance of promotional campaigns.
5. **To assess the positive and negative impacts of promotional strategies on teenage consumers:** Evaluating the balance between increased consumer purchasing access and the risks of unchecked impulse buying or financial strain.
6. **To provide recommendations for marketers targeting teenage consumers:** Outlining tactical, sustainable, and ethically responsible marketing frameworks for contemporary brands.

4. Meaning and Nature of Consumer Behaviour

Consumer behaviour refers to the study of how consumers make decisions regarding the acquisition, use, and disposal of products and services. It is an interdisciplinary science drawing upon psychology, sociology, economics, and cultural anthropology to map human actions in commercial ecosystems.



The standard consumer decision-making process generally consists of five core stages:

- **Need Recognition:** The consumer realizes a need or desire, triggered by internal cues (e.g., hunger, boredom) or external stimuli (e.g., seeing an advertisement or a peer's new acquisition).
- **Information Search:** Information is collected from advertisements, social media, friends, and websites. Digital natives rarely look to traditional print or broadcast media, relying instead on algorithmic content discovery.
- **Evaluation of Alternatives:** Different products and brands are compared based on price, quality, brand prestige, and accessibility.
- **Purchase Decision:** The consumer selects a product and completes the financial transaction across an omnichannel marketplace.
- **Post-Purchase Evaluation:** The consumer evaluates satisfaction after using the product, which dictates future brand loyalty and shapes the user-generated reviews that inform other buyers.

For teenagers, emotions, peer influence, and promotional offers often play a greater role than rational analysis. The analytical processing required in the evaluation of alternatives is frequently cut short by a well-placed sales promotion. When a brand introduces a flash discount, the adolescent consumer moves directly from information search to a purchase decision, driven by a perceived need to capitalize on the financial opportunity before it disappears.

5. Characteristics of Teenage Consumers

Teenagers possess several unique characteristics that set them apart from adult consumer blocks and influence their consumer behaviour.

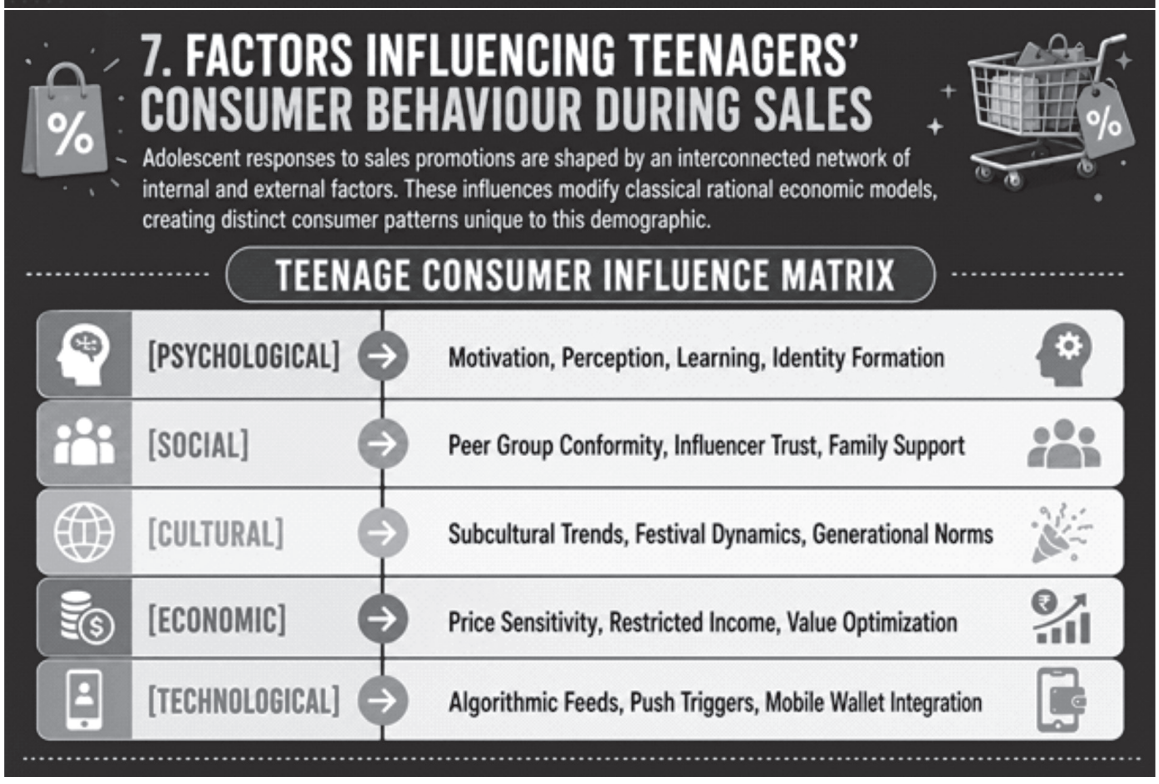
1. **Brand Consciousness**
2. **Trend Orientation**
3. **Digital Connectivity**
4. **Peer Influence**
5. **Impulsiveness**
6. **Price Sensitivity**

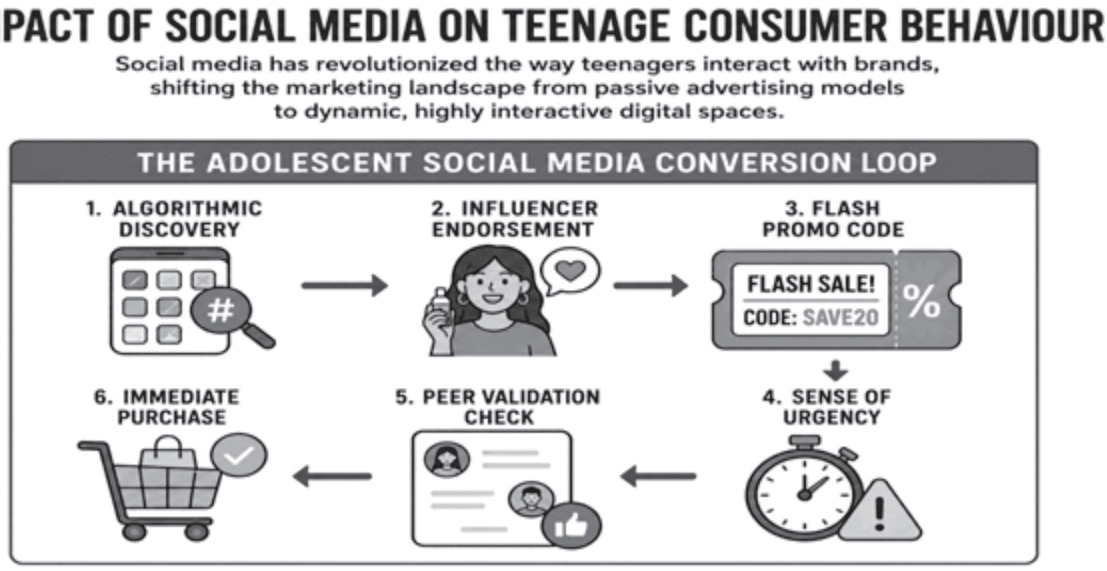
6. Sales Promotion and Its Type

Sales promotion refers to short-term incentives designed to encourage product purchases. Within the contemporary marketing landscape, sales promotions act as a tactical accelerator. They disrupt consumer equilibrium, alter traditional value calculations, and create a powerful sense of urgency that shortens the path from initial awareness to financial conversion.

For the adolescent demographic, these short-term instruments are highly effective. They directly engage with the evolutionary psychological and financial frameworks unique to teenagers.


6. SALES PROMOTION AND ITS TYPE
Sales promotion refers to short-term incentives designed to encourage product purchases. Within the contemporary marketing landscape, sales promotions act as a tactical accelerator. They disrupt consumer equilibrium, alter traditional value calculations, and create a powerful sense of urgency that shortens the path from initial awareness to financial conversion.
For the adolescent demographic, these short-term instruments are highly effective. They directly engage with the evolutionary psychological and financial frameworks unique to teenagers.
LIMITED OFFER
SALES PROMOTION TOOLKIT
MONETARY INCENTIVES
- Price Discounts (Direct)
- Cashback Offers (Delayed)
- Coupons (Targeted App)
NON-MONETARY / SOCIAL
- Free Samples (Risk Minim)
- Student Discounts (Status)
- Loyalty Programs (Gamified)


7. FACTORS INFLUENCING TEENAGERS' CONSUMER BEHAVIOUR DURING SALES
Adolescent responses to sales promotions are shaped by an interconnected network of internal and external factors. These influences modify classical rational economic models, creating distinct consumer patterns unique to this demographic.
TEENAGE CONSUMER INFLUENCE MATRIX
[PSYCHOLOGICAL] Motivation, Perception, Learning, Identity Formation
[SOCIAL] Peer Group Conformity, Influencer Trust, Family Support
[CULTURAL] Subcultural Trends, Festival Dynamics, Generational Norms
[ECONOMIC] Price Sensitivity, Restricted Income, Value Optimization
[TECHNOLOGICAL] Algorithmic Feeds, Push Triggers, Mobile Wallet Integration



9. E-Commerce and Online Sales Promotions

The growth of e-commerce platforms has changed how teenagers access retail goods, moving the primary point of sale from physical stores to digital interfaces. This shift brings several key benefits that align well with the lifestyle and expectations of digital natives:

- **Convenience:** The ability to shop 24/7 from any location removes physical travel barriers.
- **Product Variety:** Online storefronts offer access to global inventories, bypassing local geographic restrictions.
- **Price Comparison:** Digital tools let consumers quickly evaluate prices across multiple retailers, helping them find the best deal.
- **Home Delivery:** Frictionless delivery logistics provide a convenient, door-to-door fulfillment experience.
- **Access to Exclusive Discounts:** Online platforms regularly offer digital-only coupons and app-specific pricing incentives.

To maintain high transaction volumes and customer engagement, e-commerce platforms use a variety of specialized digital promotional tools.


E-COMMERCE AND ONLINE SALES PROMOTIONS
The growth of e-commerce platforms has changed how teenagers access retail goods, moving the primary point of sale from physical stores to digital interfaces. This shift brings several key benefits that align well with the lifestyle and expectations of digital natives:
24/7
CONVENIENCE
The ability to shop 24/7 from any location removes physical travel barriers.
PRODUCT VARIETY
Online storefronts offer access to global inventories, bypassing local geographic restrictions.
PRICE COMPARISON
Digital tools let consumers quickly evaluate prices across multiple retailers, helping them find the best deal.
HOME DELIVERY
Frictionless delivery logistics provide a convenient, door-to-door fulfillment experience.
ACCESS TO EXCLUSIVE DISCOUNTS
Online platforms regularly offer digital-only coupons and app-specific pricing incentives.
To maintain high transaction volumes and customer engagement, e-commerce platforms use a variety of specialized digital promotional tools.
DIGITAL PROMOTIONAL MECHANISMS
FLASH SALES → High urgency, strict time limits, impulse-driven
COUPON CODES → Influencer affiliate tracks, personalized discounts
CASHBACK REWARDS → Delayed gratification, locks users into app ecosystems
REFERRAL BONUSES → Social network growth, peer-to-peer amplification


POSITIVE EFFECTS OF SALES PROMOTIONS ON TEENAGERS
Sales promotions offer clear advantages for the adolescent consumer segment, helping them navigate market opportunities within their specific financial means.
POSITIVE WELFARE EFFECTS
ECONOMIC EFFICIENCY
Tangible Cost Savings
Extended Budget Utility
Optimized Financial Scope
CONSUMER EMPOWERMENT
Access to Premium Brands
Risk-Free Product Trials
Increased Market Awareness

10.1 Cost Savings

The primary benefit of sales promotions is direct cost savings. Discounts, coupons, and seasonal clearance events allow teenagers to acquire necessary products at a fraction of their standard retail cost.

This savings minimizes financial strain on their limited budgets, helping them stretch their funds further.

10.2 Increased Product Access

Sales promotions help democratize access to high-quality goods and premium brands.

When aspirational labels introduce markdown periods or student discounts, it lowers the financial entry barrier, allowing adolescents from diverse socioeconomic backgrounds to purchase high-status products that might otherwise be out of reach.

10.3 Product Trial

Promotions like free samples, low-cost starter bundles, and deep initial discounts encourage teenagers to try new products and explore alternative brands.

This lower financial risk allows young consumers to test product categories and diversify their preferences without a major upfront investment.

10.4 Consumer Awareness

Promotional campaigns provide valuable information about product features, market variations, and emerging brand alternatives.

By evaluating promotional materials and comparing competing deals, teenagers develop useful marketing literacy and market awareness, learning to look for value across the retail landscape.

10.5 Shopping Satisfaction

Successfully finding and securing a high-value discount creates transaction utility, generating positive emotions and shopping satisfaction.

Adolescents feel a sense of achievement and pride when they secure a good deal, which enhances their relationship with the brand and builds confidence in their shopping choices.

11. Negative Effects of Sales Promotions on Teenagers

While sales promotions provide notable economic benefits, they also introduce behavioral rsks and financial habits that can negatively impact young consumers.



11.1 Impulse Buying

Urgency-driven promotional tactics, such as flash sales and short-term countdown timers, often encourage unplanned, emotion-driven purchases.

Because the adolescent prefrontal cortex is still developing, teenagers are highly susceptible to immediate rewards, frequently buying items based on temporary visual excitement rather than actual utility.

11.2 Overspending

The perception of a "good deal" can sometimes lead to excessive spending.

When faced with tiered discounts (e.g., "Spend ₹ 2000, get ₹ 500 off") or bulk incentives like BOGO offers, teenagers often increase their total transaction value simply to qualify for the promotion, spending more money than they initially intended.

11.3 Materialistic Behaviour

Constant exposure to high-frequency digital promotions can encourage a materialistic mindset, linking happiness and social acceptance closely with acquiring new things.

This emphasis on continuous consumption can overshadow sustainable consumer habits and focus attention on short-term material ownership.

11.4 Brand Switching

High responsiveness to promotional incentives can lead to superficial brand loyalty.

When teenagers make purchase decisions based primarily on discount depth rather than long-term product satisfaction, they easily switch to competing brands whenever a larger discount is offered, making customer retention difficult for businesses.

11.5 Financial Mismanagement

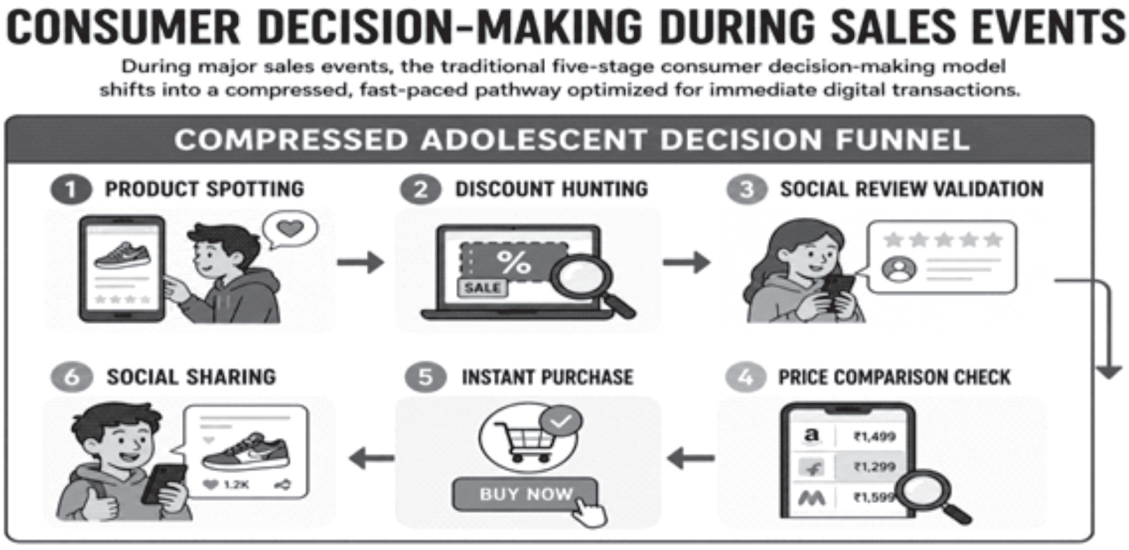
Chasing frequent sales without proper financial planning can lead to poor budgeting habits.

The ease of digital transactions, paired with tempting buy-now-pay-later offers, can lead teenagers to prioritize instant gratification over long-term savings, making it harder to develop sustainable financial discipline.

12. Consumer Decision-Making During Sales Events

During major sales events, the traditional five-stage consumer decision-making model shifts into a compressed, fast-paced pathway optimized for immediate digital transactions.

1. **Identification of Desired Products:** The journey begins when a teenager spots an item, often through social media feeds, influencer recommendations, or peer trends, sparking an immediate desire to purchase.
2. **Search for Discounts and Promotional Offers:** The consumer actively looks for available deals, scanning e-commerce platforms for active coupon codes, cashback offers, and upcoming seasonal price drops.
3. **Comparison of Brands and Prices:** Using digital tools, the teenager compares prices



across platforms to identify the deal that offers the highest value for their limited budget.

4. **Evaluation of Social Media Reviews:** The consumer seeks social validation by checking user reviews on YouTube, Instagram comments, and community forums, prioritizing creator feedback over corporate product descriptions.
5. **Purchase Decision:** Driven by time-sensitive promotions and high demand, the transaction is completed quickly via frictionless, mobile-optimized payment methods.
6. **Sharing Experiences Online:** After the purchase, the teenager shares unboxing videos, reviews, or lifestyle images on social media, receiving peer validation and contributing to the content cycle that influences other shoppers.

Sales promotions shorten decision-making time and increase purchase likelihood. By reducing price barriers and adding urgency, promotions streamline the cognitive steps required to complete a purchase, leading to faster transactions.

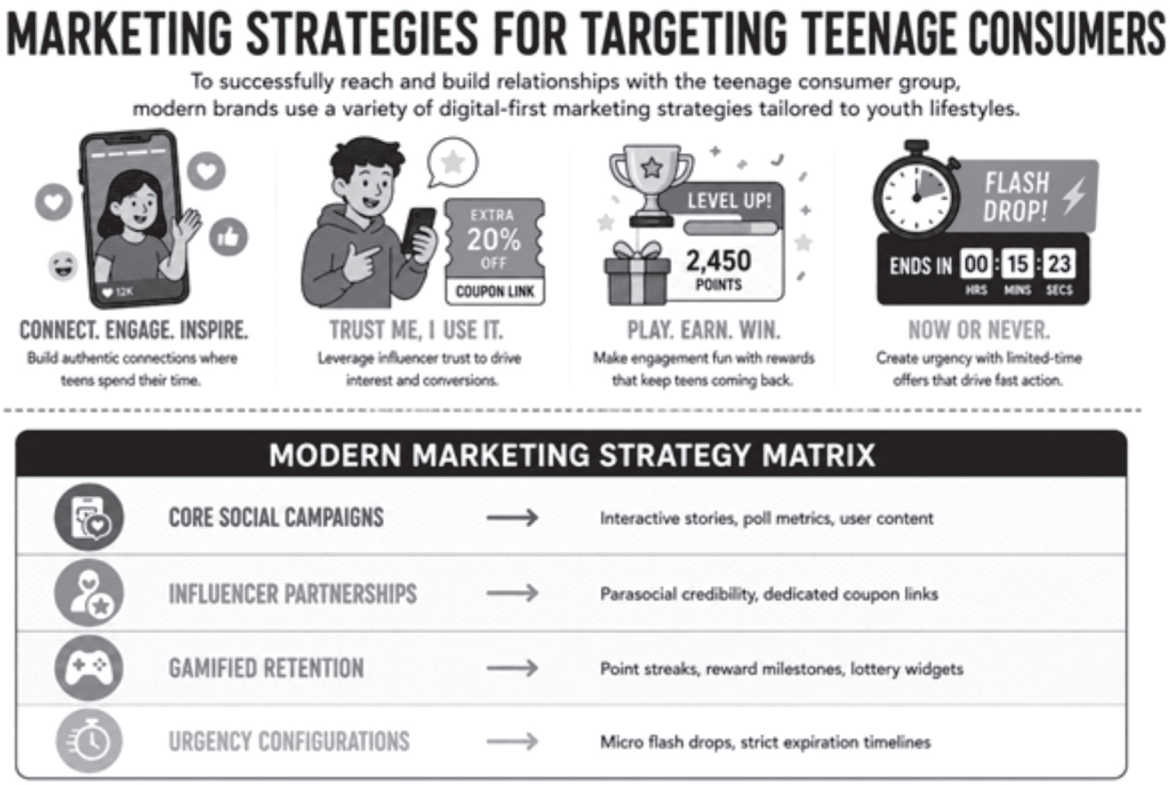
13. Marketing Strategies for Targeting Teenage Consumers

To successfully reach and build relationships with the teenage consumer group, modern brands use a variety of digital-first marketing strategies tailored to youth lifestyles.

13.1 Social Media Campaigns

Brands create interactive, highly shareable media assets designed to fit naturally into adolescent social feeds.

Using features like Instagram polls, user-generated hashtag challenges, and augmented reality filters helps build brand familiarity and encourages active participation, keeping the brand top-of-mind.



13.2 Influencer Partnerships

Companies partner with micro- and macro-influencers whose personal style matches the brand's identity.

Providing these creators with unique affiliate links and personalized discount codes builds brand credibility, turning an influencer's endorsement into direct sales from a trusted source.

13.3 Mobile Marketing

With teenagers spending significant time on their mobile devices, brands optimize their messaging for mobile channels.

Using hyper-personalized push notifications, SMS alerts, and location-based promotions helps brands deliver relevant offers directly to the consumer at key moments during the day.

13.4 Ramification

Integrating game design elements into retail applications makes shopping more interactive and entertaining.

Features like daily login rewards, spin-the-wheel discount widgets, and loyalty point systems turn shopping into a fun challenge, increasing app usage and customer retention.

13.5 Personalized Promotions

Using data analytics helps brands track individual browsing behavior and purchase history to deliver

tailored discounts.

This customization ensures that teenagers receive promotions that match their specific interests, increasing marketing relevance and conversion rates.

13.6 Limited-Time Offers

Creating short-term promotional windows generates market urgency and a fear of missing out.

Setting clear deadlines for discounts encourages adolescent consumers to make immediate purchase decisions, helping businesses accelerate sales cycles.

These strategies increase consumer attention and purchasing behaviour. By combining entertainment, social media connection, and financial incentives, brands can build strong relationships with young consumers.

14. Findings of the Study

An analysis of current consumer behaviour literature and recent market data reveals several key insights regarding how teenagers interact with promotional sales:

1. **High Responsiveness to Sales Promotions:** Teenagers show a strong interest in promotional incentives, regularly adjusting their shopping habits to take advantage of active discounts and sales events.
2. **Discounts as a Key Driver:** Direct price reductions remain the most effective promotional tool for this group, offering clear, immediate savings that fit well with limited adolescent budgets.
3. **Social Media's Core Role:** Social media networks serve as primary discovery engines, heavily shaping trend preferences and guiding purchase intent for young consumers.
4. **Strong Peer Influence:** Peer groups strongly affect product selection and brand choices, as teenagers look for social validation through shared consumption habits.
5. **Online Platform Exposure:** The growth of e-commerce and mobile shopping apps keeps teenagers continuously exposed to real-time marketing messages and exclusive digital promotions.
6. **The Power of Influencer Marketing:** Social media creators wield significant influence over adolescent choices, providing relatable recommendations that help build brand trust and drive conversions.
7. **Impulse Buying and Brand Switching:** Time-sensitive promotions often lead to spontaneous purchases and can reduce long-term brand loyalty, as teenagers readily switch brands to secure better deals.
8. **Efficacy of Personalized Digital Marketing:** Custom, data-driven online promotions generate higher engagement and stronger responses from teenagers than traditional mass media advertising.

15. Conclusion

Teenagers represent one of the most influential consumer segments in modern markets. Their

purchasing behaviour is shaped by an interconnected network of psychological, social, cultural, economic, and technological influences. Sales promotions play a critical role in attracting teenage consumers by offering financial benefits, excitement, and opportunities to acquire desired products at lower prices. The emergence of social media, influencer marketing, and e-commerce has amplified the effectiveness of promotional strategies. Teenagers are constantly exposed to digital marketing messages that influence their purchasing decisions. While sales promotions provide numerous benefits—such as cost savings and increased product access—they may also encourage impulse buying, overspending, and materialistic tendencies. Marketers must therefore design responsible promotional campaigns that create value for consumers while promoting informed purchasing decisions. Understanding teenage consumer behaviour enables businesses to develop effective marketing strategies and maintain long-term customer relationships in an increasingly competitive marketplace.

References

1. Ajzen, I. (1991). The theory of planned behavior. *Organizational Behavior and Human Decision Processes*, 50(2), 179–211.
2. Blattberg, R. C., &Neslin, S. A. (1990). *Sales Promotion: Concepts, Methods, and Strategies*. Prentice Hall.
3. DelVecchio, D., Henard, D. H., &Freling, T. H. (2006). The effects of sales promotion on post-promotion brand preference. *Journal of Retailing*, 82(3), 203–213.
4. Djafarova, E., &Rushworth, C. (2017). Exploring the credibility of online celebrities' Instagram profiles in influencing the purchase decisions of young female users. *Computers in Human Behavior*, 68, 1–7.
5. John, D. R. (1999). Consumer socialization of children: A retrospective look at twenty-five years of research. *Journal of Consumer Research*, 26(3), 183–213.
6. Kahneman, D. (2011). *Thinking, Fast and Slow*. Farrar, Straus and Giroux.
7. Kaplan, A. M., &Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social media. *Business Horizons*, 53(1), 59–68.
8. Kim, D., & Ammeter, A. P. (2018). Shifts in online consumer behaviour. *Journal of Consumer Marketing*, 35(6), 634–645.
9. Kotler, P., & Keller, K. L. (2016). *Marketing Management* (15th ed.). Pearson Education.
10. Moschis, G. P., & Churchill, G. A. (1978). Consumer socialization: A theoretical and empirical analysis. *Journal of Marketing Research*, 15(4), 599–609.
11. Schiffman, L. G., &Wisenblit, J. (2019). *Consumer Behavior* (12th ed.). Pearson Education.
12. Thaler, R. (1985). Mental accounting and consumer choice. *Marketing Science*, 4(3), 199–214.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित दलित स्त्री का दमन

विनय चंद्र पांडेय
शोधार्थी, कला संकाय,
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हरियाणा, भारत
2021vinaypandey@gmail.com
Mob. : 9557533806

शोध सार

विश्व के मानचित्र पर भारत उन देशों में अग्रणी हैं जिसका साहित्य और सिनेमा हमेशा समृद्ध रहा। आरंभिक दौर से ही साहित्य और सिनेमा भारतीय सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है तो यहीं सिनेमा में भी चरितार्थ होता है। हिंदी साहित्य और सिनेमा एक और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की वास्तविकताओं और अनुभवों के यथार्थ चित्रण को दर्शाता है तो दूसरी और अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबाए पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीने को मजबूर दलित स्त्रियों के सरोकारों को भी प्रदर्शित करता है। स्वांत्रयोत्तर भारतीय साहित्य और सिनेमा ने समकालीन विमर्श और मुद्दों पर कई महत्वपूर्ण कृतियों और प्रस्तुतियों का निर्माण किया जिसमें अधिकारवंचित समाज और स्त्रियाँ केंद्र में रहीं। हिंदी साहित्य और सिनेमा में दलित स्त्रियों कि स्थिति देखकर स्पष्ट परिलिक्षित होता है कि समय और समाज के बदलते मिजाज के अनुरूप नायकत्व भी बदला, जो समाज पहले दलित स्त्रियों के साथ अश्लील आचरण और वर्जित शब्दावली के प्रयोग से हिचकिचाता नहीं था वहीं समाज आज पुराने मिथकों को नकारकर नई परिभाषा और नए स्वरुप का सृजन कर रहा है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित दलित स्त्री पात्रों के शोषण, दमन और उत्पीड़न के जीवंत चित्रण का विशेलषण करेंगे और सामाजिक संरचना के प्रति उनकी बेबसी, बेचौनी और इससे उत्पन्न उनके गुस्से और प्रतिकार को समझेंगे।

बीज शब्द : साहित्य, सिनेमा, दलित स्त्री जीवन, दलित पात्र, जातिवाद, शोषण, दमन, अत्याचार, आक्रोश और प्रतिकार।

मूल आलेख

साहित्य और सिनेमा का समाज पर गहरा प्रभाव होता है। वे केवल मनोरंजन के साधन ही नहीं होते, बल्कि सामाजिक सरोकार को ही अपना परम उद्देश्य और लक्ष्य बनाते हैं। आज़ादी के बाद के शुरुआती दौर में, दलित समाज की पीड़ा, अपमान, शोषण, दमन और व्यथा को न तो हिंदी साहित्य में पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिला और न ही सिनेमा में उचित प्रस्तुतीकरण। इसके विपरीत जो कुछ दर्शाया गया, वह दलितों के प्रति एक आक्रामक लहजा और एक विषाक्त वातावरण था मानों यह अनुभव अभिजात्य मानसिकता की संवेदनाओं में ही डूबा हुआ हो। समय के चक्रीय प्रवाह में, लगभग 1980 के दशक के आसपास, हिंदी साहित्य में लेखकों ने दलित जीवन की विसंगतियों, उत्पीड़न और शोषण को एक सटीक, सरल और सहज भाषा के

माध्यम से अभिव्यक्त किया जो व्यक्तिनिष्ठ नहीं, समूहनिष्ठ थी और जिससे साहित्यकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता प्रतिष्ठित हुई। साहित्य के साथ-साथ सिनेमा ने भी कदम मिलाया और विभिन्न स्तरों पर दलित स्त्री मानसिकता और विषयों को दर्शाने वाले पात्रों को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया जो मुख्यधारा की सोच के विपरीत थे।

1974 में श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म श्अंकुरश समाज में दलित स्त्रियों के संघर्ष और शोषण की व्यथा को दर्शाती है। फिल्म भारतीय गांवों में दलित स्त्रियों की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है। फ़िल्म की मुख्य पात्र लक्ष्मी है, जो एक निचली जाति (कुम्हार समुदाय) से ताल्लुक रखती है। लक्ष्मी का पति काम करने में असमर्थ है क्योंकि वह बोलने और सुनने में अक्षम है नतीजतन, घर की पूरी ज़िम्मेदारी लक्ष्मी के कंधों पर है। अपने जीवनयापन के लिए लक्ष्मी गांव के जमींदार के पुत्र सूर्या के घर में काम करती है। सूर्या लक्ष्मी को अपने प्रेम में फंसता है और उसका विशवास जितने के लिए कई बार दोहराता है श्मैं इस जातिवाद के बकवास में विश्वास नहीं करता।श प्रेम की आड़ में वह अपनी वासना को शांत करने के लिए लक्ष्मी का शोषण करता है। लक्ष्मी गर्भवती हो जाती है, सूर्या को जैसे ही यह सूचना पता लगती है तो वह लक्ष्मी को गर्भपात के लिए विवश करता है क्योंकि लक्ष्मी के साथ अपना नाम जुड़ने का विचार भी उसे मंजूर नहीं। पहली नज़र में, सूर्या 'जाति-विरोधी' और यथास्थिति को चुनौती देने वाला प्रतीक लगता है पर अंत में महसूस होता है कि वह जाति व्यवस्था के महत्व को नकारते हुए उसके विशेषाधिकारों का आनंद लेने में विश्वास रखता है। फिल्म में ऐसे कई दृश्य है जहाँ जातिवादी पाखंड और दलित समाज और स्त्रियों के प्रति ऊंच-नीच की स्थिति को दर्शाया है जिससे विगत स्थिति और भी पारदर्शी हो जाती है। फिल्म स्पष्ट करती है कि मनुवाद से आधुनिकतावाद तक की यात्रा में दलित स्त्रियाँ हमेशा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गुलामी में ही रहीं परिणाम उनकी इच्छाओं और स्वप्नों का हमेशा दमन हुआ और उन्हें हमेशा संघर्ष करना पड़ा।

पारम्परिक सामाजिक और पितृसत्तामक व्यवस्था में अक्सर धन और बल का प्रयोग कर दलित स्त्रियों को अपना शिकार बनाया जाता रहा है। हिंदी साहित्य में ऐसी अनेक कृतियाँ निर्मित हुई जिसके केंद्र में दलित स्त्रियों के प्रति हिंसा, दमन, शोषण को बेबाकी से चित्रित किया गया। मोहनदास नैमिशराय द्वारा रचित कहानी 'उसके जख्म' में दलित स्त्रियों की इसी दारुण्य स्थिति का मार्मिक वर्णन किया गया है। कहानी के मुख्य पात्र बुज़ुर्ग हरिया, उसकी बेटी कमला और ज़मींदार रणवीर सिंह है। हरिया एक भूमिहीन मज़दूर है जो ज़मींदार के खेतों में काम करता है। आर्थिक और सामाजिक सम्पन्नता के नशे में चूर जमींदार रणवीर सिंह एक रात मौका पाते ही कमला की इज्जत पर हाथ डालता है। जमींदार इस बात से बेफिक्र है कि कमला उसका कुछ कर बिगाड़ सकती है क्योंकि कोई भी सामाजिक और आर्थिक साधन उसके पास नहीं है। कमला न्याय के लिए अदालत जाती है पर वकील करने के लिए उसके पास धन नहीं है। कमला का कथन 'बाबा, मेरी इज्जत एक बार लुट गई, दोबारा लुट जाएगी तो कौन-सी धरती फट जावेगी कौन आसमान टूटकर गिर पड़ेगा? गरीब के साथ तो हमेशा से ऐसा ही होता रहा है।'[1] दलित स्त्री के दर्द, हताशा और निराशा को दर्शाता है। गांव में हर कोई जमींदार की सच्चाई जानता है पर दोष केवल कमला में ढूंढता है। जमींदार इससे पहले भी इस तरह की घटनाओं में संलिप्त था पर उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं था। जमींदार अपने आर्थिक संसाधनों के बूते अच्छा वकील कर झूठ को आसानी से सच में बदल देता है नतीजा कमला केस हार जाती है। लेखक स्पष्ट करता है कि आर्थिक अभाव शोषितों को शोषकों के सामने झुकने और अकारण ही सामाजिक अन्याय सहन करने के लिए विवश कर देता है।

भारतीय समाज के ग्रामीण अंचल में जातिवादी संस्कारों और सामंती-पितृसत्तात्मक मानसिकता से ग्रस्त पुरुषों का एक बड़ा तबका खुद को स्वामी और मुखिया का पर्याय मानता है जिस कारण वह स्त्री को वस्तु और दलित स्त्री को सर्वसुलभ समझता है। 1994 में शेखर कपूर द्वारा निर्देशित फिल्म 'बैंडिट क्वीन' भारतीय सिनेमा की सबसे विवादित और चर्चित फिल्मों में से एक होगी। प्रथम दृष्टया फिल्म देश की सबसे वांछित अपराधी दस्यु सुंदरी फूलन देवी के जीवन पर आधारित है पर गहराई से देखें तो फिल्म विश्व की सबसे क्रूरतम और कठोर वर्ग व्यवस्था से दमित निषाद परिवार में जन्मी उस दलित स्त्री पर आधारित है जिसका विवाह उसकी सहमति के बिना उससे तीन गुना बड़े व्यक्ति से कर दिया गया, जिसके साथ सवर्ण

जाति के व्यक्तियों ने कई दिनों तक रेप किया। इससे भी जब उनका मन नहीं भरा तो अपने जातिवादिता के आतंक और अत्याचार का प्रदर्शन करते हुए उस स्त्री को बिना कपड़ों के पूरे गांव में घूमाया। फिल्म भारतीय समाज में दलित स्त्रियों के प्रति होने वाले अन्याय, शोषण, दमन, बलात्कार, हिंसा को चुप रहकर देखने वाले कापुरुष की सच्चाई को उघारती है तो दूसरी और बलात्कार के डर से आग में कूदनेवाली स्त्री को नहीं, बल्कि बलात्कारियों को खुद दंडित करनेवाली दलित वीरांगना के प्रतिरोध को भी प्रदर्शित करती है। फिल्म दर्शाती है कि समाज में धर्म, जाति और लिंग के आधार पर गुलामी के संस्कार इतनी मजबूती से जमाए गए है कि अगर दलित स्त्रियाँ इसके प्रति विद्रोह ना करें तो यह मानसिकता उनकी आत्मा को कुचलने को हमेशा तत्पर रहती है।

'अस्थियों के अक्षर' कहानी में श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपने जीवन की कई स्मृतियों और अनुभवों को उल्लेखित किया है। लेखक लिखता है माँ के पुनर्विवाह के बाद शारीरिक यातना और पशुवत व्यवहार जैसे उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गए हो। पिता भिकारी और माँ के बीच लड़ाईयाँ आम थी। पिता को माँ पर शक था ''मेरी माँ 'कसाई' द्वारा काटे जा रहे किसी पशु की तरह ज़ोर-ज़ोर से चीख रही थी। माँ की चीख मुझे दूर से ही सुनाई पड़ गयी थी। मैं दौड़ कर माँ के पास पहुँचा। तब आम गलियारे में पड़ी माँ कराह रही थी। उसकी कमर पर भिखारीलाल ने पहला वार 'फरहे' (वह लकड़ी जिस पर चमड़ा काटा जाता था) से किया था। उसके बाद डालचन्द ने माँ के शरीर पर लाठियाँ बरसायी थीं और डल्ला ने सिर बचा कर सारा शरीर तोड़ दिया था। माँ चीखते-कराहते बेहोश हो गयी थी।''[2] प्रस्तुत उद्धरण में लेखक ने दो बिंदु रेखांकित किये हैं पहला दलित महिलाओं को उनके गरीब होने, महिला होने और दलित होने के नाते समाज में और घर में हमेशा भेदभाव और शोषण सहना पड़ता है दूसरा समाज में केवल दलित स्त्रियों के शोषण का स्वरूप बदलता है, शोषण तो निरंतर रहता है।

समय बदल रहा है और समाज भी फिर भी रोजमर्रा की ख़बरों में, अखबारों की सुर्ख़ियों में दलित स्त्रियों के साथ दमन और हिंसा के समाचार सुनाई देते हैं शायद इसीलिए वर्तमान समाज में दलित स्त्री होना पाप जैसा हो गया है क्योंकि जाति एवं पुरुष का झूठा वर्चस्ववाद, अहंकारवाद किसी भी कीमत पर इन्हें दबाकर-कुचलकर इनकी अस्मिता से खेलने की नियति में विश्वास रखता है। 'अपना गाँव' कहानी समाज में व्याप्त इसी झूठे वर्चस्ववाद और अहंकारवाद के कारण दलित स्त्रियों के साथ हो रहे शोषण और अमानवीय व्यव्हार को दर्शाया गया है। कहानी की नायिका छमिया के पति ने ठाकुर से पांच सौ रुपए उधार लिए होते है जिसे वह समय पर नहीं दे पाया पर ठाकुर की नियत सिर्फ कर्ज वसूलने की नहीं थी। ''देख री कबूतरी! या तो सीधी तरह हमारे खेतों में काम करने आ जा, वरना हम चमारों से जबरदस्ती भी काम लेना जानते हैं। फिर तेरा घरवाला तो हमसे कर्ज ले गया है। उसका मूल न सही, ब्याज तो तू चुका ही सकती है।''[3] गाँव की औरतें छमिया को ठाकुर के कर्ज वसूलने के तरीकों से आगाह करती हैं ''ठाकुर मूल तो मूल ब्याज भी नई छोड़ता। एक-एक पाई की कीमत चुकानी पड़ती है असामी को। और उसको ही नई उसकी घरवाली को सबसे पैले।''[4] सब कुछ जान कर भी छमिया ठाकुर के खेतों में काम करने को मना करती है। परिणाम ठाकुर छमिया से जबरदस्ती करता है। ''स्साली चमारी! ठाकुर से जबान लड़ाती है। अगले ही पल वे सब बाज की तरह झपटे थे उस पर। पहले ठाकुर के मझले ने झपटा मारा। बाज पांच थे और वह अकेली। पल भर में उसके बदन के कपड़े खींच-खींचकर फाड़ दिए गए।''[5] इतने से भी मन कहाँ भरा था उनका, छमिया को पूरे गाँव में निर्वस्त्र घुमाया था। ''आजादी की प्रभात फेरी जैसा न था वह बल्कि सामंतों/जमींदारों की नंगई का जीता-जागता उदाहरण था। वह रो रही थी और वे हंस रहे थे, थूक रहे थे। अपनी संस्कृति की बेहयाई पर नहीं, एक अबला पर। उनके घरों में लक्ष्मी थी, सीता थी, पार्वती थी, सरस्वती थी, और भी अनगिनत देवियां थीं। अपने-अपने घरों में मिट्टी की मूर्तियों में जिनकी वे पूजा करते थे, पर रोती-बिलखती जिन्दा छमिया का उपहास कर रहे थे।''[6] प्रस्तुत उद्धरण में लेखक ने स्पष्ट किया है कि दलित वर्ग में गरीबी की बात की जाए तो उसकी सबसे ज्यादा मार दलित स्त्रियाँ ही झेलती हैं और यहीं उनके शोषण और दमन का मुख्य कारण भी है जो उन्हें उनके मूलाधिकार और अस्तित्व से भी वंचित करती है। इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी छमिया को इस जातिवादी, सामंतवादी समाज से न्याय की आस है, जिस कारण वह अपने पति और दलित समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ थाने जाती है पर यहाँ भी जाति और पुरुष वर्चस्ववादी सोच उसका पीछा नही छोड़ती है। ''तुझे

ठाकुर के मंजले ने नंगा किया। अब और नंगा होना चाहती है क्या?"[7]

2019 में अनुभव सिन्हा द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म 'आर्टिकल 15' समकालीन समाज में दलित स्त्रियों के प्रति जाति-आधारित अत्याचारों को मुख्यधारा के सिनेमा में लाने का साहसिक कार्य करती है। ग्रामीण इलाकों में जहाँ कानून की स्थिति कमजोर है और जातिवाद का बोलबाला है, फिल्म वहाँ दलित स्त्रियों की वास्तविक दुर्दशा को दर्शाती है। कहानी तीन दलित लड़कियों की है जिन्होंने अपने श्रम के बदले सवर्ण वर्ग से तीन रुपये की मज़दूरी बढ़ाने की मांग की थी, इसके बदले में दो लड़कियों की लाश अगले दिन पेड़ से टंगी मिलती है और एक लड़की गायब है। फिल्म दर्शाती है कि न्याय को जिन्दा रखने वाली सभी प्रणालियाँ पूरी तरह जातिवादिता में लिप्त है। फ़िल्म में ऐसे कई संवाद और दृश्य हैं, जो समाज में जाति और धर्म के स्व-घोषित रखवालों को आईना दिखाने का काम करते हैं। फिल्म रेखांकित करती है कि समकालीन समाज में जाति इतिहास नहीं बल्कि एक आधुनिक वास्तविकता है जिसके कारण दलित स्त्रियों को सबसे ज़ूयादा भेदभाव और शोषण सहना पड़ता है।

निष्कर्ष

समय-चक्र में अक्सर यह देखा गया है कि उच्च जातियों द्वारा की गयी हिंसा एवं दमन का सबसे अधिक प्रभाव दलित स्त्रियों पर पड़ा जिस कारण दलित स्त्रियाँ अपने मूलाधिकारों और अस्तित्व से भी वंचित रहीं। ऐसे समय में, हिंदी साहित्य और सिनेमा ने अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से समाज में व्याप्त दलित स्त्री के प्रति बहुस्तरीय शोषण, मनुवादी व्यवस्था, जातिभेद हिंसा, कुरीतियों एवं तिरस्कार की परतें खोलकर वास्तिवकता के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत कर दलित स्त्री चेतना को वाणी देने का प्रयास किया। साहित्य और सिनेमा ने दलित स्त्री संबंधित भिन्न-भिन्न मनोवृतियों और विषयवस्तु को विषय बनाया और उन्हें नवीन कलात्मक तरीके से दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जिसका परिणाम हिंदी साहित्य और सिनेमा ने सफलता की बुलंदियों को छुआ और अत्यंत लोकप्रिय हुआ। आज हिंदी साहित्य और सिनेमा पारम्परिक धारणाओं और प्रतीकों को तोड़कर आम जनमानस और वर्ण व्यवस्था के अंतिम पंक्ति में खड़ी महिलाओं के लिए एक नए प्रगतिशील समाज के निर्माण का प्रयास कर रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि अगर दलित स्त्रियों के दमन को समाप्त करना है तो समाज के केवल एक विशेष वर्ग को नहीं अपितु पूरे राष्ट को जिम्मेदारी लेनी होगी। इसी क्रम में हिंदी साहित्य और सिनेमा पात्रों के माध्यम से निरंतर सामाजिक यथार्थ को सामने लाने का कार्य जिम्मेदारी से कर रहा है और प्रयत्नशील है कि दलित स्त्रियों की स्वंत्रता, समानता एवं न्याय जैसे लोकत्रांतिक मूल्य धरातल पर स्थापित हो सके और उन्हें उनका हक़ मिल सकें।

सन्दर्भ

1. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ट संख्या 111
2. श्यौराज सिंह 'बेचैन', हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या 136
3. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ठ संख्या 33
4. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ठ संख्या 35
5. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ठ संख्या 37
6. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ठ संख्या 32
7. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ठ संख्या 46

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान और पर्यावरणीय कारक का सहसंबंध

विशाल सोलंकी
स. आ. इतिहास, श्री जैन कन्या पी. जी. महाविद्यालय, बीकानेर

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का परिचय

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का परिचय एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक विषय है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं द्वारा विकसित की गई चिकित्सा पद्धतियों और ज्ञान को शामिल किया जाता है। यह विज्ञान हजारों वर्षों की परंपरा, अनुभव और अनुसंधान पर आधारित है।

1. आयुर्वेद

भारत में प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का प्रमुख प्रतिनिधित्व आयुर्वेद करता है। आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ है "जीवन का विज्ञान"। इसे लगभग पांच हजार साल पुरानी पद्धति माना जाता है। इसमें प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों, जड़ी-बूटियों, आहार, योग और ध्यान का उपयोग होता है।

प्रमुख ग्रंथ जैसे 'चरक संहिता' और 'सुश्रुत संहिता' आयुर्वेदिक चिकित्सा के आधारभूत ग्रंथ हैं।

2. पारंपरिक चीनी चिकित्सा (TCM)

चीन में पारंपरिक चीनी चिकित्सा एक पुरानी चिकित्सा प्रणाली है, जिसमें एक्यूपंक्चर, हर्बल मेडिसिन, चिकित्सीय मालिश और क्यूगोंग शामिल हैं। चीनी चिकित्सा यिन और यांग के संतुलन तथा 'ची' (जीवन शक्ति) के सिद्धांत पर आधारित है।

3. यूनानी चिकित्सा

यूनान (ग्रीस) की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली हिप्पोक्रेट्स पर आधारित है। यूनानी चिकित्सा शरीर के चार प्रमुख रसों—बलगम, रक्त, पित्त और कफ के संतुलन पर जोर देती है। यह चिकित्सा प्रणाली मध्ययुगीन इस्लामी चिकित्सकों द्वारा और विस्तृत की गई, विशेष रूप से अविसेना (इब्न सीना) द्वारा।

4. मिस्र की प्राचीन चिकित्सा

मिस्र में भी चिकित्सा की समृद्ध परंपरा थी। मिस्रवासियों ने चिकित्सा में हर्बल उपचार, सर्जरी और ममीकरण का उपयोग किया। मिस्र के चिकित्सा ग्रंथ, जैसे 'एडविन स्मिथ पेपिरस' और अन्य पेपिरस, उनके चिकित्सा ज्ञान के प्रमाण हैं।

5. मेसोपोटामिया की चिकित्सा

मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) की प्राचीन चिकित्सा में भी अनेक विशेषताएँ थीं। यहाँ के चिकित्सक जड़ी-बूटियों, प्रार्थना और अनुष्ठानों का प्रयोग करते थे।

6. अमेरिकी आदिवासी चिकित्सा

मूल अमेरिकी आदिवासी समुदायों की चिकित्सा पद्धतियाँ प्राकृतिक तत्वों और जड़ी-बूटियों पर आधारित होती थीं। इनमें आध्यात्मिक अनुष्ठान, गान और नृत्य का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

पर्यावरण का परिचय

पर्यावरण वह समग्र प्रणाली है जिसमें सभी जीवित और निर्जीव चीजें एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करती हैं। पर्यावरण को समझने के लिए इसके विभिन्न घटकों और उनके आपसी संबंधों को समझना आवश्यक है।

पर्यावरणीय समस्याएँ

1. प्रदूषण (Pollution) :

वायु, जल और भूमि का दूषित होना। इसका प्रमुख कारण औद्योगिक गतिविधियाँ, वाहनों से निकलने वाला धुआँ और अपशिष्ट प्रबंधन की कमी है।

2. जलवायु परिवर्तन (Climate Change) :

ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना और मौसम में अप्रत्याशित बदलाव।

3. विलुप्ति (Extinction) :

कई प्रजातियों का समाप्त होना। इसके प्रमुख कारण निवास स्थान का विनाश, शिकार और प्रदूषण हैं।

4. वनों की कटाई (Deforestation) :

जंगलों की अंधाधुंध कटाई पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ती है और जैव विविधता को नुकसान पहुँचाती है।

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण का लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों का स्थायी उपयोग करना और पर्यावरणीय समस्याओं को कम करना है। इसके प्रमुख उपाय हैं–

1. पुनर्चक्रण (Recycling) : अपशिष्ट पदार्थों का पुनः उपयोग।

2. पुनर्वनीकरण (Reforestation) : वनों को फिर से उगाना।

3. स्वच्छ ऊर्जा (Clean Energy) : सौर, पवन और जल ऊर्जा का उपयोग।

4. शिक्षा और जागरूकता : पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करना।

विज्ञान की विधियाँ एवं प्राचीन चिकित्सा का ज्ञान

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान की विधियाँ विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं में विकसित हुईं। इनमें से कई विधियाँ आज भी उपयोग में हैं। ये विधियाँ प्राकृतिक तत्वों, जड़ी-बूटियों और विभिन्न सिद्धांतों पर आधारित हैं।

आयुर्वेद

आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली है, जिसका शाब्दिक अर्थ "जीवन का विज्ञान" है। यह चिकित्सा पद्धति हजारों वर्षों से प्रचलित है।

आयुर्वेद के मुख्य सिद्धांत

1. त्रिदोष सिद्धांत

वात (वायु) : शरीर की गति और संचार से संबंधित प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है।

पित्त (अग्नि) : पाचन, अवशोषण और शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है।

कफ (जल और पृथ्वी) : शरीर की संरचना और स्नेहन को नियंत्रित करता है।

इन तीन दोषों का संतुलन व्यक्ति के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है। इनके असंतुलन से रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

2. धातु

शरीर में सात प्रमुख धातुएँ मानी गई हैं–

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।

3. मल

शरीर से निष्कासित होने वाले अपशिष्ट पदार्थ–मल, मूत्र और पसीना–का संतुलन भी स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

4. अग्नि

पाचन अग्नि शरीर की पाचन और चयापचय क्रियाओं का केंद्र है। यह पोषक तत्वों के पाचन और अवशोषण को नियंत्रित करती है।

आयुर्वेदिक विधियाँ

1. पंचकर्म

आयुर्वेद की प्रमुख शुद्धिकरण तकनीक है। इसमें वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य और रक्तमोक्षण शामिल हैं।

2. आहार

व्यक्ति की प्रकृति और दोष के अनुसार आहार की सिफारिश की जाती है।

3. हर्बल उपचार

जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक औषधियों का उपयोग किया जाता है, जैसे अश्वगंधा, तुलसी, नीम और हल्दी।

4. योग और ध्यान

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए योग और ध्यान का अभ्यास महत्वपूर्ण है।

5. मसाज और थेरेपी

अभ्यंग, शिरोधारा और पिजिचिल जैसी विभिन्न मालिश एवं उपचार पद्धतियाँ शारीरिक और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक मानी जाती हैं।

आयुर्वेद का महत्व

1. समग्र स्वास्थ्य

आयुर्वेद केवल रोगों के उपचार पर नहीं, बल्कि समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर ध्यान देता है।

2. व्यक्तिगत उपचार

प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार उपचार प्रदान करने का दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

3. प्राकृतिक और सतत उपयोग

प्राकृतिक संसाधनों और प्रक्रियाओं के उपयोग पर जोर दिया जाता है।

4. रोग निवारण

आयुर्वेदिक पद्धतियाँ रोगों की रोकथाम पर भी ध्यान देती हैं।

पर्यावरण के जैविक घटक

जैविक घटक वे तत्व हैं जो जीवित होते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हैं।

1. उत्पादक (Producers) :

पौधे और शैवाल प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से अपना भोजन स्वयं बनाते हैं।

2. उपभोक्ता (Consumers) :

ये अपना भोजन उत्पादकों या अन्य उपभोक्ताओं से प्राप्त करते हैं।

इनके प्रमुख प्रकार हैं–

- प्राथमिक उपभोक्ता
- माध्यमिक उपभोक्ता
- तृतीयक उपभोक्ता

3. अपघटक (Decomposers) :

कवक आदि मृत जीवों और अपशिष्ट पदार्थों को विघटित करते हैं तथा पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण में सहायता करते हैं।

अजैविक घटक

अजैविक घटक निर्जीव होते हैं और पर्यावरण की भौतिक एवं रासायनिक स्थितियों को निर्धारित करते हैं–

1. जल (Water)
2. वायु (Air)
3. मिट्टी (Soil)
4. प्रकाश (Light)
5. तापमान (Temperature)
6. खनिज (Minerals)
7. अंतरिक्ष (Space)

ये सभी घटक मिलकर एक जटिल और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं।

आयुर्वेद और पर्यावरण

आयुर्वेद प्रकृति के साथ संतुलन पर आधारित भारतीय चिकित्सा प्रणाली है।

इसके प्रमुख पर्यावरणीय कारक हैं–

जड़ी-बूटियाँ और पौधे : औषधियों के लिए प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और पौधों का उपयोग।

ऋतुचर्या : ऋतुओं के अनुसार जीवनशैली और आहार में बदलाव।

प्राकृतिक तत्व : जल, वायु, पृथ्वी और अग्नि का संतुलित उपयोग।

आयुर्वेद में पर्यावरणीय घटक

1. भूमि (Land) :

वनस्पतियों, जैविक खाद्य पदार्थों और औषधीय पौधों की प्राकृतिक उपलब्धता।

2. वातावरण (Environment) :

स्वच्छ और प्रदूषण-मुक्त वातावरण का महत्व।

3. जल (Water) :

शुद्ध जल का स्वास्थ्य और उपचार में महत्वपूर्ण योगदान।

4. वायु (Air) :

प्राकृतिक और शुद्ध वायु का महत्व।

5. दीप्ति (Radiation) :

सूर्य की किरणों तथा अन्य प्रकाशीय प्रभावों का महत्व।

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान की तकनीकों में प्रयुक्त पर्यावरणीय घटक

1. औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ

तुलसी, नीम, गिलोय, अश्वगंधा, हल्दी और आंवला जैसी जड़ी-बूटियों का उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है।

पौधों की गुणवत्ता और उनके औषधीय गुण मिट्टी की उर्वरता तथा जलवायु पर निर्भर करते हैं।

2. जल

आयुर्वेद में शुद्ध जल का उपयोग महत्वपूर्ण माना जाता है। जल का स्रोत और गुणवत्ता औषधियों एवं उपचार की प्रभावशीलता से संबंधित हैं।

3. मौसम और ऋतु (ऋतुचर्या) :

प्रत्येक ऋतु के अनुसार जीवनशैली और आहार को अनुकूलित करने की सलाह दी जाती है।

4. धूप (सूर्य प्रकाश) :

सूर्य की किरणों का उपयोग विभिन्न उपचारों में किया जाता है। कुछ औषधियों के निर्माण में भी सूर्य की किरणों का प्रयोग किया जाता है।

5. वायु

स्वच्छ वायु को महत्वपूर्ण माना गया है। प्राणायाम और अन्य श्वसन तकनीकों में शुद्ध एवं ताजी हवा का उपयोग होता है।

6. मिट्टी (भूमि) :

औषधीय पौधों के लिए उपयुक्त मिट्टी का चयन महत्वपूर्ण होता है। कुछ उपचारों में मिट्टी का प्रयोग भी किया जाता है, जैसे मड थेरेपी।

निष्कर्ष

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान और पर्यावरण घटकों के बीच गहरा संबंध रहा है। प्राचीन चिकित्सा प्रणालियाँ प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय परिस्थितियों पर आधारित थीं जैसे -

1. प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग

जड़ी-बूटियों, पौधों, खनिजों और जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग।

2. पर्यावरणीय संतुलन

पर्यावरणीय संतुलन को स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माना गया।

3. मौसम और जलवायु का प्रभाव

मौसम और जलवायु के अनुसार चिकित्सा तथा जीवनशैली में बदलाव किया जाता था।

4. स्वस्थ जीवनशैली

आहार, व्यायाम, योग, ध्यान और स्वच्छता पर जोर दिया गया।

5. सतत और सम्मानपूर्वक उपयोग

प्राकृतिक संसाधनों के सतत एवं सम्मानपूर्वक उपयोग पर जोर दिया गया।

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान और पर्यावरण घटकों के बीच संबंध यह स्पष्ट करता है कि स्वास्थ्य और पर्यावरण का गहरा संबंध है। पर्यावरणीय कारकों का संतुलित उपयोग न केवल चिकित्सा उपचार में बल्कि समग्र स्वास्थ्य और दीर्घकालिक कल्याण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ

1. चरक संहिता
2. सुश्रुत संहिता
3. अष्टांग हृदय
4. रस रत्नाकर
5. योग रत्नाकर

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

समकालीन परिप्रेक्ष्य में लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अंतर्संबंध : परंपरा, परिवर्तन और डिजिटल संरक्षण की चुनौतियाँ

किशन लाल गुर्जर
ACBEO, कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, आमेट, राजसमन्द (राजस्थान) 313327
डॉ. शहनाज़ पठान
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर (राजस्थान) 313001

सारांश

लोक साहित्य और लोक संस्कृति किसी समाज की सामूहिक स्मृति, जीवन-दृष्टि, मूल्य-व्यवस्था और सामाजिक अनुभवों की जीवित अभिव्यक्तियाँ हैं। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, कहावतें, मुहावरे, लोकनाट्य, लोकनृत्य तथा विविध मौखिक परंपराएँ केवल मनोरंजन की सामग्री नहीं हैं; वे समाज के ऐतिहासिक अनुभव, श्रम-संस्कृति, पारिवारिक संबंध, प्रकृति-बोध, आस्था, नैतिक मान्यताओं और सामुदायिक पहचान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में संलग्न शोध-सामग्री में प्रतिपादित लोक संस्कृति की अवधारणा, उसके तत्त्वों, विशेषताओं, इतिहास तथा लोक साहित्य के साथ उसके अंतर्संबंध को आधार बनाते हुए समकालीन संदर्भ में उसका पुनर्पाठ किया गया है। अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि जब लोक जीवन तेजी से बदल रहा है, तब लोक साहित्य और लोक संस्कृति किस प्रकार अपना स्वरूप बदलते हुए भी सामुदायिक स्मृति और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखते हैं। शोध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष उभरता है कि लोक साहित्य लोक संस्कृति का भाषिक-सृजनात्मक रूप है, जबकि लोक संस्कृति उस जीवन-जगत का व्यापक ढाँचा है जिसमें लोक साहित्य जन्म लेता, संप्रेषित होता और पुनर्निर्मित होता है। मौखिक परंपरा, सामूहिक सहभागिता, स्थानीयता, सरलता, परिवर्तनशीलता और जीवन से निकटता इनके प्रमुख साझा गुण हैं। डिजिटल माध्यमों ने इनके संरक्षण और प्रसार की नई संभावनाएँ खोली हैं, लेकिन संदर्भ-विहीन प्रस्तुति, व्यावसायीकरण और सतहीकरण जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। अतः संरक्षण का लक्ष्य केवल सामग्री को संग्रहित करना नहीं, बल्कि उसके सामाजिक संदर्भ, स्थानीय अर्थ और समुदाय की भूमिका को सुरक्षित रखना होना चाहिए।

प्रमुख शब्द : लोक संस्कृति, लोक साहित्य, लोक जीवन, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक स्मृति, लोकभाषा, डिजिटल संरक्षण, सामुदायिक पहचान।

1. प्रस्तावना

संस्कृति किसी समाज की केवल कलात्मक उपलब्धियों का नाम नहीं है। यह उस समाज के जीवन को अर्थ देने वाली

मान्यताओं, व्यवहारों, प्रतीकों, परंपराओं, ज्ञान-पद्धतियों, भाषा, रीति-रिवाजों और सामूहिक अनुभवों का व्यापक संसार है। इसी व्यापक संसार का जनजीवन से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाला रूप लोक संस्कृति कहलाता है। लोक संस्कृति का निर्माण किसी एक व्यक्ति की योजना से नहीं होता; यह लंबे सामाजिक अनुभव, सामूहिक सहभागिता और पीढ़ियों के बीच ज्ञान-संचरण की प्रक्रिया से विकसित होती है। इसलिए लोक संस्कृति में व्यक्ति से अधिक समुदाय की उपस्थिति दिखाई देती है।

संलग्न शोध-सामग्री में लोक संस्कृति को सामान्य जनसमुदाय के जीवन-व्यवहार, आस्था, परंपरा, सामाजिक संबंध, भाषा, कला, उत्सव और सामूहिक चेतना से जोड़कर देखा गया है। इसमें लोक संस्कृति के तत्त्वों, उसकी विशेषताओं, ऐतिहासिक विकास तथा लोक साहित्य के साथ उसके अंतर्संबंध पर विशेष बल है। इसी आधार को आगे बढ़ाते हुए प्रस्तुत अध्ययन लोक साहित्य और लोक संस्कृति को स्थिर विरासत के बजाय गतिशील सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास करता है।

लोक साहित्य में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ, लोकनाट्य तथा अन्य मौखिक अभिव्यक्तियाँ शामिल होती हैं। दूसरी ओर लोक संस्कृति का दायरा अधिक व्यापक है; इसमें जीवन-पद्धति, संस्कार, उत्सव, खान-पान, वेशभूषा, श्रम-पद्धतियाँ, धार्मिक विश्वास, सामाजिक व्यवहार, स्थानीय कला और सामुदायिक स्मृति तक सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य को लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति और संवाहक दोनों के रूप में देखा जा सकता है।

समकालीन समय में शिक्षा, नगरीकरण, प्रवासन, बाजार, संचार माध्यम और डिजिटल तकनीक ने लोक जीवन के स्वरूप को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के कारण कुछ लोक परंपराएँ कमजोर हुई हैं, जबकि कुछ ने नए माध्यमों और नए रूपों में स्वयं को पुनर्गठित किया है। यही परिवर्तन इस शोध की प्रासंगिकता को बढ़ाता है।

2. शोध की समस्या एवं शोध अंतर

लोक संस्कृति और लोक साहित्य पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी समकालीन संदर्भ में दोनों के अंतर्संबंध को गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखने की आवश्यकता बनी हुई है। सामान्यतः लोक संस्कृति को परंपराओं के संग्रह और लोक साहित्य को लोक रचनाओं के समूह के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे दोनों के बीच मौजूद जीवंत पारस्परिकता पर्याप्त रूप से सामने नहीं आती। लोक साहित्य लोक संस्कृति से सामग्री ग्रहण करता है, किंतु वह स्वयं भी लोक संस्कृति के निर्माण, संरक्षण और पुनर्व्याख्या में सक्रिय भूमिका निभाता है। इसलिए समस्या यह है कि बदलते सामाजिक और तकनीकी परिवेश में लोक साहित्य और लोक संस्कृति का संबंध किस प्रकार पुनर्गठित हो रहा है।

उपलब्ध अध्ययन-सामग्री से यह स्पष्ट होता है कि लोक संस्कृति की परिभाषा, उसके तत्त्व, विशेषताएँ और इतिहास पर पर्याप्त वैचारिक चर्चा मिलती है तथा लोक साहित्य को लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति के रूप में भी समझाया गया है। फिर भी समकालीन डिजिटल परिवेश में दोनों के संबंध की कार्यप्रणाली को एकीकृत रूप से देखने की आवश्यकता है। विशेष रूप से यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है कि लोक परंपरा के डिजिटल रूपांतरण में क्या सुरक्षित रहता है और क्या बदल जाता है। प्रस्तुत शोध इसी बिंदु पर अपना विश्लेषण केंद्रित करता है। यहाँ लोक संस्कृति को स्थिर सामग्री और लोक साहित्य को केवल रचना न मानकर सामाजिक संचार की ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा गया है जिसमें समुदाय, भाषा, स्मृति, प्रदर्शन और तकनीक एक-दूसरे से जुड़े हैं।

3. शोध के उद्देश्य

4. लोक संस्कृति की अवधारणा, स्वरूप और प्रमुख तत्त्वों को स्पष्ट करना।
5. लोक साहित्य की प्रमुख विधाओं और सामाजिक भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
6. लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना।
7. मौखिक परंपरा और सामुदायिक सहभागिता की भूमिका का अध्ययन करना।
8. सामाजिक परिवर्तन तथा डिजिटल माध्यमों के प्रभाव में लोक परंपराओं के बदलते स्वरूप को समझना।
9. लोक साहित्य और लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए संदर्भ-सम्मत उपाय सुझाना।

4. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मूलतः गुणात्मक एवं वैचारिक शोध है। इसमें वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। संलग्न शोध-सामग्री में लोक संस्कृति की परिभाषा, तत्त्व, विशेषताएँ, इतिहास, लोक साहित्य से संबंध तथा सामाजिक-धार्मिक आयोजनों के माध्यम से लोक साहित्य के प्रसार से संबंधित विवेचन उपलब्ध है। उसी सामग्री को आधार बनाकर अवधारणात्मक पुनर्व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त लोक साहित्य और सांस्कृतिक अध्ययन से संबंधित प्रकाशित स्रोतों की सामान्य अकादमिक समझ का उपयोग किया गया है। इस शोध में कोई काल्पनिक सर्वेक्षण, प्रतिशत, प्रश्नावली या क्षेत्रीय आँकड़ा प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसलिए इसके निष्कर्षों को वैचारिक और विश्लेषणात्मक निष्कर्ष के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, न कि सांख्यिकीय सामान्यीकरण के रूप में।

5. अध्ययन की वैचारिक रूपरेखा

इस शोध की वैचारिक रूपरेखा को चार परस्पर जुड़े स्तरों में समझा जा सकता है। पहला स्तर 'जीवन-संदर्भ' है, जिसमें परिवार, श्रम, कृषि, प्रकृति, धर्म, उत्सव और सामाजिक संबंध आते हैं। दूसरा स्तर 'सांस्कृतिक अभिव्यक्ति' है, जिसमें गीत, कथा, कहावत, लोकनाट्य, नृत्य और कला जैसी विधाएँ आती हैं। तीसरा स्तर 'सामुदायिक संचार' है, जिसमें मौखिक परंपरा, सामाजिक आयोजन, पीढ़ीगत हस्तांतरण और सामूहिक प्रदर्शन शामिल हैं। चौथा स्तर 'समकालीन पुनर्संरचना' है, जिसमें शिक्षा, बाजार, मीडिया और डिजिटल तकनीक के कारण लोक अभिव्यक्तियों में आने वाले परिवर्तन सम्मिलित हैं।

इन चारों स्तरों को अलग-अलग समझना उपयोगी है, किंतु व्यवहार में ये एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। उदाहरण के लिए किसी क्षेत्र का विवाह गीत जीवन-संदर्भ से उत्पन्न होता है, लोकभाषा में अभिव्यक्त होता है, विवाह समारोह में सामूहिक रूप से गाया जाता है और आज मोबाइल रिकॉर्डिंग के माध्यम से डिजिटल मंच पर भी पहुँच सकता है। इस एक उदाहरण में लोक संस्कृति, लोक साहित्य, सामाजिक संचार और तकनीकी परिवर्तन चारों उपस्थित हैं।

6. लोक संस्कृति : अवधारणा एवं स्वरुप

लोक संस्कृति का आधार सामान्य जनजीवन है। इसमें किसी क्षेत्र या समुदाय के लोग अपने जीवन के अनुभवों को व्यवहार, भाषा, विश्वास, कला और सामाजिक परंपराओं में रूपांतरित करते हैं। लोक संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका जीवन-सापेक्ष होना है। यह जीवन से बाहर किसी संग्रहालय में रखी वस्तु नहीं, बल्कि दैनिक व्यवहार में सक्रिय अनुभव है।

लोक संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता सामूहिकता है। व्यक्ति लोक परंपरा का वाहक हो सकता है, लेकिन परंपरा का अर्थ तभी बनता है जब समुदाय उसे स्वीकार करता है, दोहराता है और अगली पीढ़ी तक पहुँचाता है। इसी कारण लोकगीत किसी एक गायक की निजी संपत्ति न होकर सामूहिक अनुभव का रूप ले लेते हैं। लोककथा किसी एक कथाकार से सुनाई जा सकती है, लेकिन उसकी कथा-संरचना समुदाय की स्मृति और मूल्यबोध से जुड़ी होती है।

लोक संस्कृति का दूसरा महत्त्वपूर्ण गुण स्थानीयता है। भाषा, बोली, पर्यावरण, आजीविका, इतिहास और सामाजिक संरचना में क्षेत्रीय अंतर होने के कारण लोक संस्कृतियाँ भी अलग-अलग रूप ग्रहण करती हैं। यही स्थानीयता भारतीय सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध बनाती है। राजस्थान, गुजरात, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र या दक्षिण भारत की लोक अभिव्यक्तियों में अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं, किंतु सामुदायिकता, जीवन-संबंध और परंपरा-संचरण जैसी आधारभूत विशेषताएँ उन्हें एक साझा सांस्कृतिक धरातल पर जोड़ती हैं।

लोक संस्कृति की तीसरी विशेषता परिवर्तनशीलता है। परंपरा का अर्थ जड़ता नहीं है। कोई लोकगीत नई सामाजिक परिस्थिति में नए शब्द ग्रहण कर सकता है, लोकनाट्य आधुनिक मंच पर प्रस्तुत हो सकता है और लोककथा डिजिटल वीडियो के माध्यम से नई पीढ़ी तक पहुँच सकती है। इसलिए लोक संस्कृति में निरंतरता और परिवर्तन दोनों साथ-साथ चलते हैं।

7. लोक संस्कृति के प्रमुख तत्व

लोक संस्कृति बहुआयामी है। इसके प्रमुख तत्त्वों में लोकभाषा और बोली, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे, लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोककला, लोकाचार, रीति-रिवाज, संस्कार, धार्मिक विश्वास, मेले-उत्सव,

खान-पान, वेशभूषा तथा पारंपरिक ज्ञान शामिल किए जा सकते हैं।

भाषा लोक संस्कृति की सबसे प्रभावी वाहिका है। लोकभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती; उसमें स्थानीय इतिहास, हास्य, संवेदना, सामाजिक संबंध और जीवन-अनुभव संचित रहते हैं। लोकोक्तियाँ और मुहावरे कम शब्दों में लंबे सामाजिक अनुभव को व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार लोकगीतों में जन्म, विवाह, कृषि, ऋतु, श्रम, विरह, उत्सव और धार्मिक भावनाओं से जुड़े अनुभव अभिव्यक्त होते हैं।

लोकाचार और रीति-रिवाज सामाजिक जीवन को संरचना देते हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु से जुड़े संस्कार, ऋतु-आधारित उत्सव तथा सामुदायिक आयोजन सामाजिक संबंधों को पुनर्स्थापित करते हैं। मेले और उत्सव केवल धार्मिक अवसर नहीं होते; वे सामाजिक मिलन, कला-प्रदर्शन और लोकज्ञान के आदान-प्रदान के अवसर भी बनते हैं।

8. लोक साहित्य की अवधारणा और प्रमुख विधाएँ

लोक साहित्य का आधार मौखिक परंपरा है। लिखित साहित्य की तुलना में लोक साहित्य लंबे समय तक स्मृति, वाचन, गायन और सामूहिक प्रदर्शन के माध्यम से संचरित होता रहा है। लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, पहेली, कहावत, मुहावरा, लोकनाट्य और लोककाव्य इसकी प्रमुख विधाएँ हैं।

लोकगीत सामूहिक जीवन की भावनात्मक अभिव्यक्ति हैं। श्रम के दौरान गाए जाने वाले गीत, विवाह गीत, ऋतुगीत, उत्सवगीत और विरहगीत समाज के जीवनानुभवों को स्वर देते हैं। लोककथाएँ मनोरंजन के साथ नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक ज्ञान का संचार करती हैं। लोकगाथाएँ किसी समुदाय की ऐतिहासिक स्मृति, वीरता, संघर्ष या सामूहिक आदर्शों को कथा-रूप में संरक्षित करती हैं। लोकोक्तियाँ जीवन के लंबे अनुभव को संक्षिप्त और प्रभावी रूप में व्यक्त करती हैं।

लोक साहित्य की विशेषता यह भी है कि इसमें पाठ स्थिर नहीं रहता। अलग-अलग कथाकार, गायक या क्षेत्र अपनी परिस्थितियों के अनुसार शब्द, प्रसंग और प्रस्तुति में परिवर्तन कर सकते हैं। यह परिवर्तन उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि लोक साहित्य की जीवंतता का प्रमाण है।

9. लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अंतर्संबंध

लोक साहित्य और लोक संस्कृति का संबंध कारण और परिणाम की सरल रेखा से अधिक जटिल और पारस्परिक है। लोक संस्कृति लोक साहित्य को विषय, प्रतीक, भाषा, पात्र और प्रसंग प्रदान करती है। दूसरी ओर लोक साहित्य लोक संस्कृति के मूल्यों, स्मृतियों और सामाजिक व्यवहारों को शब्द, कथा, गीत और प्रदर्शन के रूप में संरक्षित करता है।

उदाहरणतः किसी कृषि-प्रधान समाज के लोकगीतों में ऋतु, वर्षा, फसल, पशुधन और श्रम के अनुभव दिखाई दे सकते हैं। विवाह गीतों में पारिवारिक संबंधों, सामाजिक अपेक्षाओं और भावनात्मक अनुभवों का संसार उपस्थित रहता है। लोककथाओं में स्थानीय पर्यावरण, सामाजिक मान्यताओं और नैतिक कल्पनाओं के संकेत मिलते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य को पढ़ना लोक संस्कृति के जीवन-संसार को पढ़ना भी है।

यह संबंध एकतरफा नहीं है। जब कोई लोकगीत बार-बार सामूहिक अवसरों पर गाया जाता है, तो वह केवल सांस्कृतिक स्मृति का संरक्षण नहीं करता, बल्कि समुदाय के व्यवहार और भावनात्मक एकता को भी मजबूत करता है। इसी प्रकार लोकनाट्य किसी परंपरा को मंचित करते हुए नई पीढ़ी को उससे जोड़ता है। इस अर्थ में लोक साहित्य लोक संस्कृति का दर्पण होने के साथ-साथ उसका सक्रिय निर्माता भी है।

10. मौखिक परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति

लोक साहित्य की मौखिकता उसकी केंद्रीय विशेषता है। मौखिक परंपरा में ज्ञान का हस्तांतरण पुस्तकों के माध्यम से नहीं, बल्कि सुनने, याद रखने, दोहराने और प्रदर्शन करने से होता है। परिवार, समुदाय, उत्सव, धार्मिक आयोजन, श्रम-स्थल और सामाजिक समारोह इसके प्रमुख स्थल रहे हैं।

मौखिक परंपरा की शक्ति उसकी जीवंतता है। श्रोता केवल सुनने वाला नहीं होता; वह आगे चलकर स्वयं कथाकार, गायक या वाहक बन सकता है। इस प्रकार ज्ञान का संचार एक सक्रिय सामाजिक प्रक्रिया बन जाता है। इसी प्रक्रिया में

सामग्री में परिवर्तन भी संभव है। नई पीढ़ी अपने अनुभव जोड़ती है और पुरानी सामग्री का पुनर्पाठ करती है।

सांस्कृतिक स्मृति के दृष्टिकोण से लोक साहित्य का महत्व विशेष है। जिन समुदायों के लिखित अभिलेख सीमित रहे हैं, उनके जीवन के अनेक अनुभव लोकगीतों, कथाओं और कहावतों में सुरक्षित मिलते हैं। इसलिए लोक साहित्य को केवल मनोरंजन की सामग्री समझना उसके ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व को सीमित करना होगा।

11. लोक साहित्य, सामाजिक संबंध और सामूहिकता

लोक साहित्य सामाजिक संबंधों को व्यक्त और पुनर्स्थापित करने का माध्यम है। विवाह गीतों में परिवार और रिश्तेदारी के संबंध, श्रमगीतों में सामूहिक श्रम की भावना, धार्मिक कथाओं में सामुदायिक आस्था और उत्सवगीतों में सामूहिक उल्लास अभिव्यक्त होता है।

लोक साहित्य की सामूहिकता व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंध को मजबूत करती है। किसी सामूहिक आयोजन में साथ गाया गया गीत केवल शब्दों का उच्चारण नहीं रहता; वह साझा अनुभव बन जाता है। इसी कारण लोक साहित्य सामाजिक एकता, सहभागिता और पहचान के निर्माण में भूमिका निभाता है।

हालाँकि लोक परंपराओं को आदर्शीकृत करके प्रस्तुत करना भी उचित नहीं होगा। किसी भी संस्कृति में समानता और असमानता दोनों के तत्व हो सकते हैं। कुछ लोक कथाओं या रीति-रिवाजों में पुराने सामाजिक पूर्वाग्रह भी संरक्षित हो सकते हैं। अतः लोक साहित्य के अध्ययन में संरक्षण के साथ आलोचनात्मक विवेक आवश्यक है। जो परंपराएँ मानवीय गरिमा, समानता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ाती हैं, उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है; वहीं भेदभावकारी तत्वों का आलोचनात्मक पुनर्पाठ आवश्यक है।

12. लोक साहित्य के प्रसार में धार्मिक और सामाजिक आयोजन

धार्मिक आयोजन, मेले, पर्व-त्योहार, विवाह, सामुदायिक समारोह और लोक उत्सव लोक साहित्य के प्रसार के महत्त्वपूर्ण मंच रहे हैं। इन अवसरों पर कथा, भजन, लोकगीत, लोकनाट्य और पारंपरिक प्रस्तुतियाँ सामूहिक रूप से संपन्न होती हैं। संलग्न शोध-सामग्री में भी सामाजिक तथा धार्मिक आयोजनों को लोक साहित्य के संरक्षण और प्रसार का प्रभावी माध्यम माना गया है।

इन आयोजनों का महत्त्व इसलिए भी है कि यहाँ लोक साहित्य केवल सुनाया नहीं जाता, बल्कि सामाजिक जीवन के संदर्भ में अनुभव किया जाता है। दर्शक और कलाकार के बीच दूरी कम रहती है। प्रस्तुति के दौरान स्थानीय भाषा, हास्य, संकेत और सामूहिक सहभागिता जुड़ती रहती है। यही संदर्भ लोक साहित्य को जीवित रखता है।

13. आधुनिकता, नगरीकरण और लोक संस्कृति में परिवर्तन

आधुनिकता ने लोक संस्कृति के सामने चुनौतियाँ और अवसर दोनों उपस्थित किए हैं। शिक्षा के विस्तार, रोजगार के बदलते स्वरूप, ग्रामीण से शहरी प्रवासन, परिवार संरचना में परिवर्तन और नए मनोरंजन माध्यमों ने पारंपरिक लोक-संचरण की स्थितियों को बदला है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर छोटे परिवार बढ़ने से कुछ मौखिक परंपराओं के प्राकृतिक हस्तांतरण के अवसर कम हो सकते हैं।

दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा और संचार माध्यम लोक साहित्य के दस्तावेजीकरण के नए अवसर देते हैं। पहले किसी लोकगीत के संरक्षण के लिए स्मृति और सामुदायिक प्रदर्शन पर निर्भरता अधिक थी; आज ऑडियो, वीडियो और डिजिटल अभिलेखागार के माध्यम से उसे सुरक्षित किया जा सकता है। किंतु डिजिटल रिकॉर्डिंग को परंपरा का पूर्ण विकल्प नहीं माना जा सकता। किसी गीत की सामाजिक भूमिका, अवसर, प्रदर्शन शैली और समुदाय से उसका संबंध केवल रिकॉर्डिंग से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

14. डिजिटल युग और लोक साहित्य का पुनर्प्रसार

डिजिटल माध्यमों ने लोक साहित्य के प्रसार का दायरा अत्यंत व्यापक कर दिया है। सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म, डिजिटल पुस्तकालय और ऑनलाइन संग्रहों के माध्यम से स्थानीय सामग्री भौगोलिक सीमाओं से बाहर पहुँच सकती है। युवा

पीढ़ी भी मोबाइल आधारित माध्यमों के जरिए लोकगीत और लोककथाओं से परिचित हो सकती है।

परंतु डिजिटल प्रसार के साथ दो महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आते हैं। पहला, सामग्री का संदर्भ क्या है? दूसरा, उसके अधिकार और समुदाय की भूमिका क्या है? जब किसी लोक प्रस्तुति को केवल मनोरंजन सामग्री के रूप में प्रसारित किया जाता है, तब उसके सामाजिक अर्थ कम हो सकते हैं। इसी तरह किसी समुदाय की पारंपरिक अभिव्यक्ति का व्यावसायिक उपयोग करते समय श्रेय, अनुमति और लाभ-साझेदारी जैसे प्रश्न उठते हैं।

इसलिए डिजिटल संरक्षण की आदर्श प्रक्रिया में केवल रिकॉर्डिंग नहीं, बल्कि स्रोत-समुदाय, स्थान, अवसर, भाषा, प्रस्तोता, प्रसंग और अर्थ से संबंधित विवरण भी सुरक्षित किए जाने चाहिए।

15. शिक्षा और लोक संस्कृति

शिक्षा लोक संस्कृति के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विद्यालय स्थानीय लोकगीत, लोककथा, लोककला, बोली और पारंपरिक ज्ञान को स्थानीय अध्ययन के रूप में शामिल कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में अपने परिवेश के प्रति सम्मान और जिज्ञासा विकसित होती है।

लोक संस्कृति को शिक्षा में शामिल करने का अर्थ पाठ्यपुस्तक में कुछ लोकगीत जोड़ देना मात्र नहीं है। स्थानीय बुजुर्गों, कलाकारों, कथाकारों और शिल्पकारों को विद्यालयी गतिविधियों से जोड़ना अधिक प्रभावी हो सकता है। विद्यार्थी उनसे साक्षात्कार लें, लोककथाएँ रिकॉर्ड करें, स्थानीय शब्दावली का संकलन करें और उसके सामाजिक संदर्भ को समझें। इस प्रकार शिक्षा लोक संस्कृति की निष्क्रिय स्मृति के बजाय सक्रिय शोध-प्रक्रिया बन सकती है।

16. लोक संस्कृति के संरक्षण की चुनौतियाँ

लोक संस्कृति के संरक्षण में पहली चुनौती संदर्भ-विच्छेद की है। किसी लोकगीत को केवल शब्दों के रूप में सुरक्षित कर लेना पर्याप्त नहीं है; यह जानना भी आवश्यक है कि वह कब, किसके द्वारा और किस सामाजिक अवसर पर गाया जाता है।

दूसरी चुनौती पीढ़ीगत दूरी है। युवा पीढ़ी के जीवन में डिजिटल मनोरंजन और वैश्विक सांस्कृतिक सामग्री की उपस्थिति बढ़ने से कुछ स्थानीय परंपराओं के लिए समय और अवसर कम हो सकते हैं। तीसरी चुनौती व्यावसायीकरण है, जिसमें लोक संस्कृति को बाजार की मांग के अनुरूप इस प्रकार बदला जा सकता है कि उसकी स्थानीय विशिष्टता कमजोर हो जाए।

चौथी चुनौती प्रतिनिधित्व की है। किसी लोक समुदाय का चित्रण करते समय बाहरी व्यक्ति द्वारा चुनी गई सामग्री को पूरे समुदाय की संस्कृति मान लेना उचित नहीं है। इसलिए संरक्षण की प्रक्रिया में समुदाय की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

17. संरक्षण के लिए प्रस्तावित रूपरेखा

लोक साहित्य और लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए बहुस्तरीय दृष्टिकोण आवश्यक है। पहला स्तर स्थानीय समुदाय है, जहाँ परंपरा स्वाभाविक रूप से जीवित रहती है। दूसरा स्तर विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान हैं, जो दस्तावेजीकरण और शोध में भूमिका निभा सकते हैं। तीसरा स्तर पुस्तकालय, संग्रहालय, अभिलेखागार और डिजिटल मंच हैं, जो दीर्घकालीन संरक्षण में सहायता करते हैं।

एक उपयोगी डिजिटल लोक-संस्कृति अभिलेख में निम्न सूचनाएँ रखी जा सकती हैं रचना का नाम, स्थानीय नाम/बोली, क्षेत्र, प्रस्तोता, अवसर, अनुमानित परंपरा-काल, विषय, रिकॉर्डिंग की तिथि, अनुमति की स्थिति, संबंधित समुदाय तथा संक्षिप्त व्याख्या। इससे भविष्य के शोधकर्ताओं को सामग्री का सामाजिक संदर्भ भी प्राप्त होगा।

18. चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लोक साहित्य और लोक संस्कृति को अलग-अलग खानों में बाँटना उनकी वास्तविक प्रकृति को सीमित करता है। लोक साहित्य लोक संस्कृति की भाषिक और कलात्मक अभिव्यक्ति है, जबकि लोक संस्कृति वह व्यापक जीवन-परिसर है जिसमें साहित्य का सृजन और उपयोग होता है। दोनों के बीच निरंतर आदान-प्रदान चलता है।

दूसरा प्रमुख निष्कर्ष यह है कि परंपरा और परिवर्तन विरोधी अवधारणाएँ नहीं हैं। लोक परंपरा तभी जीवित रहती है जब वह बदलती परिस्थितियों के साथ संवाद कर सके। यदि उसे बिल्कुल अपरिवर्तनीय बना दिया जाए तो वह संग्रहालयीय वस्तु बन सकती है; यदि परिवर्तन इतना तीव्र हो कि मूल सामाजिक संदर्भ ही समाप्त हो जाए, तो सांस्कृतिक पहचान कमजोर पड़ सकती है। इसलिए संरक्षण का उद्देश्य जीवित परंपरा की निरंतरता और उसके स्वाभाविक परिवर्तन दोनों को स्वीकार करना होना चाहिए।

तीसरा निष्कर्ष डिजिटल तकनीक से संबंधित है। डिजिटल माध्यम लोक साहित्य के दस्तावेजीकरण और प्रसार के लिए शक्तिशाली साधन हैं, लेकिन तकनीक स्वयं संरक्षण का अंतिम लक्ष्य नहीं है। वास्तविक संरक्षण तब होगा जब सामग्री के साथ समुदाय की स्मृति, भाषा, संदर्भ और स्वामित्व-संबंध भी सुरक्षित रहें।

19. लोक साहित्य में स्त्री-अनुभव और सामाजिक स्मृति

लोक साहित्य के अध्ययन में स्त्री-अनुभव की उपस्थिति विशेष ध्यान की मांग करती है। विवाह गीत, सोहर, विरह गीत, ऋतुगीत और घरेलू प्रसंगों से जुड़े अनेक लोकगीत स्त्रियों के अनुभवों को अभिव्यक्ति देते रहे हैं। लिखित इतिहास में जिन निजी या घरेलू अनुभवों को पर्याप्त स्थान नहीं मिला, वे लोकगीतों के माध्यम से सामूहिक स्मृति में सुरक्षित रह सकते हैं। इस दृष्टि से लोक साहित्य सामाजिक इतिहास के वैकल्पिक स्रोत के रूप में भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

हालाँकि लोक साहित्य में स्त्री-अनुभव का होना यह सिद्ध नहीं करता कि सभी लोक परंपराएँ लैंगिक समानता की समर्थक हैं। कुछ रचनाओं में परंपरागत लैंगिक भूमिकाएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ भी दिखाई दे सकती हैं। इसलिए शोधकर्ता को दो स्तरों पर अध्ययन करना चाहिए एक ओर अनुभव और अभिव्यक्ति का संरक्षण, दूसरी ओर उस अभिव्यक्ति में मौजूद सामाजिक संरचनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण। इससे लोक साहित्य का अध्ययन अधिक संतुलित और अकादमिक बनता है।

20. प्रकृति, पर्यावरण और लोकज्ञान

लोक संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष प्रकृति के साथ उसका संबंध है। ग्रामीण और पारंपरिक जीवन में ऋतु, वर्षा, जल, वनस्पति, पशुधन और कृषि केवल आर्थिक संसाधन नहीं होते, बल्कि सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा भी बनते हैं। ऋतुगीत, वर्षा से संबंधित लोकविश्वास, कृषि-आधारित कहावतें और स्थानीय पर्यावरण से जुड़े व्यवहार इस संबंध को व्यक्त करते हैं।

इस संदर्भ में लोक साहित्य पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान के अध्ययन में सहायक हो सकता है। लोक कथाओं और गीतों में किसी वृक्ष, नदी, पशु या ऋतु के प्रति भावनात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि मिल सकती है। आधुनिक पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में इस ज्ञान का अध्ययन उपयोगी हो सकता है, बशर्ते इसे बिना आलोचनात्मक परीक्षण के वैज्ञानिक ज्ञान का विकल्प न माना जाए। लोकज्ञान को उसके सामाजिक संदर्भ में समझना और वैज्ञानिक ज्ञान के साथ संवाद स्थापित करना अधिक उचित दृष्टिकोण है।

21. लोकभाषा और सांस्कृतिक विविधता

लोकभाषा लोक संस्कृति की पहचान का केंद्रीय आधार है। किसी लोकगीत या कथा का अर्थ केवल उसके शब्दों में नहीं, बल्कि उसके उच्चारण, स्थानीय प्रतीकों, संबोधन-शैली और सांस्कृतिक संदर्भ में भी निहित होता है। इसलिए लोक साहित्य का अनुवाद करते समय अर्थ का एक हिस्सा बदल सकता है। अनुवाद आवश्यक हो सकता है, लेकिन मूल लोकभाषा के संरक्षण की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

डिजिटल युग में लोकभाषाओं के लिए विशेष अवसर उपलब्ध हैं। स्थानीय बोली में ऑडियो संग्रह, डिजिटल शब्दकोश, लोककथा अभिलेख और विद्यालय-स्तरीय रिकॉर्डिंग परियोजनाएँ भाषा संरक्षण में उपयोगी हो सकती हैं। यदि युवा अपनी स्थानीय बोली को डिजिटल अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं, तो लोकभाषा आधुनिक संचार से जुड़ सकती है और उसके प्रयोग के नए क्षेत्र विकसित हो सकते हैं।

22. समुदाय-केन्द्रित संरक्षण का मॉडल

लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए 'समुदाय-केंद्रित मॉडल' अधिक उपयोगी हो सकता है। इस मॉडल में शोधकर्ता बाहरी संग्रहकर्ता के बजाय सहयोगी की भूमिका निभाता है। सामग्री का चयन स्थानीय लोगों के साथ मिलकर किया जाता है। प्रस्तोता की पहचान, समुदाय की अनुमति और उपयोग की शर्तें दर्ज की जाती हैं। इससे संरक्षण प्रक्रिया अधिक नैतिक और विश्वसनीय बनती है।

इस मॉडल के अंतर्गत स्थानीय विद्यालय एक 'लोक-संस्कृति परियोजना' चला सकते हैं। विद्यार्थी अपने गाँव या क्षेत्र के बुजुर्गों से लोककथाएँ, कहावतें, गीत और पारंपरिक ज्ञान के बारे में बातचीत करें; शिक्षक सामग्री का सत्यापन और वर्गीकरण कराएँ; और विद्यालय एक स्थानीय डिजिटल संग्रह तैयार करे। उच्च शिक्षा संस्थान इन संग्रहों का भाषिक, साहित्यिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक विश्लेषण कर सकते हैं। इस प्रकार स्थानीय समुदाय, विद्यालय और विश्वविद्यालय के बीच शोध-सहयोग विकसित किया जा सकता है।

23. निष्कर्ष

लोक साहित्य और लोक संस्कृति किसी समाज के अतीत की मात्र स्मृतियाँ नहीं हैं; वे वर्तमान जीवन को अर्थ देने वाली सक्रिय सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ हैं। लोक संस्कृति में समाज का जीवन-व्यवहार, विश्वास, मूल्य, कला और सामूहिक अनुभव संचित रहते हैं, जबकि लोक साहित्य इन्हीं अनुभवों को गीत, कथा, गाथा, कहावत, नाट्य और अन्य अभिव्यक्तियों में रूपांतरित करता है। इसलिए दोनों का संबंध अभिन्न, पारस्परिक और गतिशील है।

समकालीन समय में लोक संस्कृति के सामने परिवर्तन, पीढ़ीगत दूरी, नगरीकरण और बाजार जैसी चुनौतियाँ हैं, किंतु डिजिटल तकनीक, शिक्षा और सामुदायिक अभिलेखन नई संभावनाएँ भी प्रस्तुत करते हैं। आवश्यकता ऐसी संरक्षण-दृष्टि की है जो लोक संस्कृति को स्थिर नमूने के रूप में नहीं, बल्कि समुदाय के जीवित अनुभव के रूप में देखे।

भविष्य के शोध में क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययन, मौखिक इतिहास, डिजिटल अभिलेखागार, लोकभाषाओं के संरक्षण तथा युवाओं की सांस्कृतिक भागीदारी पर अनुभवजन्य शोध किया जा सकता है। विशेष रूप से राजस्थान जैसे बहुभाषी और लोकपरंपराओं से समृद्ध प्रदेश में जिला/ब्लॉक स्तर पर लोक-सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण की योजनाएँ विकसित की जा सकती हैं। विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को स्थानीय लोक-संसाधनों से जोड़कर एक ऐसा मॉडल विकसित किया जा सकता है जिसमें संरक्षण, शोध, शिक्षा और समुदाय—चारों एक साथ कार्य करें।

इस प्रकार लोक साहित्य और लोक संस्कृति का संरक्षण केवल अतीत को बचाने का प्रयास नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विविधता, सामुदायिक स्मृति और भविष्य की पीढ़ियों के बीच संवाद बनाए रखने का कार्य है।

संदर्भ-सूची

1. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, 1957, साहित्य भवन, इलाहाबाद
2. डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, 1971, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा
3. त्रिलोचन पाण्डेय, लोक साहित्य का अध्ययन, 1978, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, 2007, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली
5. UNESCO, Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage, 2003
6. UNESCO, Intangible Cultural Heritage, (ICH) कार्यक्रम 2009

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

असम की लोक संस्कृति के विविध आयाम

डॉ. अनिरुद्ध बायन
सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)
मध्य कामरूप कॉलेज़, सुभा, आसाम

संस्कृतिक एक लचीला शब्द है जिसकी अनेक व्याख्याए की गई है। मानव की सुरक्षा और उसकी उन्नति के लिए जो विचार और भावनात्मक प्रयास होते रहे हैं। उनका मिश्रित रूप संस्कृति है। समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य कला, वस्तुएँ तथा रहन-सहन आदि संस्कृति की विशेषताएँ हैं। संस्कृति में विशेष प्रकार के रीति-रिवाज, वेषभूषा पर्वो-त्योहारों, उत्सवों आदि की योजना होती रहती है इस प्रकार संस्कृति के मनुष्य के हर पहलू से सीधा सम्बन्ध है।

संस्कृति का एक रूप लोक संस्कृति है। संस्कृति में आधुनिकता से संपन्न शिक्षित समाज की संस्कृति भी आती है और मूल्य चेतना से जुड़े हुए अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे देहाती अंचल के लोगों की संस्कृति भी आती है लोक संस्कृति परंपरावादी और सामुहिक होती है उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत मंद गति से काम करती है। लोक संस्कृति का एक रूप लोक जीवन के अनुभवों और जिन्दगी के बारे में लोक की सोच समझ, मान्यताओं और विचारों से बना है। इसका दूसरा रूप रीति-रिवाज, संस्कार, त्योहार, वेशभूषा और उत्सव आदि से बना है लोक जीवन में मैदान, जंगल, पहाड़, गाँव व खेत खालिहान से लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सुख दुःख सब ही लोक जीवन का एक अहम हिस्सा हैं लोक संस्कृति पीढी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। लोक संस्कृति से जन सामान्य की आस्था और संस्कार गहरे जुड़े होते हैं भारत की संस्कृति और संस्कार विश्व में प्रसिद्ध हैं। भारत के हर राज्य की संस्कृति और संस्कार अपनी प्रमुख विशेषताएँ रखते हैं।

भारत देश का असम राज्य अपनी प्राकृतिक सौन्द्रर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध है। असम राज्य कई देशों से जुड़ा हुआ है। यहाँ अनेक जगह से आए हुए लोग हैं जिनकी अपने रीति-रिवाज, संस्कार, लोक कलाएँ आदि हैं असम को पुराणों में कामरूप की राजधानी कहा गया है। अतः इसी कारण असम की लोक संस्कृति अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

भारत के उत्तर पूर्व में स्थित असम राज्य जिसका भौगोलिक क्षेत्र 'अठ्ठत्तर हजार चार सौ आड़तीस, किमी० है तथा इस राज्य में तैतीस जिले हैं। असम की जनसंख्या तीन करोड़ बारह लाख पांच हजार पांच सौ छियत्तर है। यूं तो असम में अनेक जातियाँ हैं जिनकी अपनी-अपनी भाषा है पर 'असमिया' को यहाँ राज्य भाषा का दर्जा प्राप्त है। असम राज्य का भू-भाग पहले बहुत अधिक बड़ा था लेकिन अब कई हिस्सों में विभाजित कर दिया गया है। पहले की अपेक्षा में इस का भू-भाग बहुत कम हो गया है। असम राज्य के निकट देश चीन, वर्मा, थाईलैण्ड, तिब्बत, बांग्लादेश, भूटान से आये हुए लोग भी यहाँ निवास करते हैं। असम राज्य को भौगोलिक दृष्टि से 'मैदानी इलाका और पहाड़ी इलाका के रूप में विभाजित किया जाता है। असम में आयातित निवासियों की अपनी अलग संस्कृति है तथा विविध लोक कलाएँ हैं उनके अपने-अपने संस्कार हैं इस के बावजूद यहाँ आपसी तुला पर्वत्र दिखाई पड़ती है।

सुतिया, मरान, मटक, दिमासा कछारी, बोडो, राभा, मिसिंग तथा कुकी जातियाँ है। कुछ मैदानी ईलाके तथा कुछ पहाड़ी ईलाके में रहते हैं।

खानपान हर देश हर राज्य का अलग होता है। और वह उसकी पहचान भी होती है असम का तथा भारत के कुछ हिस्सों के भोजन से मिलता जुलता है और थोड़ा अलग भी है जिस प्रकार असम में अनेक जनजातियों के लोग चीनी, तिब्बती, वर्मी, बंग्लादेशी यहाँ से आए लोगों की जातियाँ निवास करने लगी तो उनका खानपान भी सम्मलित हो गया तथा असम में मुख्य रूप से 'चावल' खाया जाता है। बतख मांस करी में बतख के मांस का बना हुआ व्यंजन है, टेंगी मछली करी में मछली खानपान से बना व्यंजन है। जाक अरू भाजी शाकाहारी व्यंजन है।

चावल से बना 'तिल पीठा' असम का मुख्य भोजन है। यहाँ मांस तथा मछली भी मुख्य रूप से खाई जाती है। आलू पिटिका यह शुद्ध शाकाहारी भोजन है। पीठा व्यंजन की आप को असम के हर घर में मिलता है। असम के लोगों की वेशभूषा जिसकी अलग पहचान हैं। महिलाएँ एक विशिष्ठ प्रकार की चादर कमर से ऊपर के हिस्से को ढकने के लिए पहनती हैं। कमर के नीचे पहने जाने वाले पहनावे को 'मेखला' कहा जाता है। आज बदलते देश की तरह असम का पहनावा भी अब बदल गया है यहाँ के युवक और युवतियाँ पश्चिमी सभ्यता की वेशभूषा को अपना रहे हैं। 'तिवा' जनजाति में पुरूष कमर के नीचे छोटा सा कपड़ा पहनते है। वह कपड़ा केवल एक मीटर लम्बा होता है। आज पूरे भारत देश का पहनावा बदलता जा रहा है। असम में भी लोगों ने परम्पारिक परिधानों को पहनना कम कर दिया है। यहाँ के लोग भी पश्चिमी परिधानों की और मध्यम गति से आकर्षित हो रहे हैं।

असम में अपने रीति-रिवाज मुख्य पर्व त्यौहार मनाये जाते हैं। यह पर्व हिन्दू पंचाग से संबंधित होते हैं। होली यहाँ धूमधाम से मनाई जाती है। दीवाली हो या ईद सब उत्सव बड़ी धुमधाम से मनाये जाते हैं। हर जाति के अपने-अपने रीति-रिवाज होते है। 'कारबि' जाति में जन्म-मृत्यु से लेकर पूजा पाठ में गीत गाए जाते हैं। 'कारबि' जाति में गीतों की एक शृंखला है जो व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक साथ-साथ चलती हैं। इन गीतों के माध्यम से सब कार्य संपन्न किये जाते हैं। तिवा जनजाति में विवाह के छः प्रकार है। जैसे लड़का-लड़की को भगाकर ले जाता है, लड़का अपनी पत्नी के घर में रहता है, जोर जबरदस्ती लड़की को लड़के के द्वारा रख लिया जाता है, गंधर्व विवाह, जोरोगदिया और बरविया। हर जाति की अलग-अलग रस्मे-रिवाज हैं जहाँ परंपरागत रूप से आज भी ये सम्पन्न होती हैं। 'तिवा' जाति हो या 'आदिवासी' जाति या 'ब्राह्मण' सब के अपने अपने संस्कार हैं जो पीड़ी दर पीड़ी आज भी अपने पूर्वजों से मिले रीति-रिवाजों को अब तक जीवित रखे हुए हैं।

असम में जीविका से जुड़े उत्सव भी मनाएँ जाते हैं। यह कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ कृषि और ऋतु परिवर्तन के अधार पर उत्सव मनाये जाते हैं ऋतुकालीन उत्सव प्रकृति उत्सव में आते हैं। इसमें देवी देवताओं की पूजा होती हैं। अमंगल के नाश के लिए पूजा पाठ तथा विविध उपासनाएँ की जाती हैं।

असम की लोक कलाएँ अपना विशेष स्थान रखती हैं। यहाँ का लोक संगीत, नृत्य, नाट्य लोककथा पीड़ी-दर-पीड़ी चली आ रहीं हैं। 'बिहू नृत्य' असम का प्रसिद्ध नृत्य है जो फसल काटने के बाद खाली क्षेत्रों में युवक-युवतियों के द्वारा मनाया जाता है। यहाँ अलग-अलग पर्वो पर गीत और नृत्य किये जाते हैं। असम में अलग-अलग तरह के लोकगीत गाए जाते हैं। 'का शाह लाहों' यह नृत्य ज्योतिया पहाड़ों का एक प्रमुख नृत्य है। इसे का शाह शिप्याह के नाम से जाना जाता है। नाट्य के माध्यम से भी यहाँ के लोग अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करते हैं। स्पष्ट लोकनृत्य और लोकगीतों का अनौखा संगम असम की लोक संस्कृति में दिखाई पड़ता है। असम के एक लोकगीत- ''और वा एउरी मात्रा बा महहड" गीतर नमूना इस प्रकार है।

।। 1।।
औरि।। औरि।।
लाउर पात झालाउ लाउ,
ताक खाया निन पालाउ।
निन खिनी हाँसेरे,
चकु चिपा नाँचेरे।

चकु चिपा देहार विष,
मागिया आनिलं धान बिश।
धान बिश पाया,
मेननिया आनिलं चाया।
च मेननिया हाटक जां,
मेननियाक बेछेया लाडू खां।

।। 2।।
औरि।। औरि।।
सोनार नाडाल रूपार फाल,
घर जेया बेटाए बोवाय हाल।
हाय बोपाय चिरले,
मोई दिये पाते,
घेलधेलीयाई घाटे।
औरि।। औरि।।
महो जाए मच मचेया,
एडांर गाछत गाउ घेचटेया।
शुडाल गाछेर फयता,
मह मारिलं छयटा।

जिसका दिवाकर प्रसाद जी ने हिन्दी भाषा में भावानुवाद भी किया है।

असम की लोक कलाएँ हो या यहाँ का शिल्प सब की विशेष परम्परा रही हैं। बाँस से बनी वस्तुएँ हो या पीतल, रेशम, मिट्टी के बर्तन, संगीत के उपकरण हो या हाथी दांत से बनी वस्तुएँ सब ही विशेष महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार विवेच्य विषय के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि असम की लोक संस्कृति भारत में अपना विशेष स्थान रखती हैं। यहाँ अलग-अलग जगह से आए हुए लोगों के कारण यहाँ की संस्कृति और संस्कारों में विविधता दिखाई देने के बावजूद यहाँ के लोगों में अनेकता में एकता स्पष्ट दिखाई देती हैं। असम में चाय की खेती तथा यहां का रेशम विश्वभर काफी प्रसिद्ध है। वही शराब इस राज्य में अधिक पी जाती हैं। जो यहाँ के लोगों के स्वास्थ के लिए घातक हैं। इसके लिए सरकार को यहाँ के लोगों को ध्यान में रखकर कुछ अन्य विशेष के लिए प्रयास करना चाहिए। दैनिक जीवन में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला समान या उपसाधन जैसे मछली पकड़ने का समान, तथा कला व शिल्प का प्रत्येक समान यहाँ मिलता है। इसके अलावा असम में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों द्वारा अद्वितीय कढ़ाई की डिजाइनों का अद्भुत संयोजन सूती वस्त्रों पर किया जाता है असम का शिल्प भी भारत में अपनी विशेष पहचान रखता है। असम का लोक जीवन प्राचीन समय से अपने कामरूप के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। पुराणों में भी अनेक स्थानों पर इसका वर्णन बहुत किया गया है।

असम राज्य में गरीब लोगों की जनसंख्या अधिक है। यहाँ की लोक कलाओं को सरकार द्वारा अपना विशेष महत्व प्रोत्साहन मिलना चाहिए तथा इसके विकास के लिए नयी योजनाएँ बनानी चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय वाचिक परंपरा और असमिया लोक संस्कृति का साहित्य, अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी, 'समन्वय पूर्वात्तर' दसवां अंक

विशेषांक, जनवरी, मार्च, 2011 पृ० सं० 28, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी शिलाग, दीमापुर
2. असम की सत्रीय संस्कृति, यासना बरा, 'समन्वय पूर्वात्तर' दसवां अंक विशेषांक, जनवरी-मार्च, 2011, पृ० सं० 96, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान गुवाहाटी शिलाग दीमापुर।
3. 'असम की तिवा जनजाति और उनकी संस्कृति', राजश्री देवी, 'समन्वय पूर्वात्तर' दसवां अंक विशेषांक जनवरी-मार्च, 2011, पृ० सं० 167, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी, शिलाग, दीमापुर।
4. असम की तिवा जनजाति और उनकी संस्कृतिक, राजश्री देवी 'समन्यव पूर्वोतर', अंक-10 विशेषंक, जनवरी-मार्च, 2011, पृ० सं० 169, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान गुवाहाटी, शिलाग, दीमापुर।
5. 'हाजङ, समाज और संस्कृति', अदिति सैकिया, 'समन्वय पूर्वोतर', अंक-10 विशेषक, जनवरी मार्च, 2011, पृ० सं० 307, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान गुवाहाटी, शिलाग, दीमापुर।
6. लेकगीत, संकलन-दिवाकर प्रसाद, 'समन्वय पूर्वोतर', अंक 10 विशेषंक, जनवरी मार्च, 2011, पृ० सं० 143, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान गुवाहाटी, शिलाग, दीमापुर।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

डॉ. नीलम सेठी
सहायक प्रोफेसर, डी.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मोगा
email : neelamsethi1203@gmail.com
Mob. : 9781351077
डॉ. अजयपाल सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़ पंजाब

सारांश

'समाज' एक व्यापक शब्द है, जिसमें मानव के एक दूसरे के साथ होने वाले किसी भी प्रकार के सामाजिक सम्बंधो का विकास होता है। ''समाज के अन्तर्गत परिवार, विवाह, आर्थिक तथा राजनीतिक संस्थाओं, असख्ंय समूह, नगर, ग्रम आदि का समावेश होता है। ये सभी समूह अथवा संस्थाएं समाज की निर्णायक इकाइयां है और इकाइयों में पाए जाने वाले प्रकार्यात्मक सम्बन्धों के आधार पर ही समाज का निर्माण होता है'' ।[1]

व्युत्पति की दृष्टि से समाज शब्द सम् + अज के योग से बना है। सम् का अर्थ है 'सम्यक रूप से' तथा 'अज' का अर्थ है 'जाना'। समाज शब्द की व्युत्पति के सन्दर्भ में डॉ. सम्पूर्णानन्द का मत उल्लेखनीय है, 'सम अजन्ति जनः अस्मिन इति अर्थात् जिसमें लोग मिलकर एक साथ एक गति से, एक से चले, वही समाज है'' ।[2]

एक से अधिक लोगों के समुदायों से मिलकर बने एक वृहद समूह को समाज कहते हैं जिसमें सभी व्यक्ति मानवीय क्रियाकलाप करते हैं। वस्तुतः समाज का अस्तित्व व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले आदान-प्रदान पर निर्भर करता है। समाज एक विशाल शब्द है जो अपने भीतर कई अर्थ समेटे हुए है। व्यक्ति, परिवार, जाति, समुदाय, वातावरण, परिवेश आदि समाज के घटक हैं, इन्हीं घटकों के सम्मिलित रूप को समाज कहते हैं और सम्पूर्ण समाज व्यवस्था इन्हीं घटकों के इर्द-गिर्द घूमती है। समाज के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मनुष्य सदा से ही आपस में मिलजुल कर रहना पसंद करता है। इस उद्देश्य से मनुष्य में जिस संस्था का निर्माण किया, वह समाज कहलाता है।

कीवर्ड्सः अजन्ति, व्युत्पति, मानवीय क्रियाकलाप, भेदभाव, संस्था

परिचय

साधारण बोलचाल में समाज शब्द का प्रयोग एकजुट होकर मानवीय क्रिया कलाप करने वाले व्यक्तियों के समूह के लिए किया जाता है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी में इसके लिए निम्न शब्द प्रयुक्त होते हैं -

''1. समुदाय, दल, समूह 2. सभा (जैसा आर्य समाज, संगीत समाज) 3. झुंड, गिरोह, समूह (जैसे सत्संग समाज) 4. समाजिक कार्यकर्त्ताओं का समूह (जैसे व्यापारियों का समाज) 5. संघटित संस्था, आयोजन, तैयारी।''[3]

अतः हम कह सकते हैं कि 'समाज' मनुष्य का प्राकृतिक संगठन है। जिस प्रकार एक मछली के लिए जल का होना आवश्यक होता है, उसी तरह मानव जीवन के लिए समाज और समूह का होना भी आवश्यक है। मनुष्य की छोटी से छोटी आवश्यकताओं से लेकर बड़ी से बडी आवश्यकताएँ समाज में रहकर ही पूर्ण हो पाती हैं।

समाज एक व्यापक शब्द हैं, इसे हम किसी परिभाषा की परिधि में नही बांध सकते। विभिन्न कोशों व विद्वानों ने समाज से संबंधित अपने - अपने मत प्रस्तुत किए हैं जो निम्नलिखित हैं :-

1) प्रामाणिक हिन्दी कोश के अनुसार ''समूह, गिरोह, एक जगह रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का काम करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समूह, समुदाय किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित हुई सभा।''[4]

2) भाषा शब्दकोश के अनुसार ''समूह, सभा, समिति, दल, वृन्द, समुदाय, संस्था, एक स्थान के निवासी तथा समान विचार वाले लोगों के समूह किसी उद्देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा।''[5]

3) श्यामसुन्दर दास जी के अनुसार, ''एक स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय करने वाले वे लोग जो अपना एक अलग समूह बनाते हैं या वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित की हो, को समाज कहा जाता है।''[6]

4) विश्वनाथ प्रसाद वर्मा के अनुसार, '' मानव समाज की इकाई है और समाज के बिना वह पूरा विकसित मनुष्य नहीं हो सकता है।''[7]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जनसमूह को ही समाज कहा गया है। यह एक क्रमबद्ध व्यवस्था है, जिसमें मनुष्य किसी महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु संगठित होकर प्रगति पथ पर अग्रसर होते हैं। समाज में रहते हुए व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर करता है और उसे भी इसमें सहयोग देना पडता है। यह आदान-प्रदान का क्रम समाज में निरन्तर चलता है। इसी को सामाजिक सम्बन्ध कहते हैं। इस सामाजिक व्यवस्था में मनुष्य आत्मविस्तार का प्रयास करता है। सामाजिक वातावरण से अलग मानव जीवन निरर्थक व मूल्यहीन है, जिसमें मनुष्य का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। अतः स्पष्ट है कि 'समाज सामाजिक सम्बन्धो का जाल' है।

सरोकार का अर्थ और परिभाषाएँ

सरोकार शब्द से अभिप्राय मनुष्य के आपसी व्यवहार से है। सरोकार शब्द मूलतः फारसी का शब्द है। अंग्रेजी भाषा में सरोकार के लिए कनसर्न (concern) शब्द प्रयोग में लाया जाता है। हिन्दी भाषा में 'सरोकार' शब्द के लिए उचित या समानार्थी शब्दों में वास्ता, सम्बन्ध, परस्पर व्यवहार, लगाव, प्रयोजन, अभिरूचि, ध्यान देना आदि शब्दों को लिया जा सकता है। विभिन्न शब्दकोशों में सरोकार शब्द का कोशगत अर्थ इस प्रकार है -

1) मानक हिन्दी कोश में सरोकार का अर्थ - ''1. परस्पर व्यवहार का सम्बन्ध 2. लगाव/ वास्ता/ सम्बन्ध।''[8]

2) बृहत् हिन्दी कोश के अनुसार 'सरोकार' को 'लगाव' 'वास्ता', 'प्रयोजन' से संबोधित किया गया है।''[9]

3) प्रमाणिक हिन्दी कोश के अनुसार, ''सरोकार शब्द को 'आपस के व्यवहार का सम्बन्ध'', 'लगाव' 'वास्ता' से जोड़ा गया है।''[10]

'सरोकार सामाजिक उत्थान और सामाजिक न्याय को बढावा देता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि सरोकार शब्द का अर्थ-प्रयोजन, सम्बन्ध, लगाव, वास्ता, परस्पर व्यवहार से लिया जा सकता है। सरोकार शब्द अपने भीतर व्यापक अर्थ समेटे हुए है जिसमें व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था आदि समाहित है। व्यक्ति और समाज के अन्तर्गत जो अधिकार और कर्त्तव्य की संयुक्त भावना होती है, उसे सरोकार के माध्यम से संप्रेशित किया जाता है।

'सामाजिक' का अर्थ - समाज से जुड़ा होना है तथा 'सरोकार' का अर्थ प्रयोजन, वास्ता, सम्बन्ध तथा परिणाम आदि से है। प्रत्येक साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग है। समाज की परिस्थितियों के साथ उसका भावात्मक सरोकार होता है।

साहित्यकार समाज में रहते हुए सामाजिक सरोकारों से तटस्थ नहीं रह सकता। ऐसे सरोकार जो व्यक्ति को सामाजिक बनाते हैं, समाज के प्रति व्यक्ति के कौन-कौन से कर्त्तव्य हैं, उनका बोध करवाते हैं, आपसी सहयोग, सहिश्णुता, सामाजिक सौहार्द, सामाजिक न्याय, सामाजिक सहकार्य का भाव जागृत करते हैं, सामाजिक सरोकार की परिधि में आते हैं।

आधुनिक युग में सामाजिक सरोकार साहित्य सृजन का एक अनिवार्य अंग बन चुका है। व्यक्ति जिन परिस्थितियों में जीवन जीता है और भविष्य में जिन बातों की अपेक्षा साहित्य के माध्यम से रखता है वह साहित्यकार का 'सरोकार' होता है। जब वह किसी कृत्ति के द्वारा अपनी अपेक्षाओं को समाज के साथ जोड़ कर प्रस्तुत करता है और उससे समाज प्रभावित होता है, उसे सामाजिक सरोकारों की संज्ञा दे दी जाती है।

सामाजिक सरोकार की परिभाषाएँ

सामाजिक सरोकार समाज शास्त्र से संबधित विशय है और इस पहलू पर विद्धानों ने अपने अनेक मत एवं सिद्धाँतों का प्रतिपादन किया है। पाश्चात्य समाज - शास्त्रियों ने व्यक्तिवादी सिद्धाँतों का भी प्रतिपादन किया है। सामाजिक और सरोकार इन दो शब्दों के संयोग से बने शब्द पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि संबंध और सरोकार का अर्थ एक ही है। संबंध शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है किंतु सरोकार शब्द का प्रयोग आधुनिक युग में मिलता है। दोनों शब्द एक दूसरे से भिन्न नहीं है। दोनों एक- दूसरे के समानार्थी ही हैं। सामाजिक सरोकार के संबंध में पाश्चात्य विद्धानों के विचार इस प्रकार हैं :-

मैक्स वेबर के अनुसार, '' सामाजिक सरोकार शब्द का प्रयोग अनेक कर्त्तव्यों के व्यवहारों को दिखलाने के लिए किया जाता है जो अर्थपूर्ण हो तथा इसी अर्थ में प्रत्येक की क्रिया दूसरे की क्रिया का भी ध्यान रखती हो। इस प्रकार सामाजिक सरोकारों के अन्तर्गत पूर्ण तथा एकमात्र इस प्रकार की संभावनाओं की सत्ता होती है कि समझ में आने योग्य तथा कुछ अर्थपूर्ण सामाजिक क्रियाएँ संपन्न की जाएगी।''[11]

मैकाइवर के अनुसार - ''व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ (tendancies) सामाजिक सरोकारों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं।''[12]

टॉलकाट पारसन्स लिखते हैं :- ''सामाजिक सरोकार मानवों के मध्य होने वाली अन्तक्रियाओं के संबंधो का सतत् एवं निरंतर प्रवाह का नाम है।''[13]

टॉनीज के अनुसार '' सामाजिक सरोकार इच्छा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। ये इच्छाएँ व्यक्तिगत और सामूहिक दोनो प्रकार की होती हैं।''[14]

सिमेल के अनुसार - ''समाज में व्यक्तियों के बीच जो संबंध होते हैं उन संबंधों के कारण अन्तः क्रियाओं का विकास होता है। यही अन्तः क्रियाएँ और सामाजिक सरोकार समाज के आधार होते हैं।''[15]

उपर्युक्त परिभाषाओं से कुछ तथ्य हमारे सामने निकलकर आते हैं कि व्यक्ति समाज में अनिवार्य रूप से निवास करता है और जीवन निर्वाह की उसकी कुछ आवश्यकताएँ होती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर पाने में व्यक्ति सक्षम नहीं है। अतः वह अन्य व्यक्ति, व्यक्तियों, समूह एवं समूहों से व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से संबंधों की स्थापना करता है। आपसी व्यवहारों के इन्हीं सरोकारों को सामाजिक सरोकार कहा जाता है। कुछ विद्धान सामाजिक सरोकार को व्यक्ति की इच्छाओं का परिणाम मानते हैं, तो कुछ विद्धान इसे परस्पर संबंधों से उत्पन्न अन्तः क्रियाओं का परिणाम मानते हैं। इन सबसे अलग भी कुछ पश्चिमी विद्धान सामाजिक सरोकार को लोकरीतियों, प्रथाओं, कानूनों का प्रतिफल भी मानते हैं। इस संबंध में महान समाजशास्त्री दुखिम कहते हैं '' व्यक्ति जिन सरोकारों का निर्माण और निर्वाह करता है उन पर कानून, लोकरीतियों और प्रथाओं का नियंत्रण होता है। यांत्रिक एकता के कारण सामाजिक सरोकार सामूहिक दबाव के कारण उत्पन्न होते हैं।''[16]

इसी प्रकार मैलिनोवस्की ने कुछ इस प्रकार लिखा है'' संस्कृति सामाजिक सरोकारों का आधार है। संस्कृति की विविध

इकाइयाँ सामाजिक सरोकारों का निर्धारण करती हैं।''[17]

उपरोक्त सभी विद्धानों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तियों के आपसी संव्यवहारों को सामाजिक सरोकार कहा जाता है। समाज में रहते हुए कोई भी व्यक्ति उसके सरोकारों से किसी भी स्थिति में बच नहीं सकता है। साहित्य भी सामाजिक सरोकारों की नीवं पर खड़ी होने वाली सुन्दर कृति ही है। सामाजिक सरोकारों को पाश्चात्य विद्धानों के मतों से समझने में बड़ी सहायता मिलती है और सामाजिक सरोकार के अर्थ को पुश्ट करने में विवेचित परिभाषाओं से ही सफल हो पाते हैं।

सामाजिक सरोकार - भारतीय विद्वानों के मत

सामाजिक सरोकार के संबंध में भारतीय विद्वानों के मत पाश्चात्य विद्वानों से कुछ अलग तथ्यों को सामने लाते हैं। मूलतः कहें तो कुछ भारतीय विद्वानों को छोड़कर सभी ने भारत के सामाजिक ढॉचागत व्यवहारों को आधार मानकर सामाजिक संबंधों (सरोकारों) के बारे में अपने विचार रखे हैं।

डॉ. राधाकमल मुकर्जी के अनुसारः ''व्यक्ति का समाज से अन्यान्याश्रित सरोकार है। मूलतः स्वभाव एवं उनके आपसी संबंध एक है इसलिए संसार व्यवस्था के सूत्र में बंधा हुआ है।''[18]

डॉ. डी. एस बघेल के अनुसार -'' व्यक्ति की क्रियाएँ सामाजिक सरोकारों की व्याख्या करती हैं। व्यक्ति सामाजिक जीवन में विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करते रहते हैं। यही क्रियाएँ सामाजिक सरोकार की आधारशीला होती हैं।''[19]

विद्याभूषण एवं डी. आर. सचदेव के अनुसार - ''समाज सामाजिक सरोकारों का ताना बाना है।''[20]

डॉ. मोटवानी के अनुसार - ''सामाजिक सरोकार व्यक्ति और समाज के सहयोग पर आधारित है। वास्तव में समाज का तात्पर्य उसके सदस्यों से है। यह उन सामाजिक सरोकारों का ढाँचा है जो कि उसके सदस्य बनाते हैं।''[21]

समाजिक सरोकारों के आधार पर साहित्य के सामाजिक सरोकारों का भी विवेचन करना अनिवार्य है इसलिए साहित्य शास्त्रियों के विचार जानना उचित होगा। इस संबंध मे कुछ विचार निम्न प्रकार हैं–

डॉ जेहीरूद्दीन रेफीयुद्दीन पठान के अनुसार - ''साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन तथा समाज का आपसी सरोकार है। संस्कृति और सभ्यता के विकास ने प्रत्येक व्यक्ति को समाज का एक अंग बना दिया है। अतः साहित्य में वैयक्तिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों का समावेश हो ही जाता है।''[22]

डॉ शीला शर्मा लिखती हैं– ''साहित्य बिना सामाजिक सरोकार के लिखा ही नहीं गया है। चाहे वह किसी भी भाषा में क्यों न लिखा गया हो। रामचरितमानस जीवन शिक्षा ग्रंथ है, कबीर के दोहे जीवन की सीख हैं, कवि रहीम की कविता व्यावहारिक शिक्षा (नीति), हिन्दी साहित्य के तमाम साहित्यकारों की रचनाएँ भारतीय सामाजिक विडम्बनाओं को ही बयां करते हैं, जो कि सामाजिक सरोकारों को प्रकट करते हैं।''[23]

विभिन्न विद्वानों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक सरोकार व्यक्ति और समाज के मध्य के अन्तर्व्यवहारों को व्यक्त करता है। समाज के विकास के लिए व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास आवश्यक होता है। इसलिए समाज के सदस्यों के व्यक्तित्व के विकास से ही समाज का विकास संभव हो सकता है। व्यक्ति के सरोकार उसके जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़े होते हैं। वहीं साहित्य समाज के प्रत्येक पहलुओं को व्यक्त करता है इसीलिए हमें प्राचीनकाल से अब तक के सभी साहित्यकारों की रचनाएँ हमारे जीवन से जुड़ी हुई नज़र आती हैं। सामाजिक सरोकार में केवल सहयोग और मैत्रीपूर्ण संबंध ही नहीं होते इसके अन्तर्गत एक दूसरे के प्रति अमैत्रीपूर्ण संबंधो का भी विवेचन किया जाता है।

अतः यह कहना अधिक उचित होगा कि सामाजिक सरोकार समाज के सभी सकारात्मक और नकारात्मक संबंधों का समायोजन अपने अंदर करता है। साथ ही साहित्य इन्हें अपने में अभिव्यक्त करने में अधिक सक्षम है।

सामाजिक सरोकार के अंग

निरन्तर विकास करना मानव का स्वभाव है और परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल

तक मनुष्य ने हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापति किया है। अंतरिक्ष में, समुद्र की गहराईयों तक, विशाल मशीनों, कारखानों का आविश्कार, मशीनों की ऱ्तार, डिजिटल स्क्रीन, यह सब मानव मास्तिश्क के निरन्तर विकास का ही परिणाम है। मानव समाज में होने वाले प्रत्येक घटनाक्रमों से व्यक्ति प्रभावित होता है या समाज को प्रभावित करता है। मनुष्य समाज में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन से प्रभावित होता है।

सामाजिक सरोकारों के अंगो की चर्चा कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं के अन्तर्गत कि जा सकती हैः-

सांस्कृतिक अंग

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है। मनुष्य स्वभावत : प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारो ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन- पद्धति, रीति -रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार नवीन अनुसन्धान और अविश्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के स्तर से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, संस्कृति का अंग है। संस्कृति के द्वारा मनुष्य के मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। लोक व्यवहार की संचित निधि को हम संस्कृति कह सकते हैं। शिवदत्त ज्ञानी कहते हैं ''किसी समाज, जाति अथवा राष्ट्र के समस्त व्यक्ति के उदान्त संस्कारों के पुंज का नाम उसकी संस्कृति है। किसी भी राष्ट्र के शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास संस्कृति का मुख्य उद्देश्य है।''[24]

किसी भी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों में विकसित होने वाली संस्कृति एक दूसरे से भिन्न हो सकती है। मानव समूह की भिन्नता उसकी सांस्कृतिक भिन्नता के कारण ही अलग पहचान बनाती है। लोक में प्रचलित रीति-रिवाज़, देववाद, पूजा-पाठ, अंधविश्वास, वर्णाश्रम, बलि-प्रथा, विवाह-प्रथा, जन्म-मृत्यु संस्कार, कर्मयोग, धार्मिक अनुष्ठान आदि संस्कृति के अन्तर्गत ही निहित है जिसका निरन्तर संचरण धर्म और शिक्षा के माध्यम से होता आ रहा है। इन सभी का सीधा संबंध व्यक्ति का और समाज का ही होता है।

धार्मिक अंग

प्रत्येक व्यक्ति मानव समूह में रहते हुए किसी न किसी धर्म से अवश्य जुड़ा होता है। मानव के कल्याण के लिए एवं ईश्वर की आराधना के मार्ग के रूप में धर्म का निर्माण हुआ। विश्व के अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में अलग - अलग धर्मों का विकास हुआ। सभी का मूल उद्देश्य रहा है ईश्वर की इबादत और मनुष्य का कल्याण। व्यक्ति जिस भी धर्म से जुड़ा होता है उस धर्म के रीति-रिवाजों, नियमों, प्रयासों, त्यौहारों, व्रतों एवं वेश-भूषा को धारण करता है एवं पालन करता है। धर्म का सीधा संबंध मानव के विशेष समूह से होता है और व्यक्ति उस समूह का आवश्यक अंग होता है।

सामाजिक अंग

समाज के अधिकांश सदस्य किसी विशिष्ट दशा एवं व्यवहार प्रतिमानों को अवांछित और आपत्तिजनक मान लेते हैं। तब उसे सामाजिक समस्या कहा जाता है। मानव जीवन एक सरल रेखा की तरह नहीं है। इसमें अनेक प्रकार के उतार चढाव आते रहते हैं। मनुष्य संघर्ष करते हुए अपने जीवन को बेहतर बनाने का निरंतर प्रयास करता है। मनुष्य की अनेक समस्याएँ उसे दयनीय और कश्टपूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर कर देती हैं। ये समस्याएँ उसकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती हैं और इससे एक वर्ग का निर्माण होता है जिनकी आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक दशा लगभग समान होती है।

समाज में गरीबी, बेरोजगारी, हिंसा, निरक्षरता, नशाखोरी जैसी समस्याएँ व्यक्ति को निम्नतर जीवन जीने के लिए बाध्य कर देती हैं। ऐसी समस्याएँ समाज में असमानता का कारण बनती हैं और समाज में संघर्ष एवं टकराव की स्थिति को निर्मित

करती हैं इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिकता जातीय एवं रंग-भेद, नस्ल-भेद, नक्सलवाद एवं आतंकवाद जैसी अनेक समस्याएँ हैं जो कि सामाजिक सरोकार से जुड़ी हैं। सामाजिक समस्याओं के संबंध में समाज शास्त्री राम अहूजा का मत है - ''मादक द्रव्यों का सेवन, मद्यपान, आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी और अपराध व्यक्तिगत समस्याएँ नहीं हैं, यह वह समस्या है जो जनसाधारण को सामान्य रूप से प्रभावित करती हैं।''[25]

रोजगार एवं व्यवसाय

व्यक्ति का प्रत्यक्ष और परोक्ष संबंध अर्थ अर्जन के ससाधनों से होता है। व्यक्ति को सामाजिक प्रतिश्ठा एवं विशिष्ट स्थान प्रदान करनें में महत्वपूर्ण हाथ रोजगार एवं व्यवसाय का होता है। राम अहूजा के शब्दों में ''रोजगार व्यक्ति को शक्तिशाली बनाता है। यदि सक्षम और शक्ति रखने वाला व्यक्ति काम करने से इंकार करता है या उसे काम नहीं मिलता है तो न केवल उसे समाज में प्रतिष्ठा मिलती है अपितु वह अनेक भावनात्मक एवं सामाजिक समस्याओं से भी ग्रसित हो जाता है।''[26]

इस प्रकार व्यक्ति अपने व्यवसाय एवं रोजगार के माध्यम से अपना, अपने परिवार और अपने समाज को प्रगति के मार्ग में प्रशस्त करने का श्रेष्ठ प्रयास करता है, जिससे उसकी समाज में सम्मानजनक स्थिति बनती है।

शिक्षा

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीनकाल में शिक्षा मौखिक हुआ करती थी और धार्मिक ग्रंथों पर आधारित होती थी। लिपि के विकास के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का मूलाधार है। भारत की शिक्षा के संबंध में राम अहूजा कहते हैं– ''शिक्षा को साधारण रूप से और साक्षरता को विशेष रूप से देश की विकास प्रक्रिया में स्थान दिये बगैर भारत को संगठित राष्ट्र बनाने की कल्पना पूर्ण नहीं हो सकती।''[27]

इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी देखें तो विकसित राज्यों के विकास के पीछे उनके सुशिक्षित समाज की अहम भूमिका रही है। शिक्षित समाज अपने राष्ट्र के प्रति भी अधिक ईमानदार होता है और सामाजिक परिवर्तनों को अधिक सहजता से स्वीकार करने को तैयार होते हैं। लोगों की राजनीतिक समझ, नैतिक जिम्मेदारी, आर्थिक विकास में सहभागिता जैसी अपेक्षाएँ एक सुशिक्षित समाज से ही की जा सकती हैं। शिक्षा का समाज और उसके विभिन्न तत्वों से सीधा सरोकार होता है।

राजनीतिक अंग

समाज का अपना एक स्वतन्त्र स्वरूप और व्यवस्था होने के बावजूद देश की राजनीति उसे प्रभावित करती है। एक तरह से राजनीति मानव जीवन का अपरिहार्य अंग और कठोर सत्य है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में राजनीति से जुड़ा देखा जा सकता है। यह राजनीति समाज और राष्ट्र दोनों की राजनीति हो सकती है। यह बात सत्य है कि राजनीति और उसके प्रभाव मानव जीवन को प्रभावित करते हैं और इसके कारक साहित्य में अभिव्यक्ति पाकर साहित्य के सामाजिक सरोकार के रूप में सामने आते हैं। आज भ्रष्टाचार और दूसरी राजनीतिक समस्याओं को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता अपने अपने स्तर पर जो कुछ भी कर रहे हैं वह साहित्य में स्थान पाकर साहित्य के सामाजिक सरोकारों को स्पष्ट कर रहे हैं। ऐसा प्राचीन काल से होता आ रहा है और अब भी हो रहा है जबकि हम स्वतंत्र हैं। हमारा अपना लोकतन्त्र है किन्तु लोकतन्त्र जब समाज को रास नहीं आता तो सामाजिक कार्यकर्ता अपनी राजनीति के साथ समाज का नेतृत्व करते हैं और व्यवस्था के खिलाफ अपनी आवाज उठाते हैं। उनकी इस आवाज़ को साहित्य ही सबसे पहले और मज़बूत तरीके से बुलंद करता है। अतः समाज और राजनीति के बीच समन्वय बनाए रखना और व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाना समाज और राजनीति की दृष्टि से साहित्य का एक सामाजिक सरोकार है।

सामाजिक चेतना के विविध आयाम और समसामयिक विषय

''सामाजिक जागरण का कार्य मुख्य रूप से उन लेखकों द्वारा सम्पन्न होता है जो स्वयं सामाजिक चेतना से सम्पन्न होते हैं। समाज में विपरीत अर्थात प्रतिकूल परिस्थितियों में कुछ ऐसी प्रतिभाएँ उभर कर सामने आती हैं जिन्हें सामाजिक व्यवस्था के नए-नए किन्तु कटु अनुभव होते हैं -ये प्रतिभाएँ समझती हैं कि ऐसी परिस्थितियाँ व्यक्ति व समाज के विकास में बाधक हैं।''[28] व्यक्ति के परिवेश में ऐसी परिस्थितियाँ व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था, भ्रश्टाचार, मानवीय मूल्यों के ह्रास, पारिवारिक विघटन, नारी-पुरुषों के सम्बन्धों में द्वन्द्व, सामाजिक संघर्ष व व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द्व, प्रवासी मजूदरों व बाल श्रमिकों के शोशण, लोक विश्वास व अन्धविश्वास और सामाजिक रीतियों व कुरीतियों से जनित समस्याएँ हो सकती हैं। इन सबसे निपटने के लिए व्यक्ति अथवा समाज साहित्य का सहारा लेता है और साहित्य की शक्ति के सन्दर्भ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा है कि, ''साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नही पाई जाती है।''[29] अतः इसी शक्ति के सहारे साहित्यकार उस व्यवस्था और हितो को ठेस पहुँचाती है। जैसे कि महिलाओं और बालकों का शोषण, किसानों एवं मजदूरों का शोषण, पूंजीवादी व्यवस्था और इससे जनित किसान, मजदूर व आम जनता की बुरी दशा। जब साहित्य में इनका चित्रिण किया जाता है तो इसका सीधा सम्बन्ध समाज से जुड़ता है। इस तरह से पारिवारिक विघटन के कारण जब व्यक्ति के जीने के तौर-तरीके प्रभावित होते हैं तो साहित्यकार इस बिखराव को रेखांकित करके व्यक्ति को यह एहसास कराता है कि वह समाज का महत्वपूर्ण अंग है। लोक विश्वासों के प्रति विश्वास रखने के बावजूद अंधविश्वासों से बचने की प्रेरणा भी साहित्य देता है। साहित्यकार एक व्यक्ति के तौर पर स्वयं भी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करता है और समाज को भी इसके लिए प्रेरित करता है।

अतः हम कह सकते हैं कि साहित्यकार के माध्यम से साहित्य और समाज को जोड़ने वाला प्रत्येक कारक सामाजिक सरोकार का आधार है और इस आधार पर टिका साहित्य और समाज का हर सम्बन्ध साहित्य के सामाजिक सरोकार का अंग हैं। यही इकाई व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने, अपने सुखात्मक व दुखात्मक क्षणों के द्वन्द्व व अन्तर्द्वन्दों से उबारने और जीवन यापन के लिए एक नई किन्तु विकासात्मक दिशा देने का प्रयास करता है। साथ ही हम यह भी कह सकते हैं कि सामाजिक सरोकार साहित्य को नवीनतम विषय वस्तु देते हैं तो साहित्य भी इस विषय वस्तु की डाल पर भविष्य के फूल खिलाकर समाज को अपार देता है और समाज साहित्य के दर्पण में इन फूलों की पगडण्डी पर बिखरे काँटों को पहचान कर अपने पाँवों को मजबूत करना और काँटों से दामन को बचाना सीख सकता है - और सीखने का यह विश्वास ही साहित्य और समाज के सम्बन्ध को प्रगाढ़ बनाता है। अतः साहित्य और समाज का एक दूसरे के प्रति गहरा लगाव और विश्वास ही सबसे बड़ा सामाजिक सरोकार है– बाकी सभी सरोकार इसकी छाया तले पलते हैं।

सामाजिक सरोकार का महत्व

समाजिक सरोकारों का जीवन में विशेष महत्व है, व्यक्ति समाज के साथ व्यवहार करते और संबंध बनाने के साथ अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए निरन्तर प्रयास करता है। मनुष्य समाज में अच्छे स्थान की प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करता है। अपनी आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति को सुधारने और अपनी प्रतिश्ठा में सुधार करने के लिए लगातार विभिन्न प्रकार के प्रयत्न करता रहता है।

समय के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों का दायरा भी बढ़ता जा रहा है। मानवीय मूल्यों के बदलते प्रतिमानों के कारण साहित्य में भी नवीन मूल्यों और विशयों का समावेश होना भी लाजिमी है। तत्तकालीन समय मानवीय मूल्यों के घटते महत्व एवं आर्थिक लाभ की दौड़ का समय है। भ्रष्टाचार, आंतकवाद जैसी समस्याओं से विश्व जूझ रहा है। आज दया, करूणा, सहयोग और नैतिकता जैसी संवेदनाएं केवल शब्द बनती नजर आ रही हैं। इस संबंध में डॉ. सुमन सिंह जी लिखती है - ''वर्तमान समय संक्रमण का युग है। मानवीय गौरव में विश्वास और आस्था क्रमशः समाप्त हो रही है। वैज्ञानिक प्रगति तथा

प्रोद्यागिक विकास ने मानव मूल्यों को दूर तक प्रभावित किया है। आणविक की विभीषिका के कारण मानव अस्तित्व के समक्ष अनेक प्रश्न-चिन्ह खड़े हो गये हैं। आज देश और समाज की नैतिक व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गयी है। युग की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषमताओं ने व्यक्ति पर कुछ ऐसा बोझ दिया है, जिससे उसकी सहज उदान्त प्रवृत्तियाँ कुण्ठित हो गयी हैं।''[30]

व्यक्ति समाज का अंग है और समाज व्यक्ति के बिना निराधार है। व्यक्ति के समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करना महत्वपूर्ण है तथा सामाजिक सरोकारों का महत्व भी इसीलिए आवश्यक है कि व्यक्ति के लिए समाज सबसे आवश्यक संस्था है, जिसके अभाव में मानव का अस्तित्व ही संभव नहीं है। सामाजिक सरोकार के महत्व का विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत करने का प्रयास किया जा रहा है कि आखिर सामाजिक सरोकार होना क्यों आवश्यक है–

सामाजिक विकास के लिए

समाज एक मानवीय संस्था है, जो स्थायी है किन्तु व्यवहारों के माध्यम से निरन्तर गतिशील है। सामाजिक मान्यताओं में समय के साथ साथ परिवर्तन होते रहते हैं। समाज में कोई न कोई बुराई किसी न किसी रूप में विद्यमान होती है। जिनके सुधार के लिए कई प्रकार के प्रयत्न किये जाते हैं। कई सामाजिक आंदोलन या नियम इन बुराईयों को दूर करने लिए बनाए जाते हैं और समाज में साकारात्मक परिवर्तन के लिए सामाजिक सरोकार का विशेष महत्व है। भारतीय समाज की बात करें तो प्राचीन काल से अब तक विहंगम दृष्टि डालें तो पता चलता है कि समाज की परम्पराओं के नाम पर अनेक कुरीतियों ने अपना घर कर लिया है। इन कुरीतियों में बाल -विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा, छुआ-छूत, अस्पृश्यता, देवदासी-प्रथा जैसे कई परम्पराएँ थी जिनका त्याग अति आवश्यक था। समाज में व्याप्त इन कुरीतियों का त्याग और नवीनता को अंगीकार किया जाना सामाजिक सरोकारों का ही नतीजा है। किसी भी प्रथा से कोई विशेष वर्ग प्रभावित होता है या प्रताड़ित होता है, इसमें समाज दो वर्गों में विभाजित हो जाता है प्रथम शोषक वर्ग और द्वितीय शोषित वर्ग, एक वर्ग किसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए नियमों को दूसरे वर्ग पर थोपने का प्रयास करता है। कालान्तर में जब शोषित वर्ग में चेतना (जागृति) का संचार होता है, तो वे अपने अधिकारों के लिए सजग होकर सामाजिक परिवर्तन के लिए आंदोलन का मार्ग चुनते हैं। सामाजिक सरोकार के कारण ही इस प्रकार के सामाजिक बदलाव संभव हो पाते हैं।

सांस्कृतिक विकास

हर देश की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। समाज में सांस्कृतिक विकास के लिए भी सामाजिक सरोकार अपना विशेष महत्व रखता है। भारत में भौगोलिक विषमताओं के साथ साथ सांस्कृतिक विषमताएं भी पर्याप्त है। भारत विश्व के क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँचवे और जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है और इतने विशाल क्षेत्रफल में अनेक जाति एवं धर्म के लोग निवास करते हैं। सभी की अलग - अलग मान्यताएँ एवं परंपराएँ है। सभी जाति और समुदाय के लोग अपने समुदाय से जुड़ने के साथ ही अन्य समुदायों से भी व्यवहार करते हैं। प्रत्येक समुदाय अपने वर्ग के विकास के लिए मिलकर प्रयास करते हैं। जिसके कारण वह अपने लोगों में शिक्षा का प्रचार- प्रसार करना, आर्थिक मदद करना, विवाह-संस्कारों एवं अन्य संस्कारों में सकारात्मक परिवर्तन को स्वीकार करने एवं समाज की दृष्टि से पिछड़ी हुई परम्पराओं एवं रूढ़ियों का त्याग करना, जैसे कार्यों को अवश्य करते हैं ताकि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी विकास की गति में शामिल हो सकें। विभिन्न वर्गों एवं समुदायों में त्यौहार, पर्व, संस्कारों को मनाने के अलग- अलग विधि- विधान होते हैं जिनमें लोक कलाओं का भी विशेष स्थान होता है। लोक कलाओं में उनकी जाति एवं वर्ग से संबंधित विशेष छटा देखने को मिलती है। लोक कला के माध्यम से परंपराओं के बखान के साथ-साथ समाज में व्याप्त बुराइयों पर भी चोट करने का प्रयास किया जाता है और लोगों को शिक्षित और जागृत करने का प्रयास भी किया जाता है। शिक्षा का व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में विशेष योगदान होता है। शिक्षा व्यक्ति, समाज और सांस्कृति विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। इस संबंध में डॉ. व्यंकट किशन राव पाटिल

कहते हैं–

''सामुदायिक भावना, राष्ट्र निर्माण तथा एकता एवं सामाजिक नियंत्रण के लिए शिक्षा सहायक सिद्ध होती है। समाज सुधार तथा संस्कृति की रक्षा की भावना के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है।''[31]

समुदायिक भावना रखने वाला व्यक्ति अवश्य ही अपने समुदाय के विकास के लिए प्रयास करता है और अपने समाज के सांस्कृतिक पक्ष को विकसित करने का यत्न करता है। इस प्रकार सांस्कृतिक विकास के लिए सामाजिक सरोकार का विशेष महत्व है।

राजनैतिक विकास के लिए

समाज का एक महत्वूपर्ण अंग है राजनीति। समाज में रहकर ही व्यक्ति राज्य के नियमों एवं कल्याणकारी नीतियों से अवगत होता है। समाज से जुड़ा हुआ व्यक्ति राजनीति के माध्यम से समाज के उत्थान के लिए विशेष परिश्रम करता है। कोई भी नेता या सरकार नागरिकों के बेहतर जीवन स्तर के लिए अनेक योजनाएँ बनाती हैं। सरकार लोक कल्याणकारी तभी हो सकती है, जब सरकार से जुड़े हुए लोग समाज के उत्थान के लिए विशेष परिश्रम करते हैं। प्रत्येक राजनीतिज्ञ नागरिकों के बेहतर जीवन स्तर के लिए नई-नई योजनाओं को तैयार कर रहे हैं। सरकार लोगों के लिए कल्याणकारी तभी हो सकती है, जब सरकार से जुडे हुए लोग समाज के कल्याण, विकास के लिए सकारात्मक सोच रखते हों समाज के महत्व को अपने व्यक्तिगत महत्व से अधिक श्रेष्ठ मानते हो, और अपने स्वार्थ को त्यागकर जनकल्याण के बारे में सोचते हो, वे राजनीति में सफलता भी प्राप्त करते हैं और समाज से यही लगाव राजनैतिक विकास के लिए प्रेरित करता है।

आज राजनीति में अनेक बुराइयाँ समा चुकी हैं जातीय राजनीति, धार्मिक एवं साम्प्रदायिक राजनीति, निश्पक्ष चुनाव न हो पाना, राजनीति में लालची लोगों का प्रवेश, राजनीति को दूषित और बदनाम करने का काम कर रहा है। यही कारण है कि देश का युवा, शिक्षित वर्ग राजनीति से किनारा कर रहा है। अगर देश का शिक्षित और पढ़ा - लिखा वर्ग राजनीति में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास करें और उसमें सुधारे करे तो राजनीति में सुधार होगा। इसमें सामाजिक -सरोकार अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उपन्यासकार, साहित्यकार समाज के प्रति अपना सर्वस्व त्याग करके राजनीति की इस तस्वीर को बदलने का साहस रखते हैं। राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए सामाजिक सरोकार का होना अति आवश्यक है।

तर्कपूर्ण भौतिक विकास के लिए

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और समय के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन भी आवश्यक है। आदिकाल में मनुष्य अपने व्यवहारिक जीवन में प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते थे। जैसे ही वैज्ञानिक जीवन का प्रारम्भ हुआ मनुष्य ने मशीनों का उपयोग करना शुरू किया और उसके साथ ही मानव जीवन में अनेक परिवतर्न होने लगे। धीरे-धीरे भौतिक संसाधनों का प्रभाव हमारे समाज पर पड़ने लगा। मशीनों, तकनीकों और अन्य साधनों के उपयोग से जीवन में सुगमता तो आई है साथ ही जीवन के लिए नए-नए खतरे भी पैदा हो रहें हैं।

समाजिक सरोकार हमें भौतिक विकास के लिए प्रेरित तो करता है, किंतु साथ ही हमें अन्धानुकरण और दुष्प्रभावों से भी सचते करता है। मानव समाज से यदि हम सरोकार रखते हैं और उसके कल्याण की कामना करते हैं तो हमें ऐसी मशीनों का उपयोग करना होगा जो सुविधा प्रदान करने के साथ हमारे स्वास्थ्य पर कोई विपरीत प्रभाव न डाले। साहित्य के सामाजिक सरोकार इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आर्थिक सबलता में सहयोग

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार आर्थिक सबलता को माना जाता है। आर्थिक सबलता के आधार पर ही मनुष्य

अच्छी शिक्षा, व्यवसाय, कोशल आदि ग्रहण कर सकता है। सामाजिक मूल्यों को महत्व देने वाला व्यक्ति समाज में अपना विशेष स्थान बना पाने में सफल होता है, जिससे उसे लोगों का सहयोग प्राप्त होता है। सहयोग और सौहार्द्रपूर्ण माहौल के कारण व्यक्ति व्यापार एवं व्यवसाय को अधिक सुगमता से कर सकता है। आर्थिक संपन्नता या विपन्नता के लिए शिक्षा और जनसंख्या को मुख्य आधार माना जाता है। किन्तु जब भारत के संबंध में विश्लेषण किया जाता है तो, कुछ और ही तथ्य सामने आते हैं जैसे परम्परा एवं वर्ण -व्यवस्था। अशिक्षा के कारण व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण मामलों में सही निर्णय नहीं ले पाता है। जिसके कारण व्यक्ति बुरी संगत में पड़ जाता है। समाज के सभी वर्गो के अर्थात् मानव समाज के विकास के लिए सामाजिक सरोकार का विशेष महत्व है। समाज के मानवीय मूल्यों से जुड़ा हुआ व्यक्ति ही समाज के कल्याण की सोच रखता है और उसके लिए हर संभव परिश्रम करता है।

मानवीय संवदेनाओं की रक्षा

मानवीय संवेदनाओं की रक्षा मानवता की समृद्धि और सामाजिक समरसत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। संवदेना के माध्यम से ही हम अपने साथी मानवों के सुख-दुख को समझ सकते हैं, जिससे एक सहानूभूति की भावना उत्पन्न होती है। इससे ही समाज में सद्गुणों को सांझा किया जाता है और हम एक दूसरे के साथ जुड़ कर रहते है, जो एक स्वस्थ और समृद्ध समाज की नीवं रखते है।

समाज में होने वाले परिवर्तन से मानवीय मूल्यों का ह्रास भी हो रहा है जो कि चिंताजनक विशय है। समाज की ऐसी कई तस्वीरें उभरकर सामने आ रही है जहां एक तरफ सरकारी योजनाओं के नाम पर अरबों रुपये गरीबों के उत्थान के नाम पर बड़े अधिकारी और कर्मचारी अपनी तिजोरियो में भर रहे हैं तो वहीं गरीब जनता की स्थिति दिन प्रतिदिन शोचनीय होती जा रही है। देश का किसान जो कि देश का अन्नदाता है आत्महत्या करने पर मजबूर है। यह काफी दुःखद है वहीं किसानों के विकास की अनेक योजनाओं के नाम पर रूपयों का खेल खेला जा रहा है।

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् यह कहना उचित होगा कि बिना सामाजिक सरोकार के व्यक्ति कोई भी व्यवहार नहीं कर सकता। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य एवं व्यवहार का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संबंध समाज से होता है। उसके प्रत्येक कार्य का प्रभाव समाज पर पड़ता है। विभिन्न मामलों में सामजिक सरोकार का विशेष महत्व है।

अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक सरोकार का समृद्धि, समरसता और समृद्धि की दिशा में विशेव महत्त्व है, क्योंकि यह सामाजिक समृद्धि और अच्छे समरस समाज की रूपरेखा बनाए रखने में मदद करते हैं। यह समृद्धि की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों को शामिल करने में मदद कर सकता है और न्याय, समानता और अधिकार के मूल्यों की सुरक्षा कर सकते हैं। किसी एक व्यक्ति की यह जिम्मेदारी नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा और निःस्वार्थ समाजसेवा करनी होगी तभी हम समाज में बांछित परिवर्तन लाने में सफल हो पायेंगे और इसके लिए आवश्यक है समाज से अटूट रिश्ता स्थापित करना।

हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका आरम्भ भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ हुआ और यह साहित्य को समृद्धि, विचारशीलता और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रेरित करता रहा है।

सामाजिक सरोकार की पहली अभिव्यक्ति संस्कृत साहित्य में हुई, जहां विभिन्न शास्त्रों में सामाजिक न्याय और कर्तव्य के विषयों पर चर्चा होती थी। मध्यकालीन काव्य और प्रबंध साहित्य ने भी समाज के मुद्दों और मानवीय संबंधों को प्रस्तुत किया गया। डॉ. जेहिरूद्दीन इस संबंध में कहते हैं - ''किसी भी साहित्य के अध्यय से तत्कालीन समाज का तथा उसकी संस्कृति का आंकलन एवं ज्ञान होता है।''[32]

हिन्दी साहित्य काफी विस्तृत एवं विशाल है जिसका विवचेन संभव नहीं किंतु संक्षिप्त रूप में एक प्रयास किया जा सकता है। हिंदी साहित्य के सामाजिक सरोकार को निम्न बिन्दुओं में व्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा है–

आदिकालीन हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

आदिकालीन हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार एक महत्वपूर्ण पहलु है, जिसमें समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे धर्म, सांस्कृतिक विविधता, राजनीति और सामाजिक विघटन पर चिन्तन होता था। इस समय के कवियों ने अपनी कविताओं और रचनाओं के माध्यम से समाज की समस्याओं और समृद्धि के मार्गों पर विचार किया। आदिकालीन साहित्य में तंत्र-मंत्र, ब्राह्मडंबर, प्रेम, वीरता, काम, क्रोध, वात्सल्य आदि का वर्णन ही विस्तृत रूप से मिलता है। आदिकालीन रचनाओं के प्रमुख कवि जगनिक की एक कविता है–

"बारह बरस ले कूकर जीऐ, औ तेरह लै जिए सियार।
बरिस अठारह छत्रि जिऐ, आगे जीवन को धिक्कार।"[33]

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

मध्यकाल का समय 1350 ई0 से 1850 ई0 के विस्तृत और विशाल कालावधि मे रचे गये साहित्य को माना गया है। जिसे पूर्व मध्यकाल या भक्तिकाल और उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल दो उप-कालखण्डों में विभाजित किया गया है।

भक्तिकाल :- भक्तिकालीन साहित्य में 'जन' के विषय समाहित किए जाने लगे। राजाओं की प्रशंसा की जगह अब आम लोगों के दुख-दर्द को साहित्य का विशय बनाया जाने लगा। कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी जैसे प्रमुख कवियों ने समाज कल्याण में अपने काव्य के माध्यम से योगदान दिया।

रीतिकाल :- इस काल की कविता में पांडित्य प्रदर्शन ही अधिक मिलता है। रस, छंद और अंलकारों का प्रचुर प्रयेाग इस काल के कवि करते थे। केशव दास, सेनापति, भूषण बिहारी, बोधा, ठाकुर आदि कवियों ने रीति ग्रंथों की रचना की और शासन तथा समाज से जुड़े विषयों को भी अपनी कविता का मूल विषय बनाया।

आधुनिक कालीन साहित्य में सामाजिक सरोकार :- आधुनिक काल को साहित्य की नवीन विधाओं का स्वर्णयुग कहना ही ठीक होगा। हिन्दी साहित्य में गद्य की अनेक विधाओं का विकास आधुनिक काल में ही हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रतापनारायण मिश्र आदि साहित्याकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से लोगों को जागृत किया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य के सरोकार काफी विस्तृत है और यह समय के साथ-साथ और भी अधिक विस्तार प्राप्त करते जा रहे हैं। समाज और साहित्य का अटूट रिश्ता रहा है अर्थात् साहित्य के अवलोकन, अध्ययन एवं विश्लेशण से उसके सरोकारों को स्पष्ट किया जाता है। इसके सरोकार हर वर्ग, हर क्षेत्र और मनुष्य की हर -एक भावनाओं और संवेदनाओं से जुड़े हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. रवीन्द्रनाथ , भारतीय समाज व संस्कृति, सरस्वती सदन प्रकाशन दिल्ली, अष्टम संस्कारण 1983, पृ. 28-29
2. डॉ. सम्पूर्णानंद, समाजवाद पृ. 19
3. https:/hi.onfordictoinaries.com/definition

4. समचन्द्र वर्मा (संपा), प्रामाणिक हिन्दी कोश, पृ. 98
5. रमांशकर शुक्ल 'रसाल' (संपा) भाषा शब्द कोश, पृ. 1812
6. श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, पृ. 4968
7. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, राजनीति और दर्शन, पृ. 107
8. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (पाँचवा खण्ड), पृ. 302
9. कालिका प्रसाद सहाय, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव (संपा, बृहद हिन्दी कोश, पृ. 1385
10. रामचन्द्र वर्मा (संपा), प्रामाणिक हिन्दी कोश, पृ. 1294
11. Webermax: The theory of social and economic organization
12. बघेल डॉ डी. एस उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 209
13. Sorokin pritimAlexanderovich : society , culture and personality page :- 219
14. बघेल डॉ. डी. एस : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 211
15. बघेल डॉ. डी. एस : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 212
16. बघेल डॉ. डी. एस : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 210
17. बघेल डॉ. जी एसः उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 210
18. बघेल डॉ. जी एसः उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 271
19. बघेल डॉ. डी. एस : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 206
20. विद्याभूषण एवं डी. आर. सचदेव- समाज शास्त्र के सिद्धाँत, पृ. 67
21. बघेल डॉ. डी. एस : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धाँत, पृ. 272
22. पठाण डॉ. जेहीरूद्दीन रेफियुद्दीन - दिनेश नंदिनी डालमिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपन्यास, पृ. 70
23. गिरहे संतोष (संपा) : साहित्य और उसके सामाजिक सरोकार, पृ. 203
24. पाटिल डॉ व्यंकट किशनराव : मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का सामाजिक सरोकार, पृ. 62
25. अहूजा राम : सामाजिक समस्याएँ, पृ. 01
26. अहूजा राम : सामाजिक समस्याएँ, पृ. 71
27. अहूजा राम : सामाजिक समस्याएँ, पृ. 256
28. सुनीता आनन्द, प्र, शो., प्र) उदयभानु हंस के काव्य में सामाजिक चेतना, पृ. 39
29. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, साहित्य की महत्ता, पृ. 06
30. सिंह डॉ. सुमन हिन्दी साहित्याकारों के सामाजिक सरोकार, पृ. 19
31. पाटिल डॉ. व्यंकट किशनराव : मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का सामाजिक सरोकार, पृ. 47
32. पठाण डॉ. जेहीरूद्दीन रेफियुद्दीन - दिनेश नंदिनी डालमिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपन्यास, पृ. 70
33. शुक्ल आ. रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 54

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

पवन पहाड़िया का रचना संसार : एक परिचयात्मक अध्ययन

रामनिवास
शोधार्थी, श्री बलदेव राम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर
सम्बद्धता - महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।
डॉ. भूपेश
शोध निर्देशक, सहायक आचार्य, श्री बलदेव राम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर
सम्बद्धता - महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

शोध सारांश - प्रस्तुत शोध आलेख पवन पहाड़िया के व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालता है। इसमें उनके प्रारंभिक जीवन, मातृभूमि के प्रति लगाव एवं संस्कारों का परिचय दिया गया है। पवन पहाड़िया रचनाकर्म के साथ-साथ व्यावसायिक रूप से सफल जीवन जी रहे है, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है। पवन जी की राजस्थानी एवं हिंदी दोनों भाषाओं में लगभग 33 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न समाचार पत्र -पत्रिकाओं में सैंकड़ों रचनाएं छपी है। प्रस्तुत शोध आलेख पवन पहाड़िया के शुरुआती समय, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन, उनकी उपलब्धियों और उनके रचना संसार का मूल्यांकन करते हुए आधुनिक संदर्भो में उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित करता है, जिसमें उनकी साहित्य साधना को रेखांकित करते हुए राजस्थान के बाल साहित्य में उनके अतुलनीय योगदान को यथासंभव दर्शाने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द - पवन पहाड़िया, बाल साहित्य, समाहार सतसई, कुंडलियाँ, बाल पहेलियाँ, बाल गीत।

शोध आलेख

किसी भी रचनाकार का व्यक्तिगत जीवन, उसका परिवेश और भोगा हुआ यथार्थ उसकी सृजन-प्रक्रिया की मुख्य ऊर्जा होती है। साहित्य मूलतः समाज, संस्कृति और लेखक के अपने निजी अनुभवों के ताने-बाने से आकार लेता है। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से लेकर इक्कीसवीं सदी के दौरान हिंदी और प्रांतीय भाषाओं के बाल साहित्य में जो आधारभूत और गुणात्मक बदलाव आए हैं, उनमें पवन पहाड़िया का चिंतन और लेखन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पहाड़िया जी की साहित्य साधना के संबंध में प्रसिद्ध समालोचक दिविक रमेश का मानना है - "पवन पहाड़िया ने बाल साहित्य को महज उपदेशात्मक या काल्पनिक परी कथाओं के पारंपरिक ढर्रे से बाहर निकालकर समकालीन जीवन के यथार्थ, तर्क और वैज्ञानिक सोच से जोड़ा। पवन पहाड़िया के बाल साहित्य का संसार बच्चों की जिज्ञासाओं, उनके प्रश्नों, उनकी भली हरकतों आदि के सहज और समझदार चित्रण का है।"[1]

इन्होंने राजस्थानी भाषा के संरक्षण एवं संवर्द्धन में महती भूमिका अदा की है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक पहचान दिलाने के आंदोलन में पवन पहाड़िया अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। इनकी रचनाएँ राजस्थानी एवं हिंदी साहित्य के मध्य सेतु की भूमिका निभाती हैं।

लेखक परिचय : जीवन-यात्रा, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं व्यावसायिक जीवन

पवन पहाड़िया की प्रकाशित पुस्तकों [2] से उनके जीवन और साहित्यिक यात्रा की यथेष्ठ जानकारी प्राप्त होती है कि उनका जन्म 9 जून 1955 को राजस्थान के नागौर जिले के 'डेह' कस्बे में हुआ। नागौर की माटी, इस माटी की लोक-संस्कृति, परिवेश के संस्कार एवं ठेठ ग्रामीण जीवन ने उनके बाल-मन पर जो छाप छोड़ी, वही आगे चलकर उनके पूरे साहित्य की रीढ़ बनी। उनका पारिवारिक वातावरण पारंपरिक मूल्यों, अनुशासन और सादगी से भरा हुआ था। इसी वातावरण ने उन्हें बचपन से ही किताबों और स्वाध्याय से जोड़े रखा। घर-परिवार में आत्मीयता और रिश्तों का जो सहज संसार उन्होंने देखा, वही आगे चलकर उनकी रचनाओं की प्रेरणा बना।

व्यावसायिक धरातल पर पहाड़िया जी का जीवन काफी व्यस्त और अनुशासित रहा। वे वर्ष 1988 से भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC), नागौर में अभिकर्ता (Agent) के रूप में कार्य कर रहे हैं, साथ ही उन्होंने 'राष्ट्रीय बचत संगठन, डेह' में अल्प बचत अभिकर्ता के रूप में भी अपनी सेवाएँ दीं। अपनी व्यावसायिक निष्ठा के बल पर वे आजीवन 'चेयरमैन क्लब' के सदस्य रहे और अल्प बचत के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें वर्ष 2003 तथा 2006 में राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया गया।

बीमा और बचत क्षेत्र में काम करते हुए पहाड़िया जी का संपर्क समाज के हर वर्ग से हुआ। इस दरमियां उन्हें अलग-अलग वर्गों, पेशों और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग मिले। इस अनुभव ने उन्हें आम आदमी की रोजमर्रा की चिंताओं, पारिवारिक उतार-चढ़ाव और बच्चों के बदलते माहौल को करीब से देखने का अवसर दिया। इसी का नतीजा है कि उनकी रचनाओं में कल्पना की स्वच्छंद उड़ान की अपेक्षा ठोस सामाजिक यथार्थ और जीवंत अनुभवों का समावेश दिखाई देता है।

तमाम व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बीच भी वे साहित्य सृजन बराबर करते रहे। उन्होंने भाषाई और सामाजिक स्तर पर भी ठोस काम किया। "1988 में उन्होंने 'राजस्थानी भाषा प्रसार संस्थान, नागौर' की स्थापना की और राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में हरियाणा, पंजाब तथा विदेशों तक राजस्थानी भाषा का प्रचार किया। 2012 से 'अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति' के महामंत्री पद की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने सैकड़ों भाषा-प्रेमियों को एकजुट किया। वहीं 130 से अधिक साहित्यकारों का नागरिक अभिनंदन करवाया और 55 से ज्यादा पुस्तकों का लोकार्पण करवाकर राजस्थानी साहित्य जगत को नई ऊर्जा दी।"[3]

सम्मान एवं उपलब्धियाँ - वर्ष 1981 से निरंतर लेखन में सक्रिय पवन पहाड़िया की साहित्यिक साधना को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक पहचान मिली है। उनकी कृतियों ने आम पाठकों के बीच साहित्य रुचि जागृत की। वहीं देश के प्रमुख साहित्यिक संस्थानों ने भी उनके योगदान को सराहा एवं पुरस्कृत किया।

"उन्हें मिले प्रमुख सम्मानों में चित्तौड़गढ़ का 'चन्द्रसिंह बिरकाली राजस्थानी भाषा बाल साहित्य पुरस्कार' (2014) और तत्कालीन राज्यपाल एवं जोधपुर के पूर्व महाराजा द्वारा प्रदत्त 'पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान' (2014) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा, उन्हें स्वतंत्रता सेनानी ओंकारलाल शास्त्री स्मृति पुरस्कार (2016, सलूंबर), रोटरी क्लब बीकानेर द्वारा 'खींवराज चुन्नीलाल मोनी राजस्थानी गद्य पुरस्कार' (2017), भोपाल में 'रामप्रसाद मारू बाल साहित्य सम्मान' (2017) और मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर द्वारा 'मारवाड़ रत्न सम्मान' (2017) से अलंकृत किया गया।पवन पहाड़िया की बाल साहित्य साधना को सबसे बड़ी राष्ट्रीय पहचान वर्ष 2017 में मिली जब उन्हें को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा उन्हें 'राजस्थानी बाल साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके बाद अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता द्वारा 'कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल साहित्य सम्मान' (2020), साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा द्वारा 'श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा बाल साहित्य भूषण सम्मान' (2020), स्व. नरपतसिंह सांखला स्मृति संस्थान, बीकानेर का 'प्रथम नरपतसिंह सांखला राजस्थानी कविता पुरस्कार' (2022) और मरुधर संभाग, सुजानगढ़ द्वारा 'कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान' (2022) से उनके साहित्यिक योगदान को सराहना प्राप्त हुई। वहीं हाल के वर्षों में पंडित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा

'रामनाथ कमलाकर सम्मान' (2023), 'श्री मधुकर गौड़ साहित्यिक सम्मान' (2024, चूरू) और भीलवाड़ा में 'लोक कवि मोहन मंडेला स्मृति राष्ट्रीय बाल वाटिका सृजन सम्मान' (2025) से उन्हें नवाजा गया।"[4]

ये सम्मान इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि पवन पहाड़िया का लेखन राजस्थान की सीमा से बाहर निकलकर राष्ट्रीय धरातल पर अपनी अलग पहचान बना चुका है।

पवन पहाड़िया का रचना संसार

संख्या और गुणवत्ता दोनों ही पैमानों पर पवन पहाड़िया का रचना संसार काफी विस्तृत और विविध है। 2012 में प्रकाशित उनकी पहली पुस्तक 'बधाऊड़ो' से लेकर 2026 में आए बाल कहानी संग्रह 'पापा का सपना' तक, उनकी 33 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में उनका लेखन नियमित रूप से प्रकाशित होकर राजस्थानी भाषा एवं बाल साहित्य को समृद्ध करता रहा है।

साहित्य की विधा के रूप में बाल साहित्य चुनने के पीछे पवन पहाड़िया सटीक उत्तर देते है - "बाल साहित्य का चुनाव मेरे लिए केवल व्यक्तिगत रुचि का विषय नहीं रहा है। मैंने हमेशा यह महसूस किया कि किसी भी समाज का भविष्य उसके बच्चों की सोच, संवेदना और कल्पनाशीलता से निर्मित होता है। इसलिए बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व और दृष्टि के निर्माण का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम है। मेरे लिए बाल साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बच्चे को उपदेश देकर नहीं, बल्कि कहानी, कविता, गीत और कल्पना के माध्यम से जीवन-मूल्यों से जोड़ा जा सकता है। साहित्य बच्चों में प्रश्न करने की क्षमता, प्रकृति और समाज के प्रति संवेदना, मानवीय संबंधों की समझ तथा अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति आत्मीयता विकसित कर सकता है। हम जिस समय में रह रहे हैं, उसमें बच्चों के सामने सूचनाओं और मनोरंजन के बहुत सारे माध्यम हैं, लेकिन हर सूचना साहित्यिक अनुभव नहीं बनती। साहित्य बच्चे को ठहरकर सोचने, महसूस करने और कल्पना करने का अवसर देता है। इस दृष्टि से मैंने बाल साहित्य को केवल बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य के संवेदनशील और विवेकशील नागरिक के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखा है। विशेष रूप से हिंदी और राजस्थानी जैसी भाषाओं में बाल साहित्य लिखना मेरे लिए भाषा और संस्कृति से जुड़ने का माध्यम भी रहा है। बच्चों के साहित्य के माध्यम से स्थानीय परिवेश, लोकजीवन, प्रकृति, लोकभाषा और सांस्कृतिक स्मृतियां नई पीढ़ी तक पहुंच सकती हैं। मेरा मानना है कि बाल साहित्य में मनोरंजन और संस्कार, कल्पना और यथार्थ तथा स्थानीयता और व्यापक मानवीय सरोकार—इन सबका संतुलन होना चाहिए।इसलिए बाल साहित्य मेरे लिए साहित्य की कोई छोटी या गौण विधा नहीं है। यह उस पीढ़ी से संवाद करने का माध्यम है, जो आने वाले समय के समाज का निर्माण करेगी।"[5]

पवन पहाड़िया का लेखन बाल गीत, बाल कहानी, कुंडलियाँ, दूहा, सतसई , ग़ज़ल, लघुकथा, व्यंग्य, पहेलियाँ और अनूदित साहित्य जैसी अनेक विधाओं में दृष्टिगोचर है।

(1) बाल गीत एवं काव्य साहित्य - बाल गीत पहाड़िया जी के लेखन में सहजता, कोमलता के साथ साथ मनोरंजन एवं नैतिक शिक्षा का सशक्त माध्यम है। उन्होंने हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में बच्चों के लिए लयबद्ध और आसानी से गाए जाने वाले गीतों की रचना की है। 'नम्बर वन आऊंला' (2014), 'सगळा चालां सागे' (2016), 'आओ गावें गीत' (2026), 'चलना सीखो' (2016), 'समझो मम्मा' (2017), 'ऐसी जोत जगायें' (2017), 'पकड़ो चींटी' (2017), 'दादी कहती' (2018), 'खांचों चौटी' (2019), 'पढवाणी पक्की छोरी नें' (2020) और 'ऐसा भारत देश हमारा' (2025) उनकी बाल कविताओं की प्रमुख पुस्तकें है।

उनकी 'समझो मम्मा' पुस्तक से 'आई परीक्षा अब माथे पर' शीर्षक की कविता में परीक्षाओं को लेकर बाल मन की अंतर्दशा का चित्रण कितने सुंदर तरीके से किया गया है इसे कविता के इस अंश से समझा जा सकता है -

"सीमाओं पर लड़ने से भी,
मुझको यह भारी लगती है,
अच्छे पेपर हो जाए तो,
केसर की क्यारी लगती है,
पूर्ण परीक्षा हो ना तब तक
नहीं बैठ सकता सुस्ताने,
यह चिंता अब लगी सताने।"[6]

उनकी कविताओं की खासियत है कि वे बच्चों को नीरस उपदेश देने के बजाय उनके कौतूहल और सहज चंचलता से जुड़ती हैं। 'ऐसी जोत जगाएं' या 'समझो मम्मा' सरीखी किताबों के गीतों में बाल-मन की गहरी समझ दिखती है। वहीं 'पढवाणी पक्की छोरी नें' जैसी रचनाओं के जरिए वे राजस्थानी परिवेश में बालिका शिक्षा और लैंगिक समानता की बात बड़ी स्वाभाविकता से रख देते हैं।

(2) बाल कथा साहित्य - बाल कहानियों के क्षेत्र में पहाड़िया जी का दृष्टिकोण पूरी तरह आधुनिक है। उनके कहानी संग्रहों में 'सुबह का भूला' (2020), 'नया सवेरा' (2025), 'नन्दन वन में बालक' (2025) और 'पापा का सपना' (2026) प्रमुख हैं। इन कहानियों में काल्पनिक राजा-रानी या चामत्कारिक परियों वाले पात्र नहीं मिलते, अपितु हमारे समाज के बीच से पात्रों का चयन करके अपनी रचनाओं में सरलता से ढालते है। पहाड़िया जी की कहानियों के नायक हमारे आसपास के ही साधारण बच्चे हैं, जो अपनी सूझ-बूझ, तर्क और आपसी सहयोग से अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं।

"उनकी किताब 'पापा का सपना' की एक कहानी 'एक अप्रैल की मजाक' में गुड़िया अपने पापा रामप्रसाद को पार्क में छोटू के पेड़ से गिरने की झूठी खबर देती है। उसका उद्देश्य तो नव वर्ष की खुशियां पापा के साथ मनाना था। रामप्रसाद अपना जरूरी काम छोड़कर पार्क में जल्दबाजी में आता है। पार्क में छोटू को सही सलामत देखकर वह गुड़िया को पूछता है तो गुड़िया उन्हें सच बताती है। रामप्रसाद गुड़िया को आगे से ऐसा मजाक नहीं करने का कहते है एवं उनके साथ नव वर्ष की खुशियां मनाते है। इस कहानी में उन्होंने बड़ों को बच्चों के लिए समय निकालने एवं बच्चों को भी मां बाप का ध्यान पाने के लिए झूठ का सहारा न लेने की सीख दी है।"[7]

(3) शास्त्रीय एवं पारंपरिक छंद विधान (दोहा, सतसई और कुंडलियाँ परंपरा) - पवन पहाड़िया ने केवल आधुनिक बाल साहित्य तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि राजस्थानी साहित्य की प्राचीन छंद-परंपरा में भी रचना कर्म करके समृद्ध किया है। 'झपीड़' (2014) और 'समाहार सतसई' (2025) इसके प्रमुख उदाहरण है। वहीं 'सार सतसई' (2016) में राजस्थानी दूहा परंपरा का निर्वाह करते हुए समकालीन सामाजिक और सांस्कृतिक चिंताओं को सामने रखा है। शास्त्रीय छंदों पर उनकी यह पकड़ दर्शाती है कि उनका शिल्पगत आधार व्याकरण और भाषा-शास्त्र की दृष्टि से कितना मजबूत है।

पवन पहाड़िया द्वारा रचित कुछ दोहे निम्न है -

"मांड मसीनां मोकळी, मुरख मरोड़ै मूंछ।
बैमाता बड़का बकै, फेंक दिवी सै पूंछ।।1।।
कुदरत बणगी छोडदयो,भाग भरोसै राख।
बेमाता बेटी बणा, दी परसादी चाख।।2।।"[8]

(4) पहेली साहित्य और बौद्धिक क्रीड़ा - वर्ष 2025 में पवन पहाड़िया ने बाल साहित्य की एक उपेक्षित मगर बेहद उपयोगी विधा 'पहेली साहित्य' पर केंद्रित होकर काम किया। उन्होंने 'सांस्कृतिक बाल पहेलियाँ', 'शिक्षाप्रद बाल पहेलियाँ', 'रोचक बाल पहेलियाँ', 'ज्ञानवर्धक पहेलियाँ' और राजस्थानी में 'आडी बावनी' (भाग 1 व 2) जैसी छह पुस्तकें लिखीं।

आज के डिजिटल दौर में, जहाँ बच्चे स्क्रीन और सोशल मीडिया के कारण एकाकीपन और बौद्धिक सुस्ती का शिकार

हो रहे हैं, वहाँ पहाड़िया जी की पहेलियाँ बच्चों के लिए एक स्वस्थ मानसिक व्यायाम का काम करती हैं। ये पहेलियाँ न केवल बच्चों का शब्द-भंडार बढ़ाती हैं, बल्कि उन्हें खेल-खेल में अपनी संस्कृति, इतिहास और प्रकृति से भी जोड़ती हैं।

'ज्ञानवर्धक पहेलियाँ' पुस्तक की कुछ पहेलियाँ इस प्रकार हैं -

"अतिवृष्टि होने पर आती,
तांडव खूब मचाती है।
सब कुछ ले जाती है संग में,
बोलो क्या कहलाती है।।1।।
बलबूते से बाहर का लख,
मैं तन मन पर छा जाता।
पर डरता हूं बहुत हवा से,
मेहनतकश मेरा भ्राता।।2।।"[9]

पहली पहेली का उत्तर बाढ़ और दूसरी पहेली का उत्तर 'पसीना है। पसीने की पहेली में जिस तरह से शब्दों को पिरोया है, वह उनकी रचनात्मक शक्ति का परिचय देती है।

(5) व्यंग्य, ग़ज़ल, लघुकथा एवं अनुवाद साहित्य - विधागत वैविध्य की बात करें तो पहाड़िया जी ने 'तीजो रूप' (2014) में राजस्थानी लघुकथाओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों पर करारी चोट की है। 'साँसों सास लड़े जिंदगानी' (2017) के जरिए उन्होंने राजस्थानी ग़ज़ल विधा में अपनी संवेदनशील और दार्शनिक सोच को अभिव्यक्ति दी, वहीं 'छींक छेती अर छिंकी' (2021) में तीखे व्यंग्य रचे हैं।

इनकी ग़ज़ल का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"कीकर लागै जग चोखो है
भरियो धावू धप्प धोखो है
डसज्यै नाग बावां रा बण'र
लाग ज्याय जद ई मौको है।"[10]

अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका काम सराहनीय है। उन्होंने गुजरात के प्रसिद्ध लेखक डॉ. हूंदराज बलवाणी के हिंदी बाल कहानी संग्रह का राजस्थानी में 'गमगी परयां' (2019) नाम से और लुधियाना के लेखक डॉ. फकीरचंद शुक्ला की पुस्तक का 'सफलता रो मंतर' (2023) नाम से अनुवाद किया। यह कार्य बाल साहित्य में अंतर-प्रांतीय आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

वर्तमान प्रासंगिकता एवं प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियां :

आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संकट और अत्यधिक तकनीक के प्रयोग से उपजे तनावों से जूझ रही है, तब पवन पहाड़िया का साहित्य और भी प्रासंगिक हो जाता है।

1. पारिस्थितिक चेतना : पहाड़िया जी का साहित्य बच्चों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जगाता है। वे अपनी रचनाओं के जरिए बच्चों को पेड़-पौधों और जल-संरक्षण के प्रति जागरूक करते हैं।

2. पठन-संस्कृति का पुनरुद्धार : डिजिटल क्रांति के इस दौर में जब बच्चे किताबों से दूर हो रहे हैं, तब उनकी सरल, मनोरंजक और पहेलीनुमा रचनाएँ पाठकों में पढ़ने की आदत को दोबारा जगाने का काम करती हैं।

3. मातृभाषा और तार्किक सोच : उनकी राजस्थानी रचनाएँ अपनी मातृभाषा के अस्तित्व को बचाने और नई पीढ़ी को अपनी लोक-संस्कृति से जोड़े रखने का काम करती हैं। उनकी कहानियाँ अंधविश्वास को खारिज कर बच्चों में 'क्यों' और 'कैसे' जैसे सवाल पूछने की वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देती हैं।

वर्तमान दौर में रील्स, शॉर्ट वीडियो, एनीमेशन की बढ़ती लोकप्रियता के बीच पवन पहाड़िया का विचार है - "मैं बाल साहित्य के भविष्य को लेकर निराश नहीं हूँ। यह जरूर है कि बच्चों की पढ़ने की आदत और उनके मनोरंजन के माध्यम तेजी से बदल रहे हैं। रील, शॉर्ट वीडियो, एनीमेशन और डिजिटल गेम्स बच्चों का ध्यान बहुत तेजी से आकर्षित करते हैं। ऐसे में बाल साहित्य के सामने चुनौती यह है कि वह बच्चों की बदलती रुचियों और नए माध्यमों को समझे। लेकिन मैं इसे केवल चुनौती के रूप में नहीं देखता। ये माध्यम बाल साहित्य के लिए नई संभावनाएं भी लेकर आए हैं। अच्छी बाल कविताएं, कहानियां और गीत यदि ऑडियो, वीडियो, एनीमेशन या डिजिटल पुस्तकों के रूप में बच्चों तक पहुंचें तो साहित्य का दायरा पहले से कहीं अधिक व्यापक हो सकता है। मेरा मानना है कि रील साहित्य की जगह नहीं ले सकती और साहित्य भी रील का विकल्प बनने की कोशिश नहीं कर सकता। दोनों के अपने-अपने अनुभव हैं। शॉर्ट वीडियो तत्काल आकर्षित कर सकता है, जबकि साहित्य बच्चे के भीतर कल्पना और विचार की एक लंबी प्रक्रिया शुरू करता है। इसलिए भविष्य में बाल साहित्य को इन दोनों के बीच विरोध खड़ा करने के बजाय नए माध्यमों के साथ संवाद स्थापित करना होगा।"[11]

निष्कर्ष :

पवन पहाड़िया का व्यक्तित्व, उनका व्यावसायिक संघर्ष और उनका विशाल रचना संसार समकालीन हिंदी और राजस्थानी साहित्य की एक ऐसी धरोहर है, जिसका निरंतर अनुशीलन आवश्यक है। अपने जीवन बीमा अभिकर्ता के पेशे से मिले व्यावहारिक अनुभवों को उन्होंने जिस कलात्मकता और संवेदनशीलता के साथ साहित्य में ढाला है, वह अद्वितीय है।

1981 से शुरू हुई उनकी यह सृजन-यात्रा 2026 तक 33 से अधिक पुस्तकों, साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित दर्जनों राष्ट्रीय सम्मानों और राजस्थानी भाषा आंदोलन के रूप में हमारे सामने है। उन्होंने यह साबित किया है कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि वह भावी समाज के चरित्र निर्माण की नींव है। उनका साहित्य न केवल वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है, बल्कि आने वाले समय के शोधार्थियों के लिए भी अध्ययन और चिंतन की समृद्ध सामग्री प्रदान करता है।

संदर्भ

1. पहाड़िया पवन, पापा का सपना, पृष्ठ सं. 4, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2026
2. पवन पहाड़िया, दादी कहती, अंतिम आवरण पृष्ठ, विभोर प्रकाशन, भोपाल, 2018
3. वही।
4. वही।
5. पवन पहाड़िया, लेखक के साथ साक्षात्कार, 28 अगस्त 2026
6. पवन पहाड़िया, समझो मम्मा, पृष्ठ सं. 13, चित्रा प्रकाशन, भोपाल, 2017
7. पवन पहाड़िया, पापा का सपना, पृष्ठ सं. 59-66, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2026
8. पवन पहाड़िया, अंजस वेबसाइट, https://anjas-org/dohe/tal-parikshan-tal-pavan-pahadiya.dohe\sort¾title-asc
9. पवन पहाड़िया, ज्ञानवर्धक पहेलियाँ, पृष्ठ सं. 28 एवं 33, संपर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़, 2025
10. पवन पहाड़िया, अंजस वेबसाइट, https://anjas-org/dohe/tal-parikshan-tal-pavan-pahadiya.ghazals\sort¾title-asc
11. पवन पहाड़िया, लेखक के साथ साक्षात्कार, 28 अगस्त 2026

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी कवि प्रदीप का व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ. ज्योति सिंह
सहायक प्राध्यापिका
तुलनात्मक साहित्य विभाग
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत

प्रस्तावना - जब साहित्यिक पाठकों से राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी के विषय में पूछा जाएगा कि इनके विषय में आपको कुछ जानकारी है क्या? तब सम्भवतः उत्तर यही आएगा कि आपके प्रश्न में कहीं कुछ भूल है, प्रश्न आचार्य रामचन्द्र शुक्ल होना चाहिए या फिर श्याम नारायण पाण्डेय के विषय में आप जानना चाहते होंगे! लेकिन उनसे जब यह पूछा जाय कि 'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी' या फिर 'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई, भगवान कितना बदल गया इंसान' या दे दी हमें आज़ादी बिना खड्ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमालश इत्यादि गीत के रचनाकार कौन है? तो अधिकांशतः लोगों का उत्तर होगा कवि प्रदीप।

'राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी कवि प्रदीप का व्यक्तित्व और कृतित्व' नामक विषय पर आलेख लिखने के पीछे का कारण यही बिन्दु है। लगभग सत्रह सौ से अधिक गीत लिखने वाले कवि प्रदीप रूपहले पर्दे पर तो खूब चर्चित हैं, लेकिन इस उपलब्धि के कारण हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने साहित्य की सीमा से उन्हें दूर कर दिया। वहाँ लगभग यह धारणा प्रचलित रही है कि 'स्वातंतः सुखाय' में शुद्ध सात्विक भाव आता है, वहीं दूसरी ओर किसी के लिए और माँग के अनुसार लिखना बजारु, बिकाऊ और सतही स्तर के लेखक की पहचान होती है। इसी दृष्टि से रामचन्द्र नारायण द्विवेदी उर्फ कवि प्रदीप के साहित्यिक सृजनशीलता को देखा गया और उनके साहित्य को दोयम दर्जे या फिर निम्न कोटि के श्रेणी में रखा गया। आजादी के पूर्व और पश्चात् का साहित्यिक समाज कवि प्रदीप के राष्ट्रकवि के स्वरूप से उस तरह परिचित नहीं रहा जितना कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी या राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त जी से है। यह अलग बात है कि कालांतर में साहित्य और सिनेमा के अभिन्न सम्बन्धों को जोड़ा जाने लगा है। अच्छे उपन्यास व कहानियों की पटकथा पर आधारित चलचित्र, नाटक, धारावाहिक इत्यादि बनाया जाने लगा है, तब जाकर राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी ऊर्फ कवि प्रदीप को साहित्य की मुख्य धारा में स्थान दिया जाने लगा है। आज जब 'सोशल मीडिया' का युग चल रहा है, दृश्य और श्रव्य माध्यम से इतिहास के किसी भी पृष्ठ को कभी भी खोला जा सकता है। अतः यह आलेख भी उसी उपक्रम का एक भाग है।

सांसारिक जीवन - रामचन्द्र नारायण द्विवेदी जी का जन्म छः फरवरी सन् उन्नीस सौ पन्द्रह में मध्यप्रदेश के उज्जैन के बड़नगर नामक कस्बे में हुआ था। औदिच्य ब्राह्मण परिवार में नारायण भट्ट के पितृ संरक्षण में चहुंमुखी प्रतिभा का विकास हो रहा था। स्वाभिमानी व विद्रोही स्वभाव का होने के कारण उज्जैन, इन्दौर से होते हुए प्रयागराज (इलाहाबाद) तथा लखनऊ

में जाकर अकादमिक शिक्षा पूर्ण हुई। चूँकि प्रयागराज (इलाहाबाद) व लखनऊ साहित्यिक त्रिवेणी था, वहीं से उनके हृदय में काव्य-सृजन का बीजान्कुर हो गया। क्रान्तिकारी परिवर्तन हेतु किए गए सृजन में स्वाभावतः आग होता ही है। यही कारण है जब सन् उन्नीस सौ बयालीस में चुन्नीलाल भट्ट की पुत्री सुभद्रा बहन से विवाह का प्रस्ताव आया तब उन्होंने अपनी भावी पत्नी के समक्ष प्रश्न रखा कि मैं आग हूँ क्या तुम पानी बनकर रह सकती हो? उनकी भावी पत्नी की ओर से तत्क्षण प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। विवाह के पश्चात् दो पुत्रियों मितुल और सरगम के साथ बम्बई में सुखमय जीवन यापन करते हुए ग्यारह सितम्बर सन् उन्नीस सौ अन्ठानबे में कैंसर से जूझते हुए तिरासी वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हो गए।

पुरस्कार और सम्मान - रामचन्द्र नारायण द्विवेदी कवि प्रदीप के काव्य में राष्ट्रीय चिन्तन के कारण उन्हें समय-समय पर निम्नलिखित पुरस्कार व सम्मान मिले -

१ सन् १९६१ में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार
२ सन् १९९५ में राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रकवि की उपाधि
३ सन् १९९८ में दादा साहब फाल्के पुरस्कार
४ साहित्य प्रेमियों को भारत-रत्न उपाधि की प्रतीक्षा

गीतों का महत्त्व - साहित्यिक व सामाजिक जीवन में गीतों की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। इसी श्रृंखला में योगेश्वर गुरु श्रीकृष्ण और धर्नुधारी अर्जुन के मध्य उपजी श्रीमद् भगवत गीता को देखा जा सकता है। यही कारण है कि कवि प्रदीप ने समय - समय पर लोक जागृति करने हेतु काव्य गीतों की रचना की। पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी के मार्ग दर्शन में उनकी गीतों को विशिष्टता प्राप्त हुई। निराला जी लखनऊ की माधुरी पत्रिका के फरवरी, उन्नीस सौ अड़तीस के अंक में उनकी गीतों के स्वभाव व प्रभाव पर अपनी मुद्रिका (मुहर) लगा दिया। फिर क्या था! छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जो अपनी काव्य-शैली को प्रगतिवाद व प्रयोगवाद की ओर उन्मुख किया हो, उनकी छत्र - छाया में कवि रामचन्द्र द्विवेदी प्रदीप्त हुए। सन् उन्नीस तैंतीस व पैंतीस से साहित्यिक यात्रा पर जो निकले फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके पैंसठ वर्षों की साहित्यिक साधना को एक आलेख में बांधना अत्यन्त कठिन कार्य है, फिर भी गागर में सागर भरने की चेष्टा की जाएगी।चूँकि वे दोनों (अर्थात् आजादी से पूर्व व पश्चात्) समय के साक्षी रहे हैं तो उनकी रचनाओं से सामाजिक , सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनीतिक परिस्थितियों का आंकलन किया जा सकता है; अतः तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनकी प्रासंगिकता पर बात की जाएगी।

कवि प्रदीप और उनके गीतों का संसार

भारतीय हिन्दी काव्यधारा में राष्ट्रकवि प्रदीप का नाम राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव और जनजागरण के अमर गायक के रूप में प्रतिष्ठित है। उनका वास्तविक नाम रामचन्द्र नारायण द्विवेदी था, किन्तु साहित्य और सिनेमा जगत में वे 'प्रदीप' के नाम से विख्यात हुए।

इस नाम के पीछे की एक कहानी है। सपनों की नगरी मुम्बई में पाँव रखते रामचन्द्र नारायण द्विवेदी जी प्रसिद्ध कवि हो गए। हिमांशु राय की 'कंगन' नामक सिनेमा के पोस्टर के लिए 'रेलगाड़ी से लम्बे' नाम से मुक्ति पा लिए। कवि प्रदीप ने ऐसे समय में अपनी लेखनी को स्वर दिया, जब भारतवर्ष स्वतंत्रता-संग्राम की उथल-पुथल से गुजर रहा था। उनकी कविताएँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहीं, बल्कि जनमानस में राष्ट्रीय क्रान्तिकारी चेतना, त्याग, बलिदान, स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक एकता का संचार करने वाली प्रेरक रचनाएँ सिद्ध हुईं। उनके काव्य में राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ मानवीय संवेदना, आध्यात्मिक दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक दायित्व का अद्भुत समन्वय मिलता है।

कवि प्रदीप के काव्य का श्रृंगारिक पक्ष

यद्यपि राष्ट्रकवि प्रदीप मुख्यतः राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं, तथापि उनके काव्य में श्रृंगार का भी विशिष्ट स्थान

है। उनका शृंगार मात्र लौकिक प्रेम का चित्रण नहीं करता, बल्कि मातृभूमि के प्रति अनुराग, प्रकृति के प्रति आत्मीयता तथा मानवीय सम्बन्धों की कोमलता को भी अभिव्यक्त करता है। उनके प्रेम गीतों में पवित्रता, मर्यादा और भारतीय जीवन-मूल्यों का समन्वय मिलता है। दूसरे शब्दों में कहें तो कहा जा सकता है कि उनके यहाँ प्रेम आत्म केन्द्रित न होकर राष्ट्र केन्द्रित बन जाता है। मातृभूमि के प्रति समर्पण और देश के लिए सर्वस्व अर्पित करने की भावना उनके शृंगार को उच्च आदर्शों से जोड़ देती है। इस प्रकार उनका शृंगार भावुकता का नहीं,बल्कि आदर्शवादी राष्ट्रीय चेतना का संवाहक है। ऐसा होता भी क्यों नहीं! उनके मार्ग दर्शक 'जूही की कली' से 'राम की शक्ति पूजा' की यात्रा करने वाले विशिष्ट कोटि के साहित्यकार थे। पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी ने उनसे कहा था कि 'कविता का अर्थ निकृष्ट कोटि के प्रेम प्रसंग को उकेरना भर नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत व राष्ट्रीय समस्याओं की सम्वाहक व सम्प्रेषण का माध्यम भी ये कविताएँ होती हैं।'

सांस्कृतिक चेतना की भावना

राष्ट्रकवि प्रदीप के काव्य का सबसे सशक्त पक्ष उसकी सांस्कृतिक चेतना है। उन्होंने भारत की गौरवशाली परम्पराओं, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, विविधता में एकता, लोकजीवन, राष्ट्रीय पर्वों तथा सांस्कृतिक विरासत का अत्यन्त प्रभावशाली चित्रण किया है। उनके प्रसिद्ध गीत

'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की। इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की। वन्देमातरम् - वन्देमातरम्' में सम्पूर्ण भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना का सजीव चित्र उपस्थित होता है। हिमालय से लेकर समुद्र तक, खेतों से लेकर तीर्थों तक, वीरों की गाथाओं से लेकर संतों की परम्परा तक भारत की सांस्कृतिक आत्मा को उन्होंने सहज भाषा में अभिव्यक्त किया है।

उनकी सांस्कृतिक दृष्टि संकीर्ण नहीं है। वे भारत की अनेक भाषाओं, धर्मों, जातियों और संस्कृतियों को एक राष्ट्रीय सूत्र में पिरोने का प्रयास करते हैं। उनके लिए संस्कृति केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की राष्ट्रीय शक्ति है।

उनके गीतों में भारतीय लोकजीवन, पारिवारिक संस्कार, राष्ट्रीय आदर्श, सहिष्णुता तथा समन्वयवादी दृष्टिकोण का अत्यन्त प्रभावशाली निरूपण मिलता है। यही कारण है कि उनके काव्य को भारतीय संस्कृति की जीवन्त अभिव्यक्ति माना जाता है।

धार्मिक चेतना की भावना

राष्ट्रकवि प्रदीप का धार्मिक दृष्टिकोण व्यापक एवं मानवीय है। वे किसी सम्प्रदाय विशेष के कवि नहीं हैं, बल्कि भारतीय अध्यात्म और सार्वभौमिक मानव धर्म के समर्थक हैं। उनके भक्ति-गीतों में ईश्वर के प्रति आस्था, नैतिक जीवन, सत्य, करुणा और मानव-सेवा का संदेश निहित है। उनका अत्यंत लोकप्रिय गीत—

'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान! कितना बदल गया इंसान।' उल्लेखित गीत में बँटवारे के समय के मानव समाज की नैतिक गिरावट, हिंसा, स्वार्थ, भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता पर गहरी चिंता व्यक्त किया गया है। यहाँ यह गीत धार्मिक कर्मकाण्ड का प्रतीक नहीं बनती है, बल्कि मानवीय मूल्यों की स्थापना का माध्यम बन जाती है।

यही नहीं एक कदम और आगे बढ़कर उन्होंने निम्नलिखित गीत के माध्यम से समाधान देने का प्रयास किया है -

'इंसान का इंसान से हो भाई चारा, यही पैगाम हमारा, यही पैगाम हमारा ॥'

उनके गीतों में धार्मिक समन्वय, सामाजिक समानता और विश्वबन्धुत्व की भावना पुष्ट होती दिखती है। प्रदीप का धर्म मानवता का धर्म है।

इसके साथ ही उनके काव्य में गीता, रामायण, उपनिषदों और भारतीय आध्यात्मिक परम्परा की मूल्य चेतना अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है। उदाहरण स्वरुप वामन अवतार, संतोषी माता इत्यादि सिनेमा के गीतों ने समाज में भक्तिरस का प्रसार

किया। उस समय के लोग कहते हैं कि सिनेमा हॉल में माताएँ व बहनें आरती की थाली लेकर पूरे भक्ति भाव से संतोषी माता की आरती उतारती थीं।

ऐसे अनगिनत गीतों की श्रृंखला है जिन्हें प्रभात फेरी में या भजन संध्या में श्रद्धालु भाव - विभोर हो जाते थे; कुछ एक का नाम देख लेना समीचीन होगा - 'तेरे द्वार खड़ा भगवान, भगत भर दे रे झोली', 'यहाँ वहाँ मत पूछो कहाँ कहाँ है संतोषी माँ अपनी संतोषी माँ', 'दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले, तेरे दुःख दूर करेंगे राम', 'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान', मारने वाला है भगवान बचाने वाला है भगवान इत्यादि।

क्रान्तिकारी व राष्ट्रीय चेतना से युक्त

राष्ट्रकवि प्रदीप का राष्ट्रीय काव्य केवल देशभक्ति का भावनात्मक चित्रण नहीं करता, बल्कि उसमें औपनिवेशिक शासन, अन्याय, दमन और पराधीनता के विरुद्ध विद्रोह का प्रखर स्वर भी सुनाई देता है। क्रान्तिकारी राष्ट्रीय चेतना युक्त होने के कारण उनकी कविताएँ स्वतंत्रता - आन्दोलन के दौरान जनता में संघर्ष और आत्मविश्वास जगाने का कार्य करती थीं।

उनका प्रसिद्ध गीत

चल चल रे नौजवान, चल चल रे नौजवान। जीना तेरा काम नहीं, मरना तेरी शान है ॥

इस गीत ने स्वतंत्रता - आन्दोलन के समय जनमानस में अद्‌भुत उत्साह उत्पन्न किया। प्रत्यक्ष रूप से यह विदेशी शक्तियों को चुनौती देता है और भारतीयों में स्वाभिमान तथा प्रतिरोध की भावना जागृत करता है।

राष्ट्रकवि प्रदीप का विद्रोह हिंसा का समर्थन नहीं करता , ऐसा नहीं कहा जा सकता। उन्होंने 'पिंजरे के पंक्षी रे तेरा दर्द न जाने कोय' के माध्यम से राष्ट्रवादी नेताओं (वीर सावरकर, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, पण्डित नाथूराम गोडसे इत्यादि) की सजा जैसे अन्याय, शोषण और दासता के विरुद्ध आत्म सम्मानपूर्ण संघर्ष का परोक्ष रूप से संदेश दिया है।

इसी प्रकार 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों, हिन्दुस्तान हमारा है' द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध राष्ट्रीय अस्मिता का उद्‌घोष किया गया। यह गीत सन् 1943 में प्रदर्शित फिल्म 'किस्मतश क' लिए लिखा गया था, किन्तु इसका प्रभाव फिल्म की सीमाओं से कहीं आगे बढ़कर स्वतंत्रता-संग्राम तक पहुँचा। यह गीत उस समय भारतीय जनता के लिए साहस, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की आकांक्षा का स्वर बन गया। यदि इस गीत की पृष्ठ भूमि को देखें तो ज्ञात होगा कि उस समय

सन् 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का निर्णायक चरण था। महात्मा गांधी के ष्करो या मरोष के आह्वान ने पूरे देश में अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध अभूतपूर्व जनविद्रोह खड़ा कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिए कठोर दमन-नीति अपनाई। राष्ट्रीय नेताओं को जेल में डाल दिया गया, सभाओं और समाचार-पत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर दिया गया तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई। ऐसे दमनकारी वातावरण में प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रवादी साहित्य का प्रकाशन और मंचन अत्यन्त कठिन हो गया था। इसी ऐतिहासिक परिस्थिति में कवि प्रदीप ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने ऐसा गीत रचा जिसमें प्रत्यक्ष रूप से किसी का नाम लिए बिना भारतीय जनता के हृदय में स्वाधीनता का संदेश पहुँचा दिया। गीत के शब्दों में बाहरी आक्रमणकारियों का उल्लेख है, किन्तु उसका वास्तविक आशय अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरोध से था। यह कवि प्रदीप की राजनीतिक सूझ-बूझ और कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है कि उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। ब्रिटेन जर्मनी और जापान से युद्धरत था। कवि प्रदीप ने इसी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का कलात्मक उपयोग किया। इस गीत में जापान और जर्मनी का उल्लेख होने के कारण 'ब्रिटिश सेंसर' को प्रारम्भ में यह प्रतीत हुआ कि गीत मित्र राष्ट्रों के समर्थन में है। परिणामस्वरूप यह गीत सेंसर से पारित हो गया। किन्तु भारतीय जनता ने इसके संकेतों को तुरन्त समझ लिया और इसे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय उद्घोष के रूप में स्वीकार किया।

फिल्म 'किस्मत' (सन् 1943) में यह गीत मंच-प्रस्तुति के रूप में चित्रित किया गया। जैसे ही यह गीत सिनेमाघरों

में गूँजा, दर्शकों में अभूतपूर्व उत्साह दिखाई दिया। अनेक स्थानों पर दर्शकों के आग्रह पर इस गीत को पुनः चलाया जाता था। यह गीत स्वतंत्रता आन्दोलन की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बन गया। इस प्रकार सिनेमा पहली बार राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का सशक्त साधन सिद्ध हुआ।

जब अंग्रेज सरकार को इस गीत का वास्तविक आशय समझ में आया, तब उसने इसे राष्ट्रवादी प्रचार का माध्यम माना। कवि प्रदीप पर निगरानी रखी गई और उनके विरुद्ध कार्यवाही की तैयारी हुई। कहा जाता है कि गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्हें कुछ समय तक भूमिगत भी रहना पड़ा। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी शासन स्वयं इस गीत की जनशक्ति और प्रभाव से भयभीत था।

साहित्यिक दृष्टि से भी यह गीत वीर रस और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत उदाहरण है। इसमें देश प्रेम,आत्मगौरव, स्वाधीनता की आकांक्षा और विदेशी सत्ता के प्रति प्रतिरोध की भावना अत्यन्त प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुई है। 'हिन्दुस्तान हमारा है' का उद्घोष भारतीयों के आत्मविश्वास और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक बन जाता है। गीत की भाषा सरल, ओजस्वी और जनसामान्य के लिए सहज ग्राह्य है, जिसके कारण यह शीघ्र ही लोकमानस का गीत बन गया। कवि प्रदीप ने इस गीत के माध्यम से यह सिद्ध किया कि साहित्य और कला केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रभावशाली उपकरण भी हैं। इस गीत ने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि देश अन्ततः स्वतंत्र होकर रहेगा। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद भी यह गीत राष्ट्रीय समारोहों, सांस्कृतिक आयोजनों और देशभक्ति के प्रसंगों में समान उत्साह के साथ गाया और स्मरण किया जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि ष्दूर हटो ऐ दुनिया वालों, हिन्दुस्तान हमारा हैष केवल एक फिल्मी गीत नहीं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का सांस्कृतिक दस्तावेज़ है। इसमें तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि, ब्रिटिश दमन, भारत छोड़ो आन्दोलन की चेतना तथा भारतीय जनमानस के स्वाधीनता-संकल्प का सजीव चित्र उपस्थित होता है। कवि प्रदीप की यह रचना भारतीय राष्ट्रवादी साहित्य की अमूल्य धरोहर है और आज भी राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा देश - भक्ति के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

अहिंसात्मक राष्ट्रवादी दृष्टि

कवि प्रदीप के राष्ट्रीय काव्य में महात्मा गांधी की अहिंसा, सत्य और प्रेम की भावना का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। वे मानते हैं कि राष्ट्र का वास्तविक उत्थान नैतिकता, आत्म-संयम, सेवा और सत्य के मार्ग से ही संभव है।उनकी रचनाओं में सैनिकों के बलिदान का सम्मान है, किन्तु साथ ही शांति और मानवता की स्थापना का भी आग्रह है। उनका अमर गीत—'ऐ मेरे वतन के लोगों! जरा आँख में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी'

भारत-चीन युद्ध में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। यह गीत प्रतिशोध का नहीं, बल्कि कृतज्ञता, संवेदना और राष्ट्रीय एकता का गीत है। इसमें देशवासियों को अपने सैनिकों के बलिदान का स्मरण करने और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझने की प्रेरणा दी गई है। कवि प्रदीप के अनुसार राष्ट्र-प्रेम का वास्तविक अर्थ युद्धोन्माद नहीं, बल्कि नागरिक उत्तरदायित्व, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण है। यही उनकी अहिंसात्मक राष्ट्रीय चेतना की विशेषता है।

भाषा एवं शिल्प - कवि प्रदीप की भाषा अत्यन्त सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण तथा जनसामान्य की भाषा है। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ जटिलता से बचते हुए ऐसी अभिव्यक्ति का प्रयोग किया, जिसे प्रत्येक भारतीय सहज रूप से समझ सके। उनके गीतों में ओज, माधुर्य, प्रसाद तथा भावात्मक प्रभाव का अद्भुत समन्वय मिलता है।

उनकी शैली में गीतात्मकता, लयात्मकता, अनुप्रास, पुनरुक्ति, प्रतीक, बिम्ब तथा भावात्मक आवेग का अत्यन्त प्रभावी प्रयोग हुआ है। उनके गीत मंच, जनसभा और चलचित्र—तीनों माध्यमों में समान रूप से लोकप्रिय हुए।

समकालीन प्रासंगिकता - आज जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक विखंडन तथा सामाजिक असमानताओं

की चुनौतियाँ सामने हैं, तब राष्ट्रकवि प्रदीप का काव्य और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना संकीर्ण राष्ट्रवाद की नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक, मानवीय और समावेशी राष्ट्रभाव की पक्षधर है।

उनकी सांस्कृतिक दृष्टि भारतीयता को विश्वबंधुत्व से जोड़ती है। धार्मिक चेतना मानवता का संदेश देती है। विद्रोहात्मक स्वर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा देता है तथा अहिंसात्मक दृष्टि समाज में शान्ति, सह-अस्तित्व और नैतिक मूल्यों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रकवि प्रदीप का काव्य भारतीय राष्ट्रीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनके काव्य में शृंगार की कोमलता, संस्कृति का गौरव, धर्म की मानवीय व्याख्या, विद्रोह की ओजस्विता तथा अहिंसा की उदात्त चेतना का अद्वितीय समन्वय प्राप्त होता है। उनकी कविताएँ केवल स्वतंत्रता-संग्राम की स्मृतियाँ नहीं हैं, बल्कि आज भी राष्ट्रीय चरित्र, सांस्कृतिक अस्मिता और मानवीय मूल्यों की प्रेरक स्रोत हैं।

कवि प्रदीप ने अपने गीतों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि साहित्य समाज का पथ-प्रदर्शक होता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना भारतीय संस्कृति की आत्मा, लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा मानवता की सार्वभौमिक भावना पर आधारित है। इस दृष्टि से उनका काव्य हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का शाश्वत दस्तावेज है, जो आने वाली पीढ़ियों को भी राष्ट्रप्रेम, त्याग, नैतिकता और मानवीय संवेदना के लिए निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

अस्तु।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
२. लेखक पण्डित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, माधुरी पत्रिका, लखनऊ फरवरी सन् १९३८
३. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
४. डॉ. शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन नई दिल्ली
५. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ

१. विनोद अग्रवाल, महापुरुष परिचय सांतसा, १८ मार्च २०२२
२. 'कवि प्रदीप का हर गीत था लोकप्रिय', विश्व संवाद केन्द्र भोपाल, ०७ फरवरी २०२२
३. लेखिका दीपाली अग्रवाल, ऐ मेरे वतन के लोगों, अमर उजाला ई - पत्रिका २०२३
४. कवि प्रदीप विकिपीडिया
   https://en-wikipedia.org/wiki/kavi
५. कवि प्रदीप परिचय कविताकोश www-kavitakosh.org/kavipradeep

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

हाशिएकृत समाज की समस्याएं 'मैं पायल' उपन्यास के संदर्भ में

आर्या कृष्णन
Research Scholar
Nirmala college, Muvattupuzha
Dr. Sreeja G R
Guide, Associate professor
Nirmala college, Muvattupuzha

हाशिएकृत समाज जो है सामाजिक आर्थिक संस्कृत कर्म से मुख्य धारा समाज से अलग करने वाला समाज है।समाज में जाति, वर्ग, लैंगिक पहचान (महिला ट्रांसजेंडर) शारीरिक क्षमता के आधार पर हाशियाकृत किया गया है। हाशिएकृत समाज की लोगों ने कई समस्याओं को सामना करना पड़ता है। इसमें पारिवारिक, आर्थिक, शिक्षा, कामकाज आदि इसमें प्रमुख है।

समाज में स्त्री और पुरुष के अलावा एक तीसरा वर्ग है वह है ट्रांसजेंडर। यह वर्ग को समाज द्वारा उपहास, उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है। ट्रांसजेंडर उन व्यक्तियों को कहते हैं जिनकी लैंगिक पहचान जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग से भिन्न होती है।

'मैं पायल' का लेखक महेंद्र भीष्म अपने समाज के उपेक्षित एवं पीड़ितों के प्रति एक संवेदनशील लेखक हैं। उनके उपन्यास 'मैं पायल' में हाशिए पर रखे हुए वर्ग की मानवीय संवेदनाओं को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास का मुख्य एवं केंद्र पात्र पायल का जीवन गधा को दर्शाता है। यह एक जीवनपरक उपन्यास है।

मैं पायल उपन्यास की कथा प्रमाणिक है। लेखक यथार्थपरक सच्चाई को दर्शाता है।उपन्यास का आरंभ एक कन्या जन्म की व्यथा से हुई है। परिवार में एक लड़का पैदा हुई तो शुभ और एक लड़की पैदा हुई तो अशुभ माना जाता है।उपन्यास में पायल पांचवी संतान एक ट्रांसजेंडर के रूम में जन्म लेती है। उनकी पूर्व एक पुत्र एवं उसकी बाद लगातार तीन लड़कियों जन्म ले चुकी थी। परिवार का पांचवी ट्रांसजेंडर कन्या है पायल। पायल की पिता लड़कियों को नफरत करती है। पायल की बाबा सैन्य से रिटायर हुए थे उनकी पेंशन और गांव होने वाली खेती के कारण आर्थिक स्थिति संतोषजनक थी। पायल की पिता का काम दूर होने के कारण परिवार का ध्यान बाबा रखते थे। पिता ने परिवार में पांचवी भी लड़की होने के कारण पायल को दिखा भी नहीं। लेकिन बेटा का जन्म के समय बहुत खुशियां मनाई जाती। बाबा की मृत्यु की बात घर की सारी जिम्मेदारी पिता की सिर पर आई। सभी दिन पिता ने शराब पीकर घर आते हैं और मां और बेटियों को मारते हैं। इसलिए परिवार में सभी ने पिता को डरते थे। एक दिन पायल घर से भागी थी जब पिताजी उसे मरते थे तब माँ ही उसे बचाने आती थी। पायल के पिता एक पितृसत आत्मक समाज का प्रतीक है। इसमें पितृसत्तात्मक समाज की समस्याओं को देखते हैं।

उपन्यास में पायल पहली बार हिजड़ा शब्द अपने पिता के मुंह से सुनते हैं। एक दिन पायल ने अपनी मां से कहती है की, "अम्मा कहां है?दीदीयों कहां है? उनका पिताजी ने क्या किया था? क्या सिर्फ मुझे? में भी तो उनका निशाना थी,

कुल कलंगिनी क्षत्रियों के खानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसा सारा श्रेय मेरा ही हो मैं हिजड़ा हूं...ठीक है....पर इसमें मेरा क्या कसूर? हिजड़ा होने मेरी अम्मा बल्कि पिताजी का भी तो कोई दोष नहीं फिर मेरे साथ ही ऐसे दुर्व्यवहार क्यों?"[1]

परिवार में मां के सिवा पायल को बचाने के लिए कभी नहीं आती। वह संसार में सबसे अच्छी आमाओं में एक थी।

इसके बाद उपन्यास में पायल की शिक्षा के बारे में बताते हैं। पायल को मां और बाप ने रखा नाम जुगनी था। स्कूल में रखा हुआ नाम है पायल। इसमें शिक्षक क्षेत्र की समस्याओं को पायल सामने करना पड़ती है। स्कूल में पायल एक परिहास का पात्र है। पिता ने पायल को एक लड़के बनाने के लिए उसकी पैंट शर्ट देती है। और मां से कहा कि, "देखो यह अपनी जुगनी के लिए है। अब यह पैंट शर्ट पहने की लड़का बनकर रहेंगे और उसका नाम जुगनू होगा कोई भी उसे जुगनी नहीं बोलेगा। लड़की के रूप में बड़ी होने पर समाज के लोग उसकी शादी रिश्ते की बातें करेंगे और लड़के के रूप में कोई कुछ नहीं कहेगा...."[2]

उसके बाद में उपन्यास एक दूसरा मोड पर जाती है।पायल ने परिवार की नारागीय जीवन को छोड़कर चले गए। न रोटी न मकान न किसी का सहारा।अकेली पायल अपने अस्मिता को बचाने के लिए संघर्ष कर रही है। भूख के कारण पायल ने ट्रेन में दातून बेचना था और छोटी-छोटी चोरियों भी करता था। इसके बाद पायल ने अप्सरा टॉकीज के कैंटीन में काम किया। टॉकीज़ में प्रमोद नामक एक व्यक्ति की दुर्व्यवहार के कारण वहां टॉकीज का काम छोड़ा। यहां शोषण, भूखमरी की समस्याओं को दर्शाते हैं।

पायल को लखनऊ जाकर आकाशवाणी में काम करने की इच्छा थी। लखनऊ के किन्नर उसे पहचान कर गुरुमई के पास ले आते हैं। वह बहुत विरोध करते हैं लेकिन किन्नर की हठधर्मता और सामूहिकता के कारण गुरु में की शरणागत होती है। गुरु की मृत्यु के बाद पायल किन्नर गुरु बन गई है पायल कहता है कि, "मैं सोचती हूं कि किन्नर द्वारा दी जाने वाली बधाई भी तो एक विधा है। फिर से लोग हास्य परिहास व अश्लीलता के चश्मे से क्यों देखते परखते हैं। इसे लोग संस्कृति के अंतर्गत अन्य गायन विधाओं की तरह मानता क्यों नहीं मिलती?[3]

उपन्यास का अंदर सकारात्मक और आशावादी हैं। "पायल यह महसूस करती है कि अकेली लड़की चाहे वह किन्नर ही क्यों ना हो असुरक्षित है। अनुभव के आधार पर निर्दिष्ट भी करती है कि वह पुलिस द्वारा असुरक्षित है जबकि भिखारी की जमात में सुरक्षित"।[4] उपन्यास की कथा सत्य है। लेखक ने पायल की असली अनुभवों को सुनकर लिखा गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 मैं पायल : महेंद्र भीष्म
2 किन्नर विमर्श दशा और दिशा : डॉक्टर विनय कुमार पाठक

सन्दर्भ

1. मैं पायल : महेंद्र भीष्म - पृ. 37
2. मैं पायल- महेंद्र भीष्म - पृ. 30
3. मैं पायल : महेंद्र भीष्म - पृ. 101
4. किन्नर विमर्श दशा और दिशा : डॉक्टर विनय कुमार पाठक - पृ. 95

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

प्रेमचंद युगीन उपन्यास : सामाजिक विषमता का आईना (प्रेमचंद के विशेष संदर्भ में)

Dr. Gourav Singh
Assistant Professor
Department of Hindi
PSG College of Arts & Science Coimbatore
Email: gouravsingh@psgcas.ac.in

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद युग का विशेष महत्व है। यह वह समय था जब भारतीय समाज अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से गुजर रहा था। देश अंग्रेजी शासन के अधीन था और ग्रामीण समाज विशेष रूप से शोषण, निर्धनता, अशिक्षा तथा सामंती व्यवस्था से प्रभावित था। किसान भारतीय समाज का महत्वपूर्ण अंग होते हुए भी आर्थिक संकट, ऋण, लगान और साहूकारों के शोषण से निरंतर जूझ रहा था। दूसरी ओर सामाजिक रूढ़ियाँ, जातिगत भेदभाव, स्त्री की दयनीय स्थिति तथा आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ भी समाज में गहराई तक विद्यमान थीं। इन परिस्थितियों का प्रभाव तत्कालीन हिंदी साहित्य पर भी पड़ा। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को कल्पना और मनोरंजन के सीमित दायरे से निकालकर उसे जीवन और समाज से जोड़ने का कार्य किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में तत्कालीन भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन को निकटता से देखा और उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया। किसान, मजदूर, गरीब, स्त्री, निम्नवर्ग और शोषित व्यक्ति उनके साहित्य के प्रमुख पात्र बने। 'प्रेमाश्रम' में किसान जीवन और जमींदारी व्यवस्था की समस्याएँ सामने आती हैं, तो 'गोदान' में किसान जीवन की त्रासदी अपने व्यापक रूप में दिखाई देती है। होरी जैसे पात्र के माध्यम से किसान की आर्थिक विवशता, ऋणग्रस्तता, सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवन-संघर्ष को अभिव्यक्ति मिलती है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषता यह है कि इनमें तत्कालीन समाज केवल पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि कथा का अभिन्न अंग बनकर सामने आता है। सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, सामंती व्यवस्था, ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और मानवीय संघर्ष इन उपन्यासों के प्रमुख आधार हैं। इस दृष्टि से प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास तत्कालीन भारतीय समाज के यथार्थ को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सामने आते हैं।

बीज शब्द : तत्कालीन समाज, संघर्ष, साहित्य, विषमता, सामंती प्रथा, ग्रामीण जीवन और कृषक।

हिंदी उपन्यास यात्रा में प्रेमचंद एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। प्रेमचंद का उपन्यास लेखन हिंदी भाषा में सन 1918 से शुरू होता है। हिंदी भाषा में लिखा गया इनका प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' है जोकि 1918 में प्रकाशित हुआ था। प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम', रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, कर्मभूमि तथा गोदान आदि उपन्यासों के अलावा उनकी 'पंच परमेश्वर', 'कफन', 'पूस की रात', जैसी कहानियाँ भी किसान जीवन को उद्घाटित करती है। इन उपन्यासों में प्रेमचंद ने समाज में फैली विषमता को, किसान जीवन की समस्याओं को, शोषण, परवशता, निर्धनों की आवाज, अशिक्षा, अंधविश्वास, सामंती व्यवस्था, मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याएँ, रूढ़ियों, सरकारी कर्मचारियों की भ्रष्टता आदि को दिखाया है। प्रेमचंद स्वयं ग्रामीण परिवेश

में पले-बढ़े थे, अतः यह स्वाभाविक ही था कि उन्होंने ग्रामीण जीवन की उन समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दिया जो उनसे पूर्व उपेक्षित रहीं थी। कृषक कथा साहित्य में प्रेमचंद के 'प्रेमाश्रम' को तथा उनके महान उपन्यास 'गोदान' की प्रथम सीढ़ी कहा जा सकता है।

प्रेमचंद ने लगभग 1918 के आसपास में उपन्यासों रचना शुरू की थी, यह वह समय था जब देश में अंग्रेजों का शासन चल रहा था। ब्रिटिश सरकार के अमानवीय व्यवहार व जमींदारों की शोषण नीति से भारतीय किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में उस समय की स्थिति का यथार्थ व आँखों देखा हाल चित्रण किया है। एक तरफ अंग्रेजों की निर्दयता तो दूसरी ओर साहूकार, महाजन व सामंत आदि शोषक वर्गों ने समाज में अनाचार का माहौल बनाया हुआ था। आर्थिक रूप से शोषण करने के लिए किसानों से भूमिकर अधिक वसूला जाता था और यह जमींदार और सरकारी विभागों से बहुत ही निर्दयता से वसूल किया जाता था। इन कारणों से कृषक पर ऋण चढ़ा ही रहता था और उसकी जमीन धीरे-धीरे साहूकारों व बड़े-बड़े सूदखोरों के हाथ में चली जाती थी। ये साहूकार ही फिर किसानों को उनकी ही खेती पर उनसे ही मजदूरी करवाते थे। इस स्थिति में किसान कृषक अपनी खेती से वंचित होकर अपने ही खेत में मजदूर के रूप में परिवर्तित हो जाते थे अथवा खेत के अभाव में मिलों में मजदूरी करते। तत्कालीन सरकारी व्यवस्था ने साहूकारों व सामंतों को किसानों का शोषण करने हेतु सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा दी थीं। जमींदार लोग किसानों से अनावश्यक रूप से पैसा, अन्न, डाढ़ (जुर्माना) आदि को वसूलते थे। सरकार के द्वारा उन पर कोई नियंत्रण नहीं लगाया गया था क्योंकि इस शोषण में तत्कालीन व्यवस्था का भी एक हिस्सा होता था। शोषण के इस साम्राज्यवादी चक्र को लेकर रामवक्ष जाट किसान के प्रति प्रेमचंद के विचारों को लिखते हैं कि - "उनकी मुख्य चिंता किसान का शोषण है। उन्होंने किसानों के शोषकों को एक कड़ी के रूप में अँग्रेजी साम्राज्यवाद को देखा। उन्होंने यह भी दिखाया है कि किसान के शोषण का कारण ब्रिटिश साम्राज्यवादी ही है, उन्हीं के कारण जमींदार और सूदखोर-तथा इनकी नौकरशाही शोषण कर रही है।"[1] शोषण के चक्र में किसान का जीवन केवल प्रेमचंद के युग में ही नहीं बल्कि आज भी वैसा ही घूम रहा है। किसानों के शोषण में केवल ब्रिटिश शासन का ही नहीं बल्कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था का भी योगदान रहा है।

प्रेमचंद का साहित्य आम जनता का साहित्य है। उसमें किसान, गरीब, मजदूर, विधवा, निर्धन, अनाथ व असहाय लोग सम्मिलित हैं। 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचंद ने गाँवों किसानों की व्यथा-कथा का चित्रण व निर्धनता के चलते परवशता को उपन्यास का कथानक बनाया है। जैसे प्रेमचंद किसानों की दुर्गति को चित्रित करते हैं वैसे वह जमींदारों की निर्दयता को भी बताते हैं। उनकी नजरों में कृषक के दयनीय जीवन का चित्रण करने के लिए जमींदारों की क्रूरता व शोषण को जान लेना आवश्यक है। प्रेमचंद की औपन्यासिक रचनाओं में बहुदा किसान ऋण में ही जन्म लेते हैं और ऋण में ही मर जाते हैं। प्रेमचंद स्वयं ऋण को एक अभिशाप मानते थे। प्रेमाश्रम के संदर्भ में आलोचक डॉ॰ इंद्रनाथ मदान का मानना है कि यह भारतीय साहित्य में पहला उपन्यास है जो ग्राम्य-जीवन और उसकी आधारभूत समस्याओं का वर्णन करता है। यह सत्य भी है कि प्रेमचंद से पहले हिंदी उपन्यास साहित्य में कृषक, कृषि तथा इसके साथ-साथ अन्य सामाजिक समस्याएँ उपेक्षित ही थीं।

तत्कालीन समय में भारत ब्रिटिश राज के पंजों में जकड़ा हुआ था। किसानों के जीवन में अभाव के अलावा और कुछ नहीं था। 'प्रेमाश्रम' के बारे में गोपाल राय कहते हैं -"प्रेमचंद ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसानोंऔर जमींदारों के संबंधों का चित्रण किया है। इस काल की सबसे तीखी सच्चाई यह थी कि भारत एक विदेशी पूंजीवादी ताकत का उपनिवेश था जिसका एकमात्र लक्ष्य देश का आर्थिक शोषण करना था।"[2] प्रेमचंद महात्मा गाँधी जी से प्रभावित थे और वह गाँधी के समय के लेखक भी हैं अतः उनकी रचनाओं में गाँधी दर्शन का प्रभाव दिखाई देना स्वाभाविक है। वह गाँधी जी के जैसे ही अहिंसा में विश्वास करते हैं। उपन्यास में जहाँ एक ओर सामंतवादी धारा और पूंजीवादी सत्ता का बोलबाला है तो दूसरी ओर किसानों से दबाब में कराया गया बेगार भी दिखाया गया है। यहाँ किसान जमीदारों के सामने खुलकर बगावत तो नहीं करते हैं पर सामंती संस्कृति के आगे लाचार किसान छिट-पुट बगावत करते-करते रुक जाते हैं।

गोदान को किसान जीवन की त्रासदी का महाकाव्य माना जाता है। प्रेमचंद ने कई उपन्यासों की रचना किसान जीवन

को केंद्र में रख कर की है किन्तु किसान जीवन का यथार्थ रूप उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में दिखाई देता है। गोदान उनके जीवन की सबसे सफल व शीर्ष की रचना मानी जाती है। मानवीय जीवन अनेकों आशाओं, आकक्षाओं से परिपूर्ण होता है। मनुष्य अपनी एक इच्छा को पूरा करते करते दूसरी इच्छा का मोह पाल लेता है। यह क्रम निरंतर चलता है, जिसको वह कभी पूर्ण नहीं कर सकता है। आशाएँ केवल रह जाती है और मनुष्य जीवन इन्हीं आशाओं और निराशाओं में जकड़ कर रह जाता है। अंत में मनुष्य की इहलौकिक जीवन लीला समाप्त हो जाती है। होरी के माध्यम से प्रेमचंद किसान की ऋण की समस्या को चित्रित करते हैं। हीरा के यहाँ पुलिस तलाशी लेने के लिए आती है तब होरी को लगता है पुलिस उसके भाई के घर में तलाशी लेगी तो उसकी मर्यादा को ठेस लगेगी। इसलिए वह दातादीन से पैसे मांगता है-"होरी दीन स्वर में बोला-अब मैं क्या अरज करूँ महाराज! अभी तो पहले ही की गठरी सिर पर लदी है, और किस मुंह से मांगू, लेकिन इस संकट से उबार लो। जीता रहा, तो कौड़ी-कौड़ी चुका दूंगा। मैं मर भी जाऊँ तो गोबर तो है ही।" [3] गरीब किसान ऋण में जन्म लेता है और अंत तक में ऋण से ग्रस्त रहता है और ऋण में ही मर जाता है। ऋण का भार कभी खत्म न होने वाला ऐसा भार होता है जो बाप के कंधे से उतर कर बेटे के कंधों पर आ जाता है। होरी की दशा इससे भिन्न नहीं है। रामविलास शर्मा लिखते हैं-"गोदान की मूल समस्या ऋण की समस्या है। इस उपन्यास में किसानों के साथ मानों वह आपबीती भी कह रहे थे।"[4] प्रेमचंद भी एक मामूली किसान परिवार से जुड़े हुए कथाकार हैं। और किसान जीवन में ऋण की समस्या कोई नई समस्या नहीं है। किसान के शोषकों में कोई एक शोषक नहीं है। यहाँ जमींदार, पटवारी, कानूनगो, मुखिया, सामंत आदि सब मिलकर उसका शोषण करते हैं।

किसान जीवन का रहन-सहन, संस्कृति और सामाजिक पक्षों यथार्थ चित्रण प्रेमचंद के अतिरिक्त शायद ही किसी अन्य साहित्यकार ने प्रस्तुत किया हो। 'गोदान' केवल होरी की व्यथा - कथा ही नहीं है बल्कि होरी भारत के करोड़ो किसानों का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देता है। भोजन न मिलने के कारण मजदूर काम करना बंद कर देते हैं। चपरासी जब रायसाहब को इस बारे में सूचना देता है तो उनका दोमुंहा व्यक्तित्व सामने आ जाता है उनका माथा सिकुड़ जाता है भौएं तन जाती हैं और गुस्से में आँखें बाहर आ जाती हैं फिर वह कहते हैं कि -"मैं इन दुष्टों को ठीक करता हूँ। जब कभी खाने को नहीं दिया, तो आज यह नई बात क्यों? एक आने रोज के हिसाब से मजूरी मिलेगी, जो हमेशा मिलती रही है; और इस मजूरी पर काम करना होगा, सीधे करें या टेढ़े।" [5] प्रेमचंद किसानों पर हो रहे जमींदारों के अत्याचारों, किसान की जमीन पर पूँजीवादियों की गिद्ध दृष्टि, समाज में उपेक्षित जन, भारत के अन्न दाता से परिचय करवाते हैं। दो मुहें रायसाहब जैसे पाशविक प्रवृति के लोग किस प्रकार से किसानों का शोषण करते हैं व उनको मूर्ख समझते इसका स्पष्ट अंकन 'गोदान' में है।

प्रेमचंदयुग में कृषि संस्कृति की परंपरा से जुड़े उपन्यासों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का नाम लिया जाता है। निराला का द्वितीय उपन्यास 'अलका' (1933) में तत्कालीन अवध प्रांत के किसानों और जन सामान्य की अभावपूर्ण और त्रासदी युक्त जीवन का वर्णन किया है। यह वह समय था जब भारत में गाँधी का प्रभुत्व बढ़ रहा था। गाँधी के ही प्रयासों से तत्कालीन समय में सभी वर्ग-धर्म के लोग आजादी की लड़ाई में एक साथ हुए थे। हर तबके ने अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाई और शोषण की जंजीर से मुक्ति पाने लिए विकल हो उठे थे। इस समय भारत का नेतृत्व गाँधी के हाथों में था। समाज के शिक्षित और संपन्न लोग स्वतंत्रता की लड़ाई में कूदे जिनमें कुछ वकील और बेरिस्टर व पूंजीपति वर्ग ने भी हिस्सा लिया। काँग्रेस ने वर्ग स्वार्थ की सोच के कारण किसानों को इस लड़ाई से दूर रखा गया।

गोपाल राय 'अलका' उपन्यास के संदर्भ में लिखते हैं-"हिंदी के सबसे बड़े उपन्यासकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किसानों की तकलीफ़ों और जमींदारों-साहूकारों तथा सरकारी तंत्र द्वारा उनके शोषण का चित्रण तो किया पर वे भी किसानों-मजदूरों द्वारा व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह का चित्रण करने से कतरा गए। उसका ध्यान इस तथ्य की ओर प्रायः नहीं गया कि कांग्रेस का नेतृत्व जमींदारों-पूँजीपतियों के विरुद्ध किसानों-मजदूरों के विद्रोह को उभरने न देने की कोशिश करता था। इसका कारण था कांग्रेस नेतृत्व का वर्गस्वार्थ। पर निराला ने 'अलका' में इस वर्गस्वार्थ का स्पष्ट उल्लेख किया। उपन्यास का एक पात्र उन नेताओं का भी आलोचात्मक रूप में उल्लेख करता है जो लाखों-करोड़ों की कमाई करने के बाद नेता बन

गए हैं। इस प्रकार कांग्रेस नेतृत्व और किसान जनता के वर्ग स्वार्थ एक दूसरे से सर्वदा भिन्न थे जिसे निराला ने प्रेमचंद की तुलना में ज्यादा अच्छी तरह से समझा था। निराला ने 'अलका' में जमींदारों के विरुद्ध किसानों की बगावत का अंकन किया है।"[6] प्रेमचंद के बाद निराला ने जिस प्रकार किसान जीवन तथा उसकी समस्याओं का चित्रण किया है उसी कड़ी में रामचंद्र तिवारी का 'कमला' 1943 उपन्यास उल्लेखनीय है। इस उपन्यास में उत्तर भारत के एक गाँव के निर्धन तथा साधनों के अभाव से जूझते अशिक्षित किसानों का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में कृषक जीवन के सांस्कृतिक जीवन, आशाओं और अपेक्षाओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। यहाँ दो जून की रोटी के लिए किस प्रकार विभिन्न साधन जुटाने में प्रयासरत हैं, आदि का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही उपन्यास में घरेलू वितृष्णा और बहूओं पर होने वाले अनाचार का चित्रण रचनाकार नें संवेदना पूर्वक किया है। रामचंद्र तिवारी का दूसरा उपन्यास 'सागर, सरिता और अकाल' बंगाल के अकाल की व्यथा - कथा को कहता है। 1943-44 में बंगाल मे भीषण अकाल पड़ा था। इसी अकाल के परिपेक्ष्य में लिखा गया यह उपन्यास तत्कालीन समय के मिल-मालिकों, महाजनों, साहूकारों, सरकारी कर्मचारियों के, प्राकृतिक आपदा में अवसर वाली सोच को चित्रित करता है। इस उपन्यास के केंद्र में एक मुस्लिम परिवार है। उपन्यासकार ने अपने दोनों ही उपन्यासों में अपनी सामाजिक सोच व अनुभव का गहनता से प्रयोग किया है।

प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उस समय का उपन्यास साहित्य तत्कालीन भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों से गहरे रूप में जुड़ा हुआ था। अंग्रेजी शासन, सामंती व्यवस्था, जमींदारी प्रथा, साहूकारी, आर्थिक विषमता और सामाजिक रूढ़ियों ने भारतीय जनजीवन को प्रभावित किया था। इन परिस्थितियों का सबसे अधिक प्रभाव किसान और ग्रामीण समाज पर पड़ा। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किसान जीवन की इन समस्याओं को केवल प्रस्तुत ही नहीं किया, बल्कि उनके पीछे कार्य कर रही सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को भी सामने रखा।

'प्रेमाश्रम' में किसान और जमींदार के संबंधों, ग्रामीण जीवन तथा सामंती व्यवस्था का चित्रण मिलता है, जबकि 'गोदान' में किसान जीवन की त्रासदी व्यापक रूप में सामने आती है। होरी का जीवन केवल एक किसान की व्यक्तिगत कथा नहीं रह जाता, बल्कि वह उस समय के उन असंख्य किसानों का प्रतिनिधित्व करता है जो ऋण, गरीबी, सामाजिक दबाव और शोषण के बीच अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान जीवन तत्कालीन समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण आधार बनता है।

संदर्भ सूची

1. रामवक्ष जाट, प्रेमचंद और भारतीय किसान, वाणी प्रकाशन, वर्ष 2012, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 185
2. गोपालराय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2019, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 132
3. प्रेमचंद, गोदान, मेपल प्रेस लिमिटेड, वर्ष 2019, नोएडा, पृष्ठ सं. 119
4. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2016, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 96
5. प्रेमचंद, गोदान, मेपल प्रेस लिमिटेड, वर्ष 2019, नोएडा, पृष्ठ सं. 15
6. गोपालराय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2019, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 152

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रम का अध्ययन

विजय शर्मा
शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज बरेली
डॉ. रितेश कुमार चौरसिया
शोध पर्यवेक्षक/असिस्टेंट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज बरेली

सारांश :- इक्कीसवीं शताब्दी में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय शक्ति और सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण आधार बन गई है। संचार, निगरानी, मौसम पूर्वानुमान, सीमाओं की सुरक्षा, मिसाइल मार्गदर्शन, साइबर सुरक्षा तथा युद्ध संचालन जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष आधारित प्रणालियों का व्यापक उपयोग हो रहा है। भारत ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नेतृत्व में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जिन्होंने देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सामरिक क्षमताओं को सुदृढ़ किया है। हाल के वर्षों में भारत ने रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रमों को भी प्राथमिकता दी है, जिसके परिणामस्वरूप रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी, मिशन शक्ति, सैन्य उपग्रहों तथा नाविक उपग्रह जैसी प्रणालियों का विकास हुआ है।

यह शोध-पत्र भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका का विश्लेषण करता है तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं भारतीय रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रमों के योगदान का अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही अंतरिक्ष सुरक्षा के समक्ष विद्यमान चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का भी विवेचन किया गया है।

परिचय :- राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा समय के साथ व्यापक होती गई है। पहले राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति तक सीमित थी, परंतु वर्तमान समय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, विशेषकर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न अंग बन चुकी है। आधुनिक युद्धों में सूचना का तीव्र आदान-प्रदान, वास्तविक समय निगरानी, सटीक लक्ष्य निर्धारण, संचार नियंत्रण तथा मिसाइल मार्गदर्शन के लिए उपग्रहों का प्रयोग अनिवार्य हो गया है।

भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया। भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना के साथ भारत ने अंतरिक्ष कार्यक्रम की आधारशिला रखी। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य विकासोन्मुख कार्यक्रमों को बढ़ावा देना था, किंतु समय के साथ इसकी उपयोगिता राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सामरिक क्षेत्र में भी बढ़ती गई। आज भारत विश्व की प्रमुख अंतरिक्ष शक्तियों में सम्मिलित है। भारत की बदलती सुरक्षा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रमों का भी तीव्र विकास हुआ है। रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी, अंतरिक्ष स्थितिजन्य जागरूकता, उपग्रह आधारित निगरानी, सुरक्षित सैन्य संचार तथा अंतरिक्ष परिसंपत्तियों की सुरक्षा आज भारत की सुरक्षा रणनीति के महत्वपूर्ण घटक बन चुके हैं। इसके अतिरिक्त,

वर्ष 2019 में मिशन शक्ति के अंतर्गत एंटी-सैटेलाइट क्षमता का सफल प्रदर्शन भारत की अंतरिक्ष सुरक्षा क्षमता में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका का सामरिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। अध्ययन में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रमों, उपग्रह प्रणालियों, अंतरिक्ष आधारित सैन्य क्षमताओं तथा उभरती अंतरिक्ष सुरक्षा चुनौतियों का समग्र मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही, यह शोध भारत की अंतरिक्ष नीति, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा भविष्य की अंतरिक्ष सुरक्षा रणनीतियों का विश्लेषण करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा को अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करेगा।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की अवधारणा

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से आशय उन वैज्ञानिक सिद्धांतों, तकनीकों, उपकरणों तथा प्रणालियों से है जिनका उपयोग पृथ्वी के वायुमंडल से बाहर स्थित अंतरिक्ष के अध्ययन, अन्वेषण, उपयोग एवं प्रबंधन के लिए किया जाता है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का मूल उद्देश्य अंतरिक्ष में उपलब्ध संसाधनों एवं सूचनाओं का मानव कल्याण के लिए उपयोग करना तथा पृथ्वी और ब्रह्मांड के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान का विस्तार करना है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के बीच प्रारंभ हुई अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा ने इस क्षेत्र के तीव्र विकास को गति प्रदान की। वर्ष 1957 में सोवियत संघ द्वारा स्पुतनिक-1 के प्रक्षेपण ने अंतरिक्ष युग की शुरुआत की, जिसके बाद विभिन्न देशों ने उपग्रह निर्माण, मानव अंतरिक्ष उड़ान, चंद्र एवं मंगल अभियानों तथा अंतरिक्ष अनुसंधान में उल्लेखनीय प्रगति की।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रमुख घटकों में प्रक्षेपण यान, अंतरिक्ष यान, अंतरिक्ष स्टेशन, अंतरिक्ष दूरबीन, भू-आधारित नियंत्रण केंद्र तथा डेटा विश्लेषण प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। प्रक्षेपण यान उपग्रहों एवं अंतरिक्ष यानों को पृथ्वी की कक्षा या अंतरिक्ष में स्थापित करने का कार्य करते हैं, जबकि उपग्रह संचार, मौसम, पृथ्वी अवलोकन, नेविगेशन तथा रक्षा संबंधी सेवाएँ, सैन्य संचार, सीमाओं की निगरानी, मिसाइल चेतावनी प्रणाली, खुफिया जानकारी संग्रह, लक्ष्य निर्धारण तथा वास्तविक समय निगरानी के लिए अंतरिक्ष आधारित प्रणालियाँ अनिवार्य बन चुकी हैं। इसी कारण अंतरिक्ष को आज सामरिक शक्ति के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में देखा जाता है। भारत में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का विकास भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के नेतृत्व में हुआ है। आर्यभट्ट उपग्रह से प्रारंभ हुई यात्रा आज चंद्रयान, मंगलयान, आदित्य-एल1, गगनयान तथा उन्नत प्रक्षेपण प्रणालियों तक पहुँच चुकी है। भारत ने संचार, दूरसंवेदी, मौसम विज्ञान तथा नेविगेशन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के साथ-साथ रक्षा क्षेत्र में भी अंतरिक्ष आधारित क्षमताओं का विकास किया है। मिशन शक्ति के माध्यम से भारत ने उपग्रह-रोधी क्षमता का सफल प्रदर्शन कर यह सिद्ध किया कि वह अंतरिक्ष सुरक्षा के क्षेत्र में भी सक्षम राष्ट्र है।

अतः कहा जा सकता है कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी वह समग्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रणाली है जिसके माध्यम से मानव अंतरिक्ष का अन्वेषण, उपयोग तथा नियंत्रण करता है। वर्तमान युग में इसका महत्व केवल अंतरिक्ष विज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक समृद्धि, तकनीकी आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय विकास, सामरिक शक्ति तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा का एक प्रमुख आधार बन चुकी है।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम एवं इसरो की भूमिका

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम विश्व के सबसे सफल, किफायती तथा विकासोन्मुख अंतरिक्ष कार्यक्रमों में से एक है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की विशेषता यह है कि इसका विकास शांतिपूर्ण उद्देश्यों के साथ-साथ राष्ट्रीय सामरिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। आज भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी शक्तियों में सम्मिलित है और चंद्रमा, मंगल तथा सूर्य जैसे महत्त्वपूर्ण अंतरिक्ष अभियानों के माध्यम से अपनी वैज्ञानिक क्षमता का प्रदर्शन कर चुका है।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव 1962 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति की स्थापना के साथ रखी गई। इसके संस्थापक डॉ. विक्रम साराभाई थे, जिन्हें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है। उनका मानना था कि अंतरिक्ष विज्ञान का उपयोग केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए। इसी दृष्टिकोण के आधार पर भारत ने संचार, शिक्षा, मौसम पूर्वानुमान, कृषि, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन तथा आपदा नियंत्रण के लिए अंतरिक्ष तकनीकों का विकास प्रारम्भ किया। वर्ष 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना की गई। प्रारम्भ में यह परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन कार्यरत था, किंतु वर्ष 1972 में भारत सरकार ने अंतरिक्ष विभाग की स्थापना कर इसरो को उसके अधीन कर दिया। इसके बाद भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को संगठित दिशा, पर्याप्त वित्तीय संसाधन तथा दीर्घकालीन रणनीतिक दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। इसरो का मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग राष्ट्रीय विकास तथा आत्मनिर्भरता के लिए करना है। इसके प्रमुख कार्यों में उपग्रहों का निर्माण, प्रक्षेपण यानों का विकास, अंतरिक्ष अभियानों का संचालन, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों का विस्तार तथा अंतरिक्ष अनुसंधान को प्रोत्साहित करना शामिल है। इसरो ने सीमित संसाधनों में विश्वस्तरीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर यह सिद्ध किया है कि वैज्ञानिक नवाचार एवं कुशल प्रबंधन के माध्यम से कम लागत में भी उच्च गुणवत्ता वाले अंतरिक्ष कार्यक्रम संचालित किए जा सकते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्रथम महत्वपूर्ण पड़ाव वर्ष 1975 में आर्यभट्ट उपग्रह का सफल प्रक्षेपण था। इसके पश्चात भास्कर, रोहिणी, भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली, भारतीय रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट तथा जिओसिंक्रोनस सैटेलाइट श्रृंखला के उपग्रहों ने भारत को संचार, मौसम विज्ञान, दूरसंवेदी तथा प्रसारण सेवाओं में आत्मनिर्भर बनाया। विशेष रूप से भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली ने दूरदर्शन, दूरसंचार, मौसम पूर्वानुमान तथा आपदा चेतावनी सेवाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किया, जबकि भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रहों ने कृषि, जल संसाधन, वन संरक्षण तथा खनिज संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसरो ने स्वदेशी प्रक्षेपण यानों के विकास में भी उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। उपग्रह प्रक्षेपण यान-3 से प्रारम्भ होकर संवर्धित उपग्रह प्रक्षेपण यान, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान, भू-समकालीन उपग्रह प्रक्षेपण यान तथा प्रक्षेपण यान मार्क-3 (पूर्व नाम भू-समकालीन उपग्रह प्रक्षेपण यान मार्क-3) जैसे प्रक्षेपण यानों ने भारत को विदेशी प्रक्षेपण सेवाओं पर निर्भरता से मुक्त किया। विशेष रूप से ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान को विश्व का सबसे विश्वसनीय प्रक्षेपण यान माना जाता है, जिसने अनेक भारतीय एवं विदेशी उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया है। इससे भारत की अंतरिक्ष वाणिज्यिक क्षमता भी मजबूत हुई है।

वर्ष 2008 में चंद्रयान-1 मिशन ने चंद्रमा पर जल अणुओं की उपस्थिति का प्रमाण प्रस्तुत किया, जिसे अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय ने अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि माना। वर्ष 2013 में मंगलयान मिशन के माध्यम से भारत प्रथम प्रयास में ही मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने वाला विश्व का पहला एशियाई देश बना। इसके बाद चंद्रयान-3 की सफल चंद्र लैंडिंग तथा आदित्य-एल1 मिशन ने भारत की वैज्ञानिक क्षमता एवं तकनीकी दक्षता को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। वर्तमान में गगनयान मिशन के माध्यम से भारत मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम की दिशा में भी अग्रसर है। राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में इसरो की भूमिका निरंतर विस्तृत होती जा रही है।

भारतीय क्षेत्रीय उपग्रह नौवहन प्रणाली भारत द्वारा विकसित एक स्वदेशी क्षेत्रीय उपग्रह नौवहन प्रणाली है, नाविक में कुल 7 उपग्रहों का समूह तथा भू-आधारित नियंत्रण केंद्र शामिल हैं, जो निरंतर उपयोगकर्ताओं को विश्वसनीय संकेत प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से नाविक का विशेष महत्व है। यह भारतीय सशस्त्र बलों को सीमा निगरानी, सैन्य अभियानों, मिसाइल मार्गदर्शन, नौसैनिक संचालन तथा वायु अभियानों में सटीक नेविगेशन सुविधा उपलब्ध कराता है।

वर्ष 2019 में भारत ने मिशन शक्ति के अंतर्गत सफल एंटी-सैटेलाइट परीक्षण कर अंतरिक्ष सुरक्षा के क्षेत्र में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। इस उपलब्धि के साथ भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल हो गया जिनके पास उपग्रह-रोधी क्षमता उपलब्ध है। इसके पश्चात रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी तथा रक्षा अंतरिक्ष अनुसंधान से संबंधित संस्थागत व्यवस्थाओं को और अधिक

सुदृढ़ किया गया, जिससे अंतरिक्ष आधारित रक्षा क्षमताओं का विकास तीव्र गति से आगे बढ़ा।

आदित्य- एल1 भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का पहला सौर मिशन है, जिसका उद्देश्य सूर्य तथा उसकी बाहरी परतों (कोरोना, फोटोस्फीयर और क्रोमोस्फीयर) का विस्तृत अध्ययन करना है। इस मिशन का प्रक्षेपण 2 सितंबर 2023 को ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान-सी57 प्रक्षेपण यान द्वारा किया गया तथा 6 जनवरी 2024 को इसे पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर स्थित लैग्रांज बिंदु-1 की हेलो कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। एल1 बिंदु से सूर्य का निरंतर एवं निर्बाध अवलोकन संभव है, जिससे सौर गतिविधियों का वास्तविक समय में अध्ययन किया जा सकता है। आदित्य- एल1 मिशन का प्रमुख उद्देश्य सौर कोरोना की संरचना, सौर पवन, सौर ज्वालाओं, कोरोनल मास इजेक्शन तथा अंतरिक्ष मौसम का अध्ययन करना है। इस मिशन में स्थापित वैज्ञानिक उपकरण सूर्य से निकलने वाले कणों एवं विकिरण का विश्लेषण कर पृथ्वी पर उनके प्रभावों का आकलन करते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से आदित्य-एल1 का विशेष महत्व है, क्योंकि अंतरिक्ष मौसम का प्रभाव संचार उपग्रहों, नेविगेशन प्रणालियों, विद्युत ग्रिड तथा रक्षा संचार नेटवर्क पर पड़ सकता है। समय रहते सौर गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होने से उपग्रहों की सुरक्षा, सैन्य संचार प्रणालियों की विश्वसनीयता तथा अंतरिक्ष आधारित अवसंरचना की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। इस प्रकार आदित्य-एल1 भारत की वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ अंतरिक्ष सुरक्षा एवं राष्ट्रीय सामरिक क्षमता को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण मिशन है।

राष्ट्रीय सुरक्षा में इसरो का योगदान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का प्रमुख संस्थान है, जिसने राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रारम्भिक वर्षों में इसरो का उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का शांतिपूर्ण उपयोग था, किंतु बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य, अंतरिक्ष के बढ़ते सैन्यीकरण तथा आधुनिक युद्ध की आवश्यकताओं के कारण इसरो की भूमिका सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान में इसरो द्वारा विकसित उपग्रह, प्रक्षेपण यान, नेविगेशन प्रणाली तथा पृथ्वी अवलोकन तकनीकें भारतीय सशस्त्र बलों, खुफिया एजेंसियों एवं आपदा प्रबंधन तंत्र को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर रही हैं। इसरो द्वारा विकसित मानचित्रण उपग्रह, रडार प्रतिबिंब उपग्रह तथा पृथ्वी अवलोकन उपग्रह श्रृंखला के उपग्रह उच्च-रिजॉल्यूशन चित्र उपलब्ध कराते हैं, जिनका उपयोग भारत की स्थलीय सीमाओं, समुद्री सीमाओं तथा संवेदनशील क्षेत्रों की निगरानी के लिए किया जाता है। ये उपग्रह वास्तविक समय में गतिविधियों की पहचान करने में सक्षम हैं, जिससे घुसपैठ, आतंकवादी गतिविधियों तथा अवैध सीमा पार गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण संभव होता है। विशेष रूप से सिंथेटिक अपर्चर रडार युक्त उपग्रह दिन-रात तथा प्रतिकूल मौसम में भी निगरानी करने में सक्षम हैं। आधुनिक युद्ध में सुरक्षित एवं निर्बाध संचार अत्यंत आवश्यक है।

इसरो द्वारा विकसित जिओसिंक्रोनस सैटेलाइट-7, जिओसिंक्रोनस सैटेलाइट-7ए तथा अन्य संचार उपग्रह भारतीय नौसेना, वायुसेना एवं अन्य सुरक्षा एजेंसियों को सुरक्षित संचार नेटवर्क उपलब्ध कराते हैं। इन उपग्रहों के माध्यम से सैन्य इकाइयों के बीच समन्वय, कमांड एवं नियंत्रण तथा वास्तविक समय में सूचनाओं का आदान-प्रदान संभव होता है। इसरो द्वारा विकसित नाविक भारत की स्वदेशी क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन प्रणाली है। यह भारतीय उपमहाद्वीप तथा आसपास के क्षेत्रों में अत्यंत सटीक स्थिति, दिशा एवं समय संबंधी जानकारी उपलब्ध कराती है। युद्ध अथवा आपातकालीन परिस्थितियों में विदेशी वैश्विक स्थिति निर्धारण प्रणाली पर निर्भरता कम करना राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाविक का उपयोग सैन्य अभियानों, मिसाइल मार्गदर्शन, नौसैनिक संचालन तथा सीमा सुरक्षा में किया जा रहा है। यद्यपि इसरो प्रत्यक्ष रूप से हथियार प्रणाली विकसित नहीं करता, फिर भी उसकी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियाँ रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन तथा भारतीय सशस्त्र बलों को तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं। उपग्रह आधारित नेविगेशन, संचार, लक्ष्य निर्धारण तथा वास्तविक समय की निगरानी मिसाइल परीक्षणों एवं सैन्य अभियानों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं से नागरिकों की सुरक्षा भी इसका महत्वपूर्ण भाग है।

आधुनिक युद्ध में सूचना एवं खुफिया क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसरो द्वारा विकसित पृथ्वी अवलोकन उपग्रह सीमावर्ती क्षेत्रों, सैन्य गतिविधियों तथा सामरिक संरचनाओं से संबंधित सटीक जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इनसे प्राप्त आँकड़े रक्षा एजेंसियों के निर्णय लेने, सैन्य योजना निर्माण तथा खतरे के पूर्व आकलन में सहायक होते हैं। इसरो ने भारत के रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास के लिए आवश्यक वैज्ञानिक एवं तकनीकी आधार तैयार किया है। वर्ष 2019 में मिशन शक्ति के अंतर्गत एंटी-सैटेलाइट परीक्षण की सफलता ने भारत की अंतरिक्ष सुरक्षा क्षमता को नई दिशा दी। इसके अतिरिक्त, डिफेंस स्पेस एजेंसी तथा अन्य रक्षा अंतरिक्ष संस्थानों को इसरो के तकनीकी अनुभव एवं अवसंरचना का लाभ प्राप्त होता है। ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान, भू-समकालीन उपग्रह प्रक्षेपण यान तथा प्रक्षेपण यान मार्क 3 जैसे स्वदेशी प्रक्षेपण यानों के विकास ने भारत को विदेशी प्रक्षेपण सेवाओं पर निर्भरता से मुक्त किया है। आवश्यकता पड़ने पर भारत अपने रक्षा एवं निगरानी उपग्रहों का शीघ्र प्रक्षेपण कर सकता है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षमता भारत की रणनीतिक स्वायत्तता एवं तकनीकी आत्मनिर्भरता को भी सुदृढ़ करती है।

इसरो की सफलताओं ने भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। विभिन्न देशों के उपग्रहों के प्रक्षेपण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा तकनीकी साझेदारी के माध्यम से भारत ने अंतरिक्ष कूटनीति को मजबूत किया है। इससे भारत की सामरिक स्थिति एवं वैश्विक प्रभाव में वृद्धि हुई है।

भारत के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

विश्व की प्रमुख शक्तियाँ-जैसे अमेरिका, रूस और चीन अंतरिक्ष को सैन्य दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व दे रही हैं। सैन्य उपग्रह, एंटी-सैटेलाइट हथियार, अंतरिक्ष आधारित निगरानी तथा मिसाइल चेतावनी प्रणालियों के विकास ने अंतरिक्ष को रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बना दिया है। भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अपनी अंतरिक्ष परिसंपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए संतुलित एवं जिम्मेदार अंतरिक्ष नीति बनाए रखे। चीन की तीव्र अंतरिक्ष प्रगति, उन्नत उपग्रह नेटवर्क, एंटी-सैटेलाइट क्षमता तथा अंतरिक्ष आधारित सैन्य प्रणालियाँ भारत के लिए प्रमुख रणनीतिक चुनौती हैं। पाकिस्तान भी चीन के सहयोग से अपनी अंतरिक्ष क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। इस बदलते क्षेत्रीय सुरक्षा वातावरण में भारत को अपनी निगरानी, संचार तथा रक्षा अंतरिक्ष क्षमताओं का निरंतर आधुनिकीकरण करना होगा। पृथ्वी की कक्षा में निष्क्रिय उपग्रहों, रॉकेट अवशेषों एवं अन्य मलबे की बढ़ती संख्या सक्रिय उपग्रहों के लिए गंभीर खतरा है। किसी भी टक्कर से संचार, नेविगेशन तथा रक्षा उपग्रह प्रभावित हो सकते हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

आधुनिक उपग्रह प्रणाली डिजिटल नेटवर्क पर आधारित होती है। साइबर हमले, हैकिंग, डेटा चोरी तथा संचार नेटवर्क में हस्तक्षेप जैसी गतिविधियाँ अंतरिक्ष आधारित रक्षा प्रणालियों को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए उपग्रहों तथा ग्राउंड स्टेशनों की साइबर सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। भारत ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय आत्मनिर्भरता प्राप्त की है, फिर भी कुछ अत्याधुनिक तकनीकों, उच्च क्षमता वाले सेंसर, उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अंतरिक्ष सामग्री के क्षेत्र में विदेशी निर्भरता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। दीर्घकालिक राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पूर्ण तकनीकी आत्मनिर्भरता आवश्यक है। उन्नत अंतरिक्ष मिशनों, रक्षा उपग्रहों तथा नई तकनीकों के विकास के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता होती है। सीमित संसाधनों के बीच वैज्ञानिक अनुसंधान, रक्षा आवश्यकताओं तथा विकासात्मक परियोजनाओं के बीच संतुलन बनाए रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अंतरिक्ष गतिविधियों में वृद्धि के साथ उपग्रह सुरक्षा, निजी क्षेत्र की भागीदारी, डेटा संरक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग से संबंधित स्पष्ट एवं प्रभावी कानूनी ढाँचे की आवश्यकता बढ़ गई है। भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत को अपने अंतरिक्ष शासन को और सुदृढ़ करना होगा।

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में भारत अधिक उन्नत सैन्य संचार उपग्रह, पृथ्वी अवलोकन उपग्रह, प्रारंभिक मिसाइल चेतावनी प्रणाली तथा

अंतरिक्ष आधारित निगरानी नेटवर्क विकसित कर सकता है। इससे तीनों सेनाओं की संयुक्त युद्ध क्षमता और अधिक प्रभावी होगी। मशीन लर्निंग तथा बिग डेटा विश्लेषण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से उपग्रहों द्वारा प्राप्त विशाल आँकड़ों का त्वरित विश्लेषण संभव होगा। इससे सीमा निगरानी, खतरे की पहचान तथा सामरिक निर्णय प्रक्रिया अधिक सटीक एवं तीव्र होगी।

कम लागत वाले छोटे उपग्रह तथा उपग्रह समूह भविष्य की रक्षा रणनीति का महत्वपूर्ण भाग बन सकते हैं। इनके माध्यम से निरंतर निगरानी, सुरक्षित संचार तथा त्वरित सूचना उपलब्ध कराई जा सकेगी। भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र तथा न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड जैसी संस्थाओं के माध्यम से निजी उद्योगों एवं स्टार्टअप्स की भागीदारी बढ़ रही है। इससे अनुसंधान, नवाचार, उत्पादन तथा अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और रक्षा क्षेत्र को भी नई तकनीकी क्षमताएँ प्राप्त होंगी।

गगनयान मिशन, पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान, चंद्र एवं मंगल अभियानों तथा अंतरिक्ष स्टेशन से संबंधित अनुसंधान भारत की वैज्ञानिक एवं सामरिक क्षमता को नई दिशा देंगे। इन अभियानों से विकसित तकनीकों का उपयोग रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी किया जा सकेगा। भारत भविष्य में मित्र देशों के साथ संयुक्त उपग्रह परियोजनाओं, अंतरिक्ष अनुसंधान तथा सुरक्षा सहयोग को बढ़ाकर अपनी वैश्विक भूमिका को और मजबूत कर सकता है। इससे सामरिक साझेदारी एवं क्षेत्रीय स्थिरता को भी बल मिलेगा।

निष्कर्ष :- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन आज केवल एक वैज्ञानिक संस्था नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा संरचना का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। इसके द्वारा विकसित उपग्रह, प्रक्षेपण यान, नेविगेशन प्रणाली तथा अंतरिक्ष आधारित संचार एवं निगरानी तकनीकें भारतीय सशस्त्र बलों को आधुनिक युद्ध की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम बनाती हैं। सीमा सुरक्षा, समुद्री निगरानी, सुरक्षित संचार, खुफिया जानकारी, आपदा प्रबंधन, मिसाइल मार्गदर्शन तथा रणनीतिक आत्मनिर्भरता के क्षेत्रों में इसरो का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, छोटे उपग्रह, अंतरिक्ष-आधारित निगरानी प्रणाली तथा रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रमों के विस्तार के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा में इसरो की भूमिका और अधिक व्यापक एवं निर्णायक होती जाएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Abdul Kalam, A. P. J., & Rajan, Y. S. India 2020: A Vision for the New Millennium. Penguin Books, 1998.
2. Rajagopalan, R. P. India's Space Strategy. Observer Research Foundation, New Delhi.
3. Government of India. Indian Space Policy 2023. Department of Space.
4. ISRO. Annual Report 2023n`24. Bengaluru: Indian Space Research Organisation.
5. Ministry of Defence. Annual Report 2023n`24. Government of India.
6. Jasjit Singh. Kargil 1999: Pakistan's Fourth War for Kashmir. Knowledge World.
7. Tellis, Ashley J. India's Emerging Nuclear Posture. RAND Corporation.
8. Bharat Karnad. Why India is Not a Great Power (Yet). Oxford University Press.
9. C. Raja Mohan. Crossing the Rubicon. Viking Publications.
10. United Nations Office for Outer Space Affairs (UNOOSA). Outer Space Treaty and Related Documents.
11. Kasturirangan, K. Space and India. Hyderabad: Universities Press, 2011.
12. Suresh, B. N. From Fishing Hamlet to Red Planet. New Delhi: HarperCollins India, 2015.
13. Rajaraman, R. (Ed.). India's Nuclear and Space Programmes. New Delhi: Pearson Education, 2005.
14. Sarabhai, Vikram A. Space Research and National Development. Ahmedabad: Physical Research Laboratory, 1966.
15. Department of Space, Government of India. Indian Space Programme: Vision and Policy Documents.
16. Prasad, M. Y. S. History of Indian Launch Vehicles. ISRO Publications.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Print Research Journal

Carbon Nanotubes in Nanoscience: Structural Characteristics, Electronic Properties and Applications in Nanoscale Devices

Dr. Jyoti Mishra
Assistant Professor
Department of Physics
D.B.S. College Govind Nagar Kanpur
jyotimishra655@gmail.com
Mobile:9956759928

Abstract

The electronic character of a carbon nanotube is set by its geometry, since the same sheet of sp^2-bonded carbon is a metal or a semiconductor depending on how it is rolled. This review considers how far that relationship, predicted by tight-binding theory in 1992 and confirmed by tunnelling spectroscopy in 1998, has been carried into working nanoscale devices. Studies from 1991 to 2020 reporting measurements on individual tubes were selected, and the physical mechanism behind each result was examined. The measured band structure follows the zone-folding rule, with a band gap inversely proportional to diameter. Transport in clean tubes is ballistic over hundreds of nanometres, with a conductance near the quantum limit of $4e^2/h$, and single tubes show Young's moduli near 1 TPa and thermal conductivities above 3000 W m^{-1} K^{-1}. Transistors, gas sensors and interconnects based on these properties have been demonstrated as individual devices, but manufacture is still held back by poor control of chirality and by contact resistance.

Keywords

carbon nanotube; nanomaterials; chirality; electronic properties; quantum transport; nanoscale devices

1. Introduction

Nanoscience deals with matter at length scales where the electron wavelength is comparable to the size of the object, so that confinement affects the properties as much as composition does. Iijima (1991) identified nested graphitic cylinders in the cathode deposit of a carbon arc, and two years later single-shell tubes about 1 nm in diameter were grown with a metal catalyst (Iijima & Ichihashi, 1993). By then tight-binding calculations had predicted that a single graphene cylinder would be metallic or semiconducting according to its diameter and helicity, without any change in chemistry (Saito et al., 1992).

Much of the physical interest in nanotubes comes from that prediction. A tube 1 nm wide and several micrometres long is close to an ideal one-dimensional conductor, because electrons move freely along the axis but occupy discrete standing-wave states around the circumference. Conduction through a small, countable number of quantum channels, which is difficult to isolate in a bulk solid, can therefore be studied directly. The same properties make nanotubes candidates for transistors at dimensions where silicon suffers from short-channel effects.

The literature is now large and uneven, and measurements on single tubes are often quoted alongside results from bulk powders of mixed structure. This review examines how atomic structure determines the electronic, mechanical and thermal behaviour of single-walled and multi-walled nanotubes, and assesses which device applications rest on established physics and which are still limited by control of the material.

2. Structural Characteristics of Carbon Nanotubes

A single-walled carbon nanotube (SWCNT) is a graphene sheet rolled into a closed cylinder. Each carbon atom keeps the three in-plane σ bonds of sp^2 hybridisation, 0.142 nm long, and its remaining p orbital contributes to the delocalised π system that carries current. The rolling is specified by the chiral vector $\mathbf{C} = n\,\mathbf{a}_1 + m\,\mathbf{a}_2$, where $\mathbf{a}_1$ and $\mathbf{a}_2$ are the graphene lattice vectors and the integers (n, m) are the chiral indices. Since $\mathbf{C}$ runs once around the circumference, its length gives the diameter d as

$$d = \frac{|C|}{\pi} = \frac{a}{\pi}\sqrt{n^2 + nm + m^2} \qquad (1)$$

where $a = 0.246$ nm is the graphene lattice constant. Tubes with $m = 0$ are called zigzag, those with $n = m$ armchair, and the rest chiral. The two integers therefore fix the whole atomic

structure of an ideal tube and, as Section 3 shows, its electronic character too (Saito et al., 1992; Charlier et al., 2007).

Multi-walled nanotubes (MWCNTs) consist of several such cylinders nested coaxially. Those first imaged by Iijima (1991) had 2 to about 50 shells and outer diameters of 4 to 30 nm, with a shell separation close to the 0.34 nm interlayer spacing of graphite. Neighbouring shells generally have different chiralities and interact only through weak van der Waals forces, so an MWCNT behaves more like a set of weakly coupled one-dimensional conductors than like a thin graphite rod.

In real tubes, vacancies, substitutional impurities and Stone-Wales defects (a bond rotation that turns four hexagons into two pentagons and two heptagons) disturb the π network locally. A pentagon-heptagon pair in the wall changes the chiral indices along the tube and can join a metallic segment to a semiconducting one. Curvature also matters, because in tubes narrower than about 1 nm the σ and π orbitals are no longer orthogonal, and their rehybridisation shifts the band edges away from the values expected for flat graphene (Charlier et al., 2007).

3. Electronic and Physical Properties

The band structure of a nanotube can be derived from that of graphene, a zero-gap semiconductor whose valence and conduction bands touch at the six corners (K points) of the hexagonal Brillouin zone. Rolling the sheet imposes a periodic boundary condition around the circumference, $\mathbf{C} \cdot \mathbf{k} = 2\pi q$ with q an integer, so the allowed wavevectors $\mathbf{k}$ lie on a set of parallel lines. If one of these lines passes through a K point the tube has states at the Fermi energy and is metallic, which requires $n - m$ to be divisible by 3; otherwise a gap opens. One third of all possible tubes are therefore metallic and the rest semiconducting (Saito et al., 1992). For semiconducting tubes the band gap is

$$E_g = \frac{2a\gamma_0}{\sqrt{3}\,d} \tag{2}$$

where a is the lattice constant of equation (1) and γ_0 is the nearest-neighbour overlap energy. The $1/d$ dependence is a confinement effect, because the allowed lines are spaced further apart in a narrower tube. Scanning tunnelling spectroscopy on atomically resolved tubes confirmed the division into metals and semiconductors and gave gaps consistent with equation (2) for $\gamma_0 = 2.7 \pm 0.1$ eV, which corresponds to about 0.8 eV for a 1 nm tube (Wildöer et al., 1998). The $n - m$ rule is only approximate, however, since curvature opens gaps of a few tens of meV in

nominally metallic zigzag and chiral tubes and leaves only armchair tubes truly gapless (Charlier et al., 2007).

In a metallic tube two subbands cross the Fermi level, which with spin gives four conducting channels. For perfect transmission the Landauer formula then gives a conductance of

$$G = \frac{4e^2}{h} \tag{3}$$

or a resistance of about 6.5 kΩ, independent of length. In this ballistic regime carriers cross the tube without scattering and the remaining resistance arises at the contacts. Backscattering is weak in nanotubes because reversing an electron's momentum needs a large wavevector transfer, which smooth, long-range disorder cannot supply. Atomic-scale defects can, which partly explains why conductances differ between tubes. Javey et al. (2003) reported room-temperature on-state conductances near $4e^2/h$ in semiconducting tubes with palladium contacts. At low bias the main scattering is by acoustic phonons, so the resistance rises roughly linearly with temperature. At high bias electrons emit optical phonons of about 0.16 eV, the mean free path falls to roughly 10 nm, and the current in a single tube saturates near 25 μA (Charlier et al., 2007).

The σ bonds also make nanotubes very stiff. A Young's modulus of about 1.25 TPa was obtained for SWCNTs from their thermal vibrations in the electron microscope (Krishnan et al., 1998), while direct tensile loading of MWCNTs gave outer-shell moduli of 270 to 950 GPa and strengths of 11 to 63 GPa (Yu et al., 2000). The wide spread is probably due to defects, where fracture begins. The room-temperature thermal conductivity, which is dominated by phonons, exceeds 3000 W m^{-1} K^{-1} in an individual MWCNT (Kim et al., 2001) and is about 3500 W m^{-1} K^{-1} in a suspended SWCNT, falling at higher temperatures as Umklapp scattering strengthens (Pop et al., 2006).

4. Synthesis and Characterisation

Three growth methods account for nearly all the material studied. In arc discharge, a direct-current arc between graphite electrodes evaporates the anode and nanotubes condense on the cathode. The first MWCNTs were made this way (Iijima, 1991), and SWCNTs form when a transition metal is added (Iijima & Ichihashi, 1993). In laser ablation a pulsed laser vaporises a metal-doped graphite target inside a furnace. Both give highly crystalline tubes, although in small quantities and mixed with amorphous carbon and catalyst particles. In chemical vapour deposition (CVD) a hydrocarbon or carbon monoxide is instead decomposed over metal

nanoparticles at much lower temperatures. The particle size controls the tube diameter and reactors have been scaled to tonnes, so CVD now dominates commercial production (De Volder et al., 2013), although its tubes tend to contain more defects.

Because the properties depend on (n, m), characterisation is best done on single tubes. Transmission electron microscopy shows the number of walls and the diameter directly, and electron diffraction from one tube gives its chiral angle. Scanning tunnelling microscopy images the atomic lattice and, in spectroscopic mode, measures the local density of states (Wildöer et al., 1998). The most widely used optical technique is resonance Raman spectroscopy. The frequency of the radial breathing mode, in which all atoms move radially in phase, is inversely proportional to diameter (about 248 cm^{-1} divided by the diameter in nanometres for isolated tubes on oxidised silicon). Crystalline quality is usually judged from the intensity ratio of the defect-activated D band near 1350 cm^{-1} to the tangential G band near 1590 cm^{-1} (Dresselhaus et al., 2005). Raman signals are strong only when the laser energy matches a transition between van Hove singularities, however, so one excitation wavelength samples only part of the tube population. Table 1 compares representative values for the two types of nanotube.

Table 1

Comparison of Selected Structural and Physical Properties of Single-Walled and Multi-Walled Carbon Nanotubes

Property	SWCNT	MWCNT	Sources
Number of walls	1	2 to about 50 coaxial shells, about 0.34 nm apart	Iijima (1991); Iijima & Ichihashi (1993)
Diameter	About 1 nm in the first report; typically 0.8 to 2 nm	4 to 30 nm in the first report; typically 5 to 20 nm	Iijima (1991); Iijima & Ichihashi (1993); De Volder et al. (2013)
Electronic behaviour	Metallic if $n - m$ is divisible by 3; otherwise semiconducting, with a gap near 0.8 eV at $d = 1$ nm that scales as $1/d$	Each shell is metallic or semiconducting according to its own indices; the net response is usually metallic	Saito et al. (1992); Wildöer et al. (1998); Charlier et al. (2007)
Mechanical characteristics	Young's modulus 1.25 TPa (−0.35/+0.45 TPa), from thermal vibration amplitudes	Outer-shell Young's modulus 270 to 950 GPa; tensile strength 11 to 63 GPa, from direct tensile loading	Krishnan et al. (1998); Yu et al. (2000)
Thermal conductivity near 300 K	About 3500 W m^{-1} K^{-1} (suspended tube, $d = 1.7$ nm, length 2.6 µm)	Above 3000 W m^{-1} K^{-1} (single tube, $d = 14$ nm)	Pop et al. (2006); Kim et al. (2001)

Note. Values refer to individual tubes or shells under the conditions reported in the cited studies. Mechanical and thermal figures vary with defect density, tube length and measurement method, and should not be read as material constants.

5. Applications in Nanoscale Devices

The field-effect transistor is the most developed nanotube device. It relies on equation (2), which gives a semiconducting tube 1 to 2 nm in diameter a gap of 0.4 to 0.8 eV, large enough for switching at room temperature. Tans et al. (1998) laid a single SWCNT across two platinum electrodes and switched it between conducting and insulating states with the substrate as a gate. Such early devices were later shown to switch largely through Schottky barriers at the metal contacts. With palladium, which wets the tube and aligns with its valence band, the barrier for holes disappeared, giving the near-ballistic transistors of Javey et al. (2003). The advantage over silicon is electrostatic, because all the mobile charge lies within about a nanometre of the gate dielectric and the gate keeps control of the channel at lengths where bulk devices leak.

More recently, Liu et al. (2020) deposited aligned arrays of 100 to 200 semiconducting tubes per micrometre on 10 cm wafers and reported transistors that outperformed silicon devices of similar dimensions. Hills et al. (2019) built a 16-bit RISC-V microprocessor from more than 14,000 complementary nanotube transistors with industry-standard fabrication.

Chemical sensing is possible because every atom of an SWCNT lies on its surface. Kong et al. (2000) found that the conductance of a single semiconducting tube rose by about three orders of magnitude within seconds of exposure to 200 ppm NO_2, and fell roughly a hundredfold, more slowly, in 1% NH_3. They attributed the NO_2 response to charge transfer from the tube to the adsorbed molecule, which adds holes to a p-type channel. Their calculations found little direct binding for NH_3, and the mechanism was left open. Given the later work on Schottky barriers, adsorbates at the metal contacts may also contribute by changing the barrier height, which a two-terminal measurement cannot separate from doping of the channel.

Copper interconnects fail by electromigration at around 10^6 A cm^{-2}, whereas Wei et al. (2001) passed more than 10^9 A cm^{-2} through MWCNTs at 250 °C for two weeks without a measurable change in resistance. The strong carbon-carbon bond suppresses atomic diffusion and the high thermal conductivity helps to remove Joule heat. The difficulty is the quantum resistance of 6.5 kΩ per conducting shell, which makes a single tube a poor wire; a competitive via would need thousands of metallic tubes in parallel, all contacted, at packing densities that growth does not yet reach routinely.

6. Current Research Limitations

The main obstacle is chirality control. Growth does not yet select (n, m), so as-grown material is about one-third metallic, and a single metallic tube in a transistor channel acts as a permanent short. Yang et al. (2014) obtained (12, 6) tubes at more than 92% abundance using a tungsten-cobalt alloy catalyst whose crystal structure templates the tube. This is a metallic species, however, and 92% is far below what logic circuits require. Sorting in solution after growth has reached a reported semiconducting purity above 99.9999% (Liu et al., 2020), but it shortens the tubes and leaves polymer residue. The purity figure is also difficult to verify, because optical spectroscopy cannot count metallic tubes at the part-per-million level.

Contact resistance is a second limitation. Real metal-tube junctions add to the 6.5 kΩ quantum resistance a Schottky barrier whose height depends on the metal work function (Javey et al., 2003). Electron-injecting contacts have been harder to stabilise than hole-injecting ones, and Hills et al. (2019) had to develop an electrostatic doping scheme to obtain complementary devices.

Laboratory demonstrations should also be distinguished from commercial use. The processor of Hills et al. (2019) ran at clock rates far below those of contemporary silicon and depended on design rules that tolerate stray metallic tubes. The products actually sold by the tonne are mainly conductive polymer composites and battery electrodes, which use bulk MWCNT powders of variable defect density and diameter and make no use of the quantum transport physics reviewed here (De Volder et al., 2013).

7. Conclusion

The physics of the individual carbon nanotube is well understood. Zone folding explains why two integers decide whether a tube is a metal or a semiconductor, as tunnelling spectroscopy has confirmed. Clean tubes carry current ballistically at the four-channel quantum limit, and the same bonding gives them stiffness of order 1 TPa and thermal conductivities above 3000 W m^{-1} K^{-1}. Control over large numbers of tubes has not kept pace. Transistors, sensors and interconnects have all been demonstrated with single tubes, but performance degrades once tubes of mixed chirality and variable contact quality are combined. The most pressing problem is the catalytic growth of a single semiconducting (n, m) species at densities above 100 tubes per micrometre. Until this is possible, devices will depend on post-growth sorting and on circuits that tolerate metallic tubes.

References

1. Charlier, J.-C., Blase, X., & Roche, S. (2007). Electronic and transport properties of nanotubes. *Reviews of Modern Physics, 79*(2), 677–732. https://doi.org/10.1103/RevModPhys.79.677

2. De Volder, M. F. L., Tawfick, S. H., Baughman, R. H., & Hart, A. J. (2013). Carbon nanotubes: Present and future commercial applications. *Science, 339*(6119), 535–539. https://doi.org/10.1126/science.1222453

3. Dresselhaus, M. S., Dresselhaus, G., Saito, R., & Jorio, A. (2005). Raman spectroscopy of carbon nanotubes. *Physics Reports, 409*(2), 47–99. https://doi.org/10.1016/j.physrep.2004.10.006

4. Hills, G., Lau, C., Wright, A., Fuller, S., Bishop, M. D., Srimani, T., Kanhaiya, P., Ho, R., Amer, A., Stein, Y., Murphy, D., Arvind, Chandrakasan, A., & Shulaker, M. M. (2019). Modern microprocessor built from complementary carbon nanotube transistors. *Nature, 572*(7771), 595–602. https://doi.org/10.1038/s41586-019-1493-8

5. Iijima, S. (1991). Helical microtubules of graphitic carbon. *Nature, 354*(6348), 56–58. https://doi.org/10.1038/354056a0

6. Iijima, S., & Ichihashi, T. (1993). Single-shell carbon nanotubes of 1-nm diameter. *Nature, 363*(6430), 603–605. https://doi.org/10.1038/363603a0

7. Javey, A., Guo, J., Wang, Q., Lundstrom, M., & Dai, H. (2003). Ballistic carbon nanotube field-effect transistors. *Nature, 424*(6949), 654–657. https://doi.org/10.1038/nature01797

8. Kim, P., Shi, L., Majumdar, A., & McEuen, P. L. (2001). Thermal transport measurements of individual multiwalled nanotubes. *Physical Review Letters, 87*(21), Article 215502. https://doi.org/10.1103/PhysRevLett.87.215502

9. Kong, J., Franklin, N. R., Zhou, C., Chapline, M. G., Peng, S., Cho, K., & Dai, H. (2000). Nanotube molecular wires as chemical sensors. *Science, 287*(5453), 622–625. https://doi.org/10.1126/science.287.5453.622

10. Krishnan, A., Dujardin, E., Ebbesen, T. W., Yianilos, P. N., & Treacy, M. M. J. (1998). Young's modulus of single-walled nanotubes. *Physical Review B, 58*(20), 14013–14019. https://doi.org/10.1103/PhysRevB.58.14013

11. Liu, L., Han, J., Xu, L., Zhou, J., Zhao, C., Ding, S., Shi, H., Xiao, M., Ding, L., Ma, Z., Jin, C., Zhang, Z., & Peng, L.-M. (2020). Aligned, high-density semiconducting carbon nanotube arrays for high-performance electronics. *Science, 368*(6493), 850–856. https://doi.org/10.1126/science.aba5980

12. Pop, E., Mann, D., Wang, Q., Goodson, K., & Dai, H. (2006). Thermal conductance of an individual single-wall carbon nanotube above room temperature. *Nano Letters, 6*(1), 96–100. https://doi.org/10.1021/nl052145f

13. Saito, R., Fujita, M., Dresselhaus, G., & Dresselhaus, M. S. (1992). Electronic structure of chiral graphene tubules. *Applied Physics Letters, 60*(18), 2204–2206. https://doi.org/10.1063/1.107080

14. Tans, S. J., Verschueren, A. R. M., & Dekker, C. (1998). Room-temperature transistor based on a single carbon nanotube. *Nature, 393*(6680), 49–52. https://doi.org/10.1038/29954

15. Wei, B. Q., Vajtai, R., & Ajayan, P. M. (2001). Reliability and current carrying capacity of carbon nanotubes. *Applied Physics Letters, 79*(8), 1172–1174. https://doi.org/10.1063/1.1396632

16. Wildöer, J. W. G., Venema, L. C., Rinzler, A. G., Smalley, R. E., & Dekker, C. (1998). Electronic structure of atomically resolved carbon nanotubes. *Nature, 391*(6662), 59–62. https://doi.org/10.1038/34139

17. Yang, F., Wang, X., Zhang, D., Yang, J., Luo, D., Xu, Z., Wei, J., Wang, J.-Q., Xu, Z., Peng, F., Li, X., Li, R., Li, Y., Li, M., Bai, X., Ding, F., & Li, Y. (2014). Chirality-specific growth of single-walled carbon nanotubes on solid alloy catalysts. *Nature, 510*(7506), 522–524. https://doi.org/10.1038/nature13434

18. Yu, M.-F., Lourie, O., Dyer, M. J., Moloni, K., Kelly, T. F., & Ruoff, R. S. (2000). Strength and breaking mechanism of multiwalled carbon nanotubes under tensile load. *Science, 287*(5453), 637–640. https://doi.org/10.1126/science.287.5453.637

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ॰ प्रीति कुमारी

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

समाजशास्त्र विभाग

पटना (बिहार)

for the paper titled

जनजातियों की समस्याएँ एवं संवैधानिक प्रावधान

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रशांत चौरसे

ग़ज़लकार एवं शोधार्थी (हिन्दी)

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

for the paper titled

डॉ. कुँअर बेचैन एवं दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में राजनीतिक संवेदना : तुलनात्मक दृष्टि

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ.(प्रो.) अंकुश शर्मा

निर्देशक, जगन्नाथ विश्वविद्यालय जयपुर (शिक्षा विभाग)

नम्रता भारद्वाज

शोधार्थी, जगन्नाथ विश्वविद्यालय जयपुर

for the paper titled

निपुण भारत मिशन के अंतर्गत संचालित मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कार्यक्रम द्वारा पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत बालकों के भाषा एवं संख्यात्मक उपलब्धि का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

पीयूष पुष्पम

हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय

for the paper titled

भारतीय सिनेमा के महाकाव्यात्मक कैनवास पर इतिहास, दंतकथा और कल्पना का अंतर मिटाने वाली महागाथा 'मुग़ल-ए-आज़म'

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

गीतांजलि वर्मा

स्वतंत्र शोधकता

for the paper titled

गिग अर्थव्यवस्था : भारतीय श्रम बाजार में अवसर, चुनौतियाँ और नीतिगत संदर्भ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Anjali Sachan
Research Scholar, History
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

for the paper titled

Cultural Echoes of the Past: A Historical and Cultural Study of Indian Folk Arts

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

मुलायम यादव

शोध छात्र, हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी।

for the paper titled

जनता के सिंहासन के कवि : दिनकर

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सावित्री देवी

सहायक आचार्या हिंदी

राजकीय महाविद्यालय करसोग

for the paper titled

मानवीय मूल्यों की संजीवनी कबीर भक्ति

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Shivesh
Ph.D. Research Scholar
Department of Commerce and Management
Sona Devi University

for the paper titled

Personality Traits and Managerial Effectiveness among Bank Managers in Jharkhand: A Big Five Perspective

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Reena Mewada
Mobile : 7580930898
Email : reeamewada06182@gmail.com

for the paper titled

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

निरुपमा हाँसदा

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

सिदो कान्हू मुर्मू वि. वि. दुमका (झारखण्ड)

for the paper titled

अमरकांत के कथा साहित्य की प्रासंगिकता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. पूनम भूषण

असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र,

शहीद दुर्गा मल्ल राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला देहरादून

for the paper titled

परंपरा और आधुनिकता के बीच लैंगिक समानता की बदलती भूमिका

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. देशराज यादव

सह आचार्य,

ला. ब. शा. राजकीय महाविद्यालय कोटपूतली

for the paper titled

भारतीय राजनीति में अपराधीकरण : प्रवृत्तियाँ, निर्धारक एवं लोकतांत्रिक शासन पर प्रभाव का विश्लेषण

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. राजपाल

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार, हरियाणा

for the paper titled

'बसंत' काव्य संग्रह में मुकेश कुमार 'ऋषिवर्मा' का भाषा-सौष्ठव

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सिंपल शर्मा

शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान संकाय

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

for the paper titled

भारत में ग्रामीण विकास (2005–2026) : मनरेगा से वीबीजी रैम जी अधिनियम तक नीतिगत संक्रमण, उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. अतुल कुमार मिश्र

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

गुरूघासीदास वि.वि.बिलासपुर (छ.ग.)

for the paper titled

बिलासपुर जिले के नवतेज प्रकाश पुंज और उनका अप्रतिम योगदान (द्वारिका प्रसाद तिवारी एवं लोचन प्रसाद पांडे के संदर्भ में)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. (डॉ.) कैलाश पति गोस्वामी

डी.ए.वी.स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

सीवान (बिहार)

for the paper titled

'पूस की रात' का प्रतिपाद्य

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

रतन लाल तेली

सहायक आचार्य

(रवींद्रनाथ टेगोर महाविद्यालय कपासन)

for the paper titled

दुष्यंत कुमार और उनकी ग़ज़ल विधा

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Reena Rani
Student Department of CSE
PKG Group of Institution Matlauda, Panipat
Prof Rajesh Gargi
Department of CSE , PKG Group of Institution, Matlauda Panipat

for the paper titled

Big Data Analytics for Real-Time Decision-Making in Large-Scale Information Systems

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. अफीफा फातिमा शेक

सहायक प्राध्यापक, भाषा विभाग-हिंदी

एम.ओ.पी. वैष्णव कॉलेज फॉर विमेन(स्वायत्त), चेन्नई, तमिलनाडु, भारत

for the paper titled

अनामिका के काव्य में स्त्री-अस्मिता, प्रतिरोध और लोक-संवेदना

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'

पता : सदनिका क्रमांक 5, अवन्तिका रेजीडेंसी, 58/59, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड, पुणे-411011 (महाराष्ट्र)

for the paper titled

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन यात्रा का ऐतिहासिक अनुशीलन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सत्यवीर खनका

शोधार्थी

डॉ. नवीन चंद रजवार

शोधार्थी, इतिहास विभाग, लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़

for the paper titled

कुमाऊँ के प्रसिद्ध न्याय के देवता-गोल्ज्यू या गोलू

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. मुक्तारानी कंचकार

एम०ए०, पी-एच०डी०, नेट/सेट (हिंदी)

व्याख्याता- वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय

महाविद्यालय मरवाही जिला -जी०पी०एम० (छ०ग०)

for the paper titled

शंबूक : वर्णव्यवस्था, प्रतिरोध और मानवीय गरिमा का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr Bindhya K S
Associate Professor
Departement of Sanskrit Vyakarana
Govt- Sanskrit College
Thiruvananthapuram

for the paper titled

क्षुभ्नादिगणस्य स्वरूपम् - आकृतिगणत्वस्य पाणिनीयव्याकरणे अध्ययनम्

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सिराजुल हक

सहायक अध्यापक,

हिंदी विभाग, बंगाईगाँव विश्वविद्यालय

बंगाईगाँव-783380

for the paper titled

'अंधायुग' गीति-नाट्य की मूल कथ्य और लक्ष्य

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. वी. गीता मालिनी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

एतिराज कॉलेज फॉर वुमन,

चेन्नई

for the paper titled

भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' में मानवीय मूल्य

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Kundan Kr. Singh
Research Supervisor (HOD of the Dept. of Pol. Sc., VKSU, Ara, Bihar)
Aqib Murtaza
Research scholar (Dept. of Pol. Sc., VKSU, Ara, Bihar)

for the paper titled

The Arctic Sea Route And Climate Change: A New Maritime Alternative In An Era of Geopolitical Uncertainty

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Arun Kumar
Assistant Professor, Department of Physical education
Guru Nanak Khalsa college, Yamuna Nagar, Haryana

for the paper titled

The Olympic Movement: Origins, Evolution, Governance, Controversies, and Global Impact

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

शरद कुमार मिश्रा

शोध छात्र, हिन्दी

for the paper titled

विश्व हिंदी साहित्य में विकलांग विमर्श

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

विनय कुमार विश्वकर्मा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

for the paper titled

धूमिल की कहानियों में मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सरोकार

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. रमणीक मोहनी

कृपा कुटीर, महता मोहल्ला बेडिंग (होशियारपुर)

for the paper titled

व्यंग्य : जीवन मूल्यों के संवर्धन की प्रेरक विधा

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

पूजा तिवारी

शोध छात्रा (हिन्दी)

अरमापुर पीजी कॉलेज कानपुर

for the paper titled

रीतिकालीन कविता और सांस्कृतिक चेतना

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Ajay Kumar Barnwal
Assistant Professor of Commerce Department, AISECT University, Hazaribag
Satyarthy Gyan Prakash
Assistant Professor Department of CS&IT, AISECT University, Hazaribag

for the paper titled

A STUDY OF: CONSUMER BEHAVIOUR OF TEENAGERS IN RESPONSE TO SALES PROMOTIONS

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

विनय चंद्र पांडेय

शोधार्थी, कला संकाय,

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हरियाणा, भारत

for the paper titled

हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित दलित स्त्री का दमन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

विशाल सोलंकी

स. आ. इतिहास

श्री जैन कन्या पी. जी. महाविद्यालय, बीकानेर

for the paper titled

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान और पर्यावरणीय कारक का सहसंबंध

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

किशन लाल गुर्जर

ACBEO, कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, आमेट, राजसमन्द (राजस्थान)

डॉ. शहनाज़ पठान

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर (राजस्थान)

for the paper titled

समकालीन परिप्रेक्ष्य में लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अंतर्संबंध: परंपरा, परिवर्तन और डिजिटल संरक्षण की चुनौतियाँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. अनिरुद्ध बायन

सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)

मध्य कामरूप कॉलेज़, सुभा, आसाम

for the paper titled

असम की लोक संस्कृति के विविध आयाम

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. नीलम सेठी

सहायक प्रोफेसर, डी.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मोगा

डॉ. अजयपाल सिंह

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़ पंजाब।

for the paper titled

हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

रामनिवास

शोधार्थी, श्री बलदेव राम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर

सम्बद्धता - महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

डॉ. भूपेश

शोध निर्देशक, सहायक आचार्य, श्री बलदेव राम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर

सम्बद्धता - महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

for the paper titled

पवन पहाड़िया का रचना संसार : एक परिचयात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. ज्योति सिंह

सहायक प्राध्यापिका

तुलनात्मक साहित्य विभाग

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत

for the paper titled

राष्ट्रकवि रामचन्द्र नारायण द्विवेदी कवि प्रदीप का व्यक्तित्व और कृतित्व

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

आर्या कृष्णन

Research Scholar
Nirmala college, Muvattupuzha
Dr. Sreeja G R
Guide, Associate professor, Nirmala college, Muvattupuzha

for the paper titled

हाशिएकृत समाज की समस्याएं 'मैं पायल' उपन्यास के संदर्भ में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Gourav Singh
Assistant Professor
Department of Hindi
PSG College of Arts & Science Coimbatore

for the paper titled

प्रेमचंद युगीन उपन्यास : सामाजिक विषमता का आईना
(प्रेमचंद के विशेष संदर्भ में)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

विजय शर्मा

शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज बरेली

डॉ. रितेश कुमार चौरसिया

शोध पर्यवेक्षक/असिस्टेंट प्रोफेसर

रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज बरेली

for the paper titled

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका–भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं रक्षा अंतरिक्ष कार्यक्रम का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Jyoti Mishra
Assistant Professor
Department of Physics
D.B.S. College Govind Nagar Kanpur

for the paper titled

Carbon Nanotubes in Nanoscience: Structural Characteristics, Electronic Properties and Applications in Nanoscale Devices

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Pooja
Research Scholar, Department of Economics, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan
Dr. Anil Kumar Tiwari
Assistant Professor, Department of Management, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

for the paper titled

Role of Green Technologies in Promoting Female Employment and Sustainable Economic Growth

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. मेरली के पुन्नूस

सह आचार्य, हिंदी विभाग

सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर, केरल

for the paper titled

न्यू मीडिया की चुनौतियों से आगाह कराती कहानी : ऑनलाइन रोमांस

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Sweety
Research Scholar, Department of Political Science, Maharshi Dayanand University Rohtak Haryana
Dr. Pardeep Kumar
Assistant Professor, Department of Political Science, Maharshi Dayanand University Rohtak Haryana

for the paper titled

Article 370 and the Reshaping of Centre–Region Relations in Jammu & Kashmir

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Kamal
Assistant Professor, Department of History
S.D. (PG) College, Panipat

for the paper titled

Revolutionary Movement in Southern Punjab, 1905–1930s

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

முனைவர்.இரா.சரஸ்வதி,

உதவிப்பேராசிரியர், தமிழ்த்துறை,

எஸ்.டி.என்.பி.மகளிர் வைணவக்கல்லூரி,

குரோம்பேட்டை, சென்னை-44

அலைபேசி: 7904072211

புலனம்: 9710689903 email: saraswathy.r@sdnbvc.edu.in

for the paper titled

உலகமொழிகளில் தமிழ் மொழியின் ஆளுமையும் தாக்கமும்

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

निकिता पंत

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़ (हल्द्वानी), कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल

प्रो. बीना मथेला

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़ (हल्द्वानी), कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल

for the paper titled

कगार की आग में विघटित मानवीय संबंधों की पुनर्संरचना

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

श्री जनेंद्र कुमार दीवान

सहा. प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महा. दुर्ग (छ.ग.)

श्री राजीव कुमार

सहा. प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, राजीव गांधी शास. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, अंबिकापुर (छ. ग.)

for the paper titled

कल्हण की 'राजतरंगिणी' में ऐतिहासिक दृष्टिकोण: स्रोत, वस्तुनिष्ठता एवं इतिहास लेखन का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

हिमानी

शोधार्थी

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

for the paper titled

'पाँव तले की दूब' में आदिवासी चेतना के विविध आयाम

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Gireesh. P.
Research Scholar
Department of Hindi, University College
Tiruvananthapuram

for the paper titled

हिंदी सिनेमा में सांप्रदायिकता -आर्टिकल 15 के विशेष संदर्भ में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Priya Jaiswal
Rani durgavati university jabalpur (M.P.)

for the paper titled

नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 : महिला राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में एक कदम

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

सौरभ असाटी

शोधार्थी

दिवाकर सिंह राजपूत

प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

for the paper titled

बीना रिफाइनरी का ग्रामीण क्षेत्र पर सामाजिक प्रभाव

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सुनीता राठौर

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शास. एम.एम. आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय

चाम्पा (छत्तीसगढ़)

for the paper titled

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय भावना

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सुनीता राठौर

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शास. एम.एम. आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय

चाम्पा (छत्तीसगढ़)

for the paper titled

महादेवी वर्मा के साहित्य में मानवतावाद

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

दीपक उराँव

शोधार्थी, विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

for the paper titled

कुँड़ुख़ खोड़हा नु कंड़सा

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

पाण्डु राम हाईबुरू

शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय (हो) भाषा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

for the paper titled

हो जनजाति के पर्व त्योहार

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रेम रोशन एक्का

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग

मधुपुर महाविद्यालय मधुपुर, देवघर।

for the paper titled

झारखण्ड में विस्थापन एक समस्या एवं संवैधानिक प्रावधान

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सुषमा पांडे

निर्देशक सहा प्राध्यापक (शिक्षा संका;), आई एस बी एम विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

रूपानंद बारिक

शोधकर्ता, आई एस बी एम विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

for the paper titled

प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अभिभावकीय सहभागिता का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. ए. व्हि. सूर्यवंशी

प्राचार्य, बी.एल.डी.इ. संस्था

बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बसवन बागेवाडी

for the paper titled

हिंदी नाटकों में गांधी-चित्रण : 'गोडसे @ गाँधी. कॉम' के विशेष संदर्भ में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Monika Sahai
Associate Professor and In-charge
Department of Psychology, S.N. Sen B.V.P.G. College, Kanpur

for the paper titled

BEHAVIOURAL PROBLEMS OF ADOLESCENTS

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Manjitha MM
Research Scholar
Government Sanskrit College Thiruvananthapuram.

for the paper titled

Poetic Ornaments in the Seasonal Descriptions of the Ramayana

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Jiji Chandran J V
Research Scholar
University Of Kerala
Govt. Sanskrit College, Palayam
Thiruvananthapuram

for the paper titled

Sphota and Dhvani in the Vakyapadiya: A Linguistic and Philosophical Analysis

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Sithara B T
Research Scholar Govt.sanskrit College
University Of Kerala, Palayam, Thiruvananthapuram

for the paper titled

The Scientific Classification of Speech Sounds in Ancient Sanskrit Texts: A Comparative Study with Modern Phonetics

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Vishnupriya G
Research Scholar, Govt Sanskrit College,
Thiruvananthapuram, Kerala.

for the paper titled

THE CONCEPT OF VARṆĀŚRAMA-DHARMA IN THE MANUSMṚTI: A STUDY OF SOCIAL ORDER AND INDIVIDUAL DUTIES

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. ए. व्हि. सूर्यवंशी

प्राचार्य, बी.एल.डी.इ. संस्था

बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बसवन बागेवाडी

for the paper titled

जयशंकर प्रसाद के गद्य साहित्य में सौंदर्य बोध

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Deepthi Chandran
Research Scholar, Govt.sanskrit College
Thiruvananthapuram, Kerala-

for the paper titled

Desire to Dispassion: Vairāgyaśataka and the Bhagavad Gītā

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

निरंजन कुजूर

सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शासकीय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय धरमजयगढ़, जिला रायगढ़ (छ.ग.)

शोधार्थी - संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर (छ.ग.)

for the paper titled

कृषि विकास में तकनीकी परिवर्तन के विविध संदर्भ : एक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. विजय कुमारी

वार्ड नंबर 21, मकान नंबर 1059
नजदीक राधास्वामी सत्संग घर, बट्टल बलिया मार्ग
तहसील जिला उधमपुर 182101, जम्मू कश्मीर

for the paper titled

भारती संस्कृति गी डोगरी भाषा ते डोगरा लोक-संस्कृति दा योगदान

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. कमलेश कुमारी

पत्नी श्री धीरज कुमार बाधोरिया

गाँव - रंजरी, तहसील - विजयपुर

जिला - साम्बा-181143, जम्मू-कश्मीर।

for the paper titled

'चुप्प रेहियै प्रार्थना कर' कविता संग्रैह : इक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. दीप्ति सुधीरकुमार देशपांडे

आसि. प्रोफ़ेसर,

शेठ श्री गिरधरलाल डी.एल.एड. कालेज, दाहोद

for the paper titled

आस्था

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

रितेश कुमार

शोध छात्र, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

for the paper titled

भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री विमर्श

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Prof. Dheeraj Kumar Choudhary
Professor, Dept. of Med. & Mod. History, ISDC, University of Allahabad, Prayagraj
Samiksha Rai
Research Scholar, Dept. of Med. & Mod. History, ISDC, University of Allahabad, Prayagraj

for the paper titled

Evolution of Women's Monastic Tradition In Ramakrishna Mission

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

राम उग्र गोस्वामी

सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विभाग,

सी.एस.एन.पी.जी. कॉलेज, हरदोई (उत्तर प्रदेश)

for the paper titled

उच्च शिक्षा में शैक्षिक असमानता और सामाजिक पुनरुत्पादन: पियरे बोरदियो के सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'

M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights), DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

MA (Sanskrit), M. Ed. UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

ISSN:2348-5639

Impact Factor 6.521

शोध समालोचन
Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

https://ginajournal.com/shodh-samalochan/

Certificate of Publication*

is awarded to

Dimpi Singh
Research Scholar (Department of Education)
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

for the paper titled

Building Emotionally Intelligent Teachers for Holistic Education: Insights from NEP 2020

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

July - September 2026, Vol. 13, Issue-3

Managing Editor

Dr. Mukesh Kumar 'Rishi Verma'
M.A., Vidya Vachaspati, F.H.R. (Human Rights),
DCA, Certificate Course in Urdu.

Executive Editor

Dr. Varsha Rani
MA (Sanskrit), M. Ed.
UGC NET/ JRF, Ph.D.

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**